ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २३९ म अंक ०१ दिसम्बर २०१७ (वर्ष १० मास १२० अंक २३९)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कृशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौंजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फूलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कृशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौंरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढ़ियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौंजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री खखर सदाय सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) श्री रामविलास यादव सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढ़ियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नडेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "विदेह"- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटर रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु



भकमोड़

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

कथा मिलन सदाय-सगर राति दीप जरय'क
निर्मली गोष्ठीकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-16-2

दाम : ₹ 251/-

दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BHAKMOR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर-

मनमनियाँ

औरहा (लौकही, मधुबनी जिला) कथा गोष्ठी (सगर राति दीप जरए)मे ऐगला गोष्ठीक निमंत्रण (निर्मली, सुपौल जिला) पड़ल।

औरहासँ निर्मली गोष्ठीक बीचक जे कथा अछि ओ संकलनमे अछि। औरहामे एक गोरे प्रश्न उठौलैन जे एक्के लिखिनिहारक कथा दू-दू गोरे पढ़ै छैथ। प्रश्न नीक लागल। एते नीक लागल जे जवाब देबे बिसैर गेलौं। नीक ई लागल जे जँ गोष्ठियोक निविते दस-बीसटा कथा लिखा जाए तँ एकरा की कहबै?

औरहा निर्मलीक बीच एकटा भुतहा चौक अछि। रस्ता भकमोड़ छै, तँए संग्रहक नाओं 'भकमोड़' छी।

चलंत गोष्ठीक कथा केहेन हुअए? ई प्रश्न मनमे उठल। समए एहेन विचित्र बनि गेल अछि जे सुचित्र खींचब कठिन भऽ गेल अछि, तँए कथामे एकरूपता नइ अछि। जहिना अनेको एकपेड़िया मिलि बहुपेरिया बनबैए तहिना भऽ गेल अछि। खाएर.., चाहे जे अछि मुदा सभ कथा अपन-अपन परिचए तँ दइए रहल अछि।

दुनू गोष्ठीक (औरहा-निर्मली) बीचक कथा, तहूमे हकरिया कथाक रूपमे लिखल गेल अछि तँए ई संग्रह निर्मली गोष्ठी (कथा मिलन सदाय-सगर राति दीप जरय)कें सेवामे समरपित...।

साहित्यक (मैथिली साहित्यक) दुर्भाग्य कही आकि सौभाग्य, मुदा रचनाकारक रचित रचना प्रकाशित नै भऽ पाबि रहल अछि,

एकरा की कहबै..?

तीन मासक भीतर पोथीक रूप देख मन खुशी अछि, मुदा खुशीक जड़िमे किछु सहयोगीक भरपूर प्रेरणा रहल, जे प्रेरित करैत रहला, तँए सभकेँ हृदैसँ धन्यवाद दइ छिऐन। खास कऽ गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ उमेशकेँ बेर-बेर धन्यवाद।

पोथीक रूप साकार करैमे श्रुति प्रकाशन आ प्रेसक जे संचालक मण्डल छैथ, काजक मूर्त रूप बनबैमे सचमुच सफल मूर्त्तकार छैथ, तँए तहेदिल धैनवादक पात्र छैथ।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

05.10.2013

एक धाप जमीन

भिनसुरका काज-उदमसँ निचेनो ने भेल छेलौं। सुनलौं जे दिनेश भाय कपार फोड़ा लेलैन। भोरे-भोर एना किए भेलैन, अखन तँ शरीरक सभ अंग भकुआएले रहल हेतैन। यात्रा दिस नजैर गेल। दही माछक यात्रा नीक होइ छै मुदा केकरा-ले? अधखरूआ काज छोड़ि जाएब उचित नइ बुझलौं। तैबीच पनिगर समांग सभ दिनेश भायकेँ छैन्हे पाइ-कौड़ीबला भाइए गेल छैथ, झंझारपुर लऽ जा प्राइवेटमे भर्ती करा देलकैन।

चुल्हिक जारैनसँ लऽ कऽ तरकारी धरिक ओरियान कऽ निचेन भेलौं चाह पीलौं। तैबीच, जहिना धारक पानि आ वायुमण्डलक हवा उधियाइए तहिना रस्ते-पेरे बात उड़िया गेल जे एक धाप जमीन-ले दुनू भैयारीमे झगड़ा भेलैन। ओइ जमीनमे केराक घौर, छठि पाबैनमे दुनू भाँइ टहैल-बुलि कऽ एकठाम भेला। परिवारक पछुआएल काज देख देहमे खौंत फेकनहि रहैन कि दुनू केरे बीटक बीच फरियौलैन। ओना, दुनू भाँइ गामेक स्कूल धरि नियमित छात्र रहला मुदा समैयो तँ समैये छी। सदिकाल उर्कुसी उड़ियैबते रहैए। जँ से नइ तँ आब कहाँ देखै छी उक्खैर-समाठ आकि हर-पालोक चोरकेँ? तँए की चोरक वंश मेटा गेल? मनमे भेल जे भने नीके भेल जे रस्ते–पेरे जिगेसो भऽ जाएत आ किछु ऐगलो भाँज लगि जाएत जे दिनेश भाइक कपार फुटलैन तँ फुटलैन, ब्रेन ने तँ हेम्रेज भेलैन।

दरबज्जासँ निकैलते देखलौं जे रस्ते-पेरे समाददाता सभ समाद बिलैह रहल छैथ। समादो तँ अजीब होइए किने, एक्के घटना दस रंगक बनि जाइए। एना किए? पहिल घरवासी गामक नेताइन, जँ पड़ोसिया बनि हमहीं नइ मोजर दैतिऐन सेहो तँ नीक नहियेँ होएत। पुछलयैन-

"की घटना भेल अछि?"

वेचारी अपने बेथे बेथाएल, जे तीन हजार रूपैआ नोकरीक नाओंपर दिनेश भाय ठकि नेने रहथिन। अनधुन बाजए लगली-

"नीक भेल एक भाँइ कपार फोड़ौलक, दोसर मारि खेलक। ओना मारि तँ दुनू खेलक। मुदा एकटा चुपा दोसर देखौआ...।"

गपक कोनो अरथे ने लगल जे घटनाक जड़ि की। मुदा नीक-अधलाक विचार भऽ गेल। चुपे आगू बढ़लौं तँ दोसर गोरे कहलैन-

"छोट भाए भऽ कऽ पैघपर हाथ उठाएब दिनेशकेँ नीक भेलैन। दुनू भाँइकेँ तँ भगवाने बड़का-छोटका बनौने छथिन।"

घटना तँ हराएले रहल मुदा एकटा पन्ना तँ भेटल। पन्नो तँ पन्ना होइए, मुदा दोसरो-तेसरो तँ पन्ने कहबैए। रस्ता दिस आँखि उठैबते ललितपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मनमे भेल जे आब सभ भाँज लगि जाएत। लग अबिते ललितकेँ पुछलिऐ-

"बौआ, दिनेशजीक समाचार कहह?"

मनमे भेल जे धुर्रफन्दा लोक 'ललित' ऐछे, जँ कहीं अपने गाड़ीपर बैसा डाक्टर लग लऽ गेल होइथ। खाएर जे हौउ, धुअल-पखारल शब्दमे ललित बाजल-

"काका, अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे हम रोड परहक आदमी भेलौं, एको मिनट पलखैत कहाँ होइए जे गामो-घर दिस देखब। तहूमे ठीकेदारी तँ आरो जपाल अछि। तेहेन लफड़ा ऑफिस लगा देने अछि

जे की कही, अखनो ऑफिसेसँ अबै छी।"

ऑफिसक नाओं सुनि अचम्भित भेलौं जे भोरे-भोर कोन ऑफिस चलै छै जे कहैए ऑफिसेसँ एलौं। पुछलिऐ-

"भोरे-भोर ऑफिस?"

निधोख ललित बाजल-

"लेन-देनक ऑफिस तँ डेरे छै किने।"

बात आगू नै बढ़ा, पुछलिऐ-

"एक बेर दिनेशजीक जिगेसा कऽ लेब तँ जरूरीए अछि किने, तइमे तोरा तँ आरो बेसी उपराग देथुन जे बेरपरक ललित नइ छी।"

काजक झमारल ललित बाजल-

"काका, समाजक लीले गड़बड़ अछि, अहीं कहू जे ई उचित भेल जे एक घौर केरा-ले अपनो अस्पतालमे बरदाइ आ दोसो-महीमकेँ बरदाबी। तहूमे कि कोनो हमरा पहिने कहि देने छला जे एक घौर केरा-ले दुनू भाँइ माइर करब।"

पुछलिऐ-

"से की ओ जनै छला?"

ललित बाजल-

"भरि दिन पोथी-पतरा कन्हेमे लटकल रहै छैन आ अपनो दिन-बेरागन नइ बुझै छैथ। एक साए बेर दरबज्जापर जाएब, तखन धोपचटमे गोटे बेर भेट जेता, एहेन उड़नबाज दुनू भाँइ छैथ, तखन कहू जे केना केरा घौर कपार फोड़ा देलकैन। मुदा जे हौउ, समाजोक तँ दायित्व अछि। तइसँ एक बेर जा कऽ हाल-चाल पुछि लेब जरूरीए अछि।"

कहलिऐ-

“भने तोरा सवारियो छह, तीन बजेमे चलह।”

धुर्रफन्दा ललितकेँ बात नीक लगलै। बहानाक गवाही बिनु तकनहि भेट गेलिऐ। बाजल-

“काका, भने पान-छह घन्टा समैयो अछि, ताबे हमहूँ बैंकक काज कऽ लेब। निचेनसँ चलब जे आठ-नअ बजे राति तक घुमि आएब।”

ओना तत्खनात गपमे काट-खोंट करब उचित नइ बुझलौं, मुदा ओकर ‘आठ नअ बजे’ आ अपन ‘आठ-नअ बजे’मे अन्तर तँ बुझिए पड़त। साढ़े-पाँच छअ बजे तक संभव अछि। कहलिऐ-

“बड़बढ़ियाँ।”

महेश-दिनेश सहोदर भाए। ओना अर्थ रोगसँ पीड़ित परिवार, तँए गामक स्कूल छोड़ि बाहरक स्कूल-कौलेजक नियमित विद्यार्थी नै रहला मुदा एम.ए; पी.एच.डी.क सर्टिफिकेट नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समए तेहेन भऽ गेल अछि जे पाइक खेल कोनो स्कूलकेँ चमका रहल अछि, तँ कोनोकेँ धमका रहल अछि। ओना, बम्बैया कलाकार जकाँ दुनू भाँइ चौबीसो घन्टा मेकअपेमे रहै छैथ। एकरंगा चेहरा दिन-राति रहिते छैन। वएह आल रंगक अंगा, खौंरकी, कट्ठा डेढ़ेक सिनूरक ढिमका आ बिनु कमाइल देलहा केश-दाढ़ी तँ बनौनहि छैथ। दुनू भाँइ तारा-ऊपरी छैथ, रहबो केना ने करता, दुनियाँ की कनियेँ-टा अछि जे दस कट्ठा अहाँ जोतिए लेब तँ दुनियेँ जोता जेतइ। समाजक स्त्रीगणक कौलेजक प्रोफेसरी ने महेश करै छैथ, मुदा अदहासँ बेसी पुरुखक कौलेज तँ खालीए अछि। पारखी दिनेश, समाजेमे नोकरी ताकि लेलैन।

मुदा दू दुनियाँमे दुनू भाँइक जिनगी तखन भैयारीमे एना भेलैन? छगुन्तामे पड़ल छेलौं। जहिना कौर्नर-बौल फेकैक अभ्यास खेलाड़ी

करैए तहिना रंग-रंगक सोंगर लगा जुति धरबी तँ केतौ सोंगर नम्हरे भऽ जाए आ केतौ छोटे भऽ जाए। कुजुति देख मन भन-भनाइते रहए कि महेश भाइक मझिला बेटा पहुँचला। होइते छै कोनो घटना घटला पछाइत घरवारी कोट-कचहरी, अस्पतालसँ गाम-घर धरि घुमि कनसोह लइते अछि। नव समाचारक जिज्ञासा बढ़ले छल। पुछलिऐ-

“बाउ, सुनै छी अहीं दिनेश भाइक कपार फोड़ि देलिऐन! कहुना अहाँ भेलिऐन तँ बेटे-भातिज ने भेलिऐन किने, तखन..?”

मनमे भेल जे घटनाक जड़ि छुटि गेल आ दोसर पन्ना उलैट गेल। मुदा जेना गणेशकेँ प्रश्नक उत्तर पहिनेसँ तैयार होइ तहिना ठाँहि-पठाँहि बाजल-

“ऊहो भातिज बुझता तखन ने पित्ती बुझबैन- ‘भाए-भैयारी महींसिक सींग जखने जन्मल तखने भीन।’ पित्ती नै दियाद छिया, दियाद जकाँ रहबैन!”

गणेशक ठमकल बात सुनि अपनो मन ठमैक गेल। ठमैकते ठहकए लगल जे चालि-चलैन तँ सचमुच दिनेशक दब छैन्हे, जखने परिवारक चालि-चलैन दबत तखने परिवारिक सम्बन्धमे कमी औत...। बातकेँ मोड़ैत पुछलिऐ-

“झगड़ा किए भेल?”

मुस्की दैत गणेश बाजल-

“काका, जँ जड़ि बुझही तँ एक धाप जमीन-ले झगड़ा भेल। मुदा परिवार परिवार छिऐ, खापैड़क भुज्जासँ तस्मै धरि चुल्हिपर चढ़ै छइ।”

सुनि-सुनि हँसियो लागए मुदा हँसैयौक तँ अर्थ छै, कियो जीतला पछाइत हँसबैए तँ कियो घिनाइत हँसबैए। तँए हँसीकेँ पेटेमे रोकि पुछलिऐ-

“की एक धाप जमीन?”

“दुनू भैयारीमे गामक तँ सभ किछु बँटाइए गेल छैन, पाही पट्टी अपन-अपन छैन्हे तँए ओहो बँटाएले छैन। एकटा बीट केरा अछि। गौसार छइहे, खूब नमहर-नमहर घौर होइ छइ। ओही-ले मारि भेल।”

“नइ बुझलौं?”

“बँटै दिन दुनू भैयारीमे मेहदी जकाँ मेदहा रहैन, नै बँटलैन। किछु दिनक पछाइत आबि काका कहलैन जे गणेश चलह केरा बीट बँटैले। कहलयैन अहाँ भैयारीक बँटवारा छी, अपन बाँटि दियौ। एक धाप बढ़ा कऽ आड़ि दऽ देलखिन। बाबूओ तँ सभ दिन बाहरे रहै छैथ। तेते ने बाहरी काज रहै छैन जे महिनामे गोटे राति गाम-विश्राम होइ छैन। औगताएल रहने ई बाते बिसरा गेलैन। नानी गामसँ समाद आएल जे तांत्रिकजीकेँ एक घौर केरा पठा दइले कहियौन। ...आब अहीं कहू काका, एक तँ वेचारी नानी बुढ़ छैथ तैपर ओ सभ बाबूकेँ पाहुन नै कहि तांत्रिकेजी कहै छैन। हिनको अपन ने महात्म्य छैन।”

“हूँ।”

‘हूँ’क अर्थ गणेशकेँ की लगलै से ओ जानए। कहलिऐ-

“तोहर जिगेसा तँ भाइए गेल, आब कनी दिनेशोजीक जिगेसा कऽ लेबैन।”

तीन बजे तैयार होइते रही कि ललित पहुँचल। चाह पीब दुनू गोरे विदा भेलौं। सीमा टपिते ललित बाजल-

“काका, समुद्रक लहैर जकाँ गामो-घरमे लहैर अबै छइ।”

ललित कथी बाजए चाहै छल से नइ बुझि पेलौं। पुछलिऐ-

“की लहैर?”

बाजल-

“गाममे चोर अबै छेलै आकि आगि लगै छेलै, अवाज सुनिते ओकरा भगबै-मिझबै छेलौं। मुदा एहेन नीक बेवहारमे आगि मिझौनिहार अगिलगौन आ चोर भगौनिहार चोरिकरौनक संग चोरबा केना बनल?”

ललितक प्रश्न सुनि बकार बन्न भऽ गेल। मानि लेलिऐ जे ललितक विचार जरूर विचारणीय अछि, से तँ मोटर साइकिलपर नइ हएत। बजलौं-

“तूँ डरेबरी करबह आकि गामक जड़ि खोदबह।”

दिनेशजीकेँ भेँट करैत पुछलयैन-

“डाक्टर साहैब की सभ कहलैन?”

दिनेश-

“कहलैन जे मारि किछु बेसी लगि गेल अछि तँए ओ तँ निजाइते निजाएत। मुदा हँसुआक पीठ माथमे बेसी धँसल नइ अछि, ओहो जल्दीए ठीक भऽ जाएत।”

दुनू गोरे डाक्टर लग पहुँच पुछलयैन-

“डाक्टर साहैब, दिनेशजीक की स्थिति छैन?”

“नीके छैन।”

“पाइ-कौड़ी दुआरे इलाजमे कमी नै होइन।”

“एह! से कि दिनेशजीकेँ चिन्है नै छिऐन। अनाड़ी किए बुझै छी।”

घुमि कऽ आबि दिनेशजी लग दुनू गोरे बैस गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन-

“दिनेशजी एना किए भेल?”

जाबे दिनेश किछु बाजैथ तइसँ पहिने हुनकर पत्नीए टपैक

गेली-

"हमर कपारे जरल अछि, तँए ने एहेन जरल घरबला भेला। जँ से नै रहितैथ तँ एतबो ने बुझा कऽ कहल भेलैन जे छठिमे नैहरसँ एक घौर केराक मांग भेल अछि, ओहो कि कियो आन भेला, जेहने अपन तेहने ने अहूँकेँ।"

ललितकेँ चुटका सुतरल। चुटकी लैत बाजल-

"ई की कोनो नव गप छी, सासुरमे भैयारीक कोन बात जे समाजे सासुर जकाँ नीक-अधला करैए। तहूमे छठि सन पाबैन, बिना ठकुआ-केरा-भुसबाक केना हएत।"

आन समए दिनेशजीकेँ पत्नीक बोल जेहेन मीठगर आकि तेलगर लगैत होनि मुदा अखन नीक नइ लगलैन। लाल आँखि बना ललौन बोलीमे दिनेशजी बजला-

"समाज जिगेसा करए एला, तिनकर स्वागत-बात छोड़ि चण्डी-काली बनि जाउ। जखन गड्डीक-गड्डी आनि कऽ दइ छी, तखन रसिक पिया बनि जाइ छी, आ अखन कपरजरूआ बनि गेलौं। पत्नी छी पत्नी जकाँ रहू!"

दिनेशजीक तामसकेँ रोकैत ललित बीच-बचाव करैत बाजल-

"भौजी, एतबो नइ बुझै छिऐ जे अखन भाय-साहैबक देहमे चोटोक दर्द छैन आ कपारमे लोहोक बीन-बीनी हेबे करतैन। जरलपर जारैन देबै तँ धधड़ा नै धधकत! चुप रहू। भाय-साहैब, अंगूर हमहूँ अनने छी, खाइक मन होइए?"

दुनू बेकतीक झगड़ा जे हौनु मुदा एकटा प्रश्न तँ ठाढ़े भऽ गेल। ओ ई जे पति-पत्नीक बीच सम्बन्धक रेखा केहेन हेबा चाही। कियो पति चरित्रसँ बिगड़ल छैथ आ पत्नी चरित्रवान छैथ, तखन दुनूक बीचक सम्बन्ध केहेन होइ? कियो पत्नी घूसखोरीक विरोधमे रहैथ आ

पति दिन-राति घूस लथि तैठाम पत्नी-पतिक पाइक उपयोग नै करती?

दिनेशजीक बिगड़बसँ लाभे भेल। छुच्छे चाहक जगह जलखैयो आएल। दिनेशजीकेँ पुछलयैन-

"अहाँ सन लोकले नीक भेल?"

दिनेश हरदा बाजि गेला-

"दिनक दोख छल। नइ तँ साल भरिसँ दुनू भैयारी एकठाम बैस चाहो ने पीने छेलौं। पीबो केना करितौं, हुनको अपन दुनियाँ छैन, अपनो अपन अछि। महिनामे साइते गोटे राति गाममे बीतैए, नइ तँ बाहरे रहै छी। साँझमे आएले रही। खाइ बेर पत्नी कहलैन जे सासुरसँ केराक आढ़ैत भेल। छठम्मे दिन छठि छिऐ। दू दिन घरोमे रहतै। ..पुछलयैन तँ कहलैन जे अपने बीटमे केरा अछि। सतबजिया गाड़ी पकैड़ पटना जाइक रहए ऑफिसमे केते रंगक काज पछुआएल छेलए। अनदिना ने भीड़ो रहै छै, पाबैन-तिहारमे तँ सेहो कमिए जाइ छइ। तँए अन्हरोखे हाँसू नेने केरे बीट लग पहुँचलौं।"

टोकलयैन-

"अन्हरोखक माने?"

दिनेशजी तिलमिला गेला। अन्हरोख भोरोमे होइ छै, साँझोमे होइ छइ। सौंझुका अन्हरोख बदलैत-बदलैत अन्हारमे बदैल जाइ छै मुदा भोरका तँ फरिच होइत-होइत फरिछा कऽ दिन भऽ जाइ छइ। तँए ने जेबोक समए होइ छइ।

ततमत करैत देख दोहरबैत कहलयैन-

साँप-कीड़ा अन्हार-धुन्हारमे करजान सभमे रहै छै, तखन किए गेलौं। अच्छा, ओते भोरमे ओ सभ केना पहुँचला?

दिनेशजी बजला-

"सएह ने बुझि पेलौं, जे नियारि कऽ गेल रहैथ आकि ओहिना देखलैन तँ पहुँचला।"

पुछलयैन-

"ओ सभ तँ सतबजिया सुतनिहार छैथ तखन केना एकठाम भेला? खाएर छोड़ू। बुझा कऽ नै कहलिऐन जे कुटुमारे केरा जाएत।"

दिनेशजी-

"भातीजकेँ कहलिऐ, गणेश जेहने हमर सासुर तेहने ने तोरो ममहर भेलह। तखन तोहीं कहह?"

"गणेश की कहलैन?"

जाबे दिनेशजी बजितैथ तइ बिच्चेमे पत्नी झपैट कऽ बजली-

"हुनका सभकेँ[1] धनबूबूक ने भऽ गेल छैन। हम तँ सहजे दियादे भेलिऐन। सभ जनै छी जे दियाद आ दालि जेते गलै छै तेते सुअदगर होइ छइ। अनको की ओ सभ जीहमे लगबै छथिन।"

दिनेशजीक पत्नी–केकैयी–क बात सुनि ललित बाजल-

"भौजी, अहीं कोन उतकिरना केलौं। जँ एक घौर केरे छठिमे नैहर पठबैक छेलए तँ दिनेश भायकेँ झंझारपुरेसँ कीनि कऽ पठा दइले कहितिऐन।"

केकैयी बजली-

"मास दिन पहिनहि कहि देने छेलिऐन जे अपने बीटमे केरा अछि, तखन केना कीनि कऽ पठबैले कहितिऐन।"

दुनू गोरे गपकेँ रोकैत बजलौं-

"खाएर जे भेल से तँ भाइए गेल, मुदा कोनो धरानी नीक भऽ

[1] महेशक परिवार

गाम चलू, तखन बैस अपनामे मुँह मिलानी कऽ लेब।"

हमर बात केकैयीकेँ नीक नै लगलैन। बजली-

"यएह कहौथ जे कियो बेसी समंगर रहत तँ कम समांगबलाकेँ गामसँ भगा देत!"

मुस्की दैत ललित बाजल-

"केकरा के भगौलकै हेन। जे अहाँकेँ भगा देता। अनेरे मने-मन परेशान होइ छी। भैयारीक बात छी, हमसब समाज भेलौं, अहाँ जे कहै छी से बिना हुनकोसँ बुझने केना उत्तर देब।"

चिन्तित होइत दिनेशजी बजला-

"देखियौ, एक तँ ओहिना ऑफिसक काज सभ पछुआ गेल अछि, तैपर ऐठाम बरदा गेलौं!"

ऑफिसक काज सुनि पुछलयैन-

"अहाँकेँ ऑफिसक कोन काज अछि जे पछुआ गेल। नोकरी तँ नहि करै छी।"

दिनेशजी-

"अपन काज कहाँ छी, जखन समाजमे रहै छी ऑफिस जाइ-अबै छी, तखन अनकर काज नइ करिऐ, से नीक हएत?"

दिनेशजीक बात सुनि भेल जे ऑफिस तँ अखन लेन-देनक अखाड़ा बनल अछि। जइसँ बिनु लेन-देन करैबला अपनो काज छोड़ि रहल छैथ, तैठाम दिनेशजी अनको काज झोरा भरि-भरि करै छैथ तेकर की माने। बेपार कऽ रहला अछि आकि समाज सेवा? खाएर जे हौउ। तही बीच डाक्टर पहुँचला। ठाढ़े-ठाढ़ डाक्टर साहैब बजला-

"सुधारमे छी किने दिनेशजी?"

गिरगिराइत दिनेशजी कहलकैन-

"डाक्टर साहैब, देहमे दर्द तँ अछिए।"

जहिना गर्म चाहसँ मुँह पकल रहने, कनी कमो गर्म चाह ओहने गरम बुझि पड़ै छै तहिना दिनेशोजीकेँ होइत रहैन। मुदा पाबैनक लहकी देख सभ बिसैर बजला-

"डाक्टर साहैब, दबाइ सभ खाइते रहब, मुदा छुट्टी दऽ दिअ जे भोरुका सतबजिया गाड़ी ने छुटि गेल, जँ रौतुको एगरबजिया पकड़ा जाएत तैयो सबेर-सकाल काल्हि पटना पहुँच जाएब।"

हम दुनू गोरे विदा भेलौं। एक तँ अपनो ग्लानिसँ मन भरि गेल, दोसर ललितोकेँ किछु एहेन बात मनकेँ भटभटा देलकै जे बिसाइन होइत-होइत बिस-बिसाइत रहए। ओना दोहरा कऽ चाह पीऐक आग्रह दिनेशजीक बेटो आ पत्नियोँ करैत रहली मुदा सुचित मन जहिना खेबा-पीबाक इच्छा जगबै छै तहिना कुचित मन अनिच्छा सेहो जगैबते छइ। सएह दुनू गोरेकेँ भेल।

..हलाँकी दिनेशजी एते विचार जरूर केलैन जे ललितकेँ कहलखिन-

"ललित, एक तँ अहाँक समए लेलौं तैपर सवारियोक खर्च बढ़ा दी, से नीक नहि। तेलक पाइ लऽ लिअ।"

मुदा ललितोकेँ ठीकेदारीक ताउ रहबे करै बाजल-

"गाड़ी तेलक जे हिसाव जोड़ब तखन काज चलत। एतबो आशा हमरा कमाइक नै अछि। अहाँ अखन डाक्टर ऐठाम छी, केना नीक भऽ गाम पहुँचब ई दायित्व केकर छइ।"

कहि ललित आगू बढ़ि मोटर साइकिल पकड़लक। पाछूमे बैसते रही कि ललितक मुँहपर नजैर पड़ल। जेहने तुरुछल मन तेहने आँखिक भौ बुझि पड़ल। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नइ बुझि चुपे रहलौं।

कनी आगू बढ़ि ललित बाजल-

"काका, तेहेन दुनू भाँइक किरिया-करम भऽ गेल छै जे कहू दस-दस लाखक घर बनौने अछि। तैपर दस-दस लाख बेटी-बिआहमे खर्च करै छैथ! केतए-सँ आनै छैथ? दुनू भाँइ तेहेन बहुरूपिया बनि गेल छैथ जे यएह सभ समाजमे भाए-भैयारी बनए देथिन!"

ललितक गंभीर बात मन डोला देलक।

बजलौं-

"ललित, बेसी तँ नइ बुझै छी जे असल बात बाजब, मुदा एते तँ मन मानिते अछि जे जे जेते नीच-सँ-नीच जगह परहक पाइ उठबैए ओ ओकर ओते बेसी बेवस भऽ गेल अछि। जे मानवीयताक विपरीत भेल। जँ से नै भेल तँ कहू एक धाप जमीनमे केराक बीट, कोन सोनाक बड़का खान भेलइ, ओहूमे हजार-बजार किछु ने अछि। से साए-सैकड़ाक लालचमे भैयारीक जे परिचए देलैन से तँ देबे केलैन, जे समाजोक परिचए तँ दाइए देलैन!"

समाजक नाओं सुनिते ललितोकेँ शतरंजक सह भेटल। बाजल-

"काका, हमहूँ ठीकेदारेक जिनगी जीबै छी, एकर माने ई नै जे नीक-अधलाक विचार नै करै छी। छाती खोलि गामक चौराहापर बाजि सकै छी, जे भाय समाजक एक्कोटा लाल ई कहि दैह जे फलनमासँ अधला भेल, जँ भेल तँ अखनो ओकरा चर्चमे आनए चाहै छी। मुदा ई दुनू भाँइ[2] तँ कोनो मनुखे ने छी।"

"जाए दहक। जे जेहेन करत से तेहेन पौत।"

❍

शब्द संख्या : 2505

---

[2] महेश-दिनेश

ओझरी

कान्हपर डेढ़हत्थी ठेंगामे कुशक चारिटा आँठी गौंछ कऽ टँगने सुकला काका दू बाँस फरिक्के रहैथ कि नजैर पड़ल। ओना पाँच बजे भोरेसँ जेरक-जेर लोक खुरपी-ठेंगा नेने कुश उखारए जाइतो छला आ उखाड़ि-उखाड़ि घुमितो छला। तैबीच सुकला काका सेहो रस्ते-रस्ते दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ बाधसँ घर दिस अबै छला। कनी फरिक्के देख नजैर तँ हुनकेपर छल मुदा किछु बजलौं नहि।

ताबे सहैट कऽ एक बाँस आगू ओहो बढ़ला। कान्हपर कुशक भार रहैन मुदा मन तीन मासक ओझराएल काजपर छेलैन तँए मनो खुशी छलैन आ मुस्की सेहो ठोरपर छेलैन। खनहन मन खरहर डेगक संग हरियर मुँह देख भेल जे भरिसक सिरगर कुश असानीसँ उखड़लैन तँए मन हरियाएल छैन। फेर भेल जे भरिसक धड़गर खुरपी हेतैन तँए असानीसँ कुश उखड़ल हेतैन, तेकर खुशी हेतैन।

..गुन-धुन मन करिते छल ताबे एक लग्गी लग चलि एला। ओना कुश तँ कुशे छी कियो जड़ि भिरा सिर-तिर नेने उखाड़ै छैथ तँ कियो ऊपरेसँ काटि चटाइ बनबै छैथ, उस्सरक उपजा तँ छीहे। जइ जमीनमे आन किछु ने उमझैए, ओइमे कुशे उमझैए। लग अबिते पुछलयैन-

"काका, मन बड़ हरियर देखै छी केतो किछु पेलौं हेन?"

कक्काक कान्हपर कुशक भार मुदा अपन तीन मासक

ओझराएल काजकेँ आरो ओझराएबपर छेलैन। 'पबै'क नाओं सुनि जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

"पएब की, ने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ!"

काका गपक कोनो अर्थे ने लगल, किछु बुझलो रहैत तखन ने। मनमे भेल जे रस्ते-रस्ते अखन लोक चलैक ढबाहि लगल अछि, नीक हएत जे दरबज्जेपर बैस नीक जकाँ पुछि लिऐन। कहलयैन-

"काका, अहाँ तँ टहलबो-बुलब छोड़ि देलिऐ। दरबज्जेपर चलू, चाहो पीब लेब आ गाम-घरक किछु गप्पो कऽ लेब।"

चाहक नाओं सुनि कक्काक मन चपचपेलैन। किएक तँ डेढ़-दू घन्टा बिलम भऽ गेल छेलैन। बजला-

"चाहे नहि, पानियोँ पीबह।"

जहिना आग्रह केलिऐन तहिना एक चेकी चढ़ा ऊहो मानि गेला मुदा बीचमे एकटा उकड़ु काज तँ आबिए गेल। ओ ई जे पानि पीबैक की माने। खेनाइसँ लऽ कऽ छुच्छे पानि धरिक नमगर प्रश्न आबि गेल।

ततमत करिते रही कि धाँइ-दे सुकला काका बजला-

"आँगनमे चाह बनबए कहि दहुन आ कलपर सँ एक लोटा पानि नेने आबह।"

सुनि मन हल्लुक भेल। अपने आँगन दिस बढ़लौं आ काका दरबज्जा परहक ओसारपर कुशक भारो आ खुरपियो रखि चौकीपर बैसला।

कलपर सँ लोटा नेने आबि आगूमे देलिऐन।

देखते बजला-

"आब की पानि पीबैक लोटो रहल, पहिने जे धिया-पुताक लोटकी छल से भऽ गेल आब लोटा!"

कहि उठा कऽ एक्के छाँकमे गट-दे पीब गेला। भेल जे भरिसक छाँक नइ पुरलैन। पुछलयैन-

"एक लोटा आरो आनि दी?"

मनाही करैत बजला-

"आब किए अनबह। जेतबे अनलह ओतबे पियासो छेलए। बैसह। की पुछए लगल छेलह?"

कक्काक हल्लुक मन देख भेल जे गप करैक मूडमे आबि गेला, जँ पहिने चाहो पीआ देबैन तँ बिना कौमे-फुल स्टौपक व्याख्यान दऽ देता। कहलयैन-

"पहिने चाह पीब लिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइ छइ।"

तैबीच आँगनसँ चाह आएल। गिलास पकड़ैत काका बजला-

"आइ कुशी अमावस्या छी, अदहा भादो बीत गेल।"

कनी गुम होइत फेर बजला-

"केतेक धुअल-पखाड़ल पहिलुका लोक सभ छला जे एक दिन माघ बितने नाचि कऽ बजैथ जे 'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी।' कहू जे ई कोन हिसाव भेल? तीनियोँ-चौथाइसँ कम भेल। मुदा से नहि, केते हुनका सभमे अडिग बिसवास छेलैन जे जखन एक दिन माघ सन जाड़ काटि सकै छी तखन उनतीस दिन किए ने कटत!"

कक्काक बात सुनि भेल जे चाहेक ताउमे काका बहैक गेला। मनमे कोनो प्रश्न अछि आ ओ केम्हरो बहैक गेला! मुदा बीचमे टोकबो नीक नहि। जखने रूकता तखने पुछबैन। गर अँटिते पुछलयैन-

"काका, ओ जे कहलिऐ?"

जेना कक्काक नजैरसँ उतैर गेल छेलैन। बजला-

"की?"

"ने अपने पेलौं आ ने पाबए देलिऐ?"

सुनिते जेना धक-दे मन पड़लैन। बजला-

"तीन मासक काज तेना ओझरा गेल जे ने अपने किछु पेलौं आ ने आने कियो पौलक।"

"से की?"

'से की' सुनिते जेना सुकला काका पसीज गेला। जहिना कोनो बच्चा वा सियानकेँ बेथित मनक बेथा कियो सुनए चाहलापर पसीज जाइत तहिना कको पसीज गेला। बजला-

"तीन मासक जे ओझराएल काज छल ओकरा छोड़ि देलिऐ। जइसँ मनो हल्लूक भऽ गेल।"

कक्काक झँपाएल-तोपाएल बातक किछु अरथे ने लगल। मुदा जखन सोझहामे बैसले छैथ तखन पुछैयोक तँ अधिकार अछिए। ई नहि ने जे जे बजलौं से सुनि लिअ। दोहरा कऽ किछु ने बाजब। जँ कोनो प्रश्न उठत आ ओकर खण्डन-मण्डन नै होएत तँ ओकर रस केना निकलत। आ जाबे रस नइ निकलत ताबे कथी पीब रसिया बनि रसाएब..? पुछलयैन-

"काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ। नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?"

नमहर साँस छोड़ैत काका बाजए लगला-

"तीन मास पहिने रेडियो स्टेशनक एकटा अपेछित फोन केलैन जे काल्हि कथा पाठक समए भेटल से जरूर अबिऐ। अखन औगताएल छी। काल्हि बारह बजे जखन पहुँचब तखन आरो गप हेतइ।"

कहि फोन काटि देलैन। कथा लिखिते छी, बचिते छी, ओतौ

जा कऽ बाचि देबइ..। मनमे कोनो बेसी लहैर नै उठल। घरमे केतेको कथा ऐछे, अपना दहीकेँ के खट्टा कहलक जे कहबै। जे मन फुरत से कथा लऽ लेब जा कऽ पढ़ि देबइ..!

रेडियो स्टेशनक नाओं सुनि काकाकेँ पुछलयैन-

"पहिनो कहियो कथा-पाठ केने छेलिऐ आकि पहिल बेर छल?"

प्रश्न सुनि काका ठमैक गेला। जेना किछु पेटक बात मने ने पड़ैन तहिना किछु समए घुरियाइत बजला-

"पहिल बेर छल। ओहो तँ भऽ गेल। नइ तँ देखै नै छहक जे युनिवर्सिटी होइ आकि कौलेज, सरकारी ऑफिस होइ आकि कोनो संस्था, किछु गोरेक हाथक खेलौना बनि गेल अछि। जहिना सराधक भोज बुझै छै तहिना मुड़न, उपनैन बिआहक भोज बुझै छइ।"

काकाकेँ बहकैत देख छोर तानि पुछलयैन-

"काका, रेडियो स्टेशन गेलिऐ?"

जेना एकाएक काकाक नजैर अपनापर पड़लैन। बजला-

"किए ने जइतौं। जुआ पाशापर जाइकाल जहिना युधिष्ठिर कहने छला जे बजौलापर बीखो पीआ देत सेहो स्वीकार अछि। दोसर दिन सबेरे दस बजे खा-पी कऽ विदा भेलौं। दस-पनरह मिनट बारह बजेमे बाँकीए रहए, तखने पहुँच गेलौं। चिन्हा-परिचयक अपेछित छोड़ि दोसर नहि। मुदा ओहो बाटे तकैत रहैथ। पहुँचते अपना ऑफिसमे लऽ गेला। कुशल-समाचारक पछाइत कहलैन जे कथा देखए दिअ। ..नमहर कथा दसे मिनटमे केना पढ़ल जाएत। कम-सँ-कम अदहा घन्टा समए चाही। गुन-धुन करैत कहलैन जे किछु पाँतिकेँ निकालि दियौ। कथा नमहर अछि आ समए कम। ..मनमे भेल जे पुछिऐन, एकटा कथा लिखैमे जेते समए लगै छै तेतबो दिन पहिने ने जानकारी हेबाक चाही, हड़बड़ी बिआहमे तँ कनपटी सिनूर होइते

छइ। मुदा मनमे तेते खुशी रहए जे सभ बात तर पड़ि गेल। कथामे सँ टोबि-टोबि किछु पाँति निकाललौं। निकालि पुन: अपेछितकेँ देलिऐन। मुदा नमहर देख ओ अपनो निकाललैन। ताधैर कथाक रूप कुरतासँ अधकुरता आ साँचीसँ फाँड़ धरि पहुँच गेल!"

पुछलयैन-

"तेकर पछाइत की भेल?"

बजला-

"समए भेटल। कम्प्यूटरक आगूमे बैसलौं।"

"असगरे आकि आरो कियो?"

"एक्के घरमे दू हन्ना अछि। बीचमे शीशाक देबाल लगल छइ। देख तँ सभ सकै छी मुदा अवाज रूकि जाइ छइ। जखन बैसलौं तखन दोसर हन्नामे जे बैसल रहैथ ओ हाथक इशारासँ कहबोले करैथ आ चुपो होइले कहैथ। होइत-होइत बीस मिनटमे कथा बिसरजन भेल। फेर कम्प्यूटरमे काट-छाँट भेल। बीस मिनट उतैर कऽ तेरह मिनटपर अँटकल। ताधैर कथाक रूपे बदैल गेल! जहिना सजल-धजल देह अन्डर बीअरमे बदललासँ होइत तहिना भऽ गेल! खाएर जे भेल, नइ मामासँ कनहो मामा तँ भेल।"

पुछलयैन-

"पाइयो देलक?"

जेना केते भारी अधिकार भेट गेल होनि तहिना गुम्हरैत काका बजला-

"पाइ किए ने देत। मुदा तइमे की भेल से सुनह। जहिना सभ दूटा तीनटा, चारिटा अपन नाओं रखैए तहिना दूटा नाओं अपनो अछि। दूटा कागतपर दू बेर हस्ताक्षर करौलक दुनूपर दुनू नाओं लिखि

देलिऐ। दू घन्टाक पछाइत जखन विदा होइपर भेलौं आकि चेक बनौनिहार कहलैन- 'अहाँक दुनू हस्ताक्षर नै मिलैए, तँए चेक नै बनल।' कहि दोसर कागत फेर देलैन। हस्ताक्षर कऽ देलिऐ। चारि बजि गेल। समए ओठर भऽ गेल। कहलैन- 'आइ चेक नहि बनि सकल। अहाँ जाउ, पठा देब!' कहलयैन- 'बड़बढ़ियाँ।' विदा भेलौं। विदा भऽ गेलौं, मुदा ओझरीकेँ जनमौने एलौं।"

एक ओझरी मेटाइत दोसर ओझरीक जनमैत सुनि जिज्ञासा भेल पुछलयैन-

"से की?"

मुदा कक्को सतर्क छला। बजला-

"पहिने जे कहै छिअ से सुनि लएह, नइ तँ फेर वौआ जाएब। जखने कथ्थकर वौआइत तखने सुनक्कर वा पढ़क्कर तँ वौएबे करत किने?"

कहलयैन-

"हँ से तँ वौएबे करत!"

बजला-

"मन तेते तमैक गेल जे रहए अखन जँ राजा रहितौं तँ राज-पाट लूटा दैतिऐ। मुदा गाड़ी दुआरे, पाँचे साए टाका छल। किए तँ दिल्लीमे बीसे रूपैआक जरूरत होइ छै, अपना ऐठाम तँ से नहि, पान साए तकक कारोबार अछि। मुदा सेहो बिसैर गेलौं। चारि साए टका भरि दिनमे गमा देलिऐ।"

"तँ चेक पठौलैन की नहि?"

"आखिर किछु छिऐ तँ सार्वजनिक संस्था ने छिऐ। पोस्ट ऑफिसक माध्यमसँ बीस दिनक पछाइत पठौलैन। संस्थो तँ

सार्वजनिके छी किने, सभकेँ अपन-अपन दायरा छइ, अधिकार छइ। बीस दिनक पछाइत एकठामसँ चेक चलल दोसर ठाम बीस दिन फेर अँटैक, बेरहटिया करए लगल। खाएर जे हौउ, मुदा हाथमे तँ एबे कएल।"

बिच्चेमे काकाकेँ पुछलयैन-

"काका, तब तँ जीतलयैन?"

'जीतब' सुनि काकाकेँ मीरा-राधा मन पड़लैन, एक जीतबे ने कएल दोसर हारबे ने कएल..!

मुस्की दैत बजला-

"कागतेक रूपैआ बनै छै आ रूपैयो कागत बनि जाइ छइ।"

उड़नखटोला-गप सुनि चकविदोर जकाँ हुअ लगल मुदा जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिऐ लेब नीक हएत। पुछलयैन-

"एना केना भेल?"

मचकीक आस मारि काका बजला-

"चेक जखन हाथ आएल तखन भेल जे रूपैए आबि गेल। जँ दसटकही नोट दइत तँ एकथाक होइतए तइसँ नीक जे बक्सामे जगहो ने छेकत। कोनो किताबमे घोंसिया देबइ।"

कक्काक बात सुनि कहलयैन-

"बैंकमे नै जमा केलिऐ?"

जेना केतौ काका हारि चुकल छला, तहिना बजला-

"बौआ, की कहबह? भेल जे पराते भने जँ बैंकमे जाएब तँ सभ कहत जे देखियौ खापैड़ केते तबधल छै! तँए सात दिनक पछाइत बैंक गेलौं।"

बजलौं-

"खाएर, बैंक तँ पहुँचलौं ने।"

पहुँचब सुनि बजला-

"की पहुँचब दैवक कपार! भाँज लगेलौं तँ पता लगल जे पहिल पालीमे लेन-देन चलै छै, दोसरमे आन काज। एक बजे बड़का रौदामे फेर गेलौं। आठ-दस गोरेक बीच मैनेजर साहैब बैसल रहैथ। भीड़ देख मनमे भेल जे पहिने जे एला हुनकर काज ने पहिने हेतैन। ब्रेंचपर चारि-पाँच गोरेक बीच बैसलौं। बैसल-बैसल समए ओठर भऽ गेल, उनैह गेल मुदा दरबारक भीड़ नै कमल। भीतरमे ठहाकापर ठाहाका चलैत रहइ। साढ़े चारि बजे जा कऽ मैनेजर साहैबक आगूमे चेक देलिऐन। चेक देखते बजला, 'बैंकमे देखते छिऐ जे सभ गाड़ी पकड़ए चलि गेला। असगरे छी, हमहूँ चलैए-पर छी, कहि उठि गेला।"

पुछलयैन-

"तब तँ काज नै भेल हएत?"

बजला-

"काज केना होइत। समैये उनैह गेलइ!"

"बैसले-बैसल उनैह गेल?"

"कहलयह से नइ बुझलहक। दरबारे ने टुटल, मुँह तकिते रहि गेलौं। दोसर दिन फेर गेलौं। समैपर चेक देलिऐन। रजिष्टर उनटा मिलौलैन तँ कहला चेके गलती भऽ गेल। खातामे किछु नाओं अछि आ चेक किछु नाओंसँ अछि। कहि चेक घुमा देलैन।"

"एना किए भेल?"

"ओहुना देखते छहक जे दूटा-तीनटा चारिटा नाओं लोक रखिते अछि, कियो अधकट्टी तँ कियो गोल गोला, मुदा हमरा से नै भेल। गमैया नामक अधारपर भोँटर लिस्ट बनल, भोँटर लिस्टक अधारपर

परिचय पत्र आ राशनकार्ड बनल। ओही अधारपर बैंकमे खाता खुजल। मुदा स्कूलक नाओं कागजे-कागजे वौआइत रहल। ओही अधारपर चेक बनल। मैनेजर साहैबसँ पुछलयैन तँ कहलैन जे एफिडेफीट लगा कऽ नाओं चढ़ि जाएत। संतोष भेल। चलि एलौं। दोसर दिन बैंकक काज छोड़ि कऽ कोर्टक काज दिस बढ़लौं। रबि रहने एक दिन ओहिना चलि गेल। दोसर दिन एफीडेफिट बनेलौं। तेसर दिन बैंकपर गेलौं तँ पता लागल जे मैनेजर साहैब सस्पेंड भऽ गेला। साते दिन नोकरी शेष छेलैन तही बीच सस्पेंड भऽ गेला। आश्चर्य भेल जे सेवा निवृत्ति होइसँ एक पनरहिया अपने कागत-पत्तर सरियबैमे लगि जाइ छइ। तखन घरमुहाँसँ बहरमुहाँ केना भऽ गेला। कैसियरसँ पुछलापर पता लगल जे इन्दिरा अवासक कमीशनमे गोल-माल भेल तँए सस्पेंड भेला। ऐगला सप्ताह धरि दोसर आबि जेता। ओ तँ पुन: घुमि कऽ नहियेँ औता किएक तँ केतबो जल्दी फरिछाएत तँ निच्चाँ-ऊपर करैत सप्ताह बीतिए जेतैन। सुनि चलि एलौं।"

पुछलयैन-

"फेर की केलिऐ?"

'फेर की केलिऐ' सुनि काका बजला-

"दोसर सप्ताह गेलौं, ता नवका मैनेजर आबि गेल रहैथ। असगरे बैसल रहैथ, जा कऽ सभ बात कहि कागत देलिऐन। कागत देख रखि लेलैन। परिचए-पातक गप-सप्प उठल। नीक संस्कारी परिवारक छैथ। कहलैन, ई तँ मैनेजरक अधिकारक काज छी जे उर्फ करि कऽ नाओं चढ़ा लैतैथ। अनेरे एते करैक कोन काज छेलइ! चेक देख कहलैन जे एकर समैये समाप्त भऽ गेल।

..सुनि चोटे घुमि कऽ आबि कागतक बीच रखि देलिऐ।"

पुछलयैन-

"दोहरा कऽ किए ने फेर बनबा लेलौं?"

बजला-

"सौंसे रामायण पढ़ि गेलौं, सीताक पते नहि! जेते आमद हएत तइसँ केते बेसी खर्चे भऽ गेल तखन अनेरे कोन ओझरीमे फेर पड़ितौं। छोड़ि देलिऐ।"

❍

शब्द संख्या : 1970

मुसहैन

भोरेसँ बेलबा घुसकीपट्टीवालीक हरियर मन देख तारतम करैत रहए जे की बात छिऐ जे यएह घुसकीपट्टीवाली छी जे कहियोकाल जहिना खढ़ देख लप-दे आगि पकैड़ जरा दइत तहिना बुझि पड़ै छल आ आइ की बात छिऐ..? मुदा चेहरा केतबो मेकअप किए ने कऽ लिअए मुदा हृदैक बात सोलहन्नी तँ नहियेँ बुझि सकैए...।

घुसकीपट्टीवालीक खुशीक कोनो अरथे ने बेलबाकेँ लगइ, दिन बीत गेलै मुदा भाँज नै लगलै। भाँज लगलै रातिमे खाइ-काल जखन मनोनुकूल खेसारी दालिक पाँचटा कचौड़ी थारीमे देखलक। सेहो भाँज सुपते कहाँ लगलै, पुछला पछाइत लगलै। भाँज लगिते बेलबाक मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइत मुहसँ फुटलै-

"हँ-हँ चेनसँ सूतब किने। अनेरे नान्हिटा गपमे भरि दिन मड़ियाइत रहलौं।"

बेलबाकेँ अपन खेत-पथार नहि, ने हरे-बरद आ ने दोसर समांगे जे एक समांगक कमाइसँ गुजर चलैत आ दोसर बँटाइ खेत करैत, सेहो ने रहइ। मुदा भगवान जँ खाइले आ बजैले मुँह चीरलखिन तँ कमाइक चालि चलैले हाथो-पएर देलखिन। किछु हौउ, ई पैरुख तँ बेलबामे छइहे जे अपन बाँहुबलसँ गामक मुसहैनपर अधिकार बनेने अछि। ऐ भीर दोसराकेँ तँ नहियेँ आबए देने अछि। आबियो केना सकै छै, हल्लुक माटि ने बिलाइ तकैए, भारी-भीरमे किए जाएत। समुद्र

मथन केला पछाइत यएह ने बँटवारा भेल जे माटिक ऊपरका अनका दिस बँटा गेल आ नुका कऽ तरमे रखलाहा बेलबाक हिस्सा भेल।

दोसर साँझ। दिन भरिक टालाक काज उसाइर, पोखैर-झाँखैर दिससँ आबि चीलमक चौखरीमे बेलबा बैसल। घुसकीपट्टीवाली तइसँ पहिने चौखरीकेँ बहारि, चटकुनी बीछा, एकटा गोइठाँ सुनगा कऽ रखि देने छेली। बेलबाकेँ बैसते तेतरा, झिंगुरा, लेलहा सेहो पहुँचल। चारू गोरेक बीच अजीव प्रेम। जेना प्रेमास्पद होइत तहिना एक दोसर-ले जान अरपनिहार। ओना चारूक जिनगीमे दूरियो आ लगिचो परिवार बनौनहि छइ। अपन-अपन किछु चालियो-परकीत तँ छइहे। तेतराक पहिलुक घरवालीकेँ जहिया बम्बैया छौड़ा[3] उड़हाड़ि कऽ लऽ गेलै तहिए-सँ जेना दुनियासँ विरक्ति भऽ गेलइ। मनमे सदिकाल होइ जे बिनु इज्जतक जिनगी ओहने होइए जेहेन बिनु गमकक फूल। ओना निर्णए करैमे तेतरा औगताएल जरूर। ओ ई नइ बुझि पेलक जे पतियो-पत्नीक बीच बेकतीगत चालि होइ छइ। जे इज्जतक खाम्हीक काज करै छइ। बुझबो केना करैत। अर्द्धांगिनी बुझि सभ किछु अदहा-अदही बुझैत। ओना, जइ दिन स्त्री घरसँ पड़ेलै तइ दिन तेतराकेँ ओते दुख नै भेलै, मुदा मनमे सोग तँ आइयो समाएले छइ। खाएर.., तैयो जिनगीमे हारि नहियेँ मानलक। हारियो केना मानैत एकटा गेलै, दोसर आनि तीनटा बेटा-बेटीक संग परिवार तँ बनौनहि अछि।

चारू गोरे एकठाम होइते जेना ऑफिसमे टेबुल-टेबुलक काज अलग-अलग अंगक होइत तहिना चारू गोरे अपन-अपन काजमे जुटि गेल। झिंगुरा गाँजा, चीलम निकालि आगूमे रखलक। आमदनी परहक टीपगर जहिना गाँजा तहिना समस्तीपुरक बड़की तमाकुल।

[3] बम्बइमे नोकरी केनिहार

ओना बेसीकाल चारू गोरे भाँगे पीबैत अछि। बाड़ी-झाड़ीमे फूलक समए भांगक फूलो झाड़ि लइए आ वसन्ती गाछ बीछि-बीछि सुखा-सुखा कऽ रखियो लइए, मुदा परसुका मुसहैन चारूक सुरखीए बदैल देलक, तँए जेहने टीपगर तमाकुल तेहने गाँजा। ओना चारू गोरेक परिवार एकरंगाहे छै, कनियेँ तल-बितल छइ। झिंगुराक दोसर आमदनी छइ जे दोसर-तेसरकेँ नै छइ। ओ छिऐ गछचढ़नी घरवाली जे गाछपर चढ़ि जारैन तोड़ै छै। ओना, लग्गियो रखने अछि मुदा केहनो-केहनो घोरनाह गाछपर चढ़ि कऽ फुदनी जारैन तोड़ि लइए। तइले कोनो रोको-राक नहियेँ छइ। सूखल जारैनक रोको किए हएत। गछचढ़नीए दुआरे सरही आमक गाछीक ओगरवाहि सेहो लोक दइते छइ...।

आगूमे गाँजा अबिते लेलहा लटबए लगल। बेलबा कटकीसँ चीलम साफ करए लगल। तेतरा गोइठाकेँ तोड़ि घुर जकाँ लगा गूल बनबए लगल। चीलम साफ कऽ बेलबा गिट्टी खोखरलक। गाँजा लटा, तमाकुल मिला चीलममे बोझि लेलहा तेतरा दिस बढ़ौलक। गूल चढ़ा तेतरा बेलबा दिस बढ़ौलक।

चारू गोरेमे बेलबा सभसँ जेठ। बेलबामे सभसँ प्रमुख गुण छै जे केकरो बनहौटा जन नइ छी। ने नीक-बेजामे आ ने पाबैन-तिहारमे केकरोसँ एको सेर आकि एको पाइ कर्ज लइए। कियो 'भैया' तँ कियो 'गुरूकाका' सेहो कहै छइ।

आगूमे चीलम रखि बेलबा भोग लगबैत फुस-फुसा कऽ मंत्र पढ़ए लगल, 'जेकर जे हक-हिस्सा छह से अपन-अपन लऽ जा।' तीन बेर पढ़ि दम मारि, तेतरा दिस बढ़ौलक। मुदा धुँआ मुहेँमे रखि शरबत जकाँ घोरए लगल।

दम मारि तेतरा जखन झिंगुरा दिस चीलम बढ़ौलक तखन

बेलबा मुँहक धुँआ निकालि बाजल-

"परसुका सगुन बढ़ियाँ रहल!"

बेलबाक सगुन सुनि लेलहा खिसिया कऽ बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

लेलहाक तामस बेलबा बुझि गेल जे भुखाएल बिलाइ खौंझाइते छइ। जखन ओहो दम मारत तखन ने मन असथिर हेतइ। ताबे लेलहा-हाथ चीलम पहुँच गेल। जिराएल लेलहा रहबे करए, तेते जोरसँ दम मारलक जे एक बित धधड़ा चीलमसँ धधैक गेलइ। दम मारि जहिना हाथसँ चीलमक धधड़ा मिझेलक तहिना अपनो मनक धधड़ा मिझा गेलइ। मुदा तेतरा लेलहाक बातकेँ पकैड़ लेलक। दोहरौनी भाँज जाबे चीलमक शुरू होइ तैबीचमे सवाल फँसि गेल। अपनेमे दू पाटी बनि गेल। दू गोरे कहै जे सगुन-तगुन किछु ने होइ छै आ दू गोरे कहै जे होइ छइ। तेहाला कियो नहि, जेकरा दुनू पंच मानि फरिछबैत। रूकल चीलमकेँ धुँआइत देख लेलहा बाजल-

"झगड़ा ने दन चुन-तमाकुल किए बन्न हौ, गप्पो चलतै आ चीलमो चलए दहक।"

जहिना एकघोंट चाह पीला पछाइत आकि एक कौर खेला पछाइत दोसर अपने अबै लगैत तहिना लुबलुबाइत लेलहा बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

दोहरा कऽ बेलबा दम मारि चीलम आगू बढ़बैत बाजल-

"सगुन बड़ पैघ गुण छिऐ, तँए एकरा दोखी बनाएब उचित नइ हएत?"

बेलबा आ तेतराक विचार एक बटिया रहै तँए एक दिस भऽ गेल आ झिंगुरा, लेलहाक एक बटिया रहै तँए दोसर दिस भऽ गेल। दू-

दू गोरेक पाटी चारू गोरेक बीच बनि गेल। बेलबाक विचारकेँ रोकैत झिंगुरा बाजल-

"सगुनकेँ दोखी कहाँ कहै छिऐ, जँ गुण सगुन भऽ जाए तखन तँ जरुर नीक भेल, मुदा जँ कोनो काजे केतौ विदा होइ आ माछ-दहीसँ सगुन बनाबी एकरा हम नीक नै कहबै?"

बेलबाक प्रश्नकेँ ठमकैत देख सोंगर लगबैत तेतरा बाजल-

"दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक खेल चलै छै तँए अनका छोड़ह, अपने बात लएह। परसू जे छ-छ पसेरी मुसहैन भेलह तेकरा की कहबहक?"

तेतराक बातकेँ लेलहा लपैक कऽ पकड़ैत बाजल-

"जँ माछे-दहीसँ सगुन बनिते तँ मछिबारे आ माले-जाल बलाकेँ सभ किछु भऽ गेल रहितै, दिन-राति ओकरे देखैत-सुनैत रहैए...।"

तैबीच पहिल चीलमक गाँजा जरि गेल। गुलाब तकथीपर लटाएल-काटल गाँजा रहबे करै, झिंगुरा चीलममे बोझि आगि चढ़ा बेलबा दिस बढ़ौलक। ओना, तइले अपना बीच कोनो मलिनता केकरोमे नै रहइ। करणो रहै जे एक्के-एक्के दम ने कियो लगबैए। बरबैरक हिस्सा ने भेल। बड़ बेसी हएत तँ कियो दमगर अछि तँ कनी बेसी जोरसँ दम खींच लेत, तइसँ बेसी की करत..!

मुदा तैसंग ईहो तँ रहबे करै जे पेटगरोकेँ बेसी खेनो पेटे भरै छै आ कम खेनहारकेँ सेहो पेट भरिते छइ। धुँआ फेकैत बेलबा बाजल-

"परसू जे अपना सभकेँ ओते मुसहैन भेल ओकरा नीक सगुन नै कहबै तँ की कहबै?"

जेना लेलहाकेँ प्रश्नक उत्तर बुझले रहै, तहिना बाजल-

"तूँ सभ भलेँ जे कहक मुदा हमर मन नै मानैए। तीन सालक

बाढ़िमे धान तँ उपैज गेल मुदा मुसहैन किए निपत्ता भऽ गेल। जे चीजे निपत्ता अछि ओ सगुन केना भऽ पौत?"

लेलहाक बातमे चोंगरा भरैत झिंगुरा बाजल-

"दिल्ली गेल छहक, रेलबे टीशनमे जे मूस देखबहक तँ बिसवासे ने हेतह जे मूस छी आकि बिलाइ।

मुदा गाममे तँए देखते छहक रौदी होइ छै तैयो मूसकेँ पड़ाइन लगि जाइ छै आ बाढ़िमे तँ सहजे, जँ नै भागत तँ डुबकुनियाँ काटि-काटि मरबे करत। ई तँ गुण भेल जे सुभितगर समए भेल तँए धानो उपजल आ मूसक बाढ़ि एने मुसहैनो भेल।"

तेसर चीलम चलैत-चलैत चारू गोरेक मन भरि गेल। कौल्हुका विचार करए लगल। तेतरा बाजल-

"काल्हि दू ठाम काज अछि। एकठाम तीनगोरेक आ दोसरठाम दू गोरेक।"

तेतराक बात सूनि झिंगुरा बाजल-

"तीन गोरे तँ जोड़ियाएल छी मुदा पाँचम नै रहने दोसर केना हएत?"

बेलबा बाजल-

"किए ने हएत? दुनू काजकेँ मिलानी करि कऽ देखहक। टुकड़ी बनै-जोकर जँ हेतै ओकरा टुकड़ी बना लेब आ जँ नै बनैबला हेतै ओकरा पूरा कऽ करब।"

बेलबाक बात सुनिते लेलहाक मन मानि गेलइ। बाजल-

"बेस तँ भैया कहलहक। दुइए-टा ने भऽ सकै छै, या तँ पाँचम केनिहारकेँ भाँजह या तँ काजेकेँ टुकड़ी कऽ दहक।"

तेतराक मन सीकपर टाँगल, तँए खोलि कऽ तँ नहि बजैत मुदा

मुड़ी डोला-डोला हुँहकारी भरैत रहए। सीकपर टाँगल ई रहै जे परसू जे मुसहैन खुनलक तइसँ नमहर दोसर रहइ। ओना, ईहो मनमे उठै जे ऊपरका काज ने हूसि सकै छै, तरका काजपर तँ एकाधिकार ऐछे, ओइमे दोसर काइए की सकैए। मुदा तँए की, काज करए जाएब तइसँ दोबर-तेबर बेसी ओइमे हएत, तेकरा पहिने करब आकि जइमे कम हएत, तेकरा करब...।

गाममे खेती छोड़ि दोसर काज नहि। जे छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित रहैए। छोट-छोट काज रहने कम केनिहारक जरूरत पड़ै छै, तँए बोनिहार-मजदूरक बीच संगठन नहि। मुदा शहर-बजारक बीच तँ से नहि अछि। पैघ-पैघ कारखाना रहने बेसी मजदूरक जरूरत पड़ै छइ। तहूमे खेती-बाड़ीक काज दिने भरिक होइ छै जखन कि कारखाना चौबीसो घन्टा बारहो मास चलैत रहैए। तैसंग ईहो होइ छै जे कारखाना घरमे बनल रहैए जइसँ हवा-बिहाड़िक संग झाँटो-पानिमे चलिते रहैए मुदा से खेतीमे तँ नहि होइए। ओना शहरो-बजारमे कारखाना सभ रंगक भेने मजदूरक कमी-बेसी होइ छै। मुदा जेना-जेना बजार बढ़ैत जाइए तेना-तेना कारखानोक रूप बढ़ल जाइ छै, जइसँ खुदरा मजदूर थौकक रूपमे थकियाइत जाइए। जेकर विपरीत गतिए किसानी अछि। जेना-जेना समए आगू बढ़ैए तेना-तेना परिवारो बढ़ै छै आ परिवार बढ़ने खेतो विभाजित होइत जाइ छइ। खेत विभाजित भेने काजक रूप सेहो छोट होइत जाइ छइ। दोसर ईहो होइ छै जे जेकरा बेसी खेत रहल ओ मशीनक सहेतासँ काज लइए जइसँ मजदूरक संख्यामे कमी अबै छइ। तँए जहिना शहर-बजारक श्रमिक संगठित होइत जाइए तहिना गामक मजदूर अंसगठित होइत जाइए। तैसंग दोसर ईहो छै जे गाम-घरक अधिकतर बोनिहार बन्हुआ बनल अछि, जखन कि शहर-बजारमे से नै छइ। ओना शहरो-बजारक रूप बदैल रहल अछि, लोकक (श्रमिकक) काज लोहाक मशीन

हथियौने जा रहल छै जइसँ हजारक-हजार हाथ निकम्मा भेल जा रहल छइ। जहिना सभ गामक काज तहिना अँहू गामक काज रहने, ने काजमे एकरूपता आ ने श्रमिकक बीच एकरूपता रहल। रहबो केना करत, कियो पजेबाक घर बनबैए तँए ओकरा सीमेंट, बाउल, लोहा आ राज मिस्त्रीक जरूरत पड़ै छै। आ कियो फूसिक घर बनाबैए तँए ओकरा लकड़ी, बाँस आ खढ़क जरूरत संगे घरहटियाक जरूरत पड़ै छइ। जइसँ जहिना काजक एकरूपता नै रहै छै तहिना हाथ आ हाथक ओजारोक एकरूपता नै रहै छइ। मुदा छोटो-छोटो काज रहने किछु-ने-किछु एकरूपता तँ रहिते छइ। तीन गोरेक काज खढ़ अँटियेनाइ रहै आ दू गोरेक मटिकटियाक। दुनू काजकेँ टुकड़ी बनौल जा सकै छइ। खढ़ अँटियेला पछाइत चारि दिन खढ़ सोझ होइले जँकियाएल जाइ छै, तहिना खाधि भरैक सेहो अछि। मुदा एकरंग बोइन रहितो हल्लुक-भारी तँ अछिए। एकटा जहिना बैसारी-काज अछि तहिना दोसर ठढ़का काज अछि। तहूमे माटिक फेकब भारी भेल, जखन कि खढ़ अँटियाएब मात्र खढ़केँ सेरिया कऽ छोट-छोट आँटी बनाएब अछि। कौल्हुका काज सुनि बेलबा बाजल-

“दुनूठाम एक्के काज अछि आकि दू रंगक?

तेतराकेँ दुनू काज बुझले रहै, बाजल-

“काज तँ दू रंगक ऐछे एकठाम खाधि भरैक छै आ दोसरठाम खढ़ अँटियबैक अछि।”

बीच-बचाउ करैत झिंगुरा बाजल-

“अपना सबहक बीच बेलबा भैया बुढ़े भेल, आ हमरा देखनहि रहह जे सातमे दिन बोखारक पथ पड़ल, अखनो तक नीक जकाँ देहमे तागत नहियेँ आएल हेन, परसुए मुसहैन खुनैकाल देखलहक ने जे केते बेर बैसलौं। तँए हम दुनू गोरे खढ़ अँटियाबए जाएब आ तूँ दुनू गोरे

खाधि भरए चलि जैहह। जुआन-जवान छहे।”

उठैत-उठैत लेलहा बाजल-

“भैया, एहेन प्रेम रहतह तँए सभ दिन आनन्दे-आनन्द रहतह। नै तँए देखते छहक..!”

‘देखते’ कहैत लेलहा चुप भऽ गेल। बात खुजबे ने कएल। मुदा चीलमक भरल मन छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। झिंगुरा पुछलक-

“की कहलहक?”

लेलहा-

“यएह ने कहलयह जे दुनियाँमे केना उनटा-पुनटा होइ छै, जे महिला शरीरसँ पुरुखक अपेछा निरबल होइए ओकरा कारखानाक इंजन आ पुलिसक लाठी हाथमे थम्हा दइ छै आ जे पुरुख सबल होइए ओकरा हाथमे कागत-कलम थम्हा दइ छइ। एहने रीतकेँ ने वसन्त रीत कहै छइ!”

तेतराक आँखिपर निशाँ लटैक गेल, बातक चिड़ौड़ी देख बाजल-

“अनेरे समुद्र उपछैक कोन चिड़ौड़ीमे लागल छह, ठनका जेकरा माथपर खसै छै से बुझै छै ठनकाक गुण। चलह, अनेरे मनमे खुट-खुटी रखने छह। कौल्हुका काज काल्हि देखल जेतइ। चेनसँ खाएब, भगवानक नाओं लऽ निचेनसँ सुतनाइ छोड़ि अनेरे कौल्हुका चिन्तामे किए माथ धूनब?”

बेलबा-

“दुनू काज सेरिया लएह, तखन ओहू मुसहैनकेँ खुनिए लेब।”

बेलबाक बात सुनि तेतरा बाजल-

“भैया, भने खेतमे पड़ल छइ। परसुके धान तँ घरे-अँगने

छिड़ियाएल अछि ओकरा सदहऽ दहक तखन खुनब।”

तीनू गोरेकेँ जाइते घुसकीपट्टीवाली बेलबा लग आबि बजली-

“संगतिया सबहक भाँजमे पड़ि अहूँ दुइर भेल जाइ छी! कहू जे केते खान पहिने ठकुरवारीमे घड़ी-घन्टा बजलै, असतुत भेलै आ अहाँले धैनसन!”

पत्नीक खौंझसँ बेलबा मिसियो भरि डोलल-डालल नहि। किएक तँ पत्नीक खौंझक कारण बिनु बुझने डोलि-डालि जाएब नीक नहि।

बाजल-

“ठकुरवारी ठाकुर सबहक छिऐ आकि हमर छी जे ओकर देखौंस करब। हमर तँ यएह संगतिया सभ ने छी जेकरा संगे जीबै-मरै छी।”

निरुत्तर भेल घुसकीपट्टीवाली पाछू नै हटली, पाशा बदैल लेली। जहिना शिवजी पाशा बदैल शिवानी भऽ गेला, तहिना। पाशा बदलैत बजली-

“अन्न तीमनक सुआद टटकेमे होइ छै आकि सेरा कऽ पानि भऽ जाइए तखन होइ छइ!”

बेलबोक मन हल्लुक रहबे करै, तँए अवसरकेँ हाथसँ गमाएब नीक नइ बुझलक। किएक तँ अवसर गमौनाइ ओहने होइ छै जेहने डारिक चुकल बानरक होइ छइ। बाजल-

“लोक सुआद-ले खाइ छै आकि पेट भरैले खाइ छइ। सरेने जँ ओकर गुणो निकैल जाए तखन ने।”

पतिक बात सुनि घुसकीपट्टीवालीक मनमे उठलैन- एना जँ बात छिड़ियाएत तखन तँ काजक गप बिसरिये जाएब। एक तँ ओहिना

ओहन बिसराह छी जे आन तँ कनी मनो रहैए जे काजे बिसैर जाइ छी! काजे नहि तँ राज की? ..हृदए खुशीसँ भरल तँए घुसकीपट्टीवाली सोचलैन जे जे बात पति बजता तेकरा जँ मुँह-नाँगैर जोड़ब तखन ने, जँ से नै जोड़ि सोझहे अपने मनमे दोसर काज आबि गेल तखनो तँ गड़बड़ाइए जाएत। घरो घर जकाँ रहए तखन ने, से तँ सतरहटा भुरकी हरिदम रहिते अछि। ..हाथमे पानिक लोटा बढ़बैत घुसकीपट्टीवाली बजली-

“लिअ, अखने कलपर सँ अनलौं कुर्रा कऽ लिअ।”

आन दिनसँ बदलल बात सुनि बेलबाक मन खुट-खुटाएल। आन दिन कहाँ पानिक बात बजै छेली, आइ किए बजली? जरूर किछु रहस्य अछि! मुदा इशारोमे जँ रहस्यकेँ नै रखल जाएत, तखन तँ ओ तेना तरेमे दबा जाएत जेना कोनो सीखे-लीखे ने रहत...। बेलबाक आँखि तँ पत्निक आँखिपर रहै मुदा नजैर नजैर दिस बढ़ौलक। कुर्रा कऽ ओसारपर पतिकेँ बैसते घुसकीपट्टीवाली घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। घरदेखिया थारी जकाँ साँठल थारी देख बेलबाक मनमे उठलै जे बिनु कारणे टिटही थोड़े लगै छै, जरूर किछु बात अछि! लगले मन हुमरलै हम कि कोनो घटिया घरदेखिया थोड़े छी जे खेनाइए-पीनाइमे केकरो गरदैन काटि लेबइ। भातक ऊपरमे पाँचो कचौड़ी तेना पसारल जे आगूमे सानैयोक जगह नहि। भात सानब छोड़ि बेलबा पहिल कचौड़ी उठा हिया-हिया देखए लगल। ई तँ पुड़ी जकाँ लगैए मुदा छी तँ कचौड़ीए! कचड़ी नै छी आ ने पकौड़ी छी, छी तँ सोलहन्नी कचौड़ीए। किएक तँ ओहिना खेसारीक सौंसका दालि, मिरचाइक टुकड़ी आ पिऔजक टुकड़ी टक-टक तकैए। नून-तेल ने तरे-ऊपरे सटि गेल छै, बाँकी तँ तकिते अछि।

कचौड़ीकेँ निहारि-निहारि देखैत पतिकेँ देख घुसकीपट्टीवालीक

छाती चहकए लगलैन। बजली-

"ई तँ ओही भगवानकेँ धैनवाद दिऐन जे बेटाक पुसौठ हएत, नइ तँ जहिना तीन साल नै केलौं, हाथ-पएर फाटए लगलै तहिना अहूबेर फटितै।"

तीन साल पूर्वक पुसौठ बेलबा बिसैर गेल छल। बिसैरो केना ने जाएत। एक तँ ओहिना गजेरी-भगेंरी गाँजा-भांगक प्रेममे दुनियाँ बिसरैले तैयार रहैए, तैपर बेलबा संगैतियो छीहे। संगैतियाक जिनगी तँ ओहन जिनगी होइ छै जइमे दस दिसक धार-नाशीक संग गंगा-जमुना सन धारक पानि मिलि समुद्र सिरजन करैए... । बेलबा बाजल-

"पुसौठ केकरा कहै छइ?"

लहकी देख घुसकीपट्टीवाली अवसरकेँ हाथसँ नै छोड़ि, बजली-

"एहने मुनसा ने धिया-पुताक पाबैन बिसैर धियो-पुताकेँ बिसैर जाइए!"

तैबीच बेलबा पहिल कौर तँ छुच्छे दालि-भातक खेलक मुदा दोसर कौरमे जे मिरचाइक टुकड़ी मुँहमे पड़लै, तँए सुसुआइते बाजल-

"पाबैनमे की सभ होइ छइ?"

धनलक्ष्मी जकाँ घुसकीपट्टीवाली बजली-

"किच्छो ने होइ छइ। जे होइ छै तइसँ तँ घर भरल अछि, किच्छो कथी ताकए पड़त।"

पत्नीक धारक प्रवाहमे बेलबा बाजल-

"शुभ काजमे अनेरे देरी करब कोन कबिलती हएत, तइले पुछैक कोन जरूरी अछि। अच्छा ई कहूँ जे पाबैनमे की सब हएत?"

जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप सिखबै छैथ तहिना बिकछा-बिकछा घुसकीपट्टीवाली बाजए लगली-

"पाबैनमे किछु ने होइ छै आ सभ किछु होइ छइ।"

उड़ैत चिड़ैक बोल जकाँ बेलबा किछु थाहि नै पबै छल। तँए जहिना धार थाहैक नाहक लग्गा होइ छै तहिना थाहैत पुछलक-

"खेबा-पीबामे की सभ होइ छइ?"

"अगबे चाउरक चिक्कसक बगीया बनै छै, ओही लऽ कऽ बाल-बच्चाक हाथ-पएरक पुसौठ होइ छइ।"

"घीओ तेलक काज पड़ै छइ?"

"घी-तेल किए कहै छिऐ, नूनो-मिरचाइक काज नै पड़ै छइ।

"चिक्कसक मुँह-नाँगैर बना, छतिया-पीठिया बनौल जाइ छै, टटका पानिमे नहा कऽ चुल्हिपर सिद्ध कएल जाइ छइ। सिद्ध होइते भऽ गेल बगिया।"

"एक्के रंगक होइ छै आकि दोसरो-तेसरो रंगक?"

"एकटा सुच्चा भेल, दोसर कुरथियो दालि दऽ कऽ आ तेसर गुरो दऽ कऽ बनौल जाइ छइ।"

"तब तँ नामो सबहक हेतइ।"

"होइते छै, जहिना आमक गाछ भेल आ दालि-दलिहन भेल ई जड़ि भेल। जड़िक पछाइत अमुख आम आकि अमुख दालि बनैए। तहिना बगिया जड़ि भेल। दलिबगिया, गुड़-बगिया किसिम भेल।"

"एक दिन तँ एक्के रंगक ने खाएब, दोसर-तेसर?"

"एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। पहिल दिन टटका खाएब, दोसर दिन बसिया खाएब, तेसर दिन दलिबगिया खाएब, चारिम दिन गुड़-बगिया खाएब।"

"गुड़ दालिए जकाँ केना रहत?"

"खेबै तखन देखबै, जे केहेन रसगर छइ। एते पघिलल रहत जे

छातीमे चुहुटि कऽ पकैड़ लेत।"

"जखन चारि दिनक ओरियान एक्के दिन केने भऽ जाएत तखन अहाँकेँ चारि दिनक छुट्टी दऽ दइ छी। तैबीच कुशेसर आकि सिंहेसर आकि जनकपुरसँ घुमि आउ।"

❍

शब्द संख्या : 2742

केलवाड़ी

पूर्णिमाक हिसावे अदहा कातिक टपि गेल मुदा सकराँइतिक हिसावे पचीस दिन पछुआएल अछि। रातिए दिवाली भेल, आइ परीवक परखेबो आ धनमनतरि सेहो छी। काल्हि भरदुतियो आ चित्रगुप्तो पूजा छी।

साठि बर्ख पार केला पछाइत जीवन काका नव जिनगी पाबि केलवाड़ी पहुँचला। पानि भेटने चरिकट्ठुबा चौमासकेँ आब वाड़ी-फुलवाड़ी-केलवाड़ी बनि हँसैत देख बीच केलवाड़ीमे बैस, वृन्दावन जकाँ कखनो नजैर उठा कोनो घौरपर दैथ तँ कखनो पूर्बाक लहकीमे लट-पट-सट-पट करैत भालैर सभकेँ सेहो देखैथ। लहकीमे लहैक जीवन काका अपन संगी-केलवाड़ीसँ परिचए-पात करए लगला। बाबाक लगौल आमक गाछीकेँ आधा-अधी उपटा जीवन काका केलवाड़ीमे जिनगी देख रहल छैथ। आमक गाछीमे बबो अहिना ने देखैत छल हेता, यएह धड़-धरती ने कुलो-खनदान, उपजो-वाड़ी आ खेनाइयो-पीनाइकेँ अपना पेटमे समेट कऽ रखने अछि।

जीवन कक्काक मनमे फेर उठलैन- मुदा बाबाक बराबरी कहाँ कऽ पाबि रहल छी? पैछला सर्वेमे जेते हुनका खेत छेलैन तेते तँ हमरो अछिए। मुदा सबहक अपन समए होइ छै, तहीक कर्तो-धर्ता ने अपनो छी। हुनका अमलदारीमे गाममे एकटा वैद्य छला। वैद्य की छला अखुनका करखन्ना जकाँ छला। अपने हाथे मंडूल बनबै छला, जे

पौण्डु रोगक रामवाण इलाज छेलइ। सीतामढ़ीसँ पूर्णिया आ नेपालक झँपा जिलासँ लऽ कऽ वीरगंज होइत गंगाक उत्तरी छोर धरिक बजार छेलैन। रोगीक आवाजाही भरि दिन लगले रहैत छेलैन। जहिना इलाकाक लोक वैद्यजी कें जनैन तहिना रहैक जगह बाबाकें सेहो जनैत रहैन। अनका अपेक्षा स्थिति बहुत नीक नै रहनौं, दरबज्जाकें दरबज्जा बना रखने छला। अनठिया-बहरबैया-ले कोनो रोक-राक नहि, मुदा तँए कि गामो ओहने छल? नहि! जातीय रंग-रूप नीक जकाँ गछाड़ने रहइ।

बाबासँ आगू बढ़ि अपनापर नजैर पड़िते जीवन काका चौंकला, की अपने जकाँ पोतोक मनमे रहि सकब? नहि! अहिना ऊहो साले-साल बरखी आ पितृपक्षमे मन पाड़त? नहि! मुदा एना भेल किए? अपना अछैत जुआन बेटा काज करै-जोगर भेल, बाहर कमाए कहलिऐ। परिवारमे अन-पानिसँ लऽ कऽ रूपैआ-पैसा धरिक काज पड़िते अछि। किसानी जिनगीमे नगदी खेती नै भेने पाइक समस्या छइहे। पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, दबाइ-दारू, लत्ता-कपड़ा सभ तँ कीनैए पड़ैए।

अखन धरि जीवन काका अपनाकें अपन सीमानक भीतर बुझै छला तँए मनमे कोनो लहैर नै उठलैन। उठबो केना करितैन? जाबे समुद्र आकि मरूभूमिमे जुआरि नै उठत ताबे केना लहैर-लहैर लहराइत वायुमण्डल दिस बढ़त। ओना खुशीलाल आज्ञाकारी बेटा छैन। तैबीच वैचारिक मनभेद केना बनल से बुझिते जीवन कक्काक मन बगैद गेलैन। जहिना पोसो हाथी बगैद जाइत तहिना।

भेल ई जे खुशीलालकें एते छूट तँ दाइए देने छेलखिन जे नीक काज बिना केकरो पुछनौं करब अधला नहि। आज्ञाकारी बेटा केतौ सीमाक उल्लंघन नै केलैन, मुदा सीमाक उल्लंघन तँ भाइए गेल। नव

पद्धतिक पढ़ाइ एकभग्गू भऽ गेल अछि, जखन कि जीवन काका समग्रतामे बिसवास करै छैथ। मुदा जीवन काकाकें अपनो मन उग-डूम तँ करिते छैन जे बेटा ई बात अखन धरि किए ने बुझि पौलक जे भँसि गेल! माए-बाप जीबिते दिशा ने बेटा-बेटीकें सिखौत-पढ़ौत आकि जिनगी भरि संगे-संग रहि बेर-बेर सिखबैत रहत। जँ से हेतै तँ जिनगियो आ कालखण्डोक बँटवारा केना हेतइ। की आब किछु कहब उचित हएत? उचित तँ ओही दिन तक होइत जइ दिन काज करैले डेग उठबए लगल। मुदा आब..?

गंभीर प्रश्न जीवन कक्काक आगूमे गंभीर परिस्थिति पैदा कऽ देलकैन। जँ बताह जकाँ बड़बड़ा बेटोकें कहबै आ पुतोहुओकें कहबैन आकि टोकारा पाबि खिसिया कऽ गाम दिस टहैल समाजोकें कहबैन, से उचित हएत? काजक तँ फले काजक पूर्णता छी। ऐठाम तँ ओहूसँ बेसी परिस्थिति चहैक गेल अछि! तेहेन पढ़ाइ-लिखाइ भऽ गेल अछि जे अखन ने मोटगर पाइ देखै छै, मुदा रिटायर करिते अदहा भऽ जाएत, आ बेटा-बेटीक जिनगी तेते भारी भऽ जेतै, जे सम्हारि नै पौत। एहेन परिस्थितिमे कियो माए-बापकें आकि बेटा-बेटीकें देखत? उगैत सुरुजक दर्शन ने शुभ होइ छै आकि डुमैत सुरूजक! तखन? जेकरा मूस जकाँ बिल खुनैक लूरि नै छै तेकरा-ले दुनियाँ जे हौउ, मुदा जेकरा खुनैक लूरि हेतै ओ सीमा किए टपत? बाढ़ि औतै ऊँचकापर चलि जाएत आ रौदी हेतै तँ नीचका दिस बढ़ि जाएत...।

यएह सोचि जीवन काका चारू कट्ठा खेतकें–जे आमक गाछी छल–जेकरा तोड़ि केलवाड़ियो आ तीमनो-तरकारीक चौमास खेत बना लेलैन। खेतोक लीला की कृष्ण लीलासँ कम अछि, रौदी भेने जीरो आ सुभ्यस्त समए भेने हीरो। केतौ तीनियोँ बीघा बीघासँ कम गोबरबैए तँ केतौ बीघा पाँच बर गोबरबैए...।

यएह सभ सोचि जीवन काका चारू कट्ठाक बीच एकटा कल गड़ा लेलैन आ चारूकात निम्मन हाता कटा, माटि ढहै दुआरे साबे आ आड़िपर अनरनेबा, नेबो, दारीम, सरीफा इत्यादि छोटका पौधबला फलक गाछ रोपि देलखिन। डेगसँ नापि एक-एक लग्गीक दूरीमे केरा गाछ सेहो रोपलैन। जे चालीस बीट भेलैन। जेठुआ रोप भेने कातिकमे दू-दूटा पौंच गाछ देलक। जे मघारि अबिते फूटि गेल। कुहैर-कहारि कऽ घौर भेल। खाएर जे भेल, भेल तँ। वएह बीट तेसर सालमे पहुँच गेल। साठिटा घौर पनरहसँ पचीस हत्थाक भेलैन।

एक तँ ओहिना मन तुरुछाइत रहए जे आइए झंझारपुरक हाटो छिऐ आ पखेब पाबैनो छी। हाटो तेहेन जे सुति उठि आँखि मीड़िते विदा हौउ। केना चौरीसँ करमी लत्ती आनब, सोन्हौनक ओरियान करब। जखन दुनू काज लोके हाथक छी तँ आगूओ पाछू कएल जा सकैए। खाएर.., गर अँटबैत झंझारपुर हाट गेलौं। केरोक सूर-पता लगबैक छल आ पाबैनोक वस्तु-जात कीनैक रहए। हाटपर पहुँचलो ने रही कि आढ़ैतबला भेट गेल। पुछलिऐ-

“कारोबारक की हाल-चाल अछि?”

मनमे एक्को मिसिया नै रहए जे अधला नजैरसँ पुछि रहल छिऐ। तीन माससँ झंझारपुर गेलो नै छेलौं। हाल-चाल सुनिते आढ़ैतबला गुम्हैर कऽ बाजल-

“सभ बुड़ि गेला गंगा नहाइले आ ई रहि गेला गाममे!”

परिचित लोकक मुहेँ कठाइन बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। आगू बढ़िते भाँज लगल जे हाजीपुरसँ लऽ कऽ भागलपुर धरिक जेतेक केलवाड़ी अछि सभ केरा दहा गेल! जे केरा खुदरा-खुदरी गाम धरि पकैड़ नेने छल...। मनमे उठल- की गाममे केरा सन फल जेकर खेतियो असान अछि, तेकर कीनिनिहार किसान बनि गेल छैथ!

झंझारपुरसँ विदा होइते मनमे उठल जे एकटा केरा-घौर छौड़ाक कबुला छै, जँ से नै भेल तँ छौड़ाक माए घरोमे रहए देती..?

मन ठमकल, एहेन कबुले की जे सौंसे घौर कबुला कऽ लेलैन। जे कीनि कऽ खाइए ओ दर्जनक हिसावसँ कीनत आकि घौरे कीनि लेत? आइसँ पाँचे दिन छठिक रहल, तहूमे तीन दिन पहिनेसँ शुरूहे भऽ जाइए। जखन ओ चीजे ने हाट-बजारमे छै तखन एहेन की हमहींटा छी आकि अपन अड़ोसियो-पड़ोसियोक गति सएह हेतैन। पत्नी बड़ खिसिएती तँ पाइ आगूमे फेक देबैन। पाइ देख जखन दोसर-तेसरसँ भाँज लगतैन, तखन अनेरे ने उचिती-विनती कऽ छठिक विसर्जन करती। दलदलसँ सक्कत माटिपर पएर पड़ल। मन थीर भेल। मुदा ई तँ अपना मनमे छल।

झंझारपुरसँ अबिते पत्नी झपैट कऽ बजली-

“जेकरा काज करैक छिछा रहै छै से ने काज करैए आ जे सदिकाल जेबीए टोबत, ओकरा बुते देवता-पित्तर राखल हेतइ।”

अपन हारल की बजितौं। तँए अपने चुप रही मुदा पत्नी बड़बड़ाइते रहली। अनधुन बिना कौमा-फुलस्टोपक बजैत-बजैत बजा गेलैन-

“गाममे जीवन काका केराक वोन लगौने छैथ आ अहाँ झंझारपुर वौआइ-ले गेलौं!”

हारल मन घुमि तकलक। बजलौं-

“एना किए छान-पगहा तोड़ने जाइ छी। अखन पाँच दिन पाबैनमे बाँकी छइ। तैबीच की कोनो ओछाइन धऽ लेब। आकि छुटल-बढ़ल जे काज अछि तेकरे जोड़ियाएब।”

मुदा मानि गेली। खेला-पीला पछाइत नीनो किए हएत बरदकें सोन्हौन पिऔनाइ, गरदामी देनाइ रहए, तैसंग धानो काटि कऽ नै

अनने रही, ऊहो आनए पड़त। पान पत्नी पीसि देती मुदा लगा कऽ तँ अपने दिअ पड़त। जेते काल नीन घेराएल रहल तेते काल टटका गपो सभ गपकेँ ठेलने रहल। तँए कखनो मन हुअए जे एहेन कबुला केनिहारिकेँ चारि थापर लगा दिऐ। कहू जे एहेन हाड़-काठबला केँ कबुला-पाती केने धिया-पुता हएत।

बरदकेँ सोन्हौन-तेल पीअबैत गरदामी पहिरबैत, सींगमे तेल लगबैत, मुँहमे पान खुआ, दूधाएल धान आगूमे दैत केराक भाँजमे जीवन काका ऐठाम विदा भेलौं।

दरबज्जा खाली देख मनमे उठल- लोक या तँ राजधानीए-मे रहैए आकि वोनेमे। जखन दरबज्जा सून छैन तखन केदलीए वोनमे हेता। तहूमे एक तँ छठिक लहकी, दोसर तेहेन इलाकाक केरा वोन दहाएल जे अनेरे एकक तीन हेतैन...।

चारूकात चकोना होइत करजान पहुँचलौं। देखते जेना मने हरा गेल। कहू जे एकटा घौर-ले एक दुपहरिया हरान भेनौं आ नइ भेल। मुदा ऐठाम एकर वोने देखै छी! पत्नीक मुहेँ तरपट्टियो सुनए पड़ल। मुदा परिवार तँ परिवार होइ छै, एहेन-एहेन बातक जँ मद्दी हएत तखन परिवार ठाढ़ रहत। भूतलग्गू घर जकाँ अनेरे ढनमना कऽ खसि पड़त।

केलवाड़ीक हत्तापर ठाढ़ होइतै मनमे भेल जे बिना चीजबलाकेँ पुछने आगू डेग उठाएब उचित नहि। मुदा जीवन काकाकेँ देखबो तँ नहियेँ करै छिऐन। गर लागल। बजलौं-

“काका छी यौ, यौ काका?”

जहिना रातिमे ओछाइनपर पड़ल अनभुआर बोली सुनि अकानए लगैए मुदा उत्तर दोहरेला पछाइत तेहरेलोत्तर दइए, तहिना जीवनो काका बोली अकानए लगला। बुझलेहे जकाँ दोहरी अवाज दैत डेग आगू बढ़ेलौं एक तँ केराक वोन जे गाछो अवाज रोकैत आ

पातो। तैसंग शर्बतक गिलास जकाँ अवाजोकेँ दुनू घोरिते हएत।

एक तँ निशाँएल जकाँ जीवन काका बैसल रहैथ। बहरबैया अवाजकेँ नीक जकाँ नै अकाइन सकला, सहरगंजे बजला-

“के छिअ, आबह।”

‘आबह’ सुनि मनमे हूबा भेल जे हाजिरी दर्ज भऽ गेल। जीवन काकाकेँ बिसैर गेलौं। बिच्चेमे केरा घौर विचारकेँ बोहिया देलक। साठि-सत्तैरटा कटैबला केराक घौर देखलौं, एकर अलावे किछु तरकारीबला आ किछु फुल्लियो देखलौं। जइमे कोशा लगले रहइ। देखैत-देखैत दोसर कोन दिस पहुँचलौं आकि काका बोली देलैन-

“के छियह केमहर गेलह?”

बाढ़िक इलाकामे जहिना लोक पुक्की पाड़ि-पाड़ि जिनगीक उपस्थिति दर्ज करबै छैथ, तहिना हमहूँ बीटे-बीटे, दोगे-दोग देखैत पूबरिया-उत्तरबरिया कोण दिस बढ़ि गेलौं। बढ़ि की गेलौं, केरा अपन जिनगीक कथा देखबए-सुनबए लगल। किछु उत्तर नै देब उचित नइ बुझि बजलौं-

“काका, तेहेन वोन अहाँ लगा देने छिऐ जे वौआइ छी।”

“अच्छा बोली अकानैत चलि आबह।”

लगमे जाइते बुझि पड़ल जे जीवन काका जेना सोनाक चैल पौने होथि तहिना मन तिरपित छैन। तिरपितो केना ने हेता, घोंघीसँ मोती आ कोयलासँ हीरा होइते अछि तखन महि किए ने अकास उड़त। जे केहेन सोंगर लगौलासँ काज चलत। जँ से नै भेल तखन तँ अनेरे बनलो काज बिगैड़ जाएत।

मुस्कियाइत तीर फेकलौं-

“काका, बुढ़ाड़ियोमे जेना केंचुआ छोड़ने होइ तेहने चकचकी

बुझि पड़ैए।”

हमर बात सुनि काका गुम भऽ गेला। औगता कऽ ओहन जकाँ नहि, जे कहबै सासुरक सुपारी खुआबह तँ कहत जे तीनटा सारि अपने अछि। केचुआ छुटिते ने नव-जीवन भेटै छइ। मुदा बातकेँ बदलैत जीवन काका बजला-

“पहिने ई कहह जे औगताएल तँ ने छह? अखन तेहेन पाबैनक लदान पड़ि गेल अछि जे दमो माड़ैक छुट्टी नइए।”

काजो अपने रहए, काज तँ काजे छी। एकक पछाइते दोसर हएत, तइले झंझारपुरक समए अछि आ ऐठाम नै अछि। बात बिहियबैत कहलयैन-

“काका, हम तँ छेहा बेरोजगार छी। अनेरे भरि दिन ढहनाएल घुमै छी।”

हाथक इशारा दैत बैसबैत बजला-

“बौआ, केचुआ छोड़ैक लूरि जेकरा रहै छै वएह ऐ धरतीक सुख बुझैए। अपना ऐठाम केराक खेती अदौसँ होइत आबि रहल अछि। जेहने गुणगर तेहने पेटभर। मुदा ऐठाम तँ पौष्टिक वस्तुक उत्पादन होइ वा नै होइ, मुदा जन-जनकेँ पोष्टिक अहार भेट रहल छइ। जइसँ स्वस्थ शरीरक निर्माण भऽ रहल छइ।”

साँस छोड़िते मन पड़लैन जे किमहर आएल से तँ पुछबे ने केलौं। आ अनेरे सासुरसँ भागल स्त्रीगण जकाँ भटभटाइ छी। मुदा लगले मन सम्हरलैन। दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ चट-दे पुछि देब जे केमहर एलौं, सेहो तँ नीक नहियेँ। भने चाससँ समार भऽ गेल। एक रस भेने ने अनुकूलता अबै छै, ओना जँ ओहन वस्तुक शर्बत बनाएब जेकरा छानए पड़ैत तखन अनेरे किए एक बेर पानि छानू दोसर बेर शर्बत। एक्के बेर किए ने छानि एक रस बना लेब। बजला-

“बौआ, केमहर एलह से पहिने बाजह। ई काज भेल, काजकेँ कखनो टारैक वा अँटकबैक काशिश नै करी। ई दीगर भेल जे कोन काज केहेन काज।”

जहिना तीन-कोनियाँ तीर आकि बंशीक नोंक अपने दिस बैसला जकाँ रहै छै जे प्रवेश काल तँ पैसि गेल मुदा निकलै काल खोखरनहि औत तहिना जीवन काकाकेँ मचकीपर चढ़ल देख आस मारलौं। मुदा केकरोसँ किछु मंगैसँ पहिने केकरो दोख अबै छइ। मन घुड़िया गेल जे जँ अपन दोख लगा कहबैन तँ सोझहा-सोझही गप केना करब, आ जँ पत्नीक दोख लगाएब ऊहो नीक नै हएत, किछु छैथ तँ अर्द्धांगिनी तँ वएह छैथ। नहि जँ समूहमे कबुलाक चर्च करब तँ मुहेँ छिऐन जँ कहीं बजा गेलैन जे एहने पुरुख छह जे कबुला-पाती केने धिया-पुता होइ छह।

असमनजसमे पड़ले रही कि बिच्चेमे काका बजला-

“समाजमे ने केकरोसँ लजाइ आ ने किछु छिपाबी। आन किए बुझै छह। एते केरा जे लगौने छी से अपने खाइले, पाकल चौर पाँच दिन अँटकै छइ। जँ चरि-चरि छीमी खाएब तँ बीस छीमी भेल। एहेन-एहेन हत्था सभ अछि जइमे पचीस-पचीस छीमी छइ। तोहीं कहह जे एको हत्था अपना बुते सठत।”

रसगुल्लाक रसक बोड़मे डुमल कक्काक बात सुनि जेना अपने हँसी फुटि गेल। कहलयैन-

“काका, छठि पाबैन छिऐ, एक घौर केरा लेब। आन साल तँ दू-तीन हत्थाक घौर लऽ कबुला पूरा लइ छेलौं, जइमे बारह-चौदहटा छीमी रहै छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओहन घौरे ने देखै छिऐ?”

हम तँ अपना मने कहलयैन। ओ की बुझलैन से तँ वएह जानैथ। मुदा अपनोसँ नमहर हँसी हँसि बजला-

“जा जे घौर मन हुअ ओ काटि लएह।”

सुनि तँ लेलौं मुदा मनमे भेल जे कहीं काका भक्की तँ ने मारलैन! तखन तँ जेतेमे पाबैन हएत तेते केरेमे चलि जाएत। मुदा मन पड़ल जे अपनासँ श्रेष्ट लग चुपे रहब नीक। जे कहता ओकरे सरि-सुर करैत अपना अनुकूल बनाएब नीक रहत। तँए चुप्पे रहलौं।

चुप देख जीवन काका बजला-

“सुनह, टटका केरामे पानि निकलै छै जे देहो-हाथकेँ आ कपड़ो-लत्ताकेँ दगा दइ छइ। तँए पहिने केरे काटि लएह जे जाबे दूध सुखतै ताबे गपो उसरि जाएत।”

कक्काक बात सुनि भरोस भेल जे केरा तँ भाइए गेल, दाम केना पुछबैन। जँ दाम लेबाक रहितैन तँ गनि नेने रहितैथ, से गनबे ने केलैन। गर भेटल, पुछलयैन-

“छीमी-हत्था कहाँ गनलिऐ?”

जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“जँ एक साँसमे गामपर लऽ कऽ चलि जेबह तँ ओहिना भेलह। नहि तँ जेते पाबैनक फीरिस्तमे जे हुअ ओते दऽ दिहह।”

केराक घौर छोड़ि दुनू गोरे बैसलौं। नफगर काज देख धैनवाद नै देबैन सेहो नीक नहि। बजलौं-

“काका, अपने गामक टेक रखि लेलिऐ!”

‘टेक’ सुनि काका गुम भेला। की टेक? पाशा बदलैत बजला-

“बौआ, अपन धरती एकसँ एक अन्न, फल, फूल उपजबैक शक्ति अपना गर्भमे रखने अछि। तखन तँ जेहने दुहनिहार तेहने ने कामधेनु। चालिस बर्ख पूर्ब केरा-खेती केने छेलौं, मुदा खोप सहित कबुतरो चलि गेल छल, जेकरा घुमा कऽ लाबलौं।”

जिज्ञासा भेल। पुछलयैन-

“से की?”

विह्वल होइत काका बाजए लगला-

“जहिना देखबहक जे जामुनक मासमे लोक जामुनक बीआ रोपैए, आमक मासमे आम रौपैए, अनारसक मासमे अनारस रौपैए तहिना अपना ऐठाम सरसठिक रौदीक पछाइत जे उथल-पुथल भेल तइमे केरोक खेती आएल। बाहरी किस्मक केरा, एक-मौसमी। जहपटार लोक अपन पुरना करजान सभ उपटा-उपटा लगा लेलक। जे केरा अपना ऐठाम बहुत पहिनेसँ होइत चलि आबि रहल छल, ओ उपैट गेल। रोपाएल ओ जे समायानुकूल नै छल, अपनो गेल आ जेहो आएल सेहो गेल। जेकर फल भेल- मिथिलांचलक केदली वन महराइ गाबए लगल!”

जीवन कक्काक विचारमे रस भेटल। पुछलयैन-

“हेबा की चाहै छेलै, काका?”

प्रश्न सुनि काका गुम भऽ गेला। किछु कालक पछाइत गुम्मी तोड़ैत बजला-

“दिनो, उनहल जाइए, केराक दूधो सुखि गेल हेतह।”

प्रश्नकेँ टारैत देख दोहरबैत पुछलयैन-

“काका, जखन एते गप भाइए गेल, तखन कनी पुछड़ी किए छोड़ि देलिऐ?”

ई बुझले ने रहए जे बिलमे चलि गेला पछाइत जँ साँपक नाँगैर पकैड़ खींचौ चाहब तँ नाँगैर टुटि जाइ छै मुदा साँपक मुँह नै निकलै छइ। तैबीच विस्मित होइत काका बजला-

“बौआ, जे कहबह ओ तँ काइए नेने छी, देखते छहक। मुदा

एकटा बात तैयो रहि जाइए। अपन जे पुश्तैनी, जुग-जुगसँ अबैत वस्तु छल आकि अछि, ओकरा अनुकूल समैये नै भेटलै जइसँ आगू बढ़ैत। एहेन बाधा उपस्थित कऽ देल गेलै जे धात्री गाछ-तर भोजन केरा पातक जगह बजरूआ थारीमे होइए।”

उठि कऽ विदा होइत पुछलयैन-

“काका, ऐ केराक किस्मक नाओं की भेल?”

“ओना, केते-गोरे मर्तमान कहै छथिन, मुदा सहरगंजा नाओं छिऐ मरीचमान।”

दोहरबैत पुछलयैन-

“बजारसँ तँ पकले घौर लऽ अबै छी, एकरा तँ पकबऽ पड़त।”

अदहा बात मुहेँमे छल कि बिच्चेमे काका बड़बड़ए लगला-

“देखह, अपना ऐठाम माटिक तरमे गोरि धानक भूसा, डाबामे दऽ धुइक कऽ केरा पकौल जाइ छै, जे नीक होइ छइ। आ बजारक केरा, टमाटर आ आम सभकेँ कारबेटसँ पकौल जाइ छै, जे नीक नै होइ छइ। अखन पाँच दिन बाँकीए अछि, काल्हि गोरि देबहक तँ समैपर पकि जेतह।”

केराक घौर उठा आँगन अनलौं। जेते गोरे झंझारपुर हाटसँ घुमि-घुमि आएल रहैथ, एक्के-दुइए सभ पुछए लगला। मुदा एकटा धोखा भऽ गेल रहए जे पत्नी मन पाड़लैन। मन ई पाड़लैन जे छीमीमे चुन कहाँ लगौलिऐ, कियो देख नेने हएत तँ पाकत?

पत्नीक बातक कोनो मानियेँ ने लागल। एक तँ कोनो माससँ अनुकूल केरा पकबैक समए कातिक होइ छइ। मौसम परिवर्त्तनक समए रहै छइ। तैठाम चुन की करत? मुदा अपन अनुकूल बनबैले तँ किछु भकमोड़ अबिते छै, बजलौं-

“ऐ बेर छठि परमेसरी खुशी छैथ, देखै छिऐ शुरुहेसँ केहेन बाट धड़ा देलैन।”

अपना जनैत तँ अनुकूल हुअ चाहलौं मुदा से भेल नहि। बजली-

“लोकक नजैर नीको होइ छै आ अधलो होइ छइ। मुदा यएह दुनू–नीक अधला–तेते विआन करैए जे नीक तँ केते नीक आ अधला तँ केते अधला। पाबैनक नाओंपर एक दिन केरा खेनहि की।”

पत्नीक बात सुनि अनुकूल नै बुझि पाशा पलटैत बजलौं-

“आब कथी सभ बाँकी रहल, से मन पाड़ि दिअ।”

❍

शब्द संख्या : 2685

स्वरोजगार

एक तँ अहुना शिक्षण संस्थानक वातावरण देख रवि शंकरक मन कौलेजक पढ़ाइसँ उचैट गेल, तैपर परसुका किरिया-कलाप तँ आरो मनकेँ तोड़ि देलकै। भेलै ई जे कौलेजमे विश्वविद्यालय स्तरक परिचर्चा छात्र सबहक बीच भेल जइमे रवि शंकरकेँ आमंत्रित नै कएल गेलइ। बनल-बनाएल परिचर्चाक दिशा निर्देश, बनल-बनाएल कर्ता-धर्ता आ बनल-बनाएल पाठक-सुनिनिहार।

आमंत्रित नै करैक कारण रहै जे कौलेजक वातावरणमे रवि शंकर 'चुप्पा बताह' आ 'गोंग' बुझल जाइत। जइसँ संगी-साथीक बीच अधिक काल रवि शंकरक बतहपनियेँक चर्च चलैत। जहिना 'बघबा खाए वा नै खाए लोहारक लोहराइन महकबे करत', तहिना रवि शंकरक सेहो रहइ। एकटा अवगुण रवि शंकरोमे जरूर छै जे हाइ स्कूलमे जेते विषय पढ़ने छल, ओते विषयसँ सम्बन्ध बनौनहि अछि। ऐ बातकेँ मनसँ हटा नेने अछि जे हाइ स्कूलक किछुए विषय कौलेजमे रहि जाइ छै, सेहो दिनो-दिन घटिते चलि जाइ छइ। अही सीमाक उल्लंघनक चलैत छात्रेटा नहि, शिक्षकोक बीच चर्चक विषय बनल रहइ। जखन कि रवि शंकरक स्पष्ट समझ छै जे भाषा कामधेनु छी, जे सदिकाल दूध दऽ सकैए। एकर माने ई नहि जे निमुआन धन बुझि ओकर दुरूपयोग होइ। ओतबे शब्दक प्रयोग नीक होइ छै जेतेसँ विचारक माध्यमसँ विषय गतिमान बनै छइ। भाषा ओहन धार होइए जेकरा पार करैमे घटवारकेँ घटवारि नै दिअ पड़ै छइ...।

विश्वविद्यालयक परीक्षाकेँ अधडरेड़ेपर छोड़ि रवि शंकर अपन सभ वस्तु-जात समेट, लगक जे किताब-कॉपी रहै ओकरा छँटिया लेलक, दोसराक संग जे लेन-देन रहै ओकरो फरिया लेलक, पुस्तकालयक लेन-देन सेहो फरिया लेलक आ पड़ोसक लेन-देन सबहक मुँह-मिलानी करैत बिना किछु केकरो कहने रूमक चाभी भागेसरकेँ सुमझा जहिना यागवल्यक्य गुरुआइसँ दुनू पत्नियोँ धरिकेँ छोड़ि विदा भेल छला तहिना विदा भऽ गेल। ओना, भागेसर मात्र गौंए रूमेट नहि, दियादिक संग खानदानी सम्बन्ध सेहो। तथापि ने रवि शंकर किछु बाजि अपन बेथा भागेसरकेँ सुनबए चाहलक आ ने भागेसरे किछु बजलै। नइ बजैक कारण भागेसरकेँ बुझले रहै जे गणेशजी जकाँ एकभग्गु ऐछे, जेमहर नजैर जेतै तेम्हरे जनकक हरबाहिसँ मूसक राखल मुसहैन तक खुनि कऽ निकालि लैत आ जेमहर नइ जेतै तेमहर हाथीक आँखि जकाँ लुब-लुबबैत रहत..! ओसारसँ निच्चाँ उतैरते रवि शंकरकेँ पाछूसँ भागेसर पुछलकै-

"रवि भाय, आगूक की कार्यक्रम अछि?"

जहिना गणेशजीक मन सदिकाल एक्के रंग रहैत तहिना रवि शंकर बाजल-

"अखन विचार मनेमे अछि। पहिने गाम जाएब, समाजक संग परिवारकेँ देखब, पछाइत दुनू बापूत मिलि विचारब जे केना बाप-दादाक लगौल फुलवाड़ी आरो हरियाइत रहत तखन ने।"

एक दिस रवि शंकर डेग बढ़ौलक दोसर दिस भागेसर पल्ला झाड़लक जे सभ दिनक एक्के रंग बुड़िवाण रहि गेल। जा जे कपारमे लिखल छह से कियो बाँटि लेतह! खैहौन चेतानन्दक कपार!

कौलेजक हातासँ निकैलते रवि शंकरक मनमे घौंदा जकाँ प्रश्न लुधैक गेलइ। बियौहता बर आ दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनमे

समस्याक सोहरी लगि गेलइ। मुदा जहिना छोट बच्चाकेँ कियो दुलारसँ कना दइ छै आ ओ अपना माए लग जा कहै छै, 'फल्लाँ मार', तहिना सभ प्रश्नकेँ छँटिया रवि शंकरक मनमे परसुका प्रश्न उठलै। की हम परिचर्चामे अपन विचार व्यक्त करैबला नै छी? भऽ सकैए जे जे विचार हमर अछि ओ दोसरोक होइ, मुदा सेहो तँ सुनला पछाइते ने बुझितौं? नहियेँ बजितौं मुदा जँ आनोक मुहसँ सुनितौं तैयो तँ मनमे सवुर हेबे करैत, सेहो ने भेल! ने बजनिहारे भेलौं आ ने सुनिनिहारे!

रवि शंकरो आ भागेसरो संगे दुनू ब्रह्मपुर हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास करि कऽ राजधानीक एक्के कौलेजमे नाओं लिखौलक। ओना पढ़ैमे रवि शंकरक अपेक्षा भागेसर हल्लुक, मुदा मैट्रिकमे बेसी नम्बर भागेसरेकेँ आएल छेलै, जे सुनिए कऽ रवि शंकर रहि गेल। विचारि नै सकल जे जखन भागेसर दब अछि तँ ओकर नम्बरो ने दबे अबितै! बाल-बोध मन रवि शंकर, एतबे बुझलक जे परीक्षा तँ शिकार करब भेल। अनाड़ियो शिकारीकेँ बेसी शिकार हाथ लगै छै आ जीवनियोँकेँ कम। ई नइ बुझि सकल जे जहिना खेतमे जोत-कोरसँ फसल लगबै धरि वा बाँस-खढ़-खरहीसँ घर बन्है धरि कोनो पेंच-पाँच नै होइ छै। पेंच-पाँच होइ छै, फसल लगला पछाइत आ घर बन्हला पछाइत। अपन रोपल अपने खा दोसरोकेँ खुआबी आकि अपने पुराबी आकि अनके रोपल खाइ...।

भागेसरमे एकटा विचार जरूर अछि जे रवि शंकरकेँ श्रद्धाक नजैरसँ जरूर देखैत। मुदा से सोझहामे, परोछमे विचारक दूरी एते लतैड़ गेल छै जे जड़िसँ मुड़ीक दूरी देखबे ने करैए। ओना हाइ स्कूल धरि दुनूमे एते दूरी नै बनल छेलै जेते कौलेजमे आबि कऽ बनलै। जहिना अध्ययन रवि शंकरकेँ एकाग्रता दिस खिंचैत गेल तहिना भागेसर देखा-देखीक अनुकरण करैत दोसर दिस बढ़ि गेल। तइसँ नजैरमे दोष आबि गेने बुझबे ने करैत जे छबड़दानी अपने सुरक्षित

पानिक तरमे रहि छबड़ाकेँ कहैत जे ऊपरेमे छियौ।

ओना पटना अबिते दुनू गोरे एक्के लॉजमे रूम भाड़ा लेलक। मुदा भड़ैत बनैए-काल रवि शंकर बाजल रहए-

"गौंआँ छोड़ि दोसर कियो रूममे नै आबि सकैए।"

तखन तँ भागेसरो एक-पुरखियाहे छल, संगीक जरूरत बुझि बाजल रहए-

"बड़बढ़ियाँ।"

माथपर मोटरी नेने रवि शंकरक डेग आगू दिस बढ़ैत गेल, मुदा मनमे बेर-बेर पानिक हिलकोर जकाँ उठैत रहै जे विश्वविद्यालय स्तरक कार्यक्रम भेल, बेकती-विशेषक नै छल, तखन किए ने बुझलौं? ..ने प्रश्नक जड़ि भेटै आ ने विचार आगू बढ़इ। मुदा तैयो बाढ़िक पलाड़ी जकाँ बहबे करइ। मन बहकलै, इन्दिरा अवासक जेकरे पक्का घर रहै छै हथियाक झटकीमे खसल घरक अनुदानो तेकरे भेटै छइ। सएह ने तँ भेल। की अहिना भोजे-भातक शिक्षण संस्थान बनल रहत? धू:! अनेरे मनकेँ बौअबै छी। ठीके लोक बताह कहैए! एहने-एहने बतहपनी सोचने ने लोक बताह होइए! अनेरे हमरे किए एते सोग अछि। 'जानए जअ आ जानए जत्ता।' लसिगर होइ आकि खढ़हर से ओ जानए। हमहीं की बजितौं जे अनेरे माथ धुनै छी। बड़ बजितौं तँ यएह ने बजितौं जे साहित्य जगतमे मध्यकालीन युग स्वर्णिम रहल। भक्तिमय साहित्यक सृजन एते कहियो ने भेल, मुदा भक्ति साहित्यक पछाइत वैराग्य अबैत आकि श्रृंगार? एबाक चाहै छल 'वैराग्य' से नइ आबि 'श्रृंगार' आबि गेल! समैयो मुगले शासनक छल। मिथिलांचलक किसानक सुदिन नै दुर्दिन छेलइ। बीससँ तीस रौदी प्रति सदी होइत आबि रहल छेलै, बाढ़ि-झाँट छोड़ि कऽ। तैसंग बड़का-बड़का भुमकमो भेल। आजुक संचार नहि, दू-गाम चारि गाम पसरैत-पसरैत

अवाज विलीन भऽ जाइ छल। ने धार-धूर आजुक छी जे आबे बाढ़ि अबैए आ पहिने नै अबै छल। खाएर छोड़ू। रौदीक मारिसँ जे परिवार नष्ट भेल, वा गाम छोड़ि कऽ जे भागल, तेकरा छोड़ि कऽ। जे इमानदार किसान छला ओ मिसियो भरि ओइ सभ प्रकोपसँ डोलला नहि, मातृभूमिक माटि-पानिमे अपनाकेँ समरपित केने रहला। भलेँ एक रौदीक मारि पाँच बर्खमे किए ने भरपाइ करए पड़ल होइन...।

एकाएक रवि शंकरक विचार आगू बढ़ल। मनमे उठलै- विश्वविद्यालय सर्वोच्च शिक्षण संस्थान छी। जे मिथिलांचल ऋृषि-मुनिक बास स्थल अदौसँ रहल आकि ओतबे गनल-गूथल छैथ जेतेकेँ दोरिका छाप भेट गेलैन! विश्वविद्यालयक दायित्व बनैत अछि जे जिनकर रचना दिवारमे सड़ि गेलैन, पानिक चुबाटमे गलि गेलैन ओहनो-ओहनो रचनाकारक खोज हुअए।

गामक सीमानपर अबिते रवि शंकरकेँ भागेसर मन पड़ल। मन पड़िते बुदबुदाएल-

“गौंआँ-घरूआ रहने भागेसर बहुत उपकार केलक। ओकरे केने कौलेजक पुस्तकालयसँ सम्बन्ध बढ़ल। नइ तँ तेहेन-तेहेन लुटिहारा सभ अछि जे किताबक कोन चर्च जे आलमारियो उठा कऽ लऽ जाइए। जँ ओ नै रहितए तँ अपने-बुते ओते भीतर तक थोड़े जा सकै छेलौं। ओकरे पाबि ने सभ रंगक किताबसँ भेँट भेल। जिनगी भरि ओकर उपकारकेँ नै बिसरब।”

रवि शंकरकेँ पटना छोड़िते भागेसर अपना पत्नीकेँ मोबाइलसँ कहि देलकैन जे ‘रवि शंकर बताह भऽ गेल!’

गाम अबैसँ पहिनहि तेना चालैनमे दऽ राधा चाललैन जे सौंसे गाम पसैर गेल, रवि शंकर बताह भऽ गेल! तहूमे चुप्पा बताह। कखन की कऽ देत तेकर ठेकान नहि। काने-कान सौंसे गाम बीआवान भऽ

गेल।

ओना ई बात परोछ रूपे चेतानन्दोक कान तक पहुँचलैन मुदा सोझहा-सोझही नै भेने अनेरे सुनलाहा बातक पाछू जाएब उचित नइ बुझि चुपे रहला। कौआ कान नेने जाइए, तइले कौआकेँ खेहरैसँ नीक, अपन कान देखब होइ छइ। ओना पौखैरक पानि जकाँ असथिर चेतानन्दक परिवार, तँए चिड़ैक एक लोल पानि उठौने हिलकोर नइ उठैत। दलानक ओसारपर मोटरी रखि रवि शंकर हिया-हिया चारू दिस ताकए लगल जे अपन हाजिरी तँ दर्ज करबैक अछि।

कनियेँ पछाइत चेतानन्द बाड़ी दिससँ एला। अबिते रवि शंकरकेँ पुछि देलखिन-

“बाउ, नीके छेलह किने?”

जहिना बिनु बोलक बच्चा माए-बापक बोल सुनि हँसि-कानि अपन बात कहैत तहिना रवि शंकर मुस्की भरि उत्तर दैत पिताकेँ गोर लगलक। गोर लागि अपन वस्तुजात सेरियाबए कोठरी दिस विदा भेल।

समाजक बीच अनेको सुआदक बात-विचार हवा-बिहाड़ि जकाँ वातावरणमे पसैरते रहै छइ। मुदा कोन बात कोन आवरणमे पसैर जाइ छै, ई बुझब बाल-बच्चाक खेल तँ छी नहि। एहनो तँ होइते अछि जे पहिने दीक्षे छिटाइत अछि शिक्षा हरा जाइत अछि। खाएर जे हौउ, चेतानन्दक मनमे उठलैन जे काल्हिसँ जे गाममे बीआ-बान भेल अछि ओकर मुड़ी पहिने देख ली। जँ रखै-जोकर हएत तँ राखब, नहि तँ मचोड़ि कऽ तोड़ि कातमे फेक देब...। आगू ससैरते चेतानन्दकेँ मनमे उठलैन- एक तँ ओहिना रस्ताक झमारल रवि शंकर अछि, तैपर कौलेजमे पढ़ैए। कौलेजिया छौड़ा सबहक जे चालि देखै छिऐ से किछु ने फुराइए। जँ कहीं रवि शंकरो ओहिना करए। मुदा कानमे नहियोँ

देब हमरा-ले उचित नहि हएत। पिते नै आदि गुरु सेहो छिऐ। ओकर नीक-बेजा नइ बुझब बाल-बोधक संग अन्याय हएत। कोनो जरूरी छै जे नीक बात सभकेँ अधले लगै, किछु के नीको तँ लगबे करै छइ। ..छातीपर पाथर रखि चेतानन्द बजला-

“बाउ, लोकक मुहेँ सुनै छी जे तोँ बताह भऽ पढ़ाइ छोड़ि गाम चलि एहल हेन, से की बात छिऐ?”

पिताक प्रश्न सुनि रवि शंकर मिसियो भरि विचलित नै भेल। जहिना पौखैरक असथिर पानि, काह-कूह निच्चाँ बैस गेने फरिच रहै छै तहिना रवि शंकरक मन असथिर रहइ। बाजल-

“बाबूजी, एक संग तीनटा प्रश्न उठा देलिऐ। उत्तर बेराबेरी देब। पढ़ाइ छोड़ि कऽ किए एलौं। बहुत बेसी तँ अखन धरि नै पढ़लौं जे भरि पोख उत्तर देब। मुदा एते जरूर बुझलौं जे अपन जिनगी अपने हाथमे लऽ कर्मकेँ धर्ममे प्रतिष्ठित कऽ सकै छी। नइ तँ मुँह किम्हरो बोल किम्हरो बनल रहैए। अपन जिनगी अपना हाथमे लऽ क्षमतानुसार अपनो आ दोसरोक सहयोग करिऐ। मुदा सहयोगोक सीमा छइ। जखन मनुख अपन सीमांकन कऽ चलत तँ ओहन सहयोगक बेगरते नै रहि जाइ छइ। मुदा बेकतीसँ परिवार, परिवारसँ समाज आ देश-दुनियाँ बनैत अछि, तँए बढ़ैत चलबे ने जिनगी छी।”

चेतानन्दकेँ बतहपनीक आभास नै भेलैन, तँए दोहरा कऽ बतहपनी शब्दक प्रयोग करब नीक नइ बुझलैन। पिताक बात छिऐ जँ कहीं उनटे रोपा जाए। शब्द तँ मनसँ उचरैत अछि। तँए अशुभकेँ शुभ बनाएब उचित भेल, मुदा शुभकेँ अशुभ बनाएब केना उचित हएत? अपनो नीक हएत जे जुआन बेटा भेल, सरकारो मानियेँ नेने हेतै, तँए अपना अधिकार आ कर्तव्यकेँ हमहीं किए रोकबै। हँ! तखन बिआह कराएब पछुआएल अछि से करबै धरि भार अछि। लेत अपन घर-

परिवार, सर-समाज। साठि बर्ख नहियेँ पूरल हएत तइले किए बैसल रहब। से नहि तँ एकटा आरो बात पुछिए लिऐ...।

..चेतानन्द पुछलखिन-

“बौआ, गाममे रहि करबह की? पढ़ि-लिखि सभ नोकरी-चाकरी करैए आ तूँ..?”

गंभीर होइत रवि शंकर बाजल-

“बाबू, अखन गामक असली रूप बुझैमे थोड़े बाँकी रहि गेल अछि तँए अखन किछु ने कहब।”

“की असली रूप?”

“गामक माटि-पानिक लम्बाइ-चौड़ाइ की छै, अपना केते अछि, गाममे परिवार केते छै इत्यादिकेँ बुझब बाँकी अछि से बुझि गेला पछाइत अपन योजना आगूमे रखि अहूँक विचार लेब।”

रवि शंकरक विचार सुनि चेतानन्द ठमैक गेला। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। की योजना? कोनो कि सरकारी कारोबार छी जे योजना बनौत। मुदा धाँड़-दे नइ मानब उचित नै हएत। भलेँ बीकछा कऽ पुछि लेब अलग भेल। तहूमे कौलेजमे पढ़ैए, जँ कहीं किताबक भाषा बाजल हुअए, तखन?

से नहि तँ नीक हएत जे अखन रवि शंकरोक मन थीर नै हेतै, ताबे ओहो थीर होइए, तैबीच अपनो अधखरूआ काज पूरा लइ छी। ओहो निचेन हएत अपनो निचेन हएब, तखन खरियारि कऽ बुझि लेब।

बेरका समए। चाह पीब चेतानन्द रवि शंकरकेँ चाल पाड़लैन। अबिते रवि शंकर पुछलकैन-

“किए सोर पाड़लौं?”

चेतानन्द बजला-

"तखुनका बात नीक जकाँ नइ बुझलौं?"

रवि शंकर-

"जाबे धरि गामक माटि-पानि, गाछ-बिरीछ, माल-जालक संग परिवारकेँ नइ बुझि लेब, ताबे अपन सीमा-सरहद नीक जकाँ नइ बना सकै छी।"

'माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादि' सुनि चेतानन्द बजला-

"ई कोन बड़का उलझन भेल जे तूँ ओझराएल छह। सात साए बीघाक गाम अछि, एगारहटा पौखैर अछि। इनार तँ मरिये गेल। दूटा बाट गाममे अछि। जे दुनू मिलि चौराहा बनल अछि। एकटा पुबे-पछिमे अछि आ दोसर उत्तरे-दछिने। तैसंग पाँच साए परिवारो अछि।"

चेतानन्दक विचार सुनि रवि शंकर बाजल-

"बाबू, जे बात नइ बुझल छल से बुझलौं। कनी थम्हू, कागतपर लिखि लेब नीक हएत।"

कागत-कलम आनि रवि शंकर बाजल-

"गामक रकबा केते अछि?"

"सात सौ बीघा।"

"परिवार केते अछि?"

"पाँच सौ।"

"अपना केते जमीन अछि?"

"साढ़े पाँच बीघा।"

"तखन तँ परिवारक हिसावसँ बेसी अछि?"

"हँ से तँ अछिए। तँए कि हम बेसी खेनिहार छी?"

बेसी खेनिहार सुनि रवि शंकरक मन ठमकल। मुदा जखन चोर-मोट सोझहेमे अछि तखन पुछिए लेब नीक हएत...।

..रवि शंकर बाजल-

"बेसी खेनिहार! माने?"

चेतानन्द-

"बाउ, अपनो मनमे अछि जे जेते खेतमे काज केनिहार छैथ हुनका सबहक बीच एकरंग खेत होइन, जइसँ श्रमक प्रतियोगिता हएत। मुदा जेकरो बटेदारी, भूदानी खेत भेलै सेहो सभ कियो भरना लगा तँ कियो केबाला कऽ दिल्ली–बम्बै धेने जा रहल अछि। तैसंग जिनका बेसी छैन, ऊहो नोकरी-चाकरी करए चलि गेल छैथ, गामक खेत तँ ओहने परती बनि गेल अछि जेहेन उजड़ल गाम होइ छइ। तखन तोहीं कहह जे की कएल जाए?"

प्रश्नकेँ ओझराइत देख रवि शंकर बाजल-

"पहिने अपन समए आ खेतीक मिलान करए दिअ, तखन फेर आगू गप करब।"

उत्सुक होइत चेतानन्द बजला-

"हँ, हँ, नीके सोचै छह। कोनो काज करैसँ पहिने बुझि-जानि लेब बेसी नीक होइ छइ।"

रवि शंकरक जिज्ञासा देख चेतानन्दकेँ खुशी भेलैन। मनमे उठलैन- 'नै दुनियाँ तँ कम-सँ-कम अपन परिवारक तँ सभ एक रंग खाएब, ओढ़ब-पहिरब, एक रंगक घरमे तँ रहब। यएह ने भेल परिवारक एकरूपता। ई तँ नहि ने जे कुरसीपर बैसल बेटा बापकेँ कहत- 'ऐ बूढा, कहाँ रहता है!' मुदा जखन अकासे फाटि गेल अछि

तखन दरजीकेँ बपहारिये कटने की हएत?

साँझक समए। लालटेन नेस चेतानन्द दरबज्जाक चौकीपर चाह पीब असगरे बैसल छला। बाजाप्ता कागज कलम नेने रवि शंकरो आबि बैसल। हाथमे कागज देखते चेतानन्द पुछलखिन-

"बौआ, कथीक कागत-पतर छिअ?"

जहिना कोनो काजक पहिने भूमिका बान्हल जाइ छै तहिना भूमिका बान्हि कागत खोलि रवि शंकर बाजल-

"बाबूजी, अपन किसान परिवार छी।"

'किसान परिवार' सुनि चेतानन्द बजला-

"से तँ छीहे। जँ से नै छी तँ किए बड़को-बड़को कुरसीबला अपनाकेँ निधोख किसान परिवार आ किसानक बेटा बजैए!"

मुस्कियाइत रवि शंकर बाजल-

"पहिने सुनि लिअ, तखन अपन विचार देब। पानि खेतीक परान छी। बिनु पानिक किसानक जिनगी मुरदाक होइ छइ। चारिए मासक बरसात बारहो मासकेँ सजबैए। जँ हाथमे पानि आबि जाएत, तखन लत्ती जकाँ किसानी पसैर जाएत। तँए किछु खेत बेच बोरिंग कराएब। खेतीक विकसित रूप बनबैमे जेते खर्च हएत ओ खेत बेच कऽ करब।"

चेतानन्द मुड़ी डोलबैत बजला-

"घर-परिवार सुमझाबैक अर्थ ई नहि ने होइ छै जे विचार रोकल जाए। जे मन फुरह से करह, मुदा पाँच कट्ठा तीमन-तरकारी-ले हमरो बेरा दिहह। देखै छी जे तेते ने लोक दबाइ दइ छै जे ओकर गुणे बिगाड़ि दइए। अपना हाथे उपजाएब मनसँ खाएब। अछैते औरुदे मरनाइयो नीक नहि!"

चुटकी लैत रवि शंकर बाजल-

"बाबूजी, घरक आगूओमे धन-खेतीए रखने छी आ मन निरोग तरकारीपर जाइए!"

चेतानन्द-

"अखन तूँ नै ने बुझबहक। ई खेत गोरहा छिअ। नहियौं तँ बोरा कट्ठा भइए जाइए।"

बिच्चेमे रवि शंकर बाजल-

"आ जइबेर रौदी भऽ जाइ छइ?"

"एते लोक हिसाव जोड़त तखन काज चलतै।"

"तँए ने..?"

❍

शब्द संख्या : 2388

घूर

गोसाँइ डुमैक समए भऽ गेल छल। इसान कोणक हवा मध्यम तेज गतिए चलैत रहए। धुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समए, जइसँ जरनो-काठी आ गोइठो-करसी सुखा कऽ हरनाठ भऽ गेल छल। माल-जालक थैरमे घूर पजारैक समए भऽ गेल छल।

बजार जाइए काल बैकुण्ठ बाबा पोता–पुष्पानन्द–केँ कहि देने रहथिन जे बौआ परिवार सरकारी ऑफिस नै छिऐ जे अपने रहब हजार कोस हटल मुदा जिम्मा रहत ऑफिसक। परिवार परिवार छिऐ, तहूमे गिरहस्त परिवार। जइमे ने उचित अभ्यागतक समए निर्धारित अछि आ ने साँढ़-पाराक। तहूमे केतबो बन्हौटा गाए-महींस किए ने हुअए मुदा डोरी टुटलापर वा खुजलापर किछु-ने-किछु मलैकिये जाइए। तहूमे गोटे-आदहे एहेन होइए जे बोनैया जकाँ सौंसे गाम मलकए लगैए। तँए जेते काल हम नै रहब तेते काल दुआरे-दरबज्जापर रहबो करिहह आ खाइयो पीबैले दिहक। पोसा माल-जाल अनठिया कुत्तो-बिलाइ देख भड़कैए। तही काल खुट्टो आ डोरियो टुटैक डर रहै छइ।

बाबाक बात सुनि पुष्पानन्द हँ-हूँ उत्तर नै दऽ मने-मन विचारए लगल जे जिम्मा तँ किछु ने भेल मुदा समए बेठेकान भेने नमहर भेल। बाबा कखन बजारसँ औता कखन नहि, तैबीच खाली ओगरवाहिए आ खुअबैए-पीअबैक बात नै भेल, जेठुओ समैसँ समए दुरकाल

अछि, नहाबैयो पड़त आ घरो-बहार करए पड़त। तहूमे जँ कहीं पुरना संगी भेट गेलैन, तखन घुमि कऽ एबो करता कि नहि। तखन तँ दिनक कोन बात जे कैयो दिनक जिम्मा भऽ गेल...।

गप्पकेँ ओझराइत देख पुष्पानन्द विचारलक जे कोनो कि अनभुआर काज अछि जे अबूह लागत, जिनका एते अज-गजक भार रहतैन ओ अपने नइ बुझता जे घरक समैक की महत छइ। आ जँ एहेन संगी भेट जानि जे नोकरीसँ रिटायर भऽ आएल होथि, जिनका ने खेती-पथारी होनि आ ने माल-जाल..?

अपन खेती-वाड़ी, माल-जाल, फल-फुलवाड़ी तँ किसाने परिवारक अंग छी, जे नोकरी-चाकरीमे नै अछि। तखन तँ दुनू गोरेमे यएह ने समझौता हेतैन जे अपने ऐठाम चलल जाए जे सुच्चा दूधक चाहो पीब आ भरि पोख गप्पो हेतइ। गप्पो कोनो छोट थोड़े हेतैन, रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ सौंसे जुआनीक गप्प हेतैन। खाएर जे हौन। जाबे बाबा घुमि कऽ नै औता ताबे तकक भार भेबे कएल। बेर खसिते माछी-मच्छर आबए लगै छै, ताबे धरि नै आएल रहता तँ घूरो कऽ लेब, सएह ने।

हँसैत गोसाँइकेँ पाट होइत देख पुष्पानन्द बीच थैरमे घूर लगौलक, जैठाम सभ दिन घूर लगौल जाइ छल। अनभुआर रहने पुष्पानन्द गदौसबला खढ़ आन दिनसँ घूरमे बेसी दऽ देलक। ओना करसीक हिसाव ठीके रहै, किएक तँ सबेरे बैकुण्ठ बाबा रौदमे करसी पसारि देने रहथिन। खड़ाएल खढ़ रहने पजार पड़िते एक्के बेर धुधुआ कऽ चारूकात पकैड़ लेलक। हवा रहबे करै, आगिक लुत्ती उड़ए लगलै।

तखने बैकुण्ठ बाबा दरबज्जापर पहुँचला। घूरकेँ देखते साइकिल ओलतीमे ठाढ़ कऽ लोटा लऽ कलपर विदा भेला, घूरमे पानि

छीटब जरूरी बुझि पड़लैन।

ओना दरबज्जापर अबिते घूर देख बाबाक मन करुआ गेलैन। आबि गेलौं तँए ने, नहि तँ घर-दुआरमे आगि लगैत कि नहि? पोता एतबो नइ बुझैए जे केते हवामे घूर लगाबी आ केतेमे नै लगाबी! मुदा जुआन-जहान पोता अछि, तहूमे कौलेजमे पढ़ैए। आनकेँ देखै छिऐ जे बाप-दादाक आगूमे बकटेंट जकाँ गप्पो करैए आ गँजो-भाँग पीबैए। भलेँ हमरा अखन तक एहेन नै भेल मुदा समैक रोग तँ महामारी छी, केकरा पकड़त, के मरत आ के नै मरत तेकर कोन ठेकान।

बाबाक मुँहक रूखि देख पुष्पानन्द बुझि गेल। अपन ड्यूटी समाप्त बुझि टहलैले निकैल जाएब नीक बुझलक। अनेरे की बजता की नहि, तइसँ नीक ससरिये जाएब हएत। दादी आँगनमे छैथे ओ बुझबे करथिन, अपन औथिन।

गुड़क मारि जहिना धोकरा अँगेजने रहैए तहिना अंगेजल छैन्हे, अपन दुनू गोरे फरियेता।

घूरमे पानि छीटि आगि शान्त करैत बैकुण्ठ बाबा कपड़ा बदैल, कलपर हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर आबि बजारक समान मिलबए लगला। पतिक चाल-चूल पाबि कमली आबि पुछलकैन-

“चाहो-ताहो पीब आकि पीनइ आएल छी?”

ओना बैकुण्ठक मन करुआएल रहैन मुदा पत्नीक बात सुनि तामस नै उठलैन। तामसक मुद्दा रहैन, हवामे घूर। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दापर अबितो अछि आ जाइतो अछि। ई तँ नहि जे तामस उठल तँ उठले रहि गेल आ तैबीच घीबोक घैल ओहने आ ताड़ियोक घैल ओहने रहल। क्रोध तँ मुद्दा-मुद्दाक होइत अछि। तहू मुद्दामे जगह-जगहक असर सेहो भिन्न होइत अछि। ई तँ नहि, जे गाछक पात जकाँ कोनो एहनो होइत जे बिनु हवोक डोलैत रहैए आ किछु एहनो होइत

जे बिहाड़ियोमे नै डोलैए। ई निर्भर करै छै गाछक चालि-बेवहारपर। तँए ने एकटामे जड़िसँ टीकासन धरि सिर लुधकल रहै छै, आ दोसरमे सिरोक जगहपर जल्ले रहै छइ। मनुखो तँ ओहिना ने अछि...।

मनकेँ थीर करैत बैकुण्ठ बाबा पत्नीकेँ कहलखिन-

“हाट-बजारक चाह केहेन होइ छै से नइ बुझै छिऐ, जँ पीबे केने हएब तँ ओकर मद्दीए केते हेतइ?”

हवामे मसुआएल खढ़-पात जकाँ पतिक बात सुनि कमली पोचारा दैत बजली-

“अनके जकाँ हमहूँ छी जे पुरुख रहैत हाट-बजारक चाह पीब, जँ चाहेक बनीमा किछो घोरि दिअए आ पीविते-पीविते लटुआ जाइ, तँ की बनीमा पजिया कऽ नै पकड़त, तखन अहाँक मोले कथी रहि जाएत?”

एक तँ करुआएल मन तैपर पत्नीक झमार बैकुण्ठकेँ बरदाश नै भेलैन। झमाड़ि कऽ बजला-

“अखन मन थाकल अछि, पहिने कनी पानि पीब चाह पीब, तखन ने थीर हएत। निचेनसँ आगूक गप करब। गोर लगै छी अखन जाउ। चाह बनौने आउ।”

पतिक दुनू हाथ जोड़ल देख सूपक भाँटाकेँ ऊपर फेंक, सूपेसँ लोकैत कमली बजली-

“पुरुखक हाथे जोड़ब की! ई तँ घोड़-मिलान छी जे मुहसँ हिहिया पाछू घुमि चौताल फेकब भेल। गदहो जकाँ जँ चलै छी तैयो तँ एक्के रस्तासँ चलै छी। भरि दिनक काजक माला बना नेने छी आ ओकरे भिनसर-सँ-साँझ धरि जाप करैत रहै छी!”

पत्नीक भरिगर बोलसँ बैकुण्ठ अपनाकेँ झँपाइत देख पाशा

बदलैत बजला-

"बजारक चीज-वौस सभ अछि, साँझ पड़ि गेने फेड़-फाड़ भऽ जाएत। जाबे अहाँ चाह आनब ताबे हमहूँ सेरिया लइ छी।"

काजक मूर्त रूप देख कमली बिनु किछु बजने चाह बनबए आँगन विदा भऽ गेली।

चीजे-वौस की, मासक अदहा किलो चाहपत्ती, चारि किलो चीनी, दू साए ग्राम सुपारी, बीस ग्राम खाएर आ पचास ग्रामक जर्दा डिब्बा...। तहूमे सभटा बँटले बाँटल अछि, रखि देब। मुदा अपने मनमे जे क्रोध ऐ रूपे तनल अछि जे घरमे आगि लगिये जइतए आ जिनगी भरिक कमेलहा जरिये जइतए। ई तँ काजक संयोग छल जे ओहो घूरमे आगि पजारलक आ हमहूँ एलौं। आखिर ओकरा अखनो धरि घूर लगबैक लूरि किए ने भेल, ई दोख केकर? की अपनो घूर लगबैक लूरि नै भेल आकि लगबैक लूरि बुझा नै पेलिऐ। जँ अपनालूरि नै रहैत तँ बारहो मास माल-जालक रक्षा केना करै छी। से तँ करै छी मुदा तखन पुष्पानन्दकेँ लगबैक लूरि किए ने भेल जे एक तँ धुरिया सौन भेने जेठोसँ बत्तर समए अछि, तैपर इसान कोणक मध्यम-तेज[4] हवा बहि रहल छइ। खढ़-पातसँ लऽ कऽ घरक छप्पड़ धरि खड़ाएल अछि, तैठाम एहेन घूर लगाएब अनुचित भेल की नहि? से तँ जरूर भेल। मुदा एहेन घूर पुष्पानन्द जानि कऽ तँ नइ लगौलक जे घर-दुआर जरि जाउ? तखन ओकर दोख की भेल..?

गुम भेल असगरे दरबज्जापर बैसल बैकुण्ठ बाबा अपन काजक समीक्षा अपने करैत रहैथ।

चौकपर पहुँचते पुष्पानन्दक मन पुष्पानन्दकेँ धकलए लगलै जे जेठुआ गरे जकाँ बाबाक नजैर रहैन तँए कोनो धार कोण लऽ कऽ

[4] एक आ सएक बीच अनठानबे अंक मध्यम भेल, तँए तेज-मध्यम, मध्य मध्यम आ मध्यम।

बरिसेबे करता। से नहि तँ रस्ते-रस्ता टहलैमे थोड़े देखता, कनसोहो लऽ लेब आ टहैलियो लेब। जँ कहीं सोझहामे पड़ता तँ कनी डेग झटका लेब जे बुझता कोनो काजे केतौ जाइए। नइ तँ सासुरक डेग पकैड़ चलब...।

फेर मनमे उठलै- की सासुरक मद्धिम डेगे ने तँ जिनगियोक डेगकेँ दुबड़ा दइए?

मुदा कोनो सुनि-गुनि नै पाबि पुष्पानन्द तीन चक्कर लगा लेलक। मनो मानि गेलै जे दादियो तेहेन लगारी छैथ जे केहनो करियाएल मेघ किए ने हुअए ऊपरेमे सुखा देतैन।

प्रश्न अछि जे बारहो मासक मालक थैरमे केहेन घूर लगौल जाए जे ओइ समैक माछी-मच्छरसँ रक्षा हेतइ। माछियो-मच्छर तँ रंग-बिरंगक अछि। के केहेन धुआँसँ भागत? तेतबे नहि, घूरक धुआँ तँ हवाक संग चलै छै, तँए हवाक रूखि सेहो देखए पड़ै छइ।

बैकुण्ठ बाबाक मन घुमलैन। सौन मास। सौन तँ सौन छी। अनेक रूप, अनेक चेहरा। एहनो होइत जे शीतल जल शीतल समीरक संग लहलहाइत खेतक हरियरी ओहन साड़ी पहीरि छमकैत रहैए जेना गदाएल खेसारी जकाँ गदाएल पेट मनकेँ भरने रहै छइ। मुदा एहनो सौन तँ होइते अछि जे जेठुआ धुरा उड़बैत धुरिया सौन कहबैए। हँ से तँ कहबैए! तखन?

तखन किछु ने! आइक सौन केहेन अछि ओ भेल विचारैक बात। अनेरे आगू देखब जे पोता-पोती, नाइत-नातीन की खाएत, की पहिरत, केना रहत? नहि जँ पाछू घुमि ताकब तँ दर्जनो लाख बर्ख पहिने जनकक मिथिला तंत्रमार्गसँ प्रभावित हजार बर्खक मिथिला बनि वाड़ीए-झाड़ी नाचल घुमी, ईहो तँ नीक नहियेँ। खाएर जे हौउ, ने दुनियाँक ठेकान अछि जे केते आ केतेटा अछि आ ने लोकक ठेकान

छै जे केहेन अछि। तखन? हँ तखन अछि जे अपन चौबीस घन्टाकेँ नियमित जिनगीमे बान्हि अकासीए सूर्य-चान जकाँ अपना धुरीमे नियमित चलि जिनगीक आदि-अन्त कऽ विसर्जित करी। जँ से नइ तँ अखन कम स्कूल कौलेज अछि तखन तँ ई गति अछि जखन बेसी हएत, तखन पूछत आकि धकियाएत? खाएर जे हौउ, अनेरे मनकेँ घोर-मट्ठा केने छी...।

तही बीच कमली चाह नेने एलैन। अनुकूल जगह पाबि बैकुण्ठ पुछलखिन-

"हमरेटा-ले अनलौं आकि..?"

पतिक प्रश्न सुनि कमली ठमकली। मनमे उठलैन जे एना किए उटपटांग बात कहलैन! ऐठाम कियो दोसराइत तँ नहि अछि, तखन? ओह! भरिसक मने चलिया गेलैन हेन। नहि, मनमे अखनसँ खट-खुट होइते रहत, तइसँ नीक जे पुछिए लिऐन-

"दोसराइत ऐछे नै तखन आरो चाह..?"

कमलीक प्रश्न सुनि सिताएल नढ़िया जकाँ बैकुण्ठ बाबा बजला-

"आ अहाँ?"

कमली मुहेँ लगल पुछलखिन-

"अखन धरि कहिया सोझहामे चाह पीलौं जे..?"

बैकुण्ठ-

"अखन धरि अपन विचारकेँ हम अहाँ ऊपर थोपैत एलौं, मुदा जे काज अहूँ करै छी आ अपनो करै छी ओइ विषयमे बैस कऽ विचार नै करै छी। से आइसँ शुरू करब। तँए कहलौं जे एकठाम बैस चाहो पीब आ घूरक विषयमे गपो-सप्प करब।"

पतिक बात सुनि कमली निधोख भऽ कऽ आँगनसँ चाह आनि आगूमे बैस पीऐत पुछलखिन-

"बाजू की उलझन अछि?"

बैकुण्ठ बजला-

"उलझन कथी रहत, एक तँ रस्ताक झमारल बजारसँ आएले छेलौं कि पुष्पा घूरमे आगि देलक। केना घूर लगौल छेलै केना नहि, एक्के बेर तेना धधैक गेलै जे घरेमे आगि लगि जाइत। तखनेसँ मन खसल जाइए, तँए अहाँसँ विचार करब अछि।"

पतिक गिरगिराइत मन देख कमली अवसरकेँ हाथसँ जाए नै दिअ चाहैत पुछलखिन-

"पहिने ई कहू जे परिवारमे मालक थैर आकि जाड़क मास घर-ओसारक घूर पुरुख लगबै छला आकि औरत?"

कमलीक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ आरो सकपका गेला। बजला-

"दुनियाँ बड़ीटा छै आ बहुत लोको छै, जइसँ बहुत रंगक विचारो छइ। मुदा अपना परिवारमे तँ पहिने अहीं लगबै छेलौं, जहियासँ वर-बेमारीमे पड़लौं तहियासँ अपने लगबै छी।"

पतिक विवशता कमलीकेँ बुझि पड़लैन। मनमे उठलैन अर्द्धांगिनी। अर्द्धांगिनी की? मात्र सन्तान पैदा करब आकि जिनगीक अर्द्धांगिनी? खाएर जे हौउ, ठीके जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि, नइ तँ तेंसरे जे रोग धेलक से मरैमे बाधा रहए, ई तँ औरुदे बाँकी रहए जे बँचलौं...। बजली-

"देखियौ, मालक थैरमे बारहो मास घूर लगौल जाइ छै, आ घर-ओसारमे मात्र जाड़क मास। होइ छै की नहि?"

"हँ, होइ छइ।"

"बारहो मास समैक हिसावसँ माछियो-मच्छर होइ छइ। दिनमे कमो-सम मुदा दिन लहसैत माल-जालक देहमे लुधकए लगै छइ। किछु एहेन माछी-मच्छर होइ छै जेकरा उड़ौल जाइ छै आ किछु एहेन होइ छै जेकरा भगौल जाइ छइ।"

पत्नीक विचारकेँ सुहकारि मुड़ी डोलबैत बैकुण्ठ बजला-

"हँ से तँ होइ छइ।"

दलदलाइत पतिकेँ देख कमली बजली-

"आइक केहेन समए अछि तइ अनुसारे घूर लगौल जाएत। अपना ऐठाम रौदियाह समए अछि, जेठोसँ बत्तर अछि। माटि तक तबि गेल छइ। जखन माटि तबि गेल तखन माटिक ऊपरका तँ तबबे करत किने?"

"हँ, से तँ तबबे करत।"

"तबैत-तबैत झड़कैयो लगत। झड़कनाइक माने भेल सुखाएब। कोनो वस्तुक सुखाइक माने भेल ओकर नमीक सूखब। आगिकेँ तँ पानिए दबैत अछि, जैठाम पानि नै रहत तैठाम तँ बेनग्र भऽ आगि नचबे करत।"

"हँ से तँ नचबे करत।"

जहिना जादूगर दर्शककेँ हिप्टोनाइज करि कऽ 'हँ-हँ' करबए लगैए तहिना पतिकेँ 'हँ-हँ' करैत देख कमलीक मनमे उठलैन- गरदैनमे उतरी देख केकरो घर-घराड़ी लिखाएब नीक नहि, ओ समाज ठक छी, कहत जे माए-बापकेँ मुइला पछाइत जेते नमहर भोज करब तेते नमहर जगह स्वर्गमे भेटतैन, ई बड़बढ़ियाँ। धर्मक काजमे सहयोग करी, ईहो बड़बढ़ियाँ, जखन सराधक भोज धर्मक काज भेल तखन जे

सहयोग भेल ओ मदैत किए ने भेल जे कर्ज बनि लोकक घर-घराड़ी लिखा गामसँ उजड़ि दइए?

फेर मन कहलकैन- धु! अनेरे कोन लपौड़ीमे मनकेँ ओझरबै छी। अपन परिवारकेँ जेहेन बना समाजमे ठाढ़ रहब, समाजक ओहन लकड़ीक खुट्टा जकाँ भेलौं। जेकरा छै ओ चाननो लकड़ीक धरैन, चौकैठ आ केबाड़ लगा घर बनैबते अछि। मुदा ऐ परिवारक कर्ता-धर्ता तँ अपने दुनू परानी ने भेलौं? जखन मेहनत करि कऽ खाइ छी, दिन बितबै छी आ तइसँ जे समए उगड़ैए ओइमे दोसरोकेँ जहाँ धरि भऽ पबैए मदैत करै छिऐ। जँ अहिना समाजक सभ परिवार बनि जाए तखन केहेन सुन्दर समाज हएत?

खाएर.., समाज तँ देव-दानवक भाँजमे पड़ि गेल अछि। जेकर कोनो ठेकान नै छइ। कखनो दिनकेँ राति कहत तँ कखनो रातिकेँ दिन। जेना महाभारतक लड़ाइ काल भऽ जाइ। कखनो साँझक काज भोरमे करत तँ कखनो भोरुका काज साँझमे।

..विह्वल होइत कमली बजली-

"किसान परिवारमे घूरक अपन महत छइ।"

तैबीच पुष्पानन्द पहुँच गेल। पुष्पानन्दकेँ देखते कमलीक मुहसँ निकलल-

"भने बौऔ आबिए गेल। घरक कोनो बात आकि काज, जँ सभ विचारि कऽ करब तखने ने घरमे मतभेद नै हएत?"

जाधैर पुष्पानन्द लगमे नै आएल छल ताधैर तँ बैकुण्ठ पत्नीक विचारमे हूँहकारी भरै छला मुदा पुष्पानन्दक सोझहामे भरब उचित नइ बुझि चुपे रहला। मुदा जहिना खिस्सा-पिहानीमे बाल-बोध पहिने हूँहकारी भरैत अछि तहिना पुष्पानन्द भरैत बाजल-

"हँ, से तँ ठीके?"

पुष्पानन्दक हूँहकारी सुनि कमलीक मनमे उठलैन, आब पहिल श्रोता पति नहि पोता भेल। तँए एहेन बाजी जे परिवारक हितक होइ, जे सबहक दायित्व छी...। बजली-

"बौआ, बारह मासक साल होइ छइ। जइमे छहटा रीति अपना ऐठाम होइए। मुदा सभ रीतक महत समान नइ छै, दू-दू मासपर रीति सेहो होइ छै आ बिनु मासक सीमा परहक सेहो संक्रमण-रीति होइ छइ। मुदा मोटा-मोटी अपना ऐठाम तीनटा रीति कहियौ आकि मौसम अछि। पहिल- जाड़, दोसर- बरसात आ तेसर- गरमी।"

नव बात सुनि पुष्पानन्दक जिज्ञासा बढ़ल। जहिना बिनु ब्रेकक साइकिल ढलानपर चलौनिहारसँ बेकाबू भऽ जाइत तहिना पुष्पानन्दक मन ढलैक कऽ बेकाबू होइत बाजल-

"दादी, पहिने कोन भेल?"

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि कमली घबरेली नहि, पोखैर-इनारक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

"बौआ, ई बेठेकान अछि। चैतकेँ पहिल मास मानबै तँ गरमी पड़त, अखारकेँ मानबै तँ बरसात पड़त, नहि जँ कातिककेँ मानबै तँ जाड़ पड़त। मुदा तीनू मौसमकेँ अपन-अपन गुण-धर्म छै जे बरहमसियो छै आ समइयो।"

"से केना बुझबै?"

"बुझैले तँ दुनियाँ भरल अछि बाउ, मुदा परिवारक काजक बीच कहै छिअ। गरमी मौसममे जे घूर लगौल जाइ छै तेकर मुख कारण अछि माछी-मच्छरकेँ भगाएब। ओइ समए जाड़क मौसम बीतल रहै छै, माछी-मच्छर ठिठुरल रहै छै जइसँ ओकरामे जहर कम छै तँए विषैला कम होइए, मालो-जालक देहपर रहल तँ बुझि पड़ल जे खरहे-

पात अछि। तैसंग हवा-बिहाड़िक मास सेहो होइ छइ। तँए ओइ समैमे अधसुखू खढ़ो-पात आ गोबरो-करसीक घूर लगौल जाइ छै जे हवामे उड़बो ने करत आ धुआँसँ माछियो-मच्छर भागत।"

कमली दादी बजिते छेली कि बिच्चेमे पुष्पानन्द टोकि देलकैन-

"आ बरसातमे?"

'बरसात'क नाओं सुनि कमली ठमैक गेली। मनमे उठलैन- जेते ठेकनगर जाड़ आ गरमी मास अछि ओते बरसात कहाँ अछि? बरसा भेने बरसात नइ तँ रौदी। गरमियोंसँ असाध उमसल गरमी। एक तँ तरे-तर देहक पानियों सुखबैए आ दोसर आगिपर चढ़ल अदहन जकाँ बाहरो निकालि फेकैए। मुदा तइसँ की! जँ बेठेकानोकेँ ठेकानि-ठेकानि पकड़ी तँ ऊहो पकड़ाइए जाइए। मनकेँ थीर करैत कमली बजली-

"बौआ, नाना-नानी आकि दादा-दादीक बातकेँ आकि खिस्सा-पिहानीकेँ जँ ओहिना अनके जकाँ बुझबै तखन हुनका सबहक अवहेलना हेतैन। नानी तँ नानी छैथ। जिनका पेटमे आँखि बनबैयोक शक्ति छैन आ बन्न आँखिकेँ सतमीक दुर्गा जकाँ डिम्हो दैक शक्ति छैन। खाएर जे हौउ। बाउ! दुनियाँ बेठेकान अछि, अनेरे अपनो वौआएब आ तोरो कथीले वौएबह। अपने बीतल कहै छिअ। जहिना ऐबेर धुरिया सौन अछि, तहिना बर्ख पाँचम सेहो भेल रहए। जहिना अपना ऐठाम घूर लगबै छी तहिना ऊहो मालक थैरमे लगौने रहए। बेठेकान लगौलक। हवा बहिते रहै अपने घरमे आगि लगि गेलइ। एक्के घरक आगि तेना ने पसरल जे सौंसे गामे लगि गेल। गामो सूर्ज मण्डल! छणेमे छनाक भऽ गेलै! खाएर जेतए भेल तेतए भेल, मुदा एते तँ बुझहऽ पड़तह जे समए केहेन अछि। ओना आन-आन मासक ठेकान करब थोड़े हल्लुक अछि मुदा सौनक भारी अछि।"

जिज्ञासासँ जगैत पुष्पानन्द हाथ जोड़ैत बाजल-

"की भारी अछि?"

पुष्पानन्दक प्रश्न सुनि बैकुण्ठ चौंकला। जेना केकरो कोनो बात नइ बुझल रहल आ दोसराक मुहेँ सुनि होइत, तहिना पहिने पुष्पानन्दक चेहरापर नजैर खिड़ौलैन। नजैर खिड़ैबते जेना कोनो बच्चाक पेट हसोंथि माए भूखक अनुमान कऽ लैत तहिना बैकुण्ठ केलैन। प्रश्नकेँ तौलैत नजैर पत्नी दिस बढ़ौलैन। मुदा जहिना बच्चाक उमेरक हिसावसँ दूध पिअबैले माए खुशी-खुशी तैयार होइत आ दुनू हाथ खेलाइत बच्चा दिस बढ़बैत तहिना कमलीकेँ देख आँखि निच्चाँ कऽ लेलैन।

तैबीच शान्तचित्त होइत कमली बजली-

"बाउ, घूरक गप ताबे चौपेत कऽ रखि दियौ। पहिने माछी-मच्छरक गप सुनि लिअ?"

दादीक जवाब सुनि पुष्पानन्दक मनमे ओहेन बात उठल जेहेन नटकिया सभ उठबै छैथ। मुदा मुँह चुप केने रहल।

पुष्पानन्दकेँ चुप देख कमली बाजए लगली-

"माछी-मच्छरकेँ काल नइ बुझि सभ जीव जीवे छी से बुझब नीक हएत। की मनुखक बच्चा बोन-झाड़मे आन जीव जन्तुक बच्चा जकाँ पला सकैए? खाएर जे हौउ। बाउ, सौनमे नाग पंचमी होइ छै, पहिल परवक पाँचिम दिन। ओइ दिनसँ माछियो-मच्छर आ आनो-आनो बिनु-जहरीलोसँ जहरीलाक विषवन होइ छइ। जइसँ माछियो-मच्छर आ आनो-आनमे बीखक संचार होइ छइ। गरमी मासक माछी-मच्छर मरबो करैए आ विषेबो करैए। मुदा जेकर जन्म होइ छै ओ विषेबे बेसी करैए। आ विषेने ओकरा खूनो पीबैक शक्ति बढ़ि जाइ छै आ विषक दर्द सेहो बेसी होइ छइ।"

कमलीक बात अन्तो ने भेल छेलैन कि बिच्चेमे बैकुण्ठ बाबा

बजला-

"सभटा बात आइए पुष्पानन्दकेँ अशोकारिष्ट जकाँ एक्केबेर बोतलो भरि पीआ दियौ। तखन देखबै जे केते लाइग करै छइ।"

❍

शब्द संख्या : 2812

कनियाँ-पुतरा

कमला-कमलक जन्मक उनैसम दिन। उनैसमासी कर्म केला पछाइत जहिना कर्ता चैनक साँस लेबो करैत आ छोड़बो करैत तहिना सुधनी दादी पोती (कमला) पोता (कमल) केँ जाँति-पीचि, पछबरिया ओसारपर कजरौटी दऽ पूब सिरहौने सुता बेटा-पुतोहुकेँ कहलखिन-

"आब अपन करमकेँ करम-धरम करह, वाड़ी-झाड़ी बिरहा गेल हएत ओकरो तकतियान नै करब तँ जीब केना?"

कहि सुधनी दादी आँगनसँ निकैल वाड़ी दिस विदा भेली आकि दछिनवरिया घरक कोनचर लग पहुँचते मनमे ठहकलैन। ठहैकते ठाढ़ भऽ गेली। ठहकलैन ई जे कहुना तँ घरमे हमहीं बुढ़ छी, मुदा सुनैत तँ यएह एलिऐ जे जँ बेटा-बेटीक जौँआँ सन्तान हुअए तँ पहिने बेटाक जन्म होइ छै पछाइत बेटीक। मुदा से भेल कहाँ। पहिने बेटीक जन्म भेल? मुदा पुछबो केकरा करबै? बेटा-बेटे भेल, पुतोहु कनियेँ छैथ, तखन? समाजमे जँ केकरो पुछबै तँ कहत जे बुढ़िया बताह भऽ बड़बड़ाइए। गुनधुनमे सुधनी कोनचर लग ठाढ़ भेल ने आगू बढ़ैत आ ने पाछू ससरैत। अपन दतारी दोसरो-तेसरो तँ पुछैवाली छैथे। मुहाँ-मुहीं नै पुछि हएत, मुदा पुछबा तँ सकै छिऐन। चोटे आँगन दिस घुमि पुतोहुकेँ हाथक इशारा दैत कहलखिन-

"कनियाँ, कनी एमहर आउ।"

ओसारपर बैसल धीरजकेँ मिसियो भरि शंका नै भेलैन जे एहेन

कोन गप छी जे सोझहामे नै बाजि माए कातमे कहै छथिन। शंको केना होएत चुल्हि-चौकाक बात तँ सासु पुतोहुएकेँ ने कहथिन, तइले बेटाकेँ किए कोनो तरहक कुवाथ हेतैन। लगमे अबिते सुधनी बुधनीकेँ कान लग फुसफुसा कऽ बजली-

"कनियाँ, अहाँ तँ अखन नव-नौताड़ि छी, अखन ओते नइ बुझबै मुदा माए तँ छैथ। चुपचाप हुनकासँ बुझि लिअ जे जौँआँ सन्तानमे पहिने बेटियोक जन्म होइ छइ?"

सासुक बात सुनि बुधनी मानि तँ गेली, मुदा तैयो बजली-

"ओना काल्हिए हम पुछि लेबैन, मुदा कहियो बाजल छेली जे पहिने बेटेक जन्म होइ छइ।"

पुतोहुक बात सुनि सुधनी ठमैक गेली। मुदा तैयो बजली-

"कनियाँ, आँखिक देखल अहूँकेँ अछि आ हमरो तखन सुनलेहे बात मानब उचित हएत?"

सासुक बात सुनि बुधनी ठमकली। बल्ला आकि चूड़ी देखैले कोन ऐनाक जरूरी कोन स्त्रीगणकेँ होइ छइ। ई तँ सद्यः आँखि देखैत अछि। जेकरा आँखि नै देखैत तइले ने ऐनाक जरूरत। कमसँ-कम एते तँ हेबे करत जे जहिना ऐ समाजमे (सासुरक) तहिना नैहरोक समाजमे अहिना लोक उनटा-पुनटा बुझबो करैए आ बजबो करैए। तैसंग ईहो हएत जे माइयो अपन बातमे मजगूती अनैले दोसरो-तेसरोकेँ पुछथिन वा निम्न बुझि नहियोँ पुछि सकै छथिन। मुदा जँ नै पुछि लेब आ झोंकमे कहियो बुढ़ही झोंकि देलैन तखन तँ अनेरे आफतमे पड़ि जाएब। पुछैए-मे की लगल अछि यएह ने आठ आना मोबाइलमे खर्च हएत, तइले अनेरे सासुक धौजैन बेसाहि कऽ रखब नीक नहि। मने-मन बुधनी विचारिते छेली आकि अंकुरित भगवान जकाँ मनमे अकुरलैन। अकुरलैन ई जे अपना जौँआँ सन्तान भेल, किनको एक-

दू-तीन सन्तान होइ छैन, हमर बेथा जहिना ओ नीक जकाँ नइ बुझि सकै छैथ तहिना तँ हमहूँ नहियेँ बुझि पएब। अपना दू सन्तानक बेथाक अनुभव अछि, दोसरकेँ तीनक अनुभव रहितो एक-एकक अनुभव छैन। डायविटीज आ ब्लडपेसर किनको एक संग छैन आ किनको भेलैन दुनू मुदा बेरा-बेरी। अनुभव तँ दुनू गोरेकेँ दुनू बेमारीक भेलैन मुदा की दुनूक इलाजमे सोलहन्नी एक्के दबाइ कएल जाएत...।

पत्नीक ओझराएल मनक ओझरी चेहराकेँ रसे-रसे ओझरबैत चलि जाइत। ओसारपर बैसल धीरज बेर-बेर चेहरा देखैत तँ टुटल फूल जकाँ बेसीए मलिन होइत चलि जाइत देखैत। मुदा सासु-पुतोहुक बीचक विवादमे पड़बो ओते नीक नै हएत जेते हेबा चाही। एकर माने ई नै जे परिवारमे कियो चिन्तित हुअए आ केकरो-ले धैनसन, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत? मुदा पुछबो केना करब? दुनूक बीचक सवाल जँ एक पक्षसँ पूछब तँ दोसर पक्ष पञ्छीए जकाँ ने बुझती, जँ एकठाम बात उठाएब आ ओ लिंग-विशेषक होइ तखन ने माए बाजत आ ने माइयक डरे (सोझमे रहने) पत्नी बजती। तखन? मुदा जे बदनामे चलि गेल ओ कहियो ने कहियो निकलबे करत, तहिना जे परिवारक भीतर घूसि गेल ऊहो भुमहुर-आगि जकाँ धुँएबे करत, तइले अनेरे मन घोर-मट्ठा करब नीक नहि, दुधे किए ने पीब लेब जे सभ संगे रहत। दूधक मोहैन जकाँ धीरजक मनमे चलिते रहै आकि दोसर अकुर गेल। ओ ई अकुरल जे ऐ घरक ऐगला भार (चलबैक भार) तँ अपने दुनू बेकती (पति-पत्नी) पर पड़त, जाबे माए जीबैए ताबे गारजन बुझि भार हटौने छी मुदा अखने जँ ओ बिमार पड़ए आ भार उठबै-जोगर नै रहि जाए तखन तँ एकाएक भार पड़बे करत। जँ कोनो काजक भार अबैसँ पहिने अदहो-छिदहो बुझल रहत तँ एते हल्लुक तँ बनिए जाइ छै जेते सोलहन्नी बिनु बुझलक होइ छइ। समाजमे देखै छी जे किनको सत-सतटा बेटी भेने डीह-डाबर दोसराक हाथ चलि जाइ छैन, तँ किनको

सात बेटा भेने गामक अनको सभटा इनार-पौखैर हाथ चलि अबै छैन। धू: अनेरे मनकेँ छिछियबै छी। देखै छी जे एते-दिन बापे बेटाक भिनौजी होइ छेलै आब दुनू बेकतियोमे देखै छी। तखन अनेरे मन किए वौआएब किए ने दुनू बेकती पति-पत्नी बनि बुढ़ाड़ियोमे कोहवर घरक गप करब। पत्नी दिस नजैर उठा धीरज बाजल-

“एमहर कनी सुनू। अखन भने माइयो अँगनामे नै अछि, एकटा बात पुछै छी?”

सासुसँ हटि बुधनीक जिज्ञासा पति दिस बढ़ल। जहिना बाल-बोध बच्चा खिस्सा सुनि माल-जालक बच्चा जकाँ ‘घुटरू-घु’ सुनि मुँह बाँबि दइ छै तहिना जिज्ञासा भरल बात सुनैले बुधनी मुँह उठा बजली-

“की?”

धीरज-

“अहाँक पीड़ा (उनैस दिनक) देख मन महैक गेल जे आब सन्तान नै हुअए सएह नीक। दूटा भेबे कएल जँ दुनूकेँ दुनू बेकती सेवा कऽ मनुख बना ठाढ़ कऽ देबै तँ एकसँ दू परिवार तँ अवाद हेबे करत किने?”

हाल-बेहाल भेल बुधनी देहक मन मानि गेल जे पतिक विचार सोलहन्नी नीक छैन। हूँहकारी भरैत बजली-

“अहाँ विचारकेँ काटब से दरकार हमरा अछि। तखन तँ पुरुख अपने खेतमे आड़िओ दइए आ तामस उठै छै तँ ढाहियो दइए। तँए अहाँ जानी। हम तँ संगीए ने भेलौं। बड़ हएत तँ एतबे ने, जे कानि-कानि लोककेँ कहबै, संगियाँ मरि गेल हम भुतियाइ छी।”

जिनगीक सचाई जहिना धीरजकेँ तहिना बुधनीकेँ एक-दोसर दिस खिंचए लगल। आगू-ले दुनूक जिज्ञासा बढ़लैन। तही बीच सुधनी खोंइछामे झिंगुनी आ मुट्ठीमे सुखेलहा कड़ची नेने पहुँचली। अबिते

चुल्हि लग कड़ची-जारैन रखि पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बड़ीकाल भऽ गेल। बच्चा सभकेँ दूध पीएलौं?”

कड़ची रखि ओसारपर झिंगुनी खोंइछासँ उझलि बुधनीक लग बैस सुधनी वाड़ीक खिस्सा पसारि देलैन। बाजए लगली-

“उनैसे दिनमे वाड़ीक दशा बिगैड़ गेल। लत्ती सभ मचान छोड़ि-छोड़ि निच्चाँ उतैर कठुआ-कठुआ गेल। रामझिंमनी पँच-पँच, छह-छहटा जुआ कऽ गाछेकेँ कठुआ देलक। तेते ने खढ़-पात जनमि गेल जे वाड़ीक रुइखे खतम भऽ गेल अछि।”

वाड़ी-झाड़ीक अपसोच सासुकेँ करैत देख पुतोहु मलसारि दैत बजली-

“वाड़ी गेल तँ गेल मुदा घरमे जे दूटा लाल आएल से?”

पुतोहुक बात जेना सुधनीकेँ हिलकोरि देलकैन। अगम पानिमे हेलए लगली-

“से तँ अही दुनू लालले ने ओ सभ अछि। लालक पतिपाल हेतै तँ ओ सभ ढेर हेतइ।”

पुतोहुक बात सुधनीकेँ धारक पानि जकाँ भँसौलकैन नै समुद्र जकाँ हिलकोरए लगलैन। परिवार तँ खाली मनुखे टाक नै होइ छै, घर-दुआर, खेत-पथार, माल-जाल इत्यादि अनेको मिला कऽ बनै छै, जे मनुखसँ लऽ कऽ आनो-आनो वस्तुकेँ एक निसचित सीमामे बान्हि दइ छइ। मुदा एक बान्हमे रहितो तँ सबहक अपन-अपन महत्तो छै आ काजो छइ। जइसँ एक दोसरकेँ जानो-पराण दइ छै आ जिनगियो दइ छइ। वाड़ी-झाड़ी, तीमन-तरकारी तँ मासे-मास दिने-दिने होइत-जाइत रहैए मुदा मनुख तँ से नै छी। तँए मनुखे ने मूल भेल। मूलक मूल्य तँ तखने ने बढ़ैत जाएत जखन मूलक सेवा हेतइ। मूलेक पानि ने छीप धरि रस पहुँच हँसबै-खेलबैए। अनेरे मनमे धौजैन करै छी। जेना

सुधनीक मन हल्लुक भेलैन। बजली-

“कनियाँ, आब तँ दूध थीर भऽ गेल हएत, कहू जे दुनू बच्चाकेँ भरि पोख दूध होइ छै किने। जँ से नै हएत तँ बच्चाक पतिपाल करब कठिन भऽ जाएत। जँ अखनेसँ दूधकट्ट भऽ जाएत तँ सभ दिन खिद-खिदाइते रहत। रंग-रंगक रोग सेहो दबतै, आ अगुओ-पछुओ पकड़तै।”

सासुक बात सुनि बुधनी सकपका गेली। मुदा परिवारेक गार्जनेटा नहि, बच्चाक दादियो ने सुधनी छथिन तँए बाल-बोधक कोनो बात छिपाएब उचित नइ बुझि बजली-

“माए, एकटा तँ बिसैरिये गेल छेलौं, हिनका कहबो ने केने छेलिऐन। ई तँ गपपर गप चलल तखन मन पड़ल।”

पुतोहुक बातमे सुधनीकेँ मिसियो भरि अनुचित नइ बुझि पड़लैन। बजली-

“से की?”

“पुरनी (पल्हैन) एकहक घोंट कऽ दुनू बच्चाकेँ सेहो दूध पीआ दइ छइ।”

बुधनीक अधखरूए बात सुधनी बुझि गेली। ओ बुझि गेली जे परसौतीक पहिल पूरक तँ पल्हैने ने होइ छैथ। ओना धियान अपनो दिअए पड़त। पल्हैन दस दुआरी होइए। समाजक काज तँ सबहक बरबैरे होइ छै मुदा काजे छोट-पैघ होइए जेकरा लोक पकैड़ चलैए। मुदा खतराक तँ घड़ी अछिए। जँ केतौ (पल्हैनक) हमरा (अपना) काजसँ पैघ काज दोसर ठाम भऽ जाए तखन जँ ओकरा छोड़ि दिअए ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। मुदा जे हौउ, एते तँ वेचारी (पल्हैन) चेताइयो देलक जे बच्चाकेँ भरि पोख दूध नै होइ छइ। खाएर अखन तक जँ बच्चा नीक जकाँ जीब गेल तँ आइए-सँ दोसर जोगार कऽ लेब,

जरूरी अछि। बजली-

"अच्छा कनियाँ एकटा बात कहू जे वेचारीकेँ खुआ-पीआ दइ छिऐ किने? वेचारी एहेन पीतमरू अछि जे आइ उनैसम दिन बीत रहल अछि अखन तक अपन सिदहो-बोइननै मंगलक हेन। जखने बच्चा जनमैत अछि तखन माइए-बापटा केँ कि परिवारो-समाजोकेँ आशा जगिते छइ। मुदा ईहो नीक नै जे जे मुँह खोलि नै बाजए ओकरा सुपतो नै भेटइ। आइ पल्हैन जखने औत, तखने मन पाड़ि देब, जेना जे हेतै से दाइए देबइ।"

एकटा बच्चाकेँ दूध पीआ बुधनी सासुक कोरामे देलक। दोसर बच्चाकेँ ओछाइनसँ उठा कोरामे लइते छल आकि हको-परास भेल पल्हैन पहुँचली। जेना समैपर नै एने कियो अपनाकेँ दोखी बुझैत तहिना पुरनियोँ बुझलक। अबिते बाजल-

"काकी, अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी गुमे रहली। मुदा सुधनीक गुमी पुरनीकेँ आरो झकझोड़ि देलकै। झकझोड़ि ई देलकै जे भरिसक मने-मन सुधनीकाकी गुम्हैर रहली अछि। मुदा से नै भेल, भेल ई जे पुरनीक बोली-वाणी, चालि-ढालि, चेहरा-मोहरा जोर-जोरसँ बाजि रहल छल जे पुरनी तेहेन उकड़ू काजमे फँसि गेल छेली जे तन-मन दुनू फ्रीसान भऽ गेल छेलैन। मुहसँ फुफरी उड़ैत थाकल-मारल बटोही जकाँ देख सुधनी बजली-

"पुरनि, पहिने हाथ-पएर धो कऽ किछु खा लिअ। जखन आबि गेलौं तखन काज हेबे करतै। किए एते परेशान बुझि पड़ै छी?"

सुधनीक बात सुनि पुरनी पौखैरक पानि जकाँ थीर होइत बजली-

"काकी, की कहबैन। दछिनवारि टोल प्रसव करबए गेल छेलौं। उनटा बच्चा छेलइ। दरदे कनियाँ छटपटाइ छेली, बच्चा जनमिते ने छेलैन। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हरल। ओही काजमे एते अबेर भऽ गेल।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली-

"अहिना होइ छइ। ने एक्केटा मनुख अछि आ ने एक्के रंग काज हेतइ। मुदा मनुखो तँ कम भेदिया नै ने अछि, देखियो-सुनि आ गरो अँटका कऽ भेद तँ बुझिए जाइए।"

हाथ-पएर धोइ पुरनी खाए लगली। खाइते-खाइते बजली-

"काकी, अपना बच्चाकेँ भरिपोख दूध नै होइ छै, हमरो कोनो ठेकान नै अछि। से कोनो ओरियान कऽ लोथु। अखन अन्न चटबैबला थोड़े भेलैन जे अन्न चटौथिन।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी बजली-

"बौआकेँ कहलिऐ हेन जे ओना गाइयो-महींसक दूधसँ काज चलि सकैए मुदा नीक हएत जे बकरीए दूध दिऐ।"

पुरनी-

"हँ-हँ काकी बेस विचार छैन। एना तँ बजारोक दूध एकपर एक छै मुदा ओकर कोन बिसवास। अपना हाथक जे अछि तेकरे ने बिसवास।"

दुनू गोरेक (माइयो आ पल्हैनो) बात सुनि धीरजकेँ भेल जे जखन दूध-ले बकरीक ओरियान करैएक अछि तखन समए गमाएब नीक नहि। जरूरीक जे काज अछि जँ ओकरा पछुआएब आकि अनठाएब ओ परिवारकेँ पाछू धकेलब भेल। जखन बुझै छिऐ जे एक परिवार रहितो, सभ काज परिवारेक रहितो करैक तँ किछु सीमा अछिए। उठि कऽ आँगनसँ निकैल दूधारू बकरी भँजियबैले विदा भेल। समाजो तँ समाज छी। जहिना रंग-रंगक मनुख तहिना रंग-रंगक धनक खाड़ी सेहो बनले अछि। कोनो दरबाजा एहनो अछि जैठाम हाथी-घोड़ा रहैए आ कोनो एहनो अछि जैठाम किछु ने रहैए। मुदा तँए कि गाममे गाए-महींस बकरी नै अछि से तँ अछिए।

धीरजकेँ आँगनसँ निकैलते बुधनीकेँ अपन बात बजैक गर भेटल। गर ई जे एक परिवार रहितो, सभ बात बुझला पछाइतो सभ लग सभ बात सभ नै बाजि पबैए। बजली-

"भने माइयो छैथ आ अहूँ छी, जिनगीमे एहेन दुख कहियो ने भेल छल, जे भेल तँए..?"

बुधनीक बात सठलो ने छल आकि बिच्चेमे पुरनी बजली-

"कनियाँ, हमर-अहाँक (नारीक) यएह अग्नि परीछा छी। राजासँ रंक तककेँ ई परीछा होइ छइ। तइले दुख-बेकल मनमे रखब तँ दुनियाँ चलत।"

पुरनीक विचारकेँ बुधनी सुनिते द्रवित भऽ गेली। एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन। परिवार-ले बच्चा अनिवार्य ऐ दुआरे अछि जे वएह बच्चा बढ़ैत सियान-चेतन होइए, जैपर कुले-खनदान नै परिवार, समाज, देश-दुनियाँ ठाढ़ अछि। एहेन जे मनुखक अनिवार्यता छै तैठाम सन्तानक अनिवार्यता तँ छइहे। मुदा जिनगीक तँ कोनो ठेकान नै अछि, बच्चासँ सियान आकि बुढ़ धरि कखनो-कहियो कियो मरि जाइए, तखन? एक बच्चापर आश्रितो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। दोसर ई जे जँ बेटा-बेटीकेँ बरबैर मानि लेब, सेहो तँ सोलहन्नी उचित नहियेँ। हँ कोखि-ले सन्तान भेल मुदा समाजिक जे ढाँचा अछि तइमे बराबरी केना औत। मुदा मनो तँ मने छी। देहमे दुख भेने जे विचारमे अबै छै, सुख भेने बदैल जाइ छइ। अपने दुनू परानी विचार केलौं जे एहेन दर्द (बच्चा जन्मक) दोहरा कऽ नै उठाएब मुदा..? पीड़ाएल मन बुधनीक दृढ़तासँ मानि गेल जे आगू सन्तान नहियेँ हएब नीक। बजली-

"अखन तँ सोझहामे ईहो दुनू गोरे छैथे, नीक-बेजा बुझबे करै छथिन।"

बुधनीक बात सुनि पुरनी बजली-

"कनियाँ, औगताएल किए छी, अखन पहिने देह-हाथ सक्कत बना लिअ। ताबे बच्चो सकताइए। अबिते-जाइते रहै छी जेहेन अपन परहेज करब, तेहेन जे चाहब से हेतइ।"

पुरनीक बातमे बुधनी जिनगीक बिसवास पौलक। आँखि उठा पुरनीक आँखिपर दैत अपन बेथा कहलक। बुधनीक बेथीत मन देख पुरनी बाजल-

"कनियाँ, जहिना कामिनी फूल महिनामे चारिए दिनक जिनगी पबैए तहिना सन्तानक खेल सेहो अही चारि दिनमे निहीत अछि, पछाइत बुझा देब।"

गप-सप्पकेँ सीमा छुबैत देख सुधनी पुरनीकेँ पुछलखिन-

"तोहर सिदहा केते हेतह। कहुना भेलह तँ तूँ पसारी भेलह, तँए तोहर रस्ता रोकब अपन रस्ता रोकब हएत। दाइए दइ छिअ। अपन नेने जैहह।"

सिदहा सुनि अखन धरिक कएल काजक फल देख पुरनीक मन खुशी भेल, बाजल-

"काकी, हमर खेत-पथार, माल-जाल, राज-पाट सभ तँ यएह छी। दोसर कोन असरा अछि। आइ दिनसँ हिनका ऐठाम खेनिहार सभ आबए लगतैन। मुदा जे काज हम केलिऐन सेहो कियो करतैन।"

पुरनीक बात सुनि सुधनी सहैम गेली। बजली-

"कनियाँ, एक बेर अपना मुहसँ बाजि जाउ, केते हएत। काजक

भीर हमरो नजैरमे अछि। अन्हार घर साँपे-साँप होइ छइ। समाजमे जेते हमरो सन लोक दइए तइसँ कम नै देब।”

सुधनीक विचारमे आशा देख पुरनी बाजल-

“बेटाक अदहा बेटीक सिदहा भेल, तँए दोबर नै डेढ़िया भेल। अनका लिए जे हौउ, मुदा हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटियो भेल।”

मास दिनक कमला-कमल भऽ गेल। सुभ्यस्त समए भेने गामोक चुहचुही ऐ साल नीक अछि। धनमण्डल भेल अछि। बच्चाक निविते जहिना पमरिया, बकूनियाँ, हिजरा-हिजरनीक ढबाहि लागत, तहिना ठको-फुसियाहक ढबाहि लगबे करत किने?

दीपेक पमरिया, कहियो बपहरक नाओंसँ तँ कहयो ममहरक नाओंसँ एबे करत। से कि कोनो एक्के ठामक औत नैहर-सासुर सबतरि पसरत। जीविकाक तँ दोसर साधनो ओकरा छइहो नै ने।

दोसर मास चढ़िते चारि गोरे पमरिया पहुँचल। बेटाक बधैया मांगए। मुदा बेटीक?

❍

शब्द संख्या : 2335

वारन्ट

बोरिंग-दमकलक कर्ज चुकौला पछाइतो हरिहर काकाकेँ केसक वारन्ट भऽ गेलैन। ओना वारन्टसँ घबरेला नहि, मुदा एते शंका तँ आबिए गेलैन जे रंग-बिरंगक चेहराक बीच जीयबो तँ असान नहियेँ छी।

सरसैठ इस्वीक रौदीक पछातिक समए। सरकारोक नजैरमे थोड़ेक पानि आएल आ रौदियाएल किसानोक मन ठेहियाएल। अखन धरि जे विचार-सोलहन्नी भाग-तकदीरक बीच जीबैत चलि आबि रहल छल तइमे कनी धक्का लगलै। धक्काक कारणो भेल जे गामक-गाम सून भऽ भऽ मसान जकाँ बनए लगल छल, बनबो कएल। नम्हरो-नम्हरो गाछमे सुखनियाँ लगि गेल, केतेको रंगक फलो आ अन्नो गामसँ लोकेक संग पड़ा गेल। माल-जालक उजाड़ भऽ गेल। खेती-पथारीक चर्चे की, जे मिथिला दार्शनिकक जगह रहल ओइ मिथिलामे दुर्दिनक बीच कुदिन सेहो आबि गेल।

बी.डी.सी. मीटिंग बिहानपुरमे भेल। जेना छोट आँट-पेटक मीटिंग छल तेना खूब जमगर भेल। गामसँ जिला धरिक अफसर-अफसरान एकठाम चारि घन्टा धरि बैसला, कम नै भेल, मुदा तैबीच चाह-पान-जलखैमे जे समए लगल हुअए तइ लगा कऽ।

मीटिंगमे कलक्टर साहैब सभसँ सिरगर रहैथ। ओना अखुनका

जकाँ नवतुरिया नहि, उमेरगर सेहो। हुनके बातक प्रतीक्षामे सभ कियो। उठि कऽ तोहफा बाँटैत कलक्टर साहैब अपन श्रीमुखसँ व्याख्यान देलखिन-

“सौनक मेघ जकाँ सरकार लटैक कऽ निच्चाँ आबि गेल, तँए मुँहमंगा बर्खाक झड़ी लगत। इच्छित वस्तु लोककेँ भेटत।”

कहि चारि श्रेणीमे गाम बाँटि देलखिन। तीन श्रेणीक किसान आ चारिम बोनिहार, आ पछाइत कहि देलखिन-

“बोनिहार-ले गाए-महींस, रिक्शा, टमटम इत्यादि भेटतै जइमे तीन हीसमे एक हीस सरकार देत आ दू हीस अपन लगतै। तहिना सीमांत किसानकेँ बोरिंग दमकल तिहाइ छूटपर भेटत। आ जे अढ़ाइ बीघासँ पाँच बीघाक किसान छैथ हुनका चौथाइ छूट भेटत। कहि मुस्कियाइत बैस गेला। धन-बर्खा हुअ लगल। सौनक सतैहिया लादि देलक। खाद छूटपर, बीआ छूटपर, खेतीक औजार छूटपर, गाए-महींसक संग रिक्शा, टमटम, लॉडस्पीकर, चूड़ी दोकान इत्यादि-इत्यादि सभ किछु छूटपर भेटत।”

नाराक संग मीटिंग समाप्त भेल। भोजन-भात चलल, ढेकार करैत जश देत सभ सीमान टपला।

हवा जकाँ समाजमे उठल। गाम-गामक लोक ब्लौक दिस मुड़ियारी देलक। मुदा अनभुआर माल-जाल जहिना डोरी-खुट्टा तोड़ि लंक लऽ पड़ाइए, जे गोटे-गोटे पकड़ेबो करै छै आ गोटे-गोटे वौड़ जाइए, तहिना। खाएर जे हौउ, ‘भागल चोरक भगबे नफा।’ तैसंग ई बात सेहो जे सभ नइ बुझि पौलक- आम खाइले गाछ रोपए पड़ै छइ। भलेँ गाछ रोपब असान किए ने हौउ मुदा आमक चुनाव कऽ माटि-जगहक चुनाव सेहो करए पड़ै छै, जँ से नहि तँ धनखेतीक कलम जेहने जुतिगर होइ छै तेहने हएत...।

व्याख्यानक क्रममे उधिया कऽ एते लोक भासि गेल जे बुझैक होशे ने रहलै जे गीता ‘जिनगी’ छिऐ नै कि ‘पाठ’। अध्यात्म दर्शने छिऐ आकि जीवन दर्शन। तहिना कलक्टर साहैब विचारकेँ सभ बुझलक जे मीटिंग समाप्त हेतै आ काल्हि जखने ऑफिसक कुरसीपर बैसै जाइ जेता कि धाँइ-धाँइ गाममे बोरिंग-दमकलक ट्रक संग पंजबिया गाइयक पथार लगि जाएत। अकास-धरतीक जे मिलन स्थल- क्षितिज होइ छै ओ हस्तांतरणक होइ छइ। बोरिंग-दमकल बेपारीक घरसँ जहिना औत तहिना पशुपालकक घरसँ पशु औत। तइ दृष्टिएँ मिथिलांचल कौड़ियो बरबैर नहि। सोलहन्नी बहरबैयाक आशा...।

ब्लौक दिस गामक लोक मुड़ी उठबैत पौलक जे पहिने-ब्लौकक रजिष्टरमे नाओं दर्ज करबए पड़त, ओ कागत आगू बढ़ि ऐगला ऑफिसमे दर्ज भेला पछाइत रजिष्टरमे औत। ओइठामसँ बैंक पठौल जाएत, तेकर पछाइत काजक दौड़ शुरू हएत।

काजोक दौड़ तँ हल्लुक नहियेँ। ब्लौकक चक्करक संग जिलाक चक्कर आ तैपरसँ बैंकक चक्कर धरिमे दू बर्ख समए आ बिनु हिसावक खर्च जहिना सभ गमौलक तहिना हरिहर काका सेहो गमौलैन।

मुदा तेकर मिसियो भरि चिन्ता हरिहर कक्काकेँ नै भेलैन। चिन्तो केना होइतैन, जहिना हजार हाथक गाछक छिप्पीपर चढ़ला पछाइत जँ धरतीपर खसल वा पड़ल फलपर नजैर पड़ै छै, जेकरा पबैले गाछपर सँ उतरैक समैयो आ भीरो किछु ने बुझि पड़ै छै तहिना मनमे घमौड़ लैत रहैन। समए आ खर्चक फल एकटा टटके जरूर भेटलैन जे जहिना परिवारमे तहिना समाजमे गप-सप्पक क्रम बदलल। रजनी-सजनीक खिस्सामे कमी आएल, खेती-पथारी, माल-जाल इत्यादिक बात समाजक मंचपर आएल। छोट-मोट मीटिंग भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ हुअ लगल। जइसँ लोकक आकर्षण बढ़ल। बैंकक

माध्यमसँ कर्ज भेटत आ बैंकेक माध्यमसँ असुलियो हएत। मुदा तैबीचमे जिला स्तरपर सब्सिडी-ऑफिस हएत। जाबे ओ आदेश बैंककेँ नै भेटतै ताबे कटौती नै हएत, लोनक सूदि चलैत रहत। तेतबे नहि, छह मासक बीच जँ अदा नै करब तँ सूदियो मुइरे पकैड़ लेत।

सरसैठक सरकारक मालगुजारी माफक जबरदस असर भेल। लोकमे नव बिसवास जगल जे जइ मालगुजारीक चलैत खेत सभ निलाम होइ छल, से आब नै हएत। जहिना मालगुजारी देनिहार बिसैर गेल तहिना सरकारो अपन कर्मचारीकेँ समेट दोसर फाइल दिस लगा लेलक। ने मालगुजारी देनिहार आ ने लेनिहार रहल।

मुदा बैंकमे टटका रसीदक जरूरत पड़ल। मालगुजारी माफ मुदा केते माफ तेकर चिट्ठी ऑफिसेमे लटैक गेल। जहिना सबहक तहिना हरिहरो कक्काक साल भरि टहलैए-मे चलि गेलैन।

हरिहरो काका तँ जिद्दी, तही-ले समाजमे जश-अजश सदिकाल होइते रहै छैन। जश ई होइ छैन जे काजक प्रति जिद्दी छैथ। मुदा काजो तँ उनटा-पुनटा अछि माने नीको अछि आ अधलो अछि, दुनू तँ काजे छी। जे विपरीतो दिशामे काज करबे करत।

हरिहर काका तेहेन जिद्दी जे रगैड़ कऽ टटका रसीद कटा, बैंकसँ रूपैआक निकासी कराइए लेलैन। पहिल खेप दू साए रूपैआक चेक माइनर एरीगेशनक नाओंसँ देलकैन। जिनगीक पहिल चेक देख हरिहर काकाकेँ नीक खुशी भेलैन। खुशियो केना ने होइतैन, छोटके चेक ने बड़का चेक बनैए।

बैंकसँ निकैल हरिहर काका माइनर एरीगेशनक भाँजमे विदा भेला। भँजियबैत-भँजियबैत भाँज लगलैन। मात्र दू गोरेक ऑफिस। बोरिंग गाड़ैक ठीकेदारी। चेक जमा करिते रजिष्टरमे दर्ज भेला पछाइत

ठीकेदारक नाओं कहलकैन। ठीकेदार तँ ठीकेदारे छी। चाहे-सरकारी हौउ आकि गैर सरकारी ओ तँ सबहक ठीकेदार भेल। एक संग पचासो ठीकेदारी चलि सकै छै, तँए ओहन लोकक भेँट तँ थोड़े कठिन होइते अछि।

मुदा ठीकेदार भेटलैन। भेटते हरिहर काका पुछलखिन-

"ठीकेदार साहैब, कहिया तक काजमे हाथ लगत।"

ठीकेदारी शैलीमे ठीकेदार बजला-

"काल्हि नहि, परसू आउ?"

ऐ दौड़-बरहामे पाँच दिनक पछाइत फेर भेँट भेलैन। भेँट होइते पुछलखिन-

"अहाँक भेँटो हएब कठिन होइए तँए एकटा निठाही दिनक नाओं कहू।"

ठीकेदार स्पष्ट कहलकैन-

"मात्र दूटा पलान्ट छइ। अहाँक नम्बर आठम भेल। बीचक काज भेला पछाइत हएत।"

हरिहरो कक्काक तीन गोरेक बैच रहैन। तीनू गोरे अपनामे विचारलैन। काज जहिना अपन तहिना दोसरोक। प्रतीक्षा तँ करए पड़त। पुछलखिन-

"केते समए लगत?"

"महिना दिनमे भऽ जाएत।"

मास दिनक पछाइत तीनू गोरेक संग हरिहरो काका ठीकेदारक खोजमे निकलला तँ पता लगलैन ओ विधान सभा एलेक्शनक भाँजमे चलि गेल छैथ, छह मासक पछाइत औता।

पछुआइत काज देख सबहक धैर्जक सीमा डगमगाइत तँ रहबे

करैन। समए बीत रहल अछि कर्जक सूदि बढ़ि रहल अछि। जहिना समए बेठेकान भऽ गेल तहिना परिवारक काज सेहो बेठेकान भेने आमदनी टुटि रहल अछि। ऐसँ नीक तँ अपन खेत बेच बोरिंग करैबतौं। कोन फेरामे पड़ि गेलौं। अधमड़ू साँप जकाँ बनि गेल छी!

साल बीत गेल। ऑफिसक उनटा-फेर भऽ गेल। जहिना दुनू स्टाफ–अफसर-किरानी–बदैल गेला तहिना ठीकेदारो छोड़ि कऽ पुलक ठीकेदारीमे चलि गेल।

भाँज-भुँज लगबैत मास दिनक पछाइत हरिहर काका फेर काजकेँ पटरीपर अनलैन। कारगर अफसर। काज करैक उग्र जिज्ञासा। दुनू प्लान्टक भाँज लगौलैन। एकटा काजमे लगल आ दोसर माटिक तरमे चलि गेल। भेल ई जे अंधराठाढ़ी इलाकामे लेअर बहुत निच्चाँमे छइ। साढ़े चारि साए फुट बोड़ भेला पछाइत लेअर भेटलै। बोरिंग लोड भेल। लोड भेला पछाइत जखन क्रेसिंग पाइप उखाड़ब शुरू भेल तँ पचास फीट पाइप तरेमे सौकेट फेल कऽ गेलइ। पचास फीट निकलल बाँकी माटिए-मे रहि गेल। तहूमे तेहेन जगहपर गेल जे अफसरो बेवस भऽ गेला। कोनो सस-बस नै चललैन।

अन्तमे बेवस होइत हरिहर काकाकेँ कहलखिन-

"जँ रहि गेलौं तँ जरूर बोरिंग हएत, नइ तँ देखते छिऐ ऑफिसक काज, जे आइ एतए छी काल्हि केतौ रहब।"

जिज्ञासु हरिहर काका अपन काज बिसैर पुछलखिन-

"सर, एना किए अनियमित छइ?"

अफसर- "किए छै तेकर कोनो एक्केटा कारण छइ। रंग-बिरंगक कारण छइ। अनेरे कोन समुद्र उपछैक भाँजमे जाएब, ओकरा छोड़ू। हेबा की चाहै छेलै से कहै छी।"

ओझरीमे जहिना अमती काँट आ पेरासूत ओझराइ छै तहिना ने

मनो ओझराइ छइ। तइसँ नीक हरिहर काका बुझलैन जे जएह कहै छैथ सएह नीक।

पुछलखिन-

"की हेबा चाहै छेलै?"

"होइयोक बहुत रस्ता छै, तँए एकटा कहब उचित नहि, मुदा सही रहने नइ सोलहन्नी तैयो उचित तँ भेबे कएल।"

मानब मुड़ी डोलबैत हरिहर काका कहलखिन-

"एकरा के टोनत?"

अफसर बजला-

"सुनू, नीक होइतै जे ऑफिसेमे कागत-कलमक काज करै छैथ हुनका निसचित समए आ निसचित काजक भार देल जाइन। तइ काजमे की बाधा उपस्थित भऽ रहलैन अछि तेकरा निसचित समैपर देखल जाइन।"

मुड़ी डोलबैत हरिहर काका बजला-

"हँ, से तँ देखते छिऐ जे काज जेहेन हौउ मुदा ऑफिसक कागत टंच रहैक चाही। नइ तँ दुनियाँ देखै छै जे कोसी योजना सन योजना अरबोक योजना छइ। मुदा राज रौदियाएल अछि! एना जँ सराध-बिआह दुनू दिस योजना चलत तखन केते आशा।"

माइनर एरीगेशनक दौड़-बरहा करैत सालक सिजिन समाप्त भऽ गेल। सिजिनक अर्थ भेल, जे काज माटिक छै ओ सुखारमे हएत। बरसातक समए बोरिंग गाड़ैमे असुविधा होइ छै, धसना खसैक डर रहै छै। ओना, नव तकनीकसँ गाड़ल जा सकैए मुदा दुनूक बीच सामंजस केना हएत से मूल भेल। एक पक्ष बुझैए जे पाइ सरकारक छिऐ, तँ दोसर पक्ष बुझैए पाइ जनताक छिऐ, जेकर गेलै तेकर, हमर की। मुदा

की तइसँ काज चलतै? साल भरिक पछाइत बिहानपुरमे तीन बोरिंग-दमकलक संग काजक केंचुआ छोड़लक। किछु गाइयो-महींस गाम आएल। किछु रिक्शा टम-टम बढ़ने सवारीक सुविधा भेल। मुदा जहिना किछु नव उत्पादित हथियार गाम आएल तहिना तइसँ बेसी लूटैक भूत पछुआ बनि पकड़लक। भोज-भात, बिआह-सराध जोर पकड़लक। बैंकक कर्ज तर पड़लै। जेकरा असुलैमे सख्तीसँ बैंक पेश भेल, जइसँ दिशाहीन समाज डरा गेल! कारोबार कमैत गेलइ...।

बोरिंग गड़ौला पछाइत सब्सिडी ऑफिसक काज एलैन। जिला भरिमे एकटा ऑफिस। जेते काजक भीड़ तइसँ बेसी खेनिहारक भीड़। पहिल दिन तीनू गोरे हरिहर काका हँसीए-ठट्ठामे ओझरा घुमि एला।

दोसर दिन टेबुलपर जा कहलखिन-

“तीन गोरे बोरिंग-दमकल नेने छी, बाजाप्ता बैंकक कागत अछि से सब्सिडीक आदेश देल जाए।”

जेना कियो सुनिनिहारे नहि! तहिना रंग-बिरंगक गप-सप्प चलैत रहल! जहिना स्कूलमे गलती केला पछाइत विद्यार्थीकेँ ब्रेंचपर ठाढ़ कऽ देल जाइ छै तहिना टेबुलक आगूमे तीनू गोरेकेँ ठाढ़ कऽ देलकैन।

घन्टा भरिक पछाइत कहलकैन-

“परसो आना।”

परसू गेला पछाइत फेर परसू। ऊहो भाँज लगबैत जे किनका सम्पर्कमे अबैए, मुदा परसू अन्त नै भेल। ने ऑफिसमे दैछना देलखिन आ ने सब्सिडीक कागज ऑफिस छोड़लक।

सतासी-अठासीक भुमकम-बाढ़ि राज्यकेँ हिला देलक। दस हजार रूपैआ बैंक लोन माफक अवाज उठल। नव सरकार बनल। लोन माफ भेल।

बैंकक अन्तिम चिट्ठी जखन हरिहर काकाकेँ पहुँचलैन तखन केसक खर्च सहित जमा कऽ देलखिन।

ओही केसक वारन्ट हरिहर काकाकेँ भेल छैन।

❍

शब्द संख्या : 1638

गामक मुँह फेर देखब

दूटा टेन्ट घराड़ीपर ठाढ़ करा एकटामे अपने दुनू परानी आ दोसरमे बेटा-पुतोहुक रहैक जोगार ठाकुर प्रसाद काल्हिए कऽ लेलैन। दूटा कुरसी टेन्टक भीतरो आ बाहरो अपना टेन्टमे लगा लेलैन। संगी साथीक संग बेटा–गौरीशंकर–कारखाना देखए गेल। असगरे दुनू परानी–ठाकुर प्रसाद–बाहरक कुरसीपर बैस अपन भूत-भविसक गप-सप्प करए लगला। तखने लंगोटिया संगी रूद्रानन्द लफरल उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ पएरे बैंकपर जाइ छला।

खेतमे दूटा टेन्ट ठाढ़ देख रूद्रानन्दक मनमे भेलैन जे भरिसक नट-मघैया सभ आएल हएत। दू-चारि दिन रहत फेर नाँगैर ठाढ़ कऽ घसकत। मन तँ मानि गेलैन मुदा आँखि नै मानलकैन। ओम्हरे माने टेन्ट दिस रूद्रानन्दक नजैर लटैक गेलैन। लटैक ई गेलैन जे केहेन धिया-पुता छै, केहेन कुत्ता-बिलाइ पोसने अछि से तँ तकनहि बुझब...।

चारि डेग आगू बढ़िते दुनू परानी ठाकुर प्रसादपर नजैर पड़लैन। चिन्हार लोक लग आँखि घुमा कियो अनचिन्हार बनैए मुदा अनचिन्हारोक नजैरपर पड़ने तँ कहाइए जाइ छै जे ‘केतए रहै छी?’ पैंतीस बर्ख पहिलुका ठाकुर प्रसादकेँ देख रूद्रानन्द पुछि देलखिन-

“भाय, हाल-चाल ठीक अछि किने?”

अपन दायित्व निभाएब बुझि ठाकुर प्रसादक मनमे एलैन जे

एक तँ पुरान लंगोटिया संगी रूद्रानन्द छिआ, तैपर आगूसँ हाल-चाल सेहो पुछलैन..! उत्तर दैत बजला-

“सभ नीक अछि भाय, चाह पीब लिअ तखन जाएब।

धड़फड़ाएल रूद्रानन्द बजला-

“भाय, बैंकक काजसँ जाइ छी। कनिक्को पछुआ जाएब तँ पाछू पड़ि जाएब। तहूमे बैंकक स्टाफ सभ तेहने अछि जे धोतीबला सभकेँ तेते खरिआइर-खरिआइर पुछै छै, जे अनेरे देरी लगा दइ छइ। ओमहरसँ घूमब तखन चाहो पीब आ गपो-सप्पो करब।”

कहि रूद्रानन्द आगू बढ़ैत सुनटे मुहेँ बजला-

“खेतकेँ घराड़ियो बनाएब आकि खेते रखब?”

बजैत-बजैत रूद्रानन्द एते आगू बढ़ि गेला जे ठाकुर प्रसाद जवाब देब उचित नइ बुझलैन। जवाबो तँ तखन ने जवाब जखन सुननिहार सुनत। मुदा ठाकुर प्रसादक मनमे एहेन प्रश्न रोपा गेलैन जे खट-खुट करब शुरू कऽ देलकैन। घराड़ी की भेल आ खेत की भेल? बिनु घरक तँ वाड़ी भऽ सकैए। मुदा वाड़ियो तँ झाड़े-झड़ लगौलापर होइए, सेहो नै भेल। चौमासो नहियेँ भेल, किए तँ जइमे चौमासा उपजा होइ। तखन तँ ने घराड़ी भेल आ ने वाड़ी आ ने चौमास, तखन तँ ठीके खेत भेल। मुदा फेर दोसर प्रश्न मनकेँ लपैक लेलकैन। लपकलकैन ई जे खेत केना घराड़ी बनै छै आ घराड़ी केना खेत बनै छइ?

अखन धरि ठाकुर प्रसाद लोहाक इंजनेक बात बुझै छला, खेत-पथारक नहि। मुदा प्रश्न उठि गेलैन खेत-पथारक।

दोसर कियो तेहेन लगमे नहि जे प्रश्न उठा डारि-पात छोड़ैत फूल-फड़ धरि पहुँच जइतैथ। लगमे पत्नियेँ-टा बैसल रहैन। जिनकर दुनियाँ मात्र जारैन-काठीसँ बाढ़ैन धरि। मुदा असगरे जँ कोनो प्रश्नकेँ

खोदहौ चाहब तँ आगूमे बैसल पत्नी बीचमे किछु-ने-किछु टपकिये जेती। तँए नीक हएत जे हिनका ऐठामसँ टारि किछु विचार करी। सुपते मुहेँ कहबैन जे किछु विचारए चाहै छी, तँए अहाँ ऐठामसँ चलि जाउ, सेहो उचित नहियेँ हएत। लूरि-भासमे भलेँ दुनू गोरे दू रंग किए ने छी, मुदा किछु भेली तँ अर्द्धांगिनी भेली। जँ कहि दैथ जे अहाँसँ हम कम बुझै छिऐ। तखन तँ भारी पहपैट हएत। मुदा ओहो तँ सुपते कहती। जखन डाक्टरक पत्नी बिनु जानकारियोक डाक्टरनी, गुरुक पत्नी गुरुआइन कहबैक अधिकारी छैथ तखन तँ हुनको अधिकार बनिते छैन। मुदा से नहि, प्रश्नकेँ उधार बनबैत ठाकुर प्रसाद पत्नीकेँ कहलखिन-

"मन किछु भरियाएल बुझि पड़ैए, एकटा बात विचारब अछि तँए कनी चाह पीबू, पछाइत दुनू गोरे हल्लूक मने विचार करब?"

ओना चाह पीबैले रमदुलारीक मन पहिनहिसँ चटपटाइत रहैन, मुदा अपन घटैत जिनगीकेँ देख मनकेँ मनेक मोटा तर दबने छेली। घटैत जिनगी ई जे जिनका महिनाक तीसो दिनक रोजी भेटै छेलैन आ रोटी चलै छेलैन तिनका पनरहे दिनक ने आब भेटतैन। तखन जँ रोटीकेँ टुकड़ी नै बनाएब तँ पार केना लगल।

पतिक आदेशकेँ रमदुलारी हृदैसँ सुहकारि लेलैन। किएक तँ हृदैयोमे तँ चाहे रानी ने बैसल छेलखिन। बजली-

"ओ केहेन भैयारी छला जे ओहो भाय कहलैन आ अहूँ भाइए कहलयैन?"

पत्नीक ओझराएल प्रश्न सुनि आरो ओझराएब नीक नइ बुझि ठाकुर प्रसाद बजला-

"अही सभ बातक ने विचार करब। पहिने चाह पीआउ?"

जहिना ठाकुर प्रसाद प्रश्नकेँ एक रस्ता धड़बए चाहै छला तहिना

पत्नी खुड़पेरिया बना-बना आरो रस्ता ठाढ़ करै छेलैन। बजली-

"जखन भैयारीक सम्बन्ध अछि तखन छुच्छे चाह पिआएब उचित हएत? अहाँ तँ मरदा-मरदी छँटि जाएब, मुदा जँ ओ मुहेँपर बाजि दैथ जे बमैया बमै किछु ने, तखन हमर मुँह केहेन हएत?"

बम्बैया सनेस-दे सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे जेना पछुआक सिहकी बहलैन तहिना हफुआइत मने बजला-

"जाउ ने, जे मन फुरए से ओरियान करि कऽ रखि लेब।"

पतिक टारैक बात रमदुलारी नइ बुझि समटैक बात बुझि गेली। जेना दड़बड़ दैत प्रश्न ठोकलैन-

"अहूँ भाय कहलयैन ओहो भाइए कहलैन तखन हमर दिअर भेला आकि भैंसुर?"

'दिअर-भैंसुर' सुनि ठाकुर प्रसादक मन चोटेलैन। मन पड़लैन अपन पैंतीस बर्खक जिनगी। पैंतीस बर्ख पूर्ब पिताक अमलदारीमे जे परिवारक जिनगी छल, जगह तँ वएह छी। मुदा पैंतीस बर्खक बीच गाम-घर नै देख पेलौं, शहर-बजार तँ देखबे केलौं। की सभ महानगरक जिनगी एकरंगाहे छइ? से तँ नहि छइ! सबहक अपन-अपन क्षेत्रक साहित्य, कला, रीति-रिवाज, खान-पान सभ किछु छइ। तहिना ने अपनो गाम-घरक हेबा चाही?

प्रश्नकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

"एते दिन बम्बै सन शहरमे रहलौं जैठाम पोरो-पटुआसँ लऽ कऽ पालक-गेनहारी आ मेथीकेँ सेहो लोक सागे बुझि, कियो कम पाइ रहने कीनि खाइए तँ कियो बजारक महग सौदा बुझि कीनि खाइए। लूटमे चरखा नफा जहिना होइ छै तहिना पोरो-पटुआ सेहो पालक-गेनहारी आ मेथीक कान काटि लइए। तँए की एकरा नीक कहबै? खाएर ई बम्बैक बात भेल।"

'बम्बैक बात' सुनि रमदुलारीक मन पघिल गेलैन। बजली-

"मन अछि आकि बिसैर गेलौं जे ओ सभ–ब्रिटिस इंजीनियर–दुनू परानी केना हाथ जोड़ि नमस्ते करै छल।"

नमस्ते सुनि, जेना चौराहापर अबिते भक्क खुजै छै तहिना ठाकुर प्रसादकेँ खुजलैन। बजला-

"ओ हमर अहाँकेँ करै छला आकि अपना धरतीकेँ करै छला, जइ धरतीकेँ अपन जीवन-सूत्र अछि। जखन ओ सभ अबै छला आ चाह पीयबै छेलिऐन तखन ओ अपन तरीकासँ मिलबै छला। अपना सबहक तरीका दोसर रंगक ऐछे, मुदा ओ अपन ढंगसँ भिन्न तरीका बुझियो कऽ हँसै कहाँ छला। आँखि गड़ा अपन तरीका देखै छला आ देखै छला अपना सबहक अचार-विचार। तेकरा ओ नमस्कार करै छला।"

पतिक बात सुनि रमदुलारी विह्वल होइत बजली-

"ओकर रीति-रिवाज हमरा मिसियो भरि नीक नै लगै छल। भने अहूँ संगबेसँ छुट्टी दऽ देलौं। नइ तँ ओकरा जकाँ हमरा कूद-फान करल होइत। तइसँ नीक भेल जे जेतेकाल असगरे डेरामे रहै छेलौं तेतेकाल अपन नैहर-सासुरक गीतो-नादक रियाज असगरेमे करै छेलौं आ अपन दादीक सिखौल जे कढ़ाइ-पढ़ाइ छल तेकरो लिखै छेलौं। एह! आब मन पड़ैए ओ दिन जइ दिन हाथसँ जनकपुरक कोहबरो लिखै छेलौं आ घुनघुना-घुनघुना डहकनो गबै छेलौं। केना कृष्ण कदमक गाछक मचकीपर बैस बरहमासा गबै छला...।"

बजैत-बजैत रमदुलारी पघिल कऽ पानि भऽ गेली। जहिना नवतुरिया संगी-बहिनपाक सुख-दुख सुनि नोराइत तँ संगे मुदा नोर कातमे जा झाड़ैए तहिना रमदुलारियो आँखि मीड़ैत चाह बनबए बढ़ली।

ठाकुर प्रसादकेँ मन पड़लैन गामक स्कूल। संगे-संग दुनू गोरे भट्ठो धेलौं आ गामेक मिडिल स्कूल होइत आगुओ बढ़लौं आ स्कूलक पछुआरमे जे जामुनक गाछ छल ओही गाछक निच्चाँक छाहैरमे दुनू गोरे गुल्लियो-डन्टा खेलै छेलौं। पढ़ैयौमे दुनू गोरे एक्के रंग रही। ओहो अपन सबक यादि करि कऽ आ खांत लिखि कऽ स्कूल अबै छला आ हमहूँ लिखि कऽ लऽ जाइ छेलौं। सभ दिन पढ़ाइ, सभ दिन परीक्षा होइ छल। हाइ स्कूलमे हम फस्ट करए लगलौं आ रूद्रा भाय पोजीशनसँ निच्चाँ उतैर गेला। तेकर कारण भेल जे आर्ट विषयसँ हुनका बेसी सिनेह छेलैन आ हम सांइस पढ़ै छेलौं। आर्ट विषयमे कम नम्बर अबै छेलए, सांइस विषयमे बेसी। जइसँ कलासमे पहिलसँ लऽ कऽ दसम-बारहम पोजीशन धरि सांइसेक विद्यार्थी रहैत छल। एक्के हाइ स्कूलसँ दुनू गोरे मैट्रीको पास केलौं। आइ.एस-सी.क पछाइत हम इंजीनियरिंग कौलेजसँ ग्रेजुएशन केलौं आ ओ अंग्रेजी आनर्स केलैन। पछाइत हुनका गामसँ दू कोस हटि हाइ स्कूलमे नोकरी भेट गलैन आ हमरा बाहर जाए पड़ल।

'बाहर' मनमे अबिते ठाकुर प्रसाद ठमैक गेला। बाहर किए? मन पड़लैन अपन पढ़ाइ आ अपन शिक्षा। मैकेनीक इंजीनियर बनलौं। ई नइ बुझि पेलौं जे काज करैले केतए करए जाए पड़त। ग्रेड नीक छल तँए नीक बुझि पढ़लौं। रिजल्टो नीक छल तँए मन काज करैले तन-फन करए लगल। जखन मन तनफनाएल तखन खोज-भाँज केला पछाइत पता चलल जे हमरा लिए महानगर छोड़ि दोसर जगह नै अछि। क्षेत्रक कोन बात जे राज्योमे तेहेन कारखाना नहि। दच्छिन बिहार जे अखुनका झारखंड छी, ओतए जँ किछु छेलैहो तँ काजसँ बेसी काज केनिहारे छल। आशामे नोकरीक ओरूदो खतम भऽ जाइ छइ। काजक ओरूदा खतम होइते मनुखोक ओरूदा खतम भऽ जाए छै, जइसँ जिनगीए फुलहैर जाइ छइ। इलाकामे जे किछु कारोबार,

कारखाना छलो तँ ओ छल कुसियार चाउर, दालि, सेरसो, तोरी, पटुआक। जइमे हमर काजे ने छेलइ। तखन बाहर जाएब छोड़ि दोसर उपाइए की छल? मुदा तैयो गामसँ अलग अपनाकेँ कहाँ बुझै छेलौं। बुझै छेलौं जे जहिना बिराटनगर आकि कलकत्तामे नोकरी केनिहारक परिवार गाममे रहै छैन आ अपने परदेशमे कमाइ छैथ तहिना रहब-करब। साल भरिपर तँ एबे करै छेलौं जे कोनो विशेष उत्सव आकि परिवारक विशेष काज होइ छल तँ बिच्चोमे अबिते छेलौं। जहिना कोनो दोस-महीम छह मास या साल भरि आकि पाँच सालपर भेँट भेने भूमिका रूपमे अपन पूर्व जिनगीक चर्च करैत पाँचे मिनटमे अपन पाँन सालक गाथा गाबि, अलिसाएल पान जकाँ पानिमे डुमकुनियाँ कटिते ताना-उतार भऽ जाइए तहिना ने..! मुदा से छुटि गेल। ब्रिटिश कम्पनीमे नोकरी भेटल। जुआइन केला पछाइत बुझि पड़ल जे दुनियाँ बदैल गेल!

तैबीच रमदुलारी चाह आगूमे रखैत बजली-

"चाहमे तुलसी पात दऽ देने छी। देखलौं जे मन ठेहियाएल जकाँ अछि।"

पत्नीक बात सुनि ठाकुर प्रसादक मनमे उठलैन जे हारलकेँ हरिनाम नै कहि रोगक दबाइ कहै छैथ! दबाइ तँ तीत-मीठ दुनू होइ छइ।

जहिना रोग मेटबैमे तीत-मीठक विचार बिना केने लोक खाइए तहिना रोग अनबोमे तीत-मीठ थोड़े बुझै छइ। डारि छोड़ि कूदब नीक नइ बुझि डारिये-मे मचकी लगा झूलब नीक बुझलैन। मुदा जाधैर पत्नी लगमे बैसल रहती ताधैर घाट परहक छबड़ा जकाँ चाल-चूल करिते रहती। कखनो सोझ बाट धड़ैये ने देती, तँए नीक तखने हएत...।

बजला-

"पुरना संगी रूद्रा भाय छैथ तँ तेहेन सुआगत होनि जे मनमे जगह बनाबैथ।"

पतिक बात रमदुलारियोकेँ नीक लगलैन। बजली-

"होउ, झब-दे चाह पीबू। काजमे लगि जाएब तँ कप एत्तै रहि जाएत। आँटा सानि कऽ कचौड़ी बनबैले फ्रिजमे रखि लइ छी। वएह काज ने मेठनगर अछि, बाँकी तँ हल्लुके अछि। नमकीन-अँचार मिठाइ सभ तैयारे अछि।"

जान छुटैत देख ठाकुर प्रसद हाँइ-हाँइ चाह पीब पत्नीक हाथमे कप धड़ा देलखिन। रमदुलारी टेन्टक भीतर आबि जलखैक जोगार करए लगली।

अखन धरिक मनक खुटका रूद्रानन्दकेँ अनायासे मेटा गेलैन। मेटा ई गेलैन जे छह मासक पछाइत बैंक गेल रहैथ। तैबीच अपन विद्यार्थी कैशियर बनि आबि गेलैन। देखते पहिने काजो कऽ देलकैन आ खातिरो-बात केलकैन। खातिर-बात देख रूद्रानन्दक मुहसँ निकैल गेलैन-

"बौआ, बड़ बेरपर केलह। दबाइ कीनैक अछि। पोती दुखित अछि।"

बजै काल तँ रूद्रानन्द बाजि गेला मुदा अपने मन धिक्कारए लगलैन। कोन जरूरी छल जे बच्चाक बेमारीक बात एतए बजलौं!

अपन मन तँ रूद्रानन्दक कसाइन होइते रहैन मुदा कैशियरक बात,`मास्सैब हमहूँ कियो आन छी?' सुनि आरो मन खट-मिठेलैन। अनेरे केकरो काजमे बाधा देब उचित नइ बुझि बैंकसँ निकैल गेला। दोकान जा दबाइ कीनलैन। दबाइ कीनला पछाइत जखन घर परहक रस्ता हियाबए लगला कि मनमे उठलैन- रस्ता बदलए पड़त। जँ से नै करब तँ समैपर दबाइ केना दऽ पेबइ। जखने ओइ रस्ते जाएब आ

ठाकुर प्रसाद देखता चाहे नहियोँ देखता तैयो अँटकए पड़त। किएक तँ अपनो तँ कहिए कऽ आएल छेलिऐन। ओझरा जाएब। कोन जुग-जमानाक पछाइत भेँट भेला अछि। हुनको केस पाकि गेलैन, हमरो पाकि गेल। एते दिनक जे गप पसरत ओकरा लगले केना समेट पाएब। तइसँ नीक जे दोसर रस्ते पहिने घरपर जा बच्चाकेँ दबाइ खुएला पछाइत आएब, सएह केलैन।

रूद्रानन्दकेँ देखते ठाकुर प्रसादक मनमे, अन्हारमे डिबियाक इजोत जकाँ बुझि पड़लैन।

शहर-बजारक रमदुलारी रूद्रानन्दकेँ बैसते पानि-चाह आगूमे रखि देलखिन। मनाही करैत रूद्रानन्द बजला-

"ऐसँ आगू किछु ने करू। चाह भऽ गेल, भऽ गेल।"

रूद्रानन्दक मनाहीकेँ टारैत ठाकुर प्रसाद बजला-

"भाय, जाइकाल बाजल छेलौं जे `घराड़ी खेत आ खेत घराड़ी' से नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं?"

ठाकुर प्रसादक बातकेँ तहियबैत रूद्रानन्द बजला-

"सभ गप हेतइ। पहिने ई कहू जे बम्बैमे तँ रहैक अपन सभ बेवस्था कऽ नेने हएब किने?"

"हँ।"

"तखन गाम किए एलौं?"

"किए! हमर गाम नै छी जे नै आएब।"

"ई मजाक भेल?"

मजाक सुनिते सम्हरैत ठाकुर प्रसाद बाजल-

"ओतुका सभ किछु बेच-बिकीन कऽ आबि गेल छी।"

'सभ किछु बेच-बिकीन' सुनि रूद्रानन्दक मन ठमकलैन। मुदा

गामसँ शहर लोक खुशीसँ जाइए आ हिनका...। बम्बै सन शहर छोड़ि गाम अबैक किछु खास कारण जरूर हेतैन। मुदा जेते खोद-बेद करब, भऽ सकैए ओते मने-मन बेथित होथि। तइसँ नीक जे दोसर पाशा फेंक उनटा बानियेँ बुझि लेब। बजला-

"भाय, घराड़ी केना खेत बनै छै सएह ने आ खेत केना घराड़ी बनै छै, सएह ने? खेतमे अन-तीमन, फल-फूल उपजै छै जखन कि घराड़ीक उपजा माल-जालक संग लोको होइए। तैसंग ईहो होइ छै जे घर बन्हने खेते घराड़ी आ घर नै रहने घराड़ियो खेते बनि जाइ छइ।"

रूद्रानन्दक बात सुनि ठाकुर प्रसादकेँ पच्चीस बर्ख पहिलुका घटना मन पड़लैन, गाम आएल रही, एक तँ भुमकम तहूमे बरसाती। ओना भुमकम बारहो मास भऽ सकैए मुदा बारहो मासक मौसमक अनुकूल प्रभाव भिन्न-भिन्न पड़ै छइ...। अखन धरि ठाकुर प्रसाद गाम नै बिसरल छला, साले-साल अबैत छला। पोथियोमे सौन-भादबक लहकी पढ़िते छला। ओही लहकीमे, बरसातेमे गाम एला। भुमकममे घरो खसलैन आ तैपर बरखो तेते नहौलकैन जे जड़ा कऽ जे भगला से गामे बिसैर गेला।

ओना तइसँ पहिने मनमे रहैन जे गामोमे घर बनाएब। जहिना आन सभ महिना दिनक छुट्टीमे पिकनिको मनबैए आ घुमबो-फिड़बो करैए। मुदा एक्के दहारमे ठाकुर प्रसादक सभ किछु बोहा गेलैन। ब्रिटिश कम्पनीकेँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद बेटाक नोकरीक संग गाम तँ आबि गेला मुदा मनमे ठहैकते रहैन जे पाँचो साए बीघामे कम्पनीक अपन पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ कारखाना धरि रहतै। सबहक रहैक बेवस्था अपन केम्पसेमे रहतै। जहिना मॉरीशस समुद्रक बीच दोसर भारत अछि तहिना ने पाँचो साए बीघाक बीच, लाखो कर्मचारी आ श्रमिकक बीच अंग्रेजक अपन जुति-भाँति रहतै।

कारबारकेँ शहरसँ गाम दिस एने ठाकुर प्रसाद गाम एला। बजला-

"भाय, गाम तँ आबि गेलौं मुदा ने घर अछि आ ने एकोटा गाममे चिन्हारए बुझि पड़ै छैथ। पहिल-पहिल अहाँ भेटलौं। अहींपर सभ दार-मदार हएत?"

ठाकुर प्रसादक बातसँ रूद्रानन्दकेँ ओहन आकर्षण नै भेलैन जेहेन प्रश्न छल। मनमे उठलैन- ब्रिटिश कम्पनीकेँ गाममे एने शहरक लोक गाम दिस औता, मुदा संगमे कथी सभ लऽ कऽ औता? ई बात रूद्रानन्दकेँ घेरि लेलकैन। मन कहलकैन- नीलक खेतीक अनुभव तँ ऐछे, वेपारीए बनि कऽ ने अंग्रेज आएल छल। अपन टेकनीकल कौलेज, मेडिकल कौलेज खोलत। शिक्षाक संग अपन उत्पादित वस्तु बेचत, इलाज बेचत..! विचित्र प्रश्न रूद्रानन्दक मनकेँ पकैड़ लेलकैन। बजला-

"भाय, अखन थाकल छी, गप करैक मन नै होइए। जाए दिअ। जखन गाम आबि गेलौं तखन भेँट-घाँट होइते रहतै।"

रोगसँ जकड़ल रोगी जहिना बेसी-सँ-बेसी बात डाक्टरकेँ कहए चाहैए जे कहुना झब-दे रोग छुटि जाए, तहिना ठाकुर प्रसादकेँ हुअ लगलैन। मनमे नचैत रहैन जे पैंतीस बर्खपर गाम एलौं। पुरना लोक मरिए गेला। संगी-साथीमे दुइए गोरे छी। औरो गोरे खेती-गिरहस्तीसँ जुड़ल रहला, तिनकासँ तेहेन सम्बन्धे ने बनल। तैसंग जतियारे भोज आकि समाजिक भोज सेहो छुटिए गेल। काइयो केना पबितौं। एमहुरका, माने पैंतीस बर्खक बीचक जे ऐछो, जेकर जन्म पछाइत भेल, ओ किए चिन्हत आकि हमहीं किए चिन्हबै। तखन गाममे रहब केना?

चिन्तित ठाकुर प्रसाद बजला-

"भाय साहैब, एक परिवारक आशा भाइए गेल अछि।

भौजियोकेँ कहबैन जे कखनो काल आबैथ। आब तँ अहीं सबहक ने आशा...।"

पत्नीक नाओं सुनि रूद्रानन्द बजला तँ किछु नहि, मुदा मने-मन विचारए लगला। ने दुनू गोरेक एक बोली रहलैन आ ने बेवहार। पुरना बोली बिसरिये गेल हेती, बजरूआ बोलीमे केना सुग्गा-मेनाक मिलान हएत? खानो-पान तेहेन जे एकटा कीड़ी-फतिंगी तकैए आ दोसर पाकल तिलकोर आ पाकल लताम तकैए!

तैबीच रूद्रानन्दकेँ तरेतर बच्चाक बेमारी सेहो मनकेँ मथैत रहैन। बाल-बोध छी, रोगक कारण थोड़े बुझैए जे बरदाश करत। दर्द हेतै, कानत। घरमे जे बच्चा कानत तँ सियानकेँ केना अन्न घोंटल जेतइ..? बजला-

"जाइ छी?"

ओना ठाकुर प्रसादक इच्छा रहैन जे अखन धरिक जे खाली जिनगी रहल ओ तँ विचारेक माध्यमसँ भरत, मुदा रूद्रानन्दकेँ औगताइत देख चुपे रहला। चुपो केना नै रहितैथ। बलजोरीक विचार तँ ओहिना रस विहिन होइ छै, तैपर दू जिनगीक प्रश्न अछि।

काजक झोंकमे रूद्रानन्द बाजि कऽ विदा भऽ गेला मुदा दसे डेग आगू बढ़लापर मन उबिऐ लगलैन जे भरि मन गप नै भेल। मुदा विदा भेला पछाइत पुनः घुमि कऽ आपसो हएब तँ नीक नहियेँ हएत।

फेर मनमे भेलैन जे जखन शहर छोड़ि ठाकुर प्रसाद गामे एला आ बजबो केला जे गामेमे रहब। अखन धरि जे मनमे छेलैन जे दोहरा कऽ गामक मुँह ने देख पएब से तँ भेबे केलैन। मुदा गाममे करता की? जहिना बिनु रोगक डाक्टर आकि बिनु मशीनक इंजीनियर एक साधारण मनुखक रूपमे रहैत, तहिना ने ठाकुरो प्रसाद गाममे रहता। जे गुण उपार्जित केलैन ओइ गुणक की जरूरत गामक लोककेँ छै, जे

कियो किछु पुछतैन? मनुखक जिनगीक अधार काज होइ छै, काजक अधार लूरि होइ छइ। से रहितो काज छीनेने वा काज नइ रहने तँ ओहिना खाली-खाली जिनगी बनि जाइए!

रूद्रानन्दक जीबैक अधार आ ठाकुर प्रसादक अधार अलग-अलग रहने एकमे वेकारी आबि गेलैन दोसरकेँ जिनगीक गाढ़ रस भैटए लगलैन।

घरपर रहि रूद्रानन्द नोकरियो केलैन आ परिवारसँ लऽ कऽ गामो-समाजक काजसँ जुड़ल रहला। सेवा-निवृति भेला पछाइतो काजमे कमी नै एलैन। स्कूलक बान्हल काजसँ अलग भेला। मुदा अलग भेलो पछाइत काज कहाँ छुटलैन। शुरुहेसँ जे जिनगीक काजक रूटिंग बनि गेल छेलैन ओइमे कनियेँ फेड़-फाड़ भेलैन। फेड़-फाड़ ई भेलैन जेते समए स्कूलमे लगबै छला ओ दरबज्जापर समाजक बच्चाक बीच लगबए लगला। श्रमजीवी परिवार तँए श्रमजीवी संस्कृति परिवारक जन-जनमे समाएल रहलैन, जइसँ जिनगीक प्रति अकाट्य बिसवास बनले छैन। बेकारीक अवस्थामे ने कियो किम्हरो भटकबो करैए आ तैसंग टहलबो करैए। मुदा नियमित जिनगीक ढंग तँ तइसँ भिन्न होइ छइ। जेना-जेना समए चलैत रहल तेना-तेना किरियो-कलाप चलैत रहल।

दोसर दिन रूद्रानन्द मन बना कऽ ठाकुर प्रसाद ऐठाम पहुँचला। पहुँचते ठाकुर प्रसादकेँ कहलखिन-

"भाय, अहाँकेँ एलासँ एते जरूर भेल जे खाली समए आनन्दसँ कटत।"

ठाकुर प्रसाद रूद्रानन्दक बातक गंभीरताकेँ नइ बुझि सकला। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना भेलैन जे भरिसक खाइ-पीबै दुआरे बोली भरलैन अछि। बजला-

"भाय, जिनगीमे एते संघर्ष जे केलौं से कथीले। अही सभ-ले ने?"

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्द ताड़ि गेला। मनमे उठलैन यएह भेल संघर्ष जे जाबे शरीरमे काज करैक शक्ति छल ताबे ओकरा बेच-बेच जीवन-यापन केलैन आ कहै छैथ संघर्ष..!

मुदा सम्हरैत बजला-

"भाय, जहिना आमक आँठी टिकुलासँ जुआ-जुआ, सकताइत-सकताइत पकैसँ पहिनहि तेतेक सकता जाइए जे नव गाछ माने दोसर गाछ पैदा करैक शक्ति पाबि जाइए। की ऐसँ भिन्न मनुखक जिनगीकेँ बुझै छी?"

अखड़ाहापर जहिना कोनो खलीफा घन्टो लड़ला पछाइत माटिपर खसैए आ कोनो सलामी लड़ते धोबिया पाटे पट भऽ जाइए, तहिना ठाकुर प्रसादकेँ बुझि पड़लैन। मुदा जहिना प्रश्न नान्हिटा नहि, तहिना जवाबो केना नान्हिटा भऽ सकत? ई तँ विचारधारा छी।

एक धार ओहन बोहैए जइमे मनुखक क्रिया कर्म बनि जिनगीक सार्थकता पबैए आ दोसर कर्मसँ हटि पाकि जिनगी बनि ठाढ़ होइए। रूद्रानन्दो आ ठाकुरो प्रसादक बीच यएह दूरी बनि गेल छैन।

ठाकुर प्रसाद बजला-

"भाय, जिनगी-ले कोनो वस्तुक कमी नै अछि। सभ किछु बना नेने छी। तैसंग बेटो अपनासँ उन्नैस नहि, बीसे अछि।"

ठाकुर प्रसादक बात रूद्रानन्दकेँ एते बिसाइन बना देलकैन जे मन बेकाबू भऽ गेलैन। बजला-

"भाय, हाइ स्कूलक अठमा किलासक समाज अध्ययनमे पढ़ने रही- मनुख समाजिक प्राणी छी, जँ से नहि तँ या तँ देवता छी या

जानवर। ऐ कसौटीपर अपन समीक्षा करियौ।”

रूद्रानन्दक प्रश्न सुनि ठाकुर प्रसाद गुम भऽ गेला। तैबीच रमदुलारी चाह-बिस्कुट नेने आबि दुनू गोरेक आगूमे रखि देलकैन।

बिस्कुट खा पानि पीब चाहेक चुस्की लैत ठाकुर प्रसाद बजला- “भाय, जिनगीक कोनो ओर-छोर छइ। बेठेकान अछि।”

❍

शब्द संख्या : 3073

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-16-2

साहित्य

जगदीश प्रसाद मण्डल

सतभैंया पोखैर

पल्लवी प्रकाशन

सतभैंया पोखैर

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-23-0

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SATBHIANYA POKHAIR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचैड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

कथाक सत्तैर-

बिहरन

जहिना बैशाख-जेठक लहकैत धरतीपर, अगियाएल वायु-मण्डलक बीच हवाकेँ खसने अनासुरती मेघक छोट-छोट चद्दैर सुरूज ओढ़ए लगैत, रेलगाड़ीक हूमड़ैत अवाज दौड़ए लगैत, रहि-रहि कऽ गुलाबी इजोत छिटकए लगैत जइसँ अनुमानित मन मानैले बेबस भऽ जाइत जे पानि-पाथर आ ठनकाक संग बिहाड़ि आबि रहल अछि तहिना रघुनन्दन-सुलक्षणीक परिवारमे ज्योति कुमारीक जन्मसँ भेलैन।

भलेँ आइ-काल्हि बेटी जनमने माए-बाप अपन सुभाग्यकेँ दुर्भाग्य मानि मनकेँ केतबो किए ने कोसैत रहै छैथ जे परिवारमे बेटीक आगमन, हिमालयसँ समुद्र दिस निच्चाँ मुहेँ ससरब छी। मुदा से दुनू बेकती सुलक्षणी आ रघुनन्दनकेँ नै भेलैन। जहिना गद्दा पाबि कुरसी गदगर होइत तहिना खुशीसँ दुनू परानीक मन गदगद रहैन। से खाली परिवारे धरि नहि, सर-समाजसँ लऽ कऽ कुटुम-परिवार धरि सेहो छेलैन। ओना, आन संगी जकाँ रघुनन्दन नै छला जे तीनियेँ मासक पेटक बच्चाक दुश्मन बनि पुरुषार्थक मोँछ पिजैबतैथ, आ ने अपन रसगर जुआनी छोलनी धीपा-धीपा दगितैथ। दुनू परानी बेहद खुशी छला! किए ने खुशी रहितैथ? मन जे मधुमाछी सदृश मधुक संग मधुर मुस्कान दइ छेलैन। पुरुष अपन वंश बढ़बै पाछू बेहाल आ नारीकेँ

हाथ-पएर बान्हि बौगली भरि रौदमे ओंघरा देब ई केते उचित छी? मुदा से नहि, दुनू परानीक वंश बढ़ैत देख दुनू बेहाल। मन तिरपित भऽ तरैप-तरैप नचैत रहैन।

ओना तीन भाँइक पछाइत ज्योतिक जन्म भेल, मुदा तइसँ पहिने बेटीक आगमनो नै भेल छेलैन जे सुलक्षणी दोखियो बनितैथ। भगवानोक किरदानी की नीक छैन? नीको केना रहतैन, काजक तेते भार कपारपर रखने छैथ जे जखन टनकी धड़ै छैन तखन खिसिया कऽ किछु-सँ-किछु कऽ दइ छथिन। मुदा से कियो मानतैन थोड़े? जखन लोक अपने-अपने हाथ-पएर लाड़ि-चाड़ि जीबैए तखन अनेरे अनका दिस मुँहतक्कीक कोन जरूरत? किए ने कहतैन जे जखन अहाँ निर्माता छी तँ तराजूक पलरा एक रंग राखू, किए केकरो जेरक-जेर बेटा दइ छिऐ आ केकरो जेरक-जेर बेटी! आ जँ देबे करै छिऐ तँ बुधि किए भंगठा दइ छिऐ जे बेटासँ धन अबै छै आ बेटीसँ जाइ छइ। जइसँ नीको घरमे चोंगराक खगता पड़ि जाइ छइ।

उच्च अफसरक परिवार तँए परिवारिक स्तर सेहो उच्च। भलेँ माए-बापकेँ छाँटियेँ कऽ किए ने परिवार होइन। खगल परिवार जकाँ सदैत गरजू नहि। परिवारक खर्च समटल, तइसँ खुलल बजारक कोनो असर नहि। सरकारी दरपर सभ सुविधा उपलब्ध, जइसँ खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ मनोरंजनक ओसार चकमकाइत। भलेँ जेकर अफसर तेकर बात बुझैमे फेड़ होनि, जइसँ महगी-सस्ती बुझैमे सेहो फेड़ भऽ जाइत होइन। मुदा परोछक बात छी चारू बच्चाक प्रति रघुनन्दनक सिनेह समान रहलैन।

परिवारमे सभसँ छोट बच्चा रहने ज्योति सबहक मनोरंजनक वस्तु। मुदा गुरुआइ तँ ओहिना नै होइ छै, तँए सभ अपन-अपन महिक्का मनक टेमीसँ सदैत देखैथ, जप करैथ। आखिर के एहेन छैथ

जे ऐ धरतीपर ज्ञानदानी नै छैथ। भलेँ ओ अधखिजुए वा अधपकुए किए ने होथि। जहिना कोनो माइलिक बच्चा पिताक संग जामन्तो रंगक फूलक फुलवाड़ीमे जिनगीक अनेको अवस्था देख चमकैत तहिना भरल-पूरल परिवारमे ज्योतियोकेँ भेल। देखलैन कलीमे जहिना अबैत-अबैत रंगो, सौन्दर्यो आ महको अबैए तहिना ने जिनगी छी। जँ मनुखकेँ डोरीसँ बान्हल जाए तँ डोरी तोड़ैक उपाइयो तँ हुनके करए पड़तैन।

समुचित वातावरण रहने ज्योति कुमारी अपन संगी-साथीक बीच नीक श्रेणीमे आबि गेली। जहिना संगीक सिनेह तहिना शिक्षकोक सिनेह भेटए लगलैन। टिकट कटौल यात्री जहिना निश्चिन्तसँ गाड़ीमे सफर करैत तहिना समतल जिनगी पाबि ज्योति सेहो आगू बढ़ए लगली। जिनगीमे बाधा सेहो अबै छै मुदा तइसँ पूर्ण अनभिज्ञ ज्योति। जेना कर्मकेँ धर्म बना जिनगीक बाट बनौने हुअए तहिना...।

थम्हसँ निकलैत केराक कोसा जहिना अपन घौरक संग हत्थो आ छीमियोँक अनुमानित परिचए दैत, फूलक कोढ़ी फूलक दैत तहिना बच्चेसँ कुमारि ज्योति सुफल जिनगीक अनुमानित परिचए दिअ लगल।

जेना-जेना वौद्धिक विकास होइत गेलैन तेना-तेना तीनू भाँइयो बुझए लगला जे ज्योति तेहेन चन्सगर अछि जे आगू किछु जरूर करत। जइसँ भैयारीए जकाँ ज्योतिक संग बेवहार करए लगला। ओना, लैंगिक प्रभाव ओतए ओतेक अधिक देख पड़ैत जेतए भाए-बहिनक बीच जेतेक बेसी दूरी रहल।

मुदा से रघुनन्दनक परिवारमे नै छेलैन। दोसर कारण ईहो छल जे वैचारिक दूरी जेना आन-आन परिवारमे रहैत तेना सेहो नहियेँ जकाँ

छेलैन। परिवारक सभ अपन-अपन दायित्व बुझि अपन-अपन काजमे दिन-राति लागल रहै छला। ज्योतिकेँ सभ अपना-अपना नजरिये देखबो करैथ।

गुरुक रूप रघुनन्दन देखैथ तँ जगत-जननी जानकीक सुनैनापुर रूप सुलक्षणी देखैत रहथिन। जइसँ रघुनन्दन दुनू परानी एक-एक लूरि-बुधिकेँ धरोहर जकाँ ज्योति बेटीक बेवहारमे सजबैत रहलैथ। तहिना भाइक मन सामा-चकेबाक सम्बन्धमे ओझराएल रहैन। केना नइ ओझरैतैन? आइ धरिक इतिहासक दूरी जे मेटाइत देखैथ। केतेक प्रतिशत परिवार अखन धरि इतिहासक पन्नामे लिखाएल अछि जइमे भाए-बहिनक शिक्षाक दूरी समतल हुअए? तँए सबहक सिनेहक अपन-अपन कारण छल...।

जनकपुरमे जहिना रामकेँ आ मथुरामे कृष्णकेँ देख देखनिहारकेँ भेलैन तहिना रघुनन्दनोक परिवारमे ज्योतिकेँ देखते भेल।

बाल-बोध जहिना अपन मनोनुकूल वस्तु पाबि छाती लगबैत, हृदैसँ खुशी होइत तहिना विज्ञान विषयसँ ज्योति सटि गेली। विज्ञान विषयमे नीक नम्बर आनि बिजलोका जकाँ ज्योति संगियो-साथी, शिक्षको आ मातो-पिताक नजैरमे चमकए लगली।

हाइ स्कूलमे पएर दैते जेना अपन आँट-पेट बुझि कोनो विद्यार्थी साइंस तँ कोनो कामर्स तँ कोनो आर्ट विषय चुनि आगू बढ़ैत तहिना ज्योतियो साइंस चुनि नेने छेली। घरसँ बाहर धरि सर्वत्र बहारे-बहार बुझि पड़ैन। ऋषि-मुनिकेँ जहिना दुनियाँ समतल बुझि पड़ैत तहिना स्कूलक शिक्षकक संग दू-दूटा भाए पाबि ज्योतियोकेँ दुनियाँ समतल बुझि पड़ैत। जइसँ कोनो तरहक असोकर्ज घर-सँ-बाहर धरि कखनो नहि बुझि पड़ैन।

असोकर्ज तँ ओइठाम होइत जेतए एकपेरिया-चरिपेरियाक

मिलन-भौक रहैए। आ भौक निर्भर करैए चलनिहारपर, जेतए जेहेन चलनिहार तेतए तेहेन भौक।

ओना जैठाम बेसी चलनिहार रहैत ओतए कच्चियो सड़क पकीए जकाँ सक्कत आ पकियो कच्चीए जकाँ बनि जाइत अछि।

साइंस कौलेजमे सभसँ नीक नम्बरक संग ज्योति फिजिक्स विषयसँ नीक नम्बर पाबि एम.एस-सी. केली। जहिना अखराहापर लपटैत-लपटैत पहलवानक कश बनि जाइत तहिना ज्योतियोकेँ भेल।

'नारी मुक्ति संघ'क स्थापित अध्यक्ष होइक नाते पिताक–रघुनन्दनक–सिनेह ज्योतिपर आरो बेसी रहैन। ज्योतिकेँ कौलेज पहुँचैत-पहुँचैत तेसरो भाए नोकरी पकैड़ लेलैन, जइसँ आरो बेसी सुविधा ज्योतिकेँ प्राप्त हुअ लगल। ओना काजकेँ कर्म बना करैक अभ्यास सुलक्षणी बच्चेसँ लगबैत आएल रहैन। जइसँ घरक काजक जहैन ज्योतिक जेहन तक पकैड़ नेने तँए जहिनगर। सदैत कर्मकेँ सहयोगी-प्रेमी जकाँ दुलरबैत, प्रेम करैत। तँए की ज्योति सुलक्षणीक बेटी नहि?, परिवारक सभसँ बेसी सिनेही बेटी छिऐन।

मुदा सुलक्षनीक मनमे सदैत एकटा कचोट कचोटिते रहैन जे कुल कन्याँ की? कुल तँ अनेको अछि जेना- गुरुकुल, पितृकुल, मातृकुल इत्यादि, जे प्रश्न अखनो धरि नै सोझरेलैन।

एम.एस-सी. करिते दुनू बेकती–रघुनन्दन–केँ जहिना बिनु हवोक पीपरक पात डोलए लगैत तहिना ज्योतिक प्रति सिनेह डोलए लगलैन। अनासुरती दुनू परानीक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। बीस-बाइस बर्खक बेटी भऽ गेल, बिआह करब माए-बापक कर्तव्य कर्म छी। कौलेजक अन्तिम सीढ़ीक आगू टपि चुकल अछि इत्यादि। तैसंग ईहो जे पारदर्शी सीसा जकाँ ज्योतिक शरीर सेहो देखैथ जे जुआनीक रंग सगतैर चमैक रहल छइ...।

ओना कौलेजक आन छात्रा जकाँ नहि, मिथिलाक धरोहैर कुल-कन्याँ जकाँ। जे गुरुकुलमे विद्याध्ययन करैत। दुनू परानीक दायित्व बुझि रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

"ज्योति बिआहै-जोकर भेल जाइए से की विचार?"

संयासिनी जकाँ सुलक्षणी उत्तर देलकैन-

"अपन कोनो काज पछुआ कऽ नै रखने छी, जे बाँकी अछि ओ अहाँक छी। तैबीच हम की विचार देब?"

पत्नीक उत्तर सुनि रघुनन्दन तिलमिला लगला। मनमे उठलैन-एहेन उटपटांग उत्तर किए देलैन? मुदा सोल्होअना अनुमानोसँ कोनो बात नै बुझल जा सकैए। नीक हएत जे पुन: प्रश्न उठा आगू बजबाबी। ई बात निसचित जे एको परिवारमे काजक हिसाबे सबहक सोचै-विचारै आ बुझैक ढंग फुट-फुट भऽ जाइ छइ। भलेँ सासुसँ ऊपर किए ने जेठ-सासु मानल जाए, मुदा सासु तँ सासु होइत।

जहिना देवालयक कपाट लग ठाढ़ भक्त हाथ जोड़ि अपन दुखरा भगवानकेँ सुनबैत तहिना तरपैत रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

"संयासिनी जकाँ किए घरसँ पड़ाए चाहै छी! बिसैर रहल छी जे घरनी सेहो छी?"

पतिक गंभीर विचारकेँ अँकिते सुलक्षणीक करेज कलैप उठलैन। मुदा पानिक बहैत बेगमे जहिना गोरसँ गोरिया-गोरिया गोर उठौल जाइत तहिना सुलक्षणी ज्योतिक जिनगीक धारामे ठाढ़ होइत बजली- "अहूँ कोनो हूसल नै छी, सभ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ बच्चे बुझैए। मुदा एतए से बात नहि अछि। अहाँ लिए भलेँ ज्योति बच्चा हुअए मुदा ओ ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल अछि, जेतए मनुख अपन जिनगीक बाट चुनैक गुण प्राप्त कऽ लइए। तँए दुइए परानी नहि, बेटो-पुतोहुसँ विचारि लिअ।"

सेन्ट्रल बैंकक ब्रांच मनेजर–भोगेश्वर–क संग ज्योतिक बिआहक बात पक्का भऽ गेल। जहिना ज्योति तहिना भोगेश्वर। दुनूक अद्भुत मिलानी। विषुवत रेखाक समान दूरीपर जहिना उत्तरो आ दच्छिनो समान मौसम, समान उपजा-वाड़ी होइत अछि तहिना।

अलेल कमाइ तँए छिड़ियाएल जिनगी भोगेश्वरक। हजारो कोस हटि भोगेश्वर अपन परिवारसँ रहैत। नव-नव वस्तुसँ भरल बजार, जे दुनियाँक एक कोणसँ दोसर कोण पहुँचैत, भोगेश्वर चकाचौंधमे हेरा अपन माइयो-बाप आ भाइयो-भौजाइसँ दूर भऽ गेल। किए ने हएत? जखन सभकेँ अपन कर्मक फल भोगैक अधिकार छै तँ भोगेश्वरो किए ने भोगत। एक तँ दिन राति रूपैआक पेँच-पाँचक गुत्थी खोलैक क्षमता तैपर जेकरे माए मरै तेकरे पात भात नहि?'

नीक बर पाबि रघुनन्दन चन्दाक तिजोरी माने नारी मुक्ति संघक कोष खोलि देलैन। कोनो अनचितो तँ नहियेँ केलैन। चन्दो तँ मुक्तीए लेल अछि।

एक तँ मनी-ग्रुप अर्थशास्त्रसँ पी.एच-डी. तैपर सँ सेन्ट्रल बैंकक शाखा-प्रबन्धक, किए नै भोगेश्वर अपन अधिकारक उपयोग करत। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। तैबीच ज्योतिकेँ, मास दिन पूर्व देल आवेदनक इन्टरभ्यूक चिट्ठी भेटलैन। तहूमे बिआहक दिनसँ तीन दिन पूर्वक दोहरी काज परिवारमे बजैर गेलैन। छोड़ैबला कोनो नहि। तैपर ज्योति सेहो बिआहकेँ माइनस आ इन्टरभ्यूकेँ पलसमे हिसाब लगबैत।

एमहर बिआहक ओरियानक धुमसाही परिवारमे। मुदा ज्योति विपरीत दिशामे मुड़ि इन्टरभ्यू दइले अड़ि गेली। इन्टरभ्यू सेहो तँ लगमे नहियेँ जे दू-चारि घन्टा समए लगा पुरौल जा सकैए। दच्छिन भारत, जे लगमे नहि अछि। केतबो तेज दौड़ैबला गाड़ी भेल तैयो

चौबीस घन्टासँ पहिने नै पहुँच सकैए। तहूमे बिआह सन शुभ काजमे बर-कन्याँकेँ सुरक्षित रहब जरूरी अछि। तँए सीमा केना पार कएल जाएत। गाड़ी-सवारीक कोन ठेकान...।

ज्योतिक प्रश्न परिवारकेँ स्तब्ध केने। जेठ भाय–प्रेम कुमार–क सिनेह ज्योतिपर उमैड़ पड़लैन। हिसाब लगबैत पिताकेँ कहलखिन-

“बिआहक दिनसँ चौबीस घन्टा पहिने अबस्स पहुँच जाएब। अहाँ सभ बिआहक ओरियान करू ज्योतिक संग अपने जाइ छी।”

प्रेम कुमारक विचारसँ रघुनन्दन दुनू काज होइत देख खुशी भेला। मुदा सुलक्षणीक मन आरो बेसी करुआए लगलैन। मुदा खोलि कऽ बजती केना? एक तँ पुरुष-प्रधान परिवार तैपर सभ बापूतक एक विचार। स्त्रीगणक कोनो ठेकाने नहि। कहैले ने चारि गोरे परिवारमे छी मुदा ननैद-भौजाइक सम्बन्ध केहेन होइ छै से की केकरोसँ छिपल अछि। नीक हएत जे पोल्हा कऽ बेटीए-सँ पुछि ली। मुदा विध-बेवहारपर नजैर पड़िते सबहक मन भँगैठ गेलैन। बिनु विधि-बेवहारक बिआह केहेन हएत। रस्ते-पेरे तँ सेहो लोक बिआह कऽ लइए मुदा परिवार केहेन बनै छइ। आठो दिन तँ कम-सँ-कम विध-बेवहारमे लगबे करत। खाएर जे से...।

ज्योतिक इन्टरभ्यूओ आ बिआहो भऽ गेलैन। अद्भुत बिआह तँए समाजमे चर्चाक विषय बनल। चर्चो मुँह देख मुंगबा परसैबला। जेहेन मुँह तेहेन मुंगबा। कियो बर-कन्याँक शिक्षाक चर्च करैत, तँ किओ युगक अनुकूल बर-कन्याँक जोड़ाक। किओ विध-बेवहारक लहासक चर्च करैत तँ किओ समाजक अगुआएल नारी जातिक चर्च करैत। तहिना केतौ भोज-भातक चर्च चलए लगल, तँ केतौ गमैया बरियातीक संग बजरूआ बरियातीक चर्च चलए लगल। मेल-पाँच बरियाती तँए सबहक बात दमगर। इनार पोखैरक घाटसँ लऽ कऽ

दुआर-दरबज्जा धरि सौंसे गाममे जेना संसद चलए लगल। मुदा सबहक मन भोगेश्वर आ ज्योतिक वैवाहिक बन्धनपर जा कऽ अँटैक जाइन।

बिआहक तीन दिन पछाइत भोगेश्वर दुरागमनक प्रस्ताव रखलैन। प्रस्ताव सुनि परिवारक सबहक मनमे सभ रंगक विचारक संग उत्तरो उठलैन। मुदा आगू बढ़ि कियो बजैले तैयार नहि। मने-मन सुलक्षणी सोचैथ जे बिआहक साल तँ बर-कनियाँक विध-बेवहार होइ छइ। जँ विधि-बेवहारक कारण नै होइ छै तँ किए सौन-भादो आ पूस-माघ बेटीक विदागरी नै होइए। बिनु विधि-बेवहारक बिआह तँ ओहने हएत जेहेन बिनु मसल्लाक तरकारी। कहैले ने लोक बजैए जे फल्लाँ चीजक तरकारी खेलौं मुदा की बिनु मसल्लेक बनल छेलइ? जँ मसल्लोक सागिरदीसँ तरकारी बनल तँ ओकर चर्च किए ने होइ छइ? तर-ऊपर मनकेँ होइतो कण्ठसँ निच्चे सुलक्षणी अपन विचारकेँ अँटका रखली।

रघुनन्दनक मनमे भिन्ने विचार औंढ़ मारैत रहैन। मुदा गारजनक हैसियतसँ औगता कऽ बाजब उचित नै बुझि, सुरखुराइत मनकेँ रोकने रहला। मुदा तैयो होनि जे बिनु कहने बुझता केना? भितरे-भीतर मन बजैत रहैन जे जहिना बीजू[1] गाछ कलमी डारिमे छीलि कऽ डोरीसँ बान्हि किछु मास जुटैले छोड़ि देल जाइत तहिना ने बिआहो छी। फागुनक कनियाँ जँ फागुनेमे सासुर चलि जाथि तँ समन जरैत देखब सासुरमे नीक हेतैन? चैताबरक टाँहि सासुरमे नव-कनियाँकेँ देब उचित हएत?

तेतबे नहि, जँ से हएत तखन आमक गाछीक मचकीक बरहमासा आ सौनक राधा-कृष्णक कदमक गाछक झूलाक अर्थे की

[1] आँठी-सँ जनमल साल-दू सालक आमक गाछ

रहत? तहीले ने बिआह-दुरागमनक बीच समयक फाँक रहैए। भलेँ नै बनैबला रहत तँ पान साल आकि तीन साल नै निमहौ, मुदा सालो तँ टपबए पड़त। जँ से नै टपत तँ केना सासु-ससुर, सारि-सरहोजि, सार-बहनोइ आकि सर-समाजक बीच सम्बन्ध बनत? परिवारक बीच कम्मो दिनमे सम्बन्ध स्थापित भऽ सकैए, मुदा समाज तँ नम्हरो आ गहींरगरो होइ छइ। कोनो धारक पानिक पैमाना तँ तखन ने नीकसँ नपाएत जखन भादोक बढ़ल आ जेठक सटकल पेटक पानि नापल जाएत। तहिना ने समाजो छी। अपना गरजे लोक थोड़े जुड़शीतल आ फगुआ आन मासमे कऽ लेत। जँ से करत तँ चरि-टँगा आ दू-टँगामे अन्तरे कथी भेलइ? एतबे ने, जे बिनु सिंह-नाँगैरक रहत..? रघुनन्दन मन ममोड़ि कऽ चुप छला। अनेको कारण अनेको समस्या मनकेँ घेर लेलकैन।

ज्योतिक भाए-भौजाइ अखन धरि धर्मसूत्र आ गृहसूत्र पढ़नहि ने छैथ, तँए हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता मनमे रहबे ने करैन। नोकरिया रहने मनमे उठैत रहैन जे जेते जल्दी काज फरिया जाएत ओते जल्दी जान हल्लुक हएत। अनेरे सी.एल. दुइर भऽ रहल अछि।

मुदा से सारे-सरहोजिक मनमे नै रहैन, भोगेश्वरक मनमे सेहो सएह रहैन। बैंकमे घन्टाक कोन बात जे मिनटोक महत अछि। हरिदम पाइयेक बरखा, पाइयेक हिसाब-वारी। अनेरे पाभैर खाइले दिन-राति सासुर ओगरब, कोन कबिल्ती हएत। स्त्रीए लऽ कऽ ने सासुर, आ जे संगे रहत तँ सभदिना सासुर नै भेल? जरूर भेल। अपना परिवारकेँ जँ सासुर बना सौंसे गाम जे ओझहे बनि जाएत तँ केकरा सोझहा जाइक आँखि-मुँह रहत?

मुदा तीनू भाँइ प्रेम कुमार चुप्पी लादि लेलैन जे अखन घरक गारजन माए-बाबू छैथ, तँए किछु बाजब उचित नहि। मुदा तीनू

भाँइक मनमे ई शंका जरूर होनि जे स्त्रीगणक सोभाव होइत अछि जे पुरुखक टीकपर चढ़ि कऽ मुरगीक बाँग देब। तैसंग समाजोक डर। समाज तँ ओहन शक्ति छी जे बिनु डोरीे-पगहाक रहनौं, चपरासीसँ लाट साहैब धरि सजौने अछि। हाकिम-हुकुम आ रिनियाँ-महाजन रहै वा नहि। भलेँ बिलाइ बाझकेँ खाए वा बिलाइकेँ बाझ...।

जखनसँ जमाइबाबूक दुरागमनक प्रस्ताव परिवारमे आएल तखनसँ सभ सकदम! चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप परिवारमे पसैर गेल। जइसँ धारक पानि जकाँ बहैत बोल ठमैक कऽ भौर लिअ लगल। ओना, सबहक मुँह बन्न रहितो आँखिक नाच जोर पकड़नहि छेलैन, मुदा सिरिफ मूक नाच। जेठुआ गरेक सूर-सार देखते जहिना सचेत लोक पहिने बाल-बच्चा आ माल-जालक उपाय सोचि आगू डेग उठबैए तहिना रघुनन्दनकेँ अपन भार परिवारक बीच उठबैक विचार भेलैन। फुरलैन, ‘संग मिल करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।’ जाधैर नीक-अधलाक बीचक सीमा-सरहद नै बुझल जाएत ताधैर हारि-जीतक चर्चे बचकानी। मुदा समाजो आ परिवारोक तँ चलैक रस्ता अछिए...।

रघुनन्दनक मनमे खुशी उपकलैन, खुशी उपैकते मुँह कलशलैन। मुदा सुलक्षणीक मन महुराएले रहैन! किए ने महुराएल रहतैन? जेकरा मुँहमे ने थाल-कादो लगल अछि आ ने पसेनाक सुखाएल टघार अछि, ओ किए ने रूमालेसँ काज-चला लेत। मुदा जेकरा मुँहमे थालो आ तह-दर-तह सुखल पसेनोक टघार छै, ओ केना बिनु पानियेँ धोनौं चिक्कन हएत! की अपनो मन मानत?

सहमत भऽ परिवारक सभ सदस्य सुलक्षणीकेँ बजैक भार देलकैन। सुलक्षणी बजली-

“ओना तँ साल भरि, नइ तँ छह मास, जँ सेहो नहि, तँ तीनियोँ

मास आ जँ सेहो नै तँ एको पनरहिया नै रूकता तँ केना हेतैन। जँ से नै मानता तँ हमहूँ नै मानबैन।"

सासुक निर्णए सुनि अपन शक्तिक प्रयोग करैत भोगेश्वर बजला-

"अपन अधिकार क्षेत्रसँ अनचिन्ह भऽ बाजि रहल छैथ। तँए..?"

भोगेश्वरक बात सुनि ज्योतिक ह्रदैमे तरंग उठलैन। तरंगित होइते मुँह तोड़ि उत्तर दिअ चाहली। मुदा इन्टरभ्यू मन पड़िते ठमैक गेली। मुँह तँ बन्न रहलैन मुदा मनमे तीन परिवारक टक्कर उठलैन- रूइया सदृश वादलक टक्करसँ जखन ठनका बनि सकैए, तँ तीन परिवारक तीन जिनगीक रग्गर केते शक्तिशाली भऽ सकैए! दिन-रातिक सीमा-सरहद तोड़ि ज्योति पतिकेँ कहलैन-

"अधिकार आ कर्तव्य हर मनुखक धरोहर सम्पैत छिऐ, नै कि खास बेकतीक खास।"

ज्योतिक विचार सुनि भोगेश्वरक देह सिहैर उठलैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत बजला-

"साते दिनक छुट्टी अछि। एक तँ अहुना आन-आन विभागसँ कम छुट्टी बैंकमे होइ छै, तहूमे एते सुविधा भेटै छै जे काज केनिहार ओहो छुट्टी काजेमे लगबए चाहैए।"

तैबीच ज्योतिक मोबाइलिक घन्टी टुनटुनाएल। अनभुआर नम्बर देख सावधानीसँ ज्योति रिसीभ करैत बजली-

"हेलो।"

"हेलो।"

"अपने केतए-सँ बजै छी?"

"विज्ञान शोध संस्थानसँ। सात दिनक भीतर आबि ज्वाइन कऽ लिअ। ओना, चिट्ठियो पठा देने छी।"

ज्वाइनिंग-दे सुनि ज्योतिक मन ओहिना खिल उठलैन जहिना कोनो कली कोनो वस्तुक तर दबाएल रहैए आ समए पाबि एकाएक फुरफुरा कऽ खिलैत फूलक रूपमे आबि जाइए...।

अखन धरिक विचार ज्योतिक तर पड़ि गेलैन आ नव दुनियाँक नव विचार मनक ऊपर चढ़ि एलैन। सभसँ पहिने पिता दिस तकैत बजली- "बाबूजी, अपन कर्तव्य जइ रूपे अहाँ निमाहलौं तेना बहुत कम लोक निमाहि पबैए। अपने महान छी। आग्रह करब जे केकरो जिनगीक रस्ताक बाधक नै बनिऐ।"

ज्योतिक बात नै बुझि जिज्ञासा करैत प्रेम कुमार प्रश्न उठौलैन-

"की रस्ताक बाधा?"

"भाय साहैब, अखन जवाबक उचित समए नै अछि। अखन एतबे कहब जे काल्हि चलि कऽ हमरा शोध संस्थान धरि पहुँचा दिअ।"

बेटीक बात सुनि सुलक्षणी बजली-

"आइ तीनियेँ दिन बिआहक भेलह हेन, बहुत विध-बेवहार पछुआएल छह।"

"जे पछुआएल अछि ओ पाछू हएत। मुदा कोनो हालतमे काल्हि जेबे करब, चाहे..!"

ज्योतिक संकल्पित विचार सुनि भोगेश्वर बजला-

"भाय-साहैब, काल्हिये हमहूँ चलि जाएब। सभ संगे चलब, हम हाबड़ामे उतैर जाएब आ अपने सभ आगू बढ़ि जाएब।"

सएह भेल। ज्योतिकेँ शोध संस्थान पहुँचा तीनू भाँइ घुमि कऽ

घर आबि गेला।

उर्वर भूमिक बनल परतीमे जहिना जोत-कोर आ नमीक संग बीआ पड़िते, किछुए दिन पछाइत हरिया उठैत तहिना ज्योतिक उर्वर शक्तिमे अनुसन्धानक नव-नव अँकुर पानिक हिलकोर जकाँ उठए लगल। तहूमे एक नहि, अनेक अँकुर। जहिना पोखैरमे झिझरी जकाँ पानिक हिलकोर चलैत तहिना ज्योतिक मनमे चलए लगलैन। जहिना भूखल बेकतीकेँ अपन अन्नक भण्डार भेने, वस्त्रहीनकेँ वस्त्र भेने, गृह विहीनकेँ गृह भेने विशाल जल-राशिक नदी सदृश मन उफैन जाइत तहिना ज्योतिक मन उफनए लगल। आइ धरिक दुनियाँ। नव दुनियाँ, नव-नव सुरूज-चान, ग्रह-नक्षत्र, नव-नव वस्तुसँ सजल दुनियाँ ज्योतिक आँखिक आगू नाचए लगल। ओ दुनियाँ जैठाम पहुँच मनुख सृजन शक्ति प्राप्त कऽ सृजक बनि सृजन करए लगैत...।

ज्योति ज्योति नै सृजक बनि गेली। नन्दन बोनक माली जहिना अपन जिनगी ओइ बोनकेँ उत्सर्ग कऽ नव-नव फूल-फलक गाछ आन-आन जगहसँ जोहि आनि फुलवाड़ी सृजैत, जेकरा देख माली पुत्र अपन भविस बुझि एक संग छिड़ियाएल जामन्तो जिनगी लोढ़ि, फुलडाली सजा, देव मन्दिर लेल रखए चाहैत तहिना ज्योतियोकेँ श्रृंगी ऋृषिक विशाल उपवन भेट गेलैन। भेटिते ओइ माली पुत्र जकाँ अपन भविस देखए लगली। दू धारक बीच महारपर ठाढ़ भऽ, एक दिस तरा-ऊपरी गिरल मनुख तँ दोसर दिस जिनगीक खेलौना हाथमे नेने समुद्र दिस पीह-पाह करैत धारमे उधियाएल जाइत। उगैत-डुमैत ज्योति देखली जे कियो मात्र पति-पत्नीक जीवन लीलाकेँ जिनगी बुझि, तँ कियो अमरलत्ती सदृश वंश-वृक्षपर लतरबकेँ, कियो धार-समुद्रक बीच धरतीकेँ, तँ कियो अकास-पतालक बीचक विशाल वसुदेवकेँ...।

देखैत-देखैत ज्योतिक मन बेसम्हार भऽ गेलैन। अपन

जुआनीक खिलैत कलीक संग चढ़ैत तन, उफनैत मनकेँ सम्हारि धारमे कुदए चाहली। मुदा मनमे नचलैन माए-बाप, धरतीक प्रथम गुरु। जहिना शिक्षक सिलेटपर खाँत लिखि शिष्यकेँ सिखबैत तहिना शिष्य सेहो ने लिखि-लिखि शिक्षकसँ शुद्ध करबैत। शुद्ध होइते ओहो खाँत ने खाँत बनि जाइत...।

सिनेमाक रील जकाँ ज्योति कुमारीक नजैर माता-पिताक सटले पतिपर पड़लैन। मुदा ओ किछुए क्षण धरि मनमे अँटकलैन। मनमे उठि गेलैन- बिआहक विधो तँ पछुआएले अछि..! लगले फेर माता-पिता आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन।

राति-दिन ज्योतिक मन सौनक मेघ जकाँ उमड़ए-घुमड़ए लगल। धारमे चलैत नाह जकाँ डोलि-पत्ता हुअ लगल। आँखि उठा तकली तँ देखलैन जे माता-पिता छोड़ि कहाँ कियो छैथ। फेर लगले मन घुमलैन तँ सभ किछु देखली। की नै अछि? मातृभूमिक संग पितृभूमि सेहो अछि। मनमे खुशी एलैन। होइत भोर कागत-कलम निकालि ज्योति पिताकेँ पत्र लिखए लगली-

"माता-पिता, सहस्त्र कोटि प्रणाम!

एक जिनगीक आखरी आ दोसरक पहिल पत्र लिखैत मन उमैक रहल अछि। तँए केतौ शुद्ध-अशुद्ध लिखा जाए, से माफ करैत सुधारि कऽ पढ़ि लेब। अपने लोकनिक सेवा, शिखर सदृश शिष्य जकाँ शिरोधार्य केने रहब। जहिना वादलक बून धरतीपर अबिते धरिया धार होइत समुद्र दिस बढ़ैत तहिना अपने लोकनि धरिया देलौं। कुल-कन्याँ वा कुल-कलंकिनी बनब हमर कर्म छी। मुदा बेटी तँ अहींक छी। हमहूँ तँ एतै बसब। तँए ताधैरक छुट्टी असीरवादक संग दिअ जे बास बना बसए लगी।

अहींक ज्योति"

पत्र पहुँचते अह्लादसँ दुनू बेकती रघुनन्दन-सुलक्षणी अपन ज्योति बेटीक पत्र पढ़ैक सुर-सार केलैन। पत्रपर नजैर दौड़ैबते दुनू बेकती अलिसा गेला। आगूमे अन्हार पसैर गेलैन। मुदा लगले मनक भक्क खोलि रघुनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन-

“पत्रक उत्तर देब जरूरी अछि, मुदा की लिखब से फुरबे ने करैए।”

गर्म-ठंढक बीच जेहने सीमा असथिर रहैत तेहने चित्ते सुलक्षणी पतिकेँ विचार देलखिन-

“कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। माए-बाप केकरो जन्म दइ छइ। जीबैले अपने ने रौद-वसात सहए पड़तै। आब अहीं कहू जे एहनो बात पत्रमे लिखि वेचारीकेँ पढ़ैक समए बरदेबै? रहल असीरवादक तँ एतैसँ दुनू परानी मिल दऽ दियौ।”

◌

शब्द संख्या : 3300

(ई कथा, युवा साहित्यकार- श्री आशीष अनचिन्हार लेल)

मायराम

अमावस्याक राति, बारहसँ ऊपर भऽ गेल छल मुदा एक नै बाजल रहइ। डन्डी-तराजू माथसँ निच्चाँ उतैर गेल छल। सन-सन करैत अन्हार...।

नित्य नअ बजेमे निन्न पड़ैवाली मायरामकेँ आइ आँखिक नीन निपत्ता छैन, रातिक एक बजैबला अछि।

कछमछ करैत मायराम ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत समय बीता रहल छैथ, अकैछ कऽ केबाड़ खोलि बाहर निकलली तँ काजर घोराएल रातिमे अपनो हाथ-पएर नै सुझि रहल छैन। जहिना करिछौंह दुनियाँकेँ आँखिसँ देखब कठिन होइत तहिना दसो दुआरि बन्न, मन खलियाएल बुझि पड़लैन। पुन: घुमि कऽ ओछाइनपर आबि ओंघरा गेली! दिन-रातिक बोध-विहीन मायरामक मन तड़ैप उठलैन-

“नैहर!”

पहिल सन्तान होइते सुदामा (मायराम) बाइसे बर्खमे विधवा भऽ गेली। गत्र-गत्रसँ जुआनी, फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ छिटकैत रहैन। ओना सरकारी रजिष्टरमे जुआन भऽ गेल छेली मुदा बत्तीसीक अन्तिम दाना नै उगल रहैन।

साँपक बीखसँ पतिक करियाएल देह देख अपनो मरनासन भऽ गेली। पथराएल आँखि टक-टक तकैत मुदा अन्हारसँ अन्हराएल। बगलमे डेढ़ बर्खक बेटा उठैत-खसैत अँगना-घर घुमैत-फिरैत। तैबीच हहाएल-फुहाएल शंकरदेव आँखिमे यमुनाक धार नेने पहुँचला। बहिन-बहनोइक रूप देख शंकरदेव अपन आँखिक नोर पोछि भागिनकेँ उठा छाती सटा सुदामाकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, होश करू। दुनियाँक यएह खेल छिऐ। अहीं जकाँ नानियोँकेँ भेल रहैन। मुदा आइ केहेन भरल-पूरल परिवार छैन। एक-ने-एक दिन, ओहिना अहूँक परिवार दुनियाँक फुलवाड़ीमे फुलाएत।”

शंकरदेवक बात सुनि सुदामाक आँखि तँ खुजलैन मुदा बकार नइ फुटलैन। नर-नारीक करेजो तँ दू धारक दू माटि सदृश होइत अछि। बहनोइक पार्थिव शरीरकेँ जरबैक ओरियानमे आँगनसँ निकैल शंकरदेव समाज दिस बढ़ला।

पनरहम दिन बहिनकेँ संग नेने अपना गाम विदा भेला। गामक सीमानपर अबिते कन्नारोहट शुरू भेल। बच्चासँ बुढ़ धरि सुदामाकेँ छाती लगबए आगू बढ़ल।

वेचारी निसहाय भेल ओहिना पड़ल छेली जहिना चोंगरा परहक घर खसल-पड़ल रहैए। मुदा ताधैर गामक धरोहिक ऐगला अंक पहुँच गेल। एक्के-दुइए ढेरो छाती सुदामाक छातीमे सटि, चारू दिससँ पकैड़ टोल दिस बढ़ल। सुदामाक मनमे उठलैन जँ अपने कानब तँ समाजक कानब केना सुनबै? से नइ तँ समाजेक कानब सुनी जे आगूक जिनगी केना जीब...।

जहिना बीच आँगनमे माए ओंघरनियाँ दैत तहिना दरबज्जापर पिता भुइयेँमे पेटकान देने! अपन-अपन अथाह समुद्रमे सभ डुमल। के केकर नोर पोछत। दुनू पएर धोइ भतीजी गाराजोरी केने आँगन

बढ़ली। दुरुखापर पएर दैतै सुदामाक रूदनसँ बहराएल- “हे मइया..!”

जहिना धड़सँ कटल अंग छटपटाइत तहिना माइक मन छटपटाइत रहैन। छटपटाइत कामिनीक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। मुदा कोनो प्रश्नक सोझ रस्ता नै देख काँटक ओझरी जकाँ मन ओझराए लगलैन। एक ओझरी छोड़बैथ आकि बिच्चेमे दोसर लगि जाइन। की आगूक जिनगी लेल बेटीकेँ दोसर बिआह कऽ देब? मुदा फेर मन उनैट जानि जे जिनगी लेल सहचर तँ आवश्यक अछि!

की सहचर लेल पति आवश्यक अछि? मुदा जेते असानीसँ गुंथी खोलए चाहैथ ओते असानीसँ खुजबे ने करैन। तैबीच दोसर प्रश्न अकुँरि गेलैन- बेटीक संग नातियो अछि। जँ बेटी दोसर घरकेँ अपन घर बनौत तँ नातिक..? पुत्र हत्याक पाप केकर कपार चढ़त? की कुत्ता जकाँ पछिलग्गू एहेन सुकुमार फूलकेँ बना देब? अखन ओ दूधमुँह अछि, की बुझत? की अपन भूमि आ आनक भूमिक मर्जादा एक्के रंग होइत? की दोसरो घरमे ओहने ममता माइक भेटतै? मनुक्खेक क्रिया-कलाप ने कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैए।

कामिनीक घुरियाएल मनकेँ राह भेटलैन। सुफल नारी जिनगी तँ वएह ने छी जेकरा आँचरक लाल मातृत्व प्रदान करैए। जइसँ वीणाक झंकृत मधुर स्वर हृदैकेँ कम्पित करैत रहै छइ। से तँ भेटिये गेल छइ। मुदा जहिना ठनकैत अकाससँ ठनका खसैत तहिना मनमे खसलैन- “मुदा समाज?”

की मनुख-पोनगैक स्थिति समाजमे जीवित अछि?

सुदामाक सम्पन्न पितृ परिवार। अदौसँ श्रम-संस्कृतिक बीच पुष्पित-पल्लवित परिवार। जइसँ रग-रगमे समाएल अपन संस्कृति। ओना सम्पन्नताक सीमा असीमित अछि, मुदा परिवारक आँट-पेट देख अपन जिनगीक स्तर बना चलब सम्पन्नताक अनेको कारणमे एक

प्रमुख छी। तँए सम्पन्न परिवार। ओना आर्थिक दृष्टिए सुदामाक बिआह दब परिवारमे भेल छेलैन मुदा बेवहारिक दृष्टिए बरबैरमे छेलैन। कम रहितो गोरहा खेत छेलैन जइसँ खाइ-पीबैक कोताही नहि। किछु आगूओ बढ़ि ससरैत। सालक तेरहम मासमे घरक कोठी-भरली झाड़ि इजोरिया दुतियासँ भागवत कथाक संग हरिवंश कथा सुनि, भोज-भनडारा कऽ सामा-चकेबा जकाँ आगू दिस बढ़ैत।

बेटाक पालन आ धर्मक काज देख अपनो गाम आ चौबगलियो गामक लोक सुदामक नाओं 'मायराम' रखि देलकैन। बच्चासँ बुढ़ धरि 'मायराम' कहए लगलैन।

रविशंकरक परिवारमे चूल्हि नै पजरल। जखन सुदामा आएल तखन जे कन्नारोहट शुरू भेल, से भरि दिन होइते रहि गेल। कखनो बेसी तँ कखनो कम। चूल्हि नै पजरने टोल-पड़ोसक परिवारसँ थारी-थारी भात, दालि एतेक आएल जे राति धरि चलैत रहल।

सायंकाल रविशंकर आँगनक ओसरपर बैस, सुदामाक भावी जिनगी लेल पत्नियोँ आ बेटो-पुतोहुकेँ बैसा विचार करए लगला।

विचारोत्तर निर्णए भेल जे काल्हिए शंकरदेव सुदामाक सासुर जा खेती गिरहस्ती ताधैर सम्हारैथ जाधैर सुदामाक बेटा जुआन नै भऽ जाएत। तैसंग ईहो विचार भेल जे छह मास सासुर आ छह मास नैहरमे सुदामा रहत।

अठारह बर्ख पुरिते राहुलक बिआह भऽ गेल। नव परिवार बनि ठाढ़ भेल। शंकरदेव अपना ऐठाम चलि एला।

तीन सालक पछाइत रविशंकर आ पाँच सालक पछाइत कामिनी मरि गेली। मुदा दुनू ठामक परिवारमे कोनो कमी नै रहल। हवाइ-जहाज जकाँ तेज गतिए तँ नहि, मुदा टायरगाड़ी सदृश असथिर सवारी जकाँ परिवार आगू मुहेँ ससरए लगल।

मायरामक प्रति समाजक नजरिया सेहो बदलल। समाजक आन विधवा जकाँ नहि, जे कियो अशुभ बुझि कनछी कटैत तँ कियो पशुवत बेवहार लेल मरड़ाइत रहैत। बल्कि तीर्थस्थान जकाँ मायरामक परिवार बनि गेलैन। 'भागवत कथा'क संग 'हरिवंश कथा' आ भोज-भनडारा कऽ समाजकेँ खुआ सालक विसर्जन साले-साल मायराम करए लगली।

पाँच बर्खक पछाइत मायरामक भरल-पुरल नैहर कोसीक कटनियासँ धार बनि गेल। गामक बीचो-बीच सनमुख धार बहए लगल।

घटनो अजीब घटल। चारि बजे करीब बाढ़िक हल्ला गाममे भेल। किरिण डुमैत-डुमैत धारक कटनिया शुरू भेल। गामक सभ बाध नदिया गेल। उत्तर-सँ-दच्छिन मुहेँ बहए लगल। बाढ़िक बिकराल रूप देख गामक लोक माल-जाल, बक्सा-पेटीक संग ऊँचगर-ऊँचगर जमीनपर पहुँचल। नट-बक्खो जकाँ नव बास बनि गेल।

बाढ़िक गुंगुआहैट सुनि-सुनि लोक सभ किछु बिसैर अपन-अपन परान बँचबैक गड़ लगबए लगल। चारू कात बाढ़ि पसरल। जइसँ ईहो डर होइत जे जँ कहीं अहूपर पानि चढ़त तखन की हएत? अन्हरिया राति, हाथो-हाथ नै सुझैत। जीवन-मरनक मचकीपर सभ झूलए लगल। सबहक भूख-पियास मेटा गेल। जहिना दुखित नव बिआएल गाए-महींस बेथित आँखिए बच्चाकेँ देखैत तहिना सभ माए-बापक आँखि बाल-बच्चापर। मुदा मनुख तँ मनुख छी, जानवर तँ छी नहि जे हरियर घास देख बच्चो आगूक लूझि कऽ खा लइए। एना मनुख थोड़े करत। बाल-बच्चा लेल तँ मनुख अपन खूनकेँ पानि बनबैत, अपन सुआदकेँ छोलनी धिपा दगैत, अपन मनोरथ बच्चामे देखैए। अपन जिनगीकेँ बलिवेदीमे आहूत दइए।

भोरहरबामे हल्ला भेल जे बीस नमरी पुल कटि कऽ दहा गेल! पुलक समाचार सुनि सबहक छाती डोलए लगल। पूव दिसक रस्ता बन्न भऽ गेल।

किछुए कालक पछाइत फेर हल्ला भेल जे बेटा संग रोगही पानिमे डुमि गेल। किछु काल धरि तँ हल्लामे बाते नै फुटैत मुदा तोड़ मारि हल्लामे विहियाति-विहियाति समाचार विहिया गेल। भाँसि कऽ केते दूर गेल हएत तेकर ठेकान नहि, तँए कियो आगू बढ़ैक हूबे ने केलक। जहिना एक टाँग टुटने गनगुआरि नै नेंगराइत तहिना एक गोरेकेँ मुइने समाज थोड़े नेंगराएत। एना सभ दिन होइत एलै आ आगूओ होइत रहतै...। हल्ला शान्त होइते शंकरदेव पत्नीकेँ कहलखिन- "आब जान नै बँचत!"

"एते अन्हारमे केतए जाएब। भने ऐठाम छी।"

पत्नीक बात सुनि डेराइत शंकरदेवक मुहसँ निकलल-

"जँ अहूपर बाढ़ि चढ़ि जाएत?"

"सभ तूर संगे कोसीमे डुमि जाएब। कियो बँचब तखन ने दुख हएत। जँ दुख केनिहारे नै रहब तँ दुख केकरा हएत।"

पौरुकी घुटकल। आन-आन चिड़ै सुतले रहए। पौरुकीक अवाज सुनि शंकरदेवक मनमे दुभिक नव मुड़ी जकाँ, नव चेतना जगलैन। बजला-

"भिनसर होइमे देरी नै अछि। जँए एतेकाल तँए कनीकाल आरो। दिन-देखार तँ असगरो लोक अमेरिका चलि जाइए। अपना सभ तँ बाधक थोड़े रस्ता काटब।"

किरिण उगैसँ पहिने ऊँचकापर पानि चढ़ए लगल। चढ़ैत पानि देख हरविर्रो भेल। गाए-महींस, बक्सा-पेटी छोड़ि सभ अपन जान बँचबैक गड़ लगबए लगल। जहिना वैरागी दुनियाँकेँ मायाजाल मानि,

छोड़ि, आत्म चिन्तनमे लगि जाइत तहिना माल-असबाव छोड़ि अपन-अपन जान बँचाएब सोचए लगल। तही बीच बाँसक झोंझमे मैना सभमे तेना झौहैर उठल जेना केकरो वोनबिलाड़ि पकैड़ नेने होइ।

पूब दिस फीक्का गुलावी जकाँ अकासमे पसरए लगल। मुदा बिलटैत जिनगी आ डुमैत सम्पैतक सोग एक-एक बेकतीक मनक अन्हारकेँ आरो बढ़बैत रहइ। सुखल जमीनपर पहुँचते छोट-छीन आशा शंकरदेवक मनमे जगलैन। मुदा चारू बच्चो आ पत्नियोँक मनमे दुधाएल चाटल दानाक खखरी जकाँ बेर-बेर शंका खिहारैत जे हो-न-हो, फेर ने कहीं आगूए-सँ बाढ़ि चलि आबए...। तैबीच मिरमिराइत पत्नी शंकरदेवक मुँह दिस तकैत बजली-

"एते लोकक गाममे एक्कोटा संगी नै देख रहल छी!"

"सभ अपने जान बँचबै पाछू अछि तखन के केकरा देखत।"

"जाबे लोक, भरल-पूरल रहैए ताबे दुनियाँ हरियर बुझि पड़ै छइ। मुदा...।"

"हँ, से तँ होइते छइ। मुदा...।"

"हँ, ईहो होइ छइ। अखन माए जीबैए, केतए वौआएब। बच्चो सबहक मात्रिके भेल, अपनो नैहरे भेल आ अहूँक सासुरे।"

पत्नीक बात सुनि शंकरदेव गुम भऽ गेला। मनमे चूल्हिपर खौलैत पानि जकाँ विचार तर-ऊपर हुअ लगलैन। बजला-

"कहलौं तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सासुरसँ नीक बहिन ऐठाम हएत।"

"केना?"

"जइ दिन वेचारीक ऊपर विपैत आएल छेलै तइ दिन यएह देह अपन घर-परिवार छोड़ि ठाढ़ भेल छेलइ। आइ की हमरे गाम-घर मेटा रहल अछि आकि ओकरो नैहर।"

"अहाँकेँ जे विचार हुअए।"

"विचारे नहि, विपैतमे लोकक बुधि हेरा जाइ छइ। जइसँ नीक-अधलाक विचार नै कऽ पबैए। मुदा अहीं कहूँ जे सासुरमे कान्हपर कोदारि लऽ कऽ खेत-पथार जाएब, से केहेन हएत? अपन जे दुरगैत हएत से तँ हेबे करत, मुदा दुनू परिवारक की गति हएत?"

बाढ़िक समाचार इलाकामे पसैर गेल। मायरामक कानमे सेहो पड़लैन। भाय-भौजाइक आशा-बाट तकैत मायराम बेटाकेँ संग केने आगू बढ़ली। मुदा किछु दूर बढ़लापर सोगसँ पथराएल पएर उठबे ने करैन। बाटक बगलक गाछक निच्चाँमे बैस बेटाकेँ कहलखिन-

"राहुल, पएर तँ उठबे ने करैए। केना आगू जाएब? ता तूँ आगू बढ़ि कऽ देखहक।"

छबो तूर शंकरदेव ऐ आशासँ झटकल अबैत जे जेते जल्दी पहुँचब ओते जल्दी बच्चा सभकेँ अन्न-पानिसँ भेँट हेतइ। रतुको सभ भुखाएले अछि। तैबीच राहुलक नजैर मामपर आ मामक नजैर भागिनपर पड़ल। नजैर पड़िते राहुल दौड़ कऽ ठाढ़े मामाकेँ गोड़ लागि मामीक कोराक बच्चाकेँ अपना कोरामे लैत बाजल-

"माइयो अबैए, मुदा डेगे ने उठै छेलइ। आगूमे बैसल अछि।"

राहुलक बात सुनि मामी बच्चा सभकेँ कहलखिन-

"भैयाकेँ गोड़ लगहुन।"

बच्चाकेँ कोरामे नेने आगू-आगू राहुल आ पाछू-पाछू सभ कियो विदा भेला। सभसँ पाछू शंकरदेव अपने। मन पड़लैन रौतुका दृश्य। केना छनेमे छनाक् भऽ गेल! जिनगी भरिक जोड़ियाएल घरक वस्तु-जात आगि लगने आकि बाढ़ि एने केना लगले नास भऽ जाइ छइ! मान-प्रतिष्ठा, गुण-अवगुण, केना छनेमे केतए-सँ-केतए चलि जाइ छइ! ठीके लोक बजैए जे दिन धराबे तीन नाम। अपने छी जे एक दिन

बहिनक रक्षक बनि ऐ गाममे छेलौं आ आइ..! एक दिन गाड़ीपर नाह आ एक दिन नाहपर गाड़ी! माटि-पानिक खेल छी। गंगा-यमुनाक बीच केतौ माटियो छै आकि खाली पानियेँ-पानि..!

किछु फरिक्केसँ भाय-भौजाइकेँ अबैत देख मायरामक मन ओइ धरतीपर पहुँच गेलैन जे सात समुद्रक बीच अछि। एक ओद्रक रहितो एक भिखारी दोसर राजा! मनमे उठलैन- परोपट्टाक लोक सिनेहसँ 'मायराम' कहै छैथ मुदा भैयाकेँ की कहतैन? की भैयाक कर्म बिगड़ल छैन? एक परिवारक बँचौल कर्म छैन। चान, सुरूज, धरती, ग्रह-नक्षत्र इत्यादि तँ अपना गतिए करोड़ो बर्खसँ नियमित चलि रहल अछि आ चलैत रहत, की मनुखोक गति ओहन भऽ सकैए, आकि चाने-सुरूज जकाँ मनुखोक चलैक एकबटीए अछि? ब्रह्मक अंश जीव रहितो की फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ नै अछि? जेतए जेहेन जलवायु तेतए तेहेन उपजा-वारी! जँ केतौ वायु परानक रूपमे घट-घटकेँ आगू बढ़ैक प्रेरणा दैतो अछि, तँ वएह विषाक्त बनि परान नै लैत अछि?

गोलाक चोटसँ जहिना पोखैरक पानिमे हिलकोर उठैत आ आस्ते-आस्ते असथिर होइत चिक्कन आँगन जकाँ सहीट बनि जाइत तहिना मायरामक मन सहीट हुअ लगलैन। मुदा लगले नजैर उड़ि भतीजीपर गेलैन। भतीजीपर पहुँचते मन तरपए लगलैन। बाप रे बाप! एहेन दुरकालमे भैया केना इज्जत बँचौता? अपनो लग जमा किछु तँ नहियेँ अछि। साले-साल हिसाब फरिया लइ छी। हे भगवान! जँ केकरो दुखे दइ छिऐ आकि सुखे दइ छिऐ तँ तुलसी पात आकि दुभिक मुड़ी जकाँ खोंटि-खोंटि किए ने दइ छिऐ जे गुलाब-गेन्दा तोड़िए कऽ दऽ दइ छिऐ? लगले नजैर मायराम छिप्पा जकाँ छिहैल अपन मातृत्वपर पहुँच गेलैन। केना बेटाकेँ पोसि-पालि ठाढ़ केलौं आ ई सभ...। लुधकी लागल एकटा गाछ फड़बे करत तइसँ गामक सबहक मुँहमे थोड़े जाएत। जेते मनुख अछि ओकरा तँ धरतीसँ

अकास धरि चाहिए, तखन ने जीबैक आजादी भेटतै..? मुदा लगले जहिना पानि ठंढेने बर्फक रूप लिअ लगैत तहिना दूधसँ उपजैत दही जकाँ मायरामक मन सकताए लगलैन। साँस सुषुमा गेलैन। मनमे खौललैन- नैहर मेटा गेल तँए कि सासुरो मेटा गेल? जहिना भैया नैहरमे भैया छला तहिना अहूठाम भैया रहता। भगवान अपन कोखि अगते लऽ लेलैन तँए की भतीजीकेँ अपन कोखिक नै बुझब? ऐठाम जे अछि ओ की भैयाक नइ छिऐन? खेत-पथार, घर-दुआरि चलि गेलैन आकि हाथो-पएर चलि गेलैन? गुमे-गुम, जहिना मृत्युक अवसरपर गुम भऽ स्मरण कऽ निराकरणक बाट जोहल जाइत तहिना सभ कियो घरपर पहुँचला। ताधैर पुतोहु माने रोहितक पत्नी हाँइ-हाँइ कऽ खिच्चैड़ आ अल्लूक सन्ना बना, बाट तकैत रहथिन।

सबहक आँखि सभ दिस हुलैक-हुलैक वौआइत रहैन। तैबीच राहुलक कोरक छोटका बच्चा, घर देखते, बाजल- "दीदी, बड़ भूख लगल अछि?"

बच्चाक बात सुनि मायरामक भक् टुटलैन। अनासुरती मन पड़लैन बटोहीकेँ जहिना इनारपर ठाढ़े-ठाढ़ पानि पिऔल जाइत तहिना ने अखन ईहो सभ छैथ। नहाय-धोइमे अनेरे देरी किए लगाएब। बजली-

"कनियाँ, भरि रातिक थाकल-ठेहियाएल सभ छैथ, तँए पहिने किछु खुआ कऽ अराम करए दियौन। गप-सप्प पछाइतो हेतइ। भोजन बादेक अराम तँ सोग कम करैक उपाय छी।"

◌

शब्द संख्या : 2095

गोहिक शिकार

बच्चासँ सियान धरि जाबे तीनू धाम–सिंहेश्वर, कुशेश्वर आ जनकपुर–नइ देखने छेलौं ताबे अपनो बाबा आ समाजिको काका, बाबासँ सुनैत रहलौं जे तीनू धाम एक्के रंगक दूरीपर अपना सभकेँ अछि। ई भिन्न बात जे जैठाम पृथ्वीपुत्री सीता छैथ तैठाम सिंह सदृश सिंहेश्वर बाबा सेहो छैथ। मुदा आब जखन तीनू धाम देखलौं तखन जँ विचारै छी तँ स्पष्ट दूरी बुझि पड़ैए।

बान्ह-सड़कक अभावमे गामसँ गाड़ी-सवारी नहि, तँए नाहसँ कुशेश्वर, सिंहेश्वर आ जनकपुर पएरे गेलौं। भलेँ अकास मार्गसँ एक-रँगाह होइ मुदा जमीनी रस्तामे अन्तर अछि। कहैले तँ कोसियो धार टपै पड़ैए मुदा सप्तकोसियोसँ बिकट रस्ता अछि। ओना, जखन जाए लगलौं तखन सात दिनक बटखरचाक संग धानक जुट्टी–चढ़बैले–लऽ नेने रही तँए चिन्ता नहियेँ जकाँ रहए। मुदा कोसीक लहैर देख मन डेराएल जरूर।

जनकपुरक ठेही बाट, तँए कच्चियो रहने पएरे चलैमे सुगम अछि। जहिना छोट-छीन शब्द संगीक संग संयुक्त भऽ नमहर बनि ओझरी लगबैत जाइत तहिना कुशेश्वरक रस्ताक धार सभ केने अछि। कोन धार केतए मिलि अपनो बदैल गेल आ दोसरोकेँ बदैल गंगो-ब्रह्मपुत्रसँ विकराल रूप बना नेने अछि। जइसँ टपब समुद्र जकाँ

भऽ गेल अछि। मुदा बिना टपने कुशेश्वर पहुँचब केना? संयोग नीक जे धार सबहक बीच मातृक अछि। कातिक बीतैत ममियौत भाय नाह बनबए गाम पहुँचला। किएक तँ पहिलुका नाह भँसियाएल अबैत एकटा ढेंगमे लगि फुटि गेलैन।

हुनका सबहक ने गाछी-बिरछी बाढ़िक पानि एने सूखि गेलैन मुदा अपना सबहक तँ बँचल अछि। अपने जामुन गाछ देखा देलिऐन।

सुरेब गाछ देख भाइक मन मुस्किया गेलैन। हलैस कऽ कहलैन-

“बौआ, नाहो भऽ जाएत आ हरिस, पालो आ चौकीक संग साल भरिक जारैन सेहो भऽ जेतह।”

‘जारैन’ सुनि कहलयैन-

“भैया, माले-जाल तेते अछि जे ने जारैनक दुख होइए आ ने खेत सभमे बजरूआ खादक।”

भाय चुप भऽ गेला, पछाइत जलखै करैकाल बजला-

“जखन लकड़ीक गड़ लगिए गेल तखन चलह बनौनिहारोकेँ कहि हाथ लगाइए देब।”

कहलयैन- “हँ तँ बेजाइए कोन।”

पान-सुपारी मुँहमे दैते डेग बढ़ौलैन। पाछू-पाछू विदा भेलौं। बरहीक घर लगेमे तँए पहुँचैयोमे देरी नहियेँ लागल। पहुँचते राजिन्दर पुछि देलक- “पाहुन कहाँ रहै छैथ।”

कहि चौकीपर ओछाएल ओछानिकेँ हाथेसँ झाड़ए लगल। दुनू भाँइ बैसलौं। बैसते भाय पुछलखिन- “मिस्त्री, एकटा नाह बनाएब।”

भैयाक मुँह दिस राजिन्दर ठकुआएल टकर-टकर देखए लगल।

किछु फुरबे ने करै जे बाजत। ठेही परहक बरही, तँए हर-पालोक संग हँसुए-खुरपीटा बनौनाइ आ फाड़े पिटनाइ खाली बुझैत।

राजिन्दरकेँ ठकुआएल देख राजिन्दरक पीसा जे दू दिन पहिने आएल छेलखिन, बजला-

“केतेटा नाह बनाएब?”

भाय कहलकैन-

“तेरह हाथक।”

“घरैया आकि घटवारिबला?”

“घरैये।”

मने-मन नाहक पेटक हिसाब जोड़ि पीसा कहलकैन-

“पनरहिया लगि जाएत। दू दिन एनो भऽ गेल।”

पीसाक बात सुनि राजिन्दक मन हलैस गेल। जहिना हँसैत फूलक सुगन्धमे भाय वायुक संग वायुमण्डलमे विचरण करैथ तहिना हलसल मन राजिन्दरक बाजि उठल-

“पीसा, एक पंथ दू काज। अहाँक पहुनाइयो सुतैर जाएत आ हमरो एकटा लूरि बढ़ि जाएत, उपकार तँ नफ्फामे हएत।”

दुनूक बात सुनि अपनो मन कलैश गेल जे भरि आँखि बनैबतो देखब आ जाबे नाह रहत ताबे भैयौ गुण गबैत रहता, तँए स्टेशनक कुल्ली जकाँ, जे ‘हैयौ-हैयौ’ करैत सिमटीक बनल पुलक पायाकेँ ठेलैत तहिना ठेलैत बजलौं-

“भैया, अखन ठरपर छी, ऐठीन जे काज हएत से नीक हएत। अनभुआर जगहमे पच्चीसटा बिहंगरा होइ छइ?”

तैबीच सह पाबि राजिन्दर फुदैक उठल-

“पीसा, कमाइ अपन अपने राखब। खेनाइक चिन्ता नै करू।”

कमाइ देख पीसा बजला-

“भाय, जहिना अहाँ धारऽ कातक छी, तहिना हमहूँ छी। हम पूवारि पार रहै छी।”

बनाइक गप-सप्प भेल। मुदा खेनाइक गप-सप्प भेबे ने कएल। किएक तँ हुनका दुनू गोरेकेँ बुझल। दोसर दिन जखन काज शुरू भेल तखन बुझलौं।

दोसर दिन जामुनक गाछ खसा, पाँगि-पुँगि कऽ तेसर दिन चिराइमे हाथ लगि गेल। भरि दिन भैया गमछाक अराम कुरसी बना मिस्त्रीए लग बैस अपन देश-कोसक महाभारत सुनबए लगलखिन। आ अपने खन अँगना, खन खेत, खन भैया लग आबि-आबि हाजिरी पुरबए लगलौं।

बारहम दिन नाहक सकल ठाढ़ होइते भैयाक मन जेठुआ बाढ़ि जकाँ फुलाए लगलैन। जहिना धार फुलेने चरो-चाँचरमे फूल पकैड़ लइ छै तहिना अपनो मन फुला गेल। पथिया नेने माए तख्ताक छोलैन अनैले पहुँचले छेली, कि पछबारि बाधसँ घुमि पहुँचलौं। मुस्की दैत भैया कहलैन-

“बौआ, कुशेसर चलह।”

भैयाक बात सुनि माए बजली-

“बहू दिन गेना भऽ गेल।”

भैयाक मनमे कि रहैन से तँ नीक नहाँति नै बुझलौं। मुदा अपना भेल जे भरिसक रस्तामे छीना-छीनी दुआरे बजला, संगीक जरूरत छैन। ओना, मनमे ईहो भेल जे जहिना नाहक सभ काज भेलैन तहिना सुहरदेसँ, गामो पहुँचाएब जरूरी अछि। के कहलक रस्ता पेरामे नाहक संग जानो चलि जाइन। कहलयैन- “कए गोरेकेँ लऽ जेबैन?”

“सभ तूर चलह।”

‘सभ तूर’ सुनि माए बजली-

“बौआ, सभ तूर जे जाएब से बनत। कोनो कि नोकरिया-चकरियाक घर छिऐ जे ताला लगा दियौ आ विदा भऽ जाउ। चारिटा माल अछि, धानक लड़ती-चड़ती अछि, तखन?”

बिच्चेमे भैया कहलखिन-

“एको गोरे जँ पीठपोहू रहत तैयौ चलि जाएब।”

कुशेश्वरेक रस्तामे मातृक अछि। माने मामाक घरसँ चारिए कोस दच्छिन- कुशेश्वर अछि। कहलयैन-

“भने कुसेसरो बाबाक दर्शन भऽ जाएत आ दू दिन मात्रिकोमे रहि जाएब।”

नाह बनि गेल। जेते छाँट-छूँट, तख्ता उगरल, सभ सेरिया कऽ रखि लेलौं। काल्हि भोरमे जाएब। पुछलयैन-

“भैया, रस्ता भँजियाएल अछि किने?”

भाय हँसैत बजला-

“तूँ सभ ठेही परहक छह तँए रस्ता तकै छहक। हमरा सभ लिए जेहने धार, तेहने डुमल खेत। पहिने सुपेन धार होइत गहुमा पहुँचब। गहुमासँ भुतही कमलामे चलि जाएब! जखने कमला पहुँचलौं तखने बुझह जे धाम पहुँच गेलौं। घुमती काल सिरा रहत तँ एक गोरे गुन खिंचब दोसर गोरे नाहपर रहब।”

माएकेँ कहलिऐ- “बटखर्चा ओरिया मोटरी बान्हि दिहैन। जाइ बेरक आशा नै रखिहेँ, हड़बड़मे कोनो चीज छुटि ने जाए।”

माए कहलक-

“तीन सालसँ घीओ रखल अछि, ऊहो नेने जैहह।”

"बड़ बढ़ियाँ। मोटरीए-मे बान्हि दिहैन।"

"हरा-तरा जेतह?"

"से की अखन गरमी मास छी। ओ तँ अपने तेहेन जमल हएत जे बिना मुन्नोक काज चलि जाएत।"

तैयो माए बजली-

"मकैक नेरहाबला मुन्ना अछि। ओ छिछलाह होइए। कहीं नाहक झमारमे छिछैल कऽ खुजि जेतह तखन तँ हेराइए जेतह।"

मन खुशी रहबे करए, कहलिऐ-

"अच्छा, दोसरे मुन्ना लगा दिहैन?"

"बड़बढ़ियाँ। नेरहाबला बदैल कटकटा कऽ कोढ़िला लगा देब। ओ थोड़े छिछलाह होइए।"

जाड़क मास रहने भदबारि जकाँ ने धारे नचैत आ ने चरे-चाँचरक ओ रूतबा। भट्ठा दिस जाएब छल तँए मिसियो भरि भैयाकेँ थकान नै बुझि पड़ैन। जहिना ढलानपर गाड़ी तहिना सिरासँ भट्ठाक नाह। माथपर गोसाँइ देख कहलयैन-

"भैया, पानि तँ ऐछे, केतौ खा लिअ।"

कहलैन-

"गड़ लगा कऽ ने नाह लगाएब।"

किछु दूर आगू बढ़लापर धारेकातमे एकटा पीपरक गाछ रहइ। खूब झमटगर। एक भाग, धार दिसक अदहासँ बेसी सिर अलगल रहइ। नाह बन्हैक सुविधा आ छाहैरो तहिना, धारक पेटेमे चहटी जकाँ, जैपर घास जनैम गेल छेलइ।

पवित्र जगह देख भैया चपचपाइत बजला-

"बौआ, नीक जगह अछि। थोड़ेकाल अरामो कऽ लेब।"

गाछ लग पहुँच भैया कहलैन-

"बौआ, तूँ नाहेपर रहह, हम बन्है छी।"

कहि धाँइ-दे मांगिसँ कूदि रस्सी पकड़ने हाँइ-हाँइ कऽ गाछक सिरमे नाहक रस्सी लटपटौलैन। नाह ठाढ़ भेल। उतरलौं। ओइठाम धार भकमोड़ नेने। एतेकाल दच्छिन-मुहेँ छल, आब पच्छिम-मुहेँ भऽ गेल। उतैर कऽ आगू तकलौं तँ बुझि पड़ल जे मरकाठीक डेंगरी सभ छिड़ियाएल अछि। रहि-रहि कऽ गन्ह सेहो अबइ। कहलयैन-

"भैया, ई तँ मुर्दघट्टीमे चलि एलौं! ऐठाम कन्ना रहब आ खाएब?"

मुस्कियाइत भैया कहलैन- "ई सभ अधजरू डेंगरी नहि, गोहि सभ छी। रौद तापैले ऊपर आएल अछि।"

भैयाक बात सुनि डरे मन डोलि गेल। आँखि उठा-उठा निहारि-निहारि देखए लगलौं। मन पड़ल कलकत्ताक चिड़िया खानाक गोहि। बाप रे! ई तँ जीविते लोककेँ गीर जाइए! माघक जड़ाएल बच्चा जकाँ देह डोलए लगल। मुदा भाय लेल धैनसन।

ओइ भकमोड़पर खूब नमहर मोइन। जेहने नमहर तेहने गहींर। जेठोमे अगम पानि रहैत। तैबीच भुक-दे पारा जकाँ एकटा शोंश उगल आ लगले डुमि गेल। आरो डर बढ़ि गेल। कहलयैन-

"भैया, नाह पार केना करब। ई तँ तेहेन-तेहेन पनियाँ जानवर सभकेँ देखै छी जे एक्के हुड़कान मारत तँ नाहे उनटा देत।"

मुदा ओ मुस्किया कऽ रहि गेला। जेना-जेना डर बढ़ैत जाए तेना-तेना आँखि निड़ारि-निड़ारि देखए लगलौं। करीब पनरह कट्ठासँ बेसीए-रकबामे मोइन, जइमे धारक पानि चकभौर लइत! कखनो-कखनो बुल-बुला सेहो निकलै। तैबीच एकाएक पछिया हवाक संग दुरगन्ध पसैर गेल। कहलयैन-

"भैया, कोनो जरैत मुरदाक गन्ध छी?"

भैया कहलैन-

"ऊँहू, भरिसक मलेछ छी।"

अपन विचारकेँ मजगूत करैत पुछलयैन-

"जँ मरचर नै छी, तँ मलेछ केतए-सँ आएल?"

आब, जेना हुनको मनमे डर पैसलैन। बजला-

"एक बेर सुहतरिया घाटमे मलेछ नाहे उनटा देलकै।"

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगले बात बदैल बजला-

"बौआ, कोसिकन्हाक मलेछ की लोककेँ किछु कहै छइ। देखबहक जे अपियारी सभमे एक दिस लोक माछ बिछैत रहतह आ दोसर दिस मलेछ सभ। तोरा इलाकामे परसौती स्तीगणकेँ मलेछ बेसी हरान करैए।"

अपनो मन मानि गेल, किएक तँ एक खुट्टापर गाए-बरद पटका-पटकी करैए, मुदा दोसर खुट्टापर संगी बनि दूधक धार बहबैए।

तैबीच लोकक सुन-गुन पाबि गोहि सभ धाँइ-धाँइ पानिमे कूदल। मोइनसँ कनियेँ हटि एकटा पीरारक गाछ भीतापर रहइ। ओना, ओ गाछ बड़ नमहर तँ नहि, मुदा साहोरे जकाँ पकठाएल रहइ। ओही गाछक निच्चाँमे एक गोरे ठाढ़ रहइ। भैया कहलैन-

"हैवएह मलेछ छी। ओकरे महक अबैए! अखने पीड़ारक गाछपर सँ उतरल।"

डरो हुअए मुदा देखैयोक मन हुअए। लोके एतेटा। कहाँ दन लंकाक राक्षस जकाँ मलेछ बड़ी-बड़ी होइए। से कहाँ छइ? ओना भूत-परेतकेँ नै मानै छी। किएक तँ मनुखक आत्मा पंचतत्त्वमे विलीन भऽ जाइ छै आ शरीरकेँ या तँ जरा देल जाइ छै वा माटिक भीतर

आकि बाहर किड़ी-मकौड़ी, चिड़ै-चुनमुनी खा लइए। तखन भूत जन्मत कथीक। दुनू भाँइ हिआसि-हिआसि ओकरा देखए लगलौं। मनमे उठल- लोक रहैत तँ दोसरो संगी रहितै। से कहाँ छइ? भूत-परेत तँ असगरो रहैए। ओकरा कि कोनो चीजक डर होइ छइ। मुदा ओ मोइन दिस बगुला जकाँ धियान लगौने। सहसा ओ मोइनकेँ गोड़ लागि पानिमे पैस गेल। रस्सीक एकटा भीड़ी डाँड़मे बन्हने आ हाथमे मोटका तारक काँकोर रहइ। रस्सीक एकओर गाछमे बान्हल छेलइ। मोइनमे डुमल। अनासुरती मनमे उठल जे भरिसक अहिना लंकाक मोती बाहर करैबला पनिडुब्बा, उत्तर सागरक सील ह्वेल आ बालरसक शिकारी जकाँ ईहो पानिक शिकारी छी।

किछु क्षणमे 'उक्-उक्'क अवाज उठलै आ ओ लपैक कऽ डारि पकैड़ ऊपर आबि गेल। ऊपर आबि दोहरा कऽ गोड़ लगलक। ताबे बिसवास भऽ गेल जे ओ आदमीए छी मलेछ नहि। मुदा एतेक गन्हकै कथी छइ! पातर साँस बना लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे ओ आदमी दुनू बाँहिमे गोहियेक खलड़ीक खोल बना पहिरने अछि। जाड़े थरथराइए! बेर-बेर हाँफी होइ छइ। जेना थाकल हुअए।

"ओइ ओ! ओइ ओ"क अवाज तीन-चारि बेर लगौलक। अवाज सुनि लगले बीस-पच्चीस गोरे जमा भऽ गेल। जेना लगेक बोन-झाड़मे सभ नुकाएल रहल रहइ। जमा होइते सभ रस्सा पकैड़ खिंचए लगल आ बाजए लगल-

"ले जवान!"

"हइसा।"

"आगू बढ़ैत!"

"हइसा।"

रस्सा-कस्सी शुरू भेल। मोइनमे जेना बिहाड़ि आबि गेल तहिना

महजाल लगैबते माछ जकाँ सभटा तरपए लगल।

करीब डेढ़-दू घन्टा रस्सा-कस्सी चलल। कखनो ऊपर दिस खिंचाइ तँ कखनो मोइन दिस। मोइन दिस खिंचाइते भड़भड़ा कऽ सभ खसि पड़इ।

करीब दस-एगारह हाथक गोहि ऊपर भेल। ऊपर होइत तीन-चारिठाम बाँसक टोन दऽ चरि-चरि-पँच-पँच आदमी बैस गेल। गोहिक ठोंठमे रस्सा कसाएल रहइ! तरूआरि जकाँ एकटा तेजगर हथियारसँ एक गोरे हाँइ-हाँइ कऽ चीर देलक। मुदा अखनो धरि सभ दबनहि रहल। किछु कालक पछाइत परान छुटि गेलइ। परान छुटिते बाँसक टोन हटा गोहिकेँ काटए लगल। काज अगुआएल देख लग जा पुछलिऐ- “केना-केना गोहि पकड़ै छहक?”

अनभुआर बुझि ओ आदमी हाथक इशारासँ गाछक छाहैरमे चलैक इशारा केलक।
गाछक छाहैरमे बैसते हमर नाओं पुछलक कहलिऐ, हमहूँ पुछलिऐ तँ बाजल- “भोला तीयर।”

‘भोला तीयर’ कहि गोहि केना पकड़ै छै से कहए लागल-

“पानिमे पैस गोहि लग जाइ छिऐ। नमती अन्दाजि कऽ ओकर नाँगैरसँ बँचैत अपन केहुनी आगू केने रहलौं। आँखि ने तँ मुँह बौने रहल। जँ मुँह बौने रहल तँ हाँइ-हाँइ कऽ लोहाक काँकोर मुँहमे दऽ दइ छिऐ। लोकक देहक गन्ह गोहिकेँ मतिसून बना दइ छइ। खाली नाँगैरसँ अपन बँचाउ केने रहै छी। ओना सभ कमला माइक परतापसँ होइए, लोक बुत्ते थोड़े हएत।”

हम पुछलिऐ-

“एकरा की करबै?”

भोला तीयर बाजल-

“मौसु खेबै आ खलड़ी बेचबै।”

सुनि गुम्म भऽ गेलौं। देशक दृश्य आँखिपर लटैक गेल। देशमे कियो भरि दिन भोग करै पाछू बेहाल अछि, तँ कियो जानक कीमतपर दुरगन्ध मौसुक पाछू बेहाल अछि। हाय रे हाय..!

हमरा गुम्म देख ओ बाजल-

“कोन गाँ रहै छी?”

कहलिऐ-

“बेला रहै छी।”

कनी मन पाड़ि पुन: पुछलक-

“रौदी तीयरकेँ चिन्है छिऐ?”

कहलिऐ-

“ममियौत भाइक गामक लोककेँ किए ने चिन्हबै। गाम की कोनो शहर-बजार छी जे अपनो समांग देख कऽ मुँह घुमा लेत।”

“ओ साढ़ू छिआ।”

“भैयारीए जकाँ अछि।”

भैयारी नाओं सुनि बाजल-

“तब केना जाए देब। गरीब छी तँए इज्जत नै अछि। एहेन शिकार केलौं आ अहाँ चलि जाएब। साढ़ू की कहता। हुनका पता लगतैन तँ नै कहता जे खाइ डरे समाजसँ मुँह चोरबै छी। एकर मौसु बड़ सुअदगर होइए, जहिना अण्डाएल रोहू, तेलाएल खस्सी होइए तहिना।”

“मन तँ होइए, मुदा कुसेसरक घी संगेमे अछि। ओत्तै जाइ छी।”

“तँ की हेतै काल्हि चलि जाएब।”

मने-मन डरो हुअए। तेतबेमे एक गोरे आबि कहलकै-

“भोला कक्का, पेटसँ चानीक हँसुली आ पइत निकलल।”

मुदा भोला लेल धैनसन। जेना कोनो नव बात नहि। मुदा मन मानलक जे भरिसक लोककेँ गिरने अछि। हमरा मुहसँ अनासुरती निकलल-

“आब की करबै, एकरा?”

“मौसु बना, सोना कमला माइक पवित्र पानिमे धोइ लऽ जाएब। अमैनियाँसँ साँझू पहर रान्हब। झालि-मिरदंग बजा कमला माइकेँ मौसु-भात-परसादी चढ़ाएब। सौंसे टोलक बाले-बच्चे मिलि-जुलि कऽ खाएब।”

हम पुछलिऐ-

“आ चमड़ाकेँ?”

कहलक-

“सुखा कऽ रखि लेब। जखन बेसी भऽ जाएत तखन वेपारीकेँ खबैर देबइ। गाड़ी नेने औत, गिनती कऽ कऽ सभटा कीनि लेत।”

ओहो चलि गेल आ हमहूँ दुनू भाँइ नाहपर चढ़ि विदा भेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2152

मातृभूमि

जिनगीक अन्तिम चरणमे आइ अपन मातृभूमिक दर्शन भेल। ओ भूमि जैठामसँ माए सदिछन नजैर उठा-उठा देखैत रहैत, ओ प्यारी, सिनेही, प्रेमी, जीवन दायिनी, जीवन रक्छिनी भूमि, मातृभूमि। दर्शन पबिते कमल मन कलैप उठल मुदा असीम उत्साहक संग उमंग संचारित भेल। काल्हि धरिक जिनगी आँखिसँ छिपए लगल, ओझल हुअ लगल, मुँह नुकबए लगल। जइ दिन अपन जीवन दायिनी भूमिसँ विदा हुअ लगल रही, पूर्ण जुबा रही। नस-नसमे नव खूनक संचार होइत रहए। समुद्री जुआर जकाँ जुआनी उठैत रहए। आशा-अभिलाषाक संग पकड़ैले उत्साहित रहए। बाट नै भेटने मातृभूमिक दर्शन लाखो कोस दूर दुर्गमे छिपल रहए। मुदा दर्शन पबिते सत्-चित्त-आनन्दसँ खेलैत देख, नमन केलिऐन।

डाक्टरीक डिग्री प्राप्त करिते बिआह भेल। नीक गाम, नीक कन्याँ, नीक कुल-मूलक संग नीक दहेजो भेटल। केना नै भेटैत, जइ डिग्रीक मांग देश-विदेशमे अछि ओइमे बेकारी केतए-सँ औत। मुदा इंजीनियर जकाँ तँ नहि, जे डिग्री पेलोपर काज नहि! तइले तँ साधनक जरूरत अछि से अछि केतए?

जुआनीक उमंग उठिते गेल। संयोगो नीक रहल जे बाइस बर्खक अवस्थामे ओइ फ्रान्समे जइमे महान्-महान् दार्शनिक, तत्त्व-

चिन्तक वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, देशभक्त जन्म नेने छैथ, काज करैक अवसर भेटल। रंगीनी दुनियाँक स्वर्ग, जेहेन ओतए सड़क तेहेन एतए घर नहि। बिसैर गेलौं अपन भूमि, अपन मातृभूमि। ओना सोलहन्नी बिसैर नै गेल रही, मुदा विचारक आलमारीक पोथीक जाकमे, तर जरूर पड़ि गेलैं। अखनो मन अछि, गामक विद्यालयक देश वन्दना। हृदैमे नइ पहुँचल छल गंगा सन पवित्र जलधाराक सरिता, नै जनै छेलौं माटिक सुगन्ध आ गाछी-बिरछीक फल-फूलक महमही...। अनुकूल हवा पाबि मन मोहित भऽ गेल। जी तोड़ि जिनगीक पाछू पड़ि गेलौं। कर्मेसँ जिनगी तँ हमरा किए नहि। नीक स्तरक परिवार बनेलौं, नीक बैंक बैलेन्स अछि। अपनोसँ बेसी खुशी परिवारक सभ रहै छैथ। कारणो स्पष्ट अछि, बाल-बच्चाक जन्मे भेल, पत्नी अनके घरमे रहैवाली। मुदा आइ मन बेकल किए लगैए। वौराइ किए अछि? एकाग्रचित्त सभ दिन रहलौं तखन बान्हल मन पड़ाए केतए चाहैए? की 'आएल पानि गेल पानि बाटे-बिलाएल पानि!' जइ मातृभूमिक गुणगान बच्चा, वृद्ध सभ करै छैथ, तैठाम केतए छी? बढ़ैत-बढ़ैत जहिना धन बढ़ैए, गाछ-बिरीछ बढ़ैए तहिना ने विचारो बढ़ैए। मुदा एना किए भऽ रहल अछि जे आब ऐठाम, माने पेरिसमे नै रहि अपन मातृभूमिक रजकण बनब?

जहिना बाइस बर्खक वयसमे अपन गाम, समाज, भूमि-मातृभूमि छोड़ि पेरिस आएल रही, तहिना आब सभ किछु छोड़ि अपन प्रेमी मातृभूमि, सिनेही मातृभूमिक कोरामे विश्राम करब।

मुदा नहियोँ बुझैत रही तैयौ अबैकाल जहिना सभसँ असीरवाद लऽ नेने रही तहिना तँ एतौसँ असीरवाद लाइए लिअ पड़त। जरूर लिअ पड़त मुदा केकरासँ? केकरोसँ नहि! एतए ने अपन गंगा-यमुनाक जलधारा, ने हिमालय-कैलाश सन पहाड़, ने गंगा-ब्रहमपुत्र सन धरती आ ने समुद्र सदृश हृदए अछि। जहिना पत्नीक संग आएल रही तहिना

जाएब। जँ ओ नै जाथि तखन? ओ नै जाए चाहती तेकर कारणो तँ कहती? कहलयैन-

"आब ऐठाम नै रहब।"

पत्नी बजली-

"तखन?"

कहलयैन-

"अपन मातृभूमिक दर्शन भऽ गेल, ओतए जाएब।"

पत्नी उत्तर देलैन-

"सभ अपन-अपन मालिक होइए। जँ अहाँ जाएब तँ जाउ।"

पुछलयैन-

"अहाँ?"

बजली-

"अपन कारोबार अछि। बेटा-पुतोहु दुनू फ्रान्सक भऽ गेल। दुनियाँक स्वर्गमे रहि रहल छी। तखन की?"

मन पड़ल ओ दिन जइ दिन जिनगीक हिसाब जोड़ि आएल रही। पत्नी संगे छेली। मुदा आइ? जुग बीति गेल। जिनका सभसँ असीरवाद लऽ आएल रही भरिसक मरि-हरि गेल हेता, गेलापर के हृदए लगौता! तखन? तखन की? किछु ने! मुदा जाधैर पहुँचब ताधैरक तँ उपाय चाही। विदा भऽ गेलौं।

एक समुद्रसँ मिलैत दोसर समुद्रक विशाल जलराशिक बीच जहाजसँ मद्रास पहुँचलौं। मद्रासक बन्दरगाहमे उतैर अपन धरती, अपन देश, अपन मातृभूमिकेँ हृदैसँ नमन केलिऐन। मन पड़ल रामेश्वरम्। जखन मद्रास आबि गेल छी तखन बिनु दर्शने जाएब बचपना...। विदा भेलौं।

धरती-समुद्रक बीच बनल रामेश्वरमक मन्दिर। एक दिस विशाल जल-राशिक समुद्र तँ दोसर दिस खिलैत-इठलाइत मातृभूमि आ ऊपर शून्य अकास। समुद्रेक लहैरमे स्नान कऽ दर्शन केलौं। मन्दिरसँ निकैलते खौजरीपर गबैत एकटा साधुक मुहेँ सुनलौं, "अवगुण चित्त न धरो।" जेना भूखकेँ अन्न, पियासकेँ पानि खिहारि दैत, तहिना मनमे भेल। जलखै कऽ गाम लेल गाड़ी पकड़लौं।

जंगल, पहाड़, नदी, मैदानकेँ चिरैत गाड़ी गाम लग पहुँचल। जे गाम कहियो नन्दन वन सदृश सजल छल- लहलहाइत खेत, रस्ता-पेरा विद्यालयसँ सजल छल, धारक कटावसँ बीरान बनि गेल अछि। ने एकोटा सतघरिया पोखैर बँचल अछि आ ने पीपरक गाछक निच्चाँ विद्यालय। घराड़ी, खेत बनि गेल अछि आ पोखैर-झाँखैर घराड़ी। मुदा तँए की, ने गामक परिवार कमल, ने लोक आ ने गामक नाओं। गामक दछिनवरिया सीमापर पहुँचते एकटा नवयुवककेँ पुछलयैन-

"बाउ, की नाओं छी, अही गाम रहै छी?"

नवयुवक बाजल-

"हँ। रमेश नाम छी।"

पुछलयैन-

"गामक की हाल-चाल अछि?"

प्रश्न सुनि रमेश ठमैक गेल। किए नै ठमकैत। नमती भलेँ नै बढ़ल हुअए मुदा रंग आ चौराइ तँ जरूर चतरिये गेल अछि। भरिसक चेहरा देख डरा गेल अछि। मुदा डर तँ ओतए बढ़ैए जेतए डरनिहारकेँ आरो डेराएल जाइत। से तँ नइ अछि। मधुआएल मन मुस्कियाइत मुँह खोलि निकलल-

"बौआ, चालीस बर्ख पूर्व अही माटि-पानिक बीच डाक्टर बनि विदेश गेलौं...।"

मधुर बोली सुनि रमेश बाजल-

"गाममे के सभ छैथ?"

कहलिऐ-

"कियो नहि। जेहो हेता, हुनको छोड़ि देलिऐन। जखन छोड़ि देलिऐन तँ वएह किए पकड़ता।"

रमेश पुछलक-

"रहबै केतए..?"

बजलौं-

"सएह गुनधुनमे छी।"

रमेश कहलक-

"हम तँ महींसवारि करै छी, आन किछु जनै नै छी। चलु वस्तीपर पहुँचा दइ छी।"

वस्तीपर पहुँचा रमेश घुमि गेल। हम ठमैक गेलौं। तैबीच नजैर पड़िते पूबारि भागक घरवारी ओत्तैसँ पुछलैन-

"केतए जाएब?"

कहलयैन-

"ब्रह्मपुर।"

घरवारी कहलैन-

"ब्रह्मपुर तँ यएह छी। एमहर आउ।"

मनमे सबुर भेल। हूबा बढ़ल। अपन गामक चालि बढ़ल। लफैर कऽ दरबज्जापर पहुँचलौं। घरवारी कहलैन-

"थाकल-ठेहियाएल आएल छी, पहिने पएर धोउ। चाह बनौने अबै छी, ताबत कपड़ा बदैल अराम करू। आइ भरिक तँ अभ्यागत

भेलौं, काल्हिक विचार काल्हि करब।"

कहि आँगन जा चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत रही, कहलयैन- "हमहूँ अही गामक वासी छी। नोकरी करए बाहर गेल रही। अपन घराड़ियो अछि आ दस बीघा चासो।"

ओ बजला- "हमहूँ आने गामक वासी छी। नानाक दोखतरीपर छी। तँए, ने गामक आँट-पेट जनै छी आ ने पुरना लोक सभकेँ जनै छिऐन।"

कहलयैन- "हम डाक्टर छी।"

ओ बजला-

"तखन तँ गामक देवते भेलौं। जाबे अपन ठौर नै बनि जाइए ताबे एतै रहू। अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऔने आरो बढ़ै छइ।"

ठौर पाबि मन खुशी भेल। जीबैक आशा देख पत्नीकेँ फोन लगेलौं- "हेलो.."

पत्नी उत्तर देलैन- "हँ, हँ, हेलो।"

कहलयैन- "गामसँ बजै छी। पुन: घुमि कऽ पेरिस नै आएब। अहूँ जँ आबए चाही, तँ चलि आउ।"

पत्नी कहलैन-

"चूक भेल जे संगे नै गेलौं। जाधैर अहाँ छेलौं ताधैरक आ अखनमे जीवन-मृत्युक अन्तर आबि गेल अछि।"

कहलयैन- "जखने मन हुअए तखने चलि आएब।"

ओ बजली- "फोन रखै छी..?"

◌

शब्द संख्या : 1048

भबडाह

चहकैत चिड़ै सबहक चलमली कानमे पड़िते नित्यानन्द कक्काक नीन छिटैक गेलैन। कोनो काज करैसँ पहिने तर्क-वितर्क ओहने महत रखैत जेहेन निरजन आँखिए दिनमे चलब होइत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल नजैर आजुक समैपर गेलैन। काल्हि शनि, राखी पाबैन छी। परसू रबि, विदेश्वर स्थानमे ठसम-ठस मेला हएत। हएबो उचित, एक तँ बैद्यनाथ बाबा सौनक पूर्णिमा विदेश्वरमे बितबै छैथ, दोसर कमलो उमड़ल अछि, एक संग दुनू काज...।

भैयारी रहितो जहिना भविसद्रष्टा युगद्रष्टासँ ऊपरक सीढ़ी होइत, तहिना ने औझुकेपर काल्हि ठाढ़ होएत। काल्हुक सुरूज केहेन उगत ई तँ प्रश्न अछिए। चारिम दिन पनरह अगस्त छी, भारतक स्वतंत्रताक चौसैठम वर्षगाँठ। साठि बर्खक उपरान्त अनाड़ियो-धुनाड़ी लोक वरिष्ठ नागरिकक उपहार पबैत तेहेन ठाम स्वतंत्रता की आ देश केतए! मुदा लगले मन घुमि गाम दिस बढ़लैन। हिन्दु-मुसलमानक गाम। एक पनरहियासँ जहिना हिन्दु राधा-कृष्णक झूलासँ लऽ कऽ भोला बाबाक जलढरीमे व्यस्त तहिना मुसलमानो दस दिन ऊपरेसँ रोजा-नवाजमे व्यस्त...। एको पाइ लोक नै बँचल जे धर्मक काजमे नै लागल हुअए। सभ धर्मक काजमे हृदैसँ जुटल...। जखन सोलहन्नी लोक पवित्र मने धर्मक काजमे जुटले छैथ तखन निसचित गामक

कल्याण हेबे करत..!

प्रेमिकाक आगू जहिना प्रेमी दुनियाँकेँ निच्चाँ देख ऊपर भ्रमण करैत तहिना नित्यानन्द कक्काक मन कल्याणक संग टहलए लगलैन। उत्साह जगलैन! फुरफुरा कऽ ओछाइनसँ उठि कलपर जा माटिये-सँ चारि घूसा दाँतमे लगा, आँगुरेक जीभिया कऽ हाँइ-हाँइ चारि कुर्ड़ा मारि, चारि घोंट पानियोँ पीब लेलैन। आ आँखि उठा बाड़ी दिस तकला तँ पत्नीकेँ मचानपर चठैल तोड़ैत देखलैन। आँखि उतारि गाम दिस विदा भेला।

दरबज्जापर सँ आगू बढ़िते हियौलैन तँ बुझि पड़लैन जे घर-दुआर छोड़ि लोक चौके दिस आबि गेल हेता, तँए नीक हएत जे चौके दिस जाइ। यएह सोचि नित्यानन्द काका आगू बढ़ैक विचार केलैन। डेग उठिते मन सिहरलैन। भाए-बहिनक ओहन पर्व काल्हि छी जइमे दुनूक प्रगाढ़ प्रेमक सिनेह-सिक्त जलक उदय हएत। आशाक संग जिनगीक बिसवासो जगलैन। डेग बढ़ौलैन।

पनरह-बीसटा डम्हाएल चठैल खोंइछामे नेने सुचिता काकी मुस्की दैत, गदगद होइत जे महिना दिन तँ चलबे करत, तेकर पछाइत ने दौंजी हएत। सालमे जँ एक्को पनरहिया चठैलक तरकारी खा लेब तँ की चीनियाँ बिमारी हएत। लफड़ल आबि पछबरिया ओसारपर सूपमे चठैल उझैल पुतोहुकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, दोकानोक काज अछि?"

डिब्बा-डुब्बी हड़बड़बैत पुतोहु कहलकैन-

"हँ।"

"की सभ लेब?"

"नोन, हरदी।"

पुतोहुक साँस सुचिता काकीकेँ किछु गर्म बुझि पड़लैन। मुदा तेकरा अनठा देलखिन। मनमे उठि गेलैन- नोनक पौकेट दस रूपैआमे देत, हरदियो की कोनो सस्ता अछि। ओकरो पौकेट दस रूपैआसँ कममे कहाँ दइ छइ। हाथमे तँ पनरहेटा रूपैआ अछि। केना दुनू चीज लेब? मन फुनफुनेलैन। बड़बड़ाए लगली-

"केहेन बढ़ियाँ खुदरा-खुदरी नून बिकाइ छेलै, जेतबे जेकरा सकरता रहै छेलै से तेतबे लइ छेलए। आब तँ तेहेन पोलिथिनक पौकेटमे रहैए जे कमो रहत तँ बनियाँ कहत जे घमि गेल हएत। खाएर एक चुटकी नूने ने कम देत। एक-ने-एक दिन सैरियत दिअ पड़तै।"

जहिना बच्चा लगले कनैए, लगले हँसैए तहिना सुचिता काकीकेँ मन लहरए लगलैन। लहरैत मन कहलकैन- जे नून हाथीकेँ गला दइए ओ प्लास्टिककेँ की नै गलबैत हएत। आब की कोनो नून खाइ छी आकि प्लास्टिकक रस पीबै छी। हे भगवान! तोरे हाथ-बाठ छह। जेते दिन जीबए दैक हुअ से जीबह दिहह, नै जे लऽ जाइक हुअ तँ लऽ जहिहह। कहू जे प्लास्टिकेक कलमे पानि पीबै छी, दोकानक चीज-बौस अनै छी, खाइ-पीबैक समान रखै छी। जूत्ता-चप्पल, कपड़ा-लत्ता पहिरै छी...।

मुदा लगले मन पुतोहु दिस घुमलैन। कहू जे चारिटा गाछ घरोक दावापर हरदी रोपि लेब तँ साल भरि कीनए पड़त। जाबे माल-जाल नै छेलए ताबे बाड़ी-झाड़ी करै छेलौं। आब तँ मालोक नेकरमसँ नहाइयो-खाइयोक पलखति नै होइत रहैए। कनियाँ सहजे कनियेँ छैथ। कोनो लूरि-ढंग बाप-माए सिखा कऽ पठौलखिन आकि सोल्होअना सासुरे भरोसे छोड़ि देलखिन। मुदा गलती बुड़होक छैन। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेलैन जे चरिकोसी पारक पुतोहु उठा अनलैन! एकेटा वस्तुक चरि-चरि, पँच-पँच तरहक विन्यास बनैए, जरूरतक

हिसाबसँ रूप बदैल उपयोग होइत। तैकालमे कहती जे खाली अल्लूक, तरुआ, भुजुआ, भुजिया टा बनबैक लूरि अछि..!

अपसोच करैत सुचिता काकी बजली-

“जा हे भगवान! जे पुत हरवाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल! कोनो मनोरथ रहए देलह! जखन मनोरथे नै तखन सतयुग, त्रेता, द्वापरे की!”

तैबीच मोख लागल ठाढ़ पुतोहु बजली-

“आइ शुकरवारी छिऐ। जखन चौक दिस जाइते छैथ तँ अंगुरो आ केरो फलहार-ले नेने अबिहैथ।”

पुतोहुक बात सुनि सुचिता काकी छगुन्तामे पड़ि गेली। मनमे हुअ लगलैन जे एक हजार बात एक्केबेर कहि दिऐन मुदा केतौ-केतौ नहियोँ टोक देब नीक होइत अछि। तँए, किछु बजैसँ काकी परहेज केली। मुदा, जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बरतनमे ताउ लगिते तरसँ बुलकारा उठए लगैत तहिना मनमे उठए लगलैन। कहू जे अखन पनपिआइक बेर छै, पहिने तेकर ओरियान कऽ पुरुख-पात्रकेँ खुआएब, अपनो खाएब आकि सौंझुका फलहारक ओरियान करब। बीचमे कलौ सेहो अछिए। भगवानो टेबिये कऽ पुतोहु देलैन। एहेन-एहेन गिरथानि बुते केते दिन घर-परिवार चलत..?

काकीकेँ चुप देख पुतोहु दोहरबैत बजली-

“नइ सुनलखिन। जखन चौक दिस जेबे करती तँ अंगुरो आ केरो नेनहि अबिहैथ।”

पुतोहुक बात सुनिते काकीक मनमे जेना तरंग उठलैन, तहिना तरेंग कऽ बजली-

“अहाँ सभ कोन उपास करै छी जे सहैसँ पहिने फलहारेक

ओरियान करए लगै छी। कहुना-कहुना तँ सातटा हरिबासय केने छी। कहाँ कहियो पहिने फलहारेक ओरियान करै छेलौं।”

शब्द-वाण जकाँ सासुक बात पुतोहुक ह्रदैमे लगलैन। तीर बेधल चिड़ै जकाँ छटपटाइत पुतोहु बजली- “अपना जे मन फुरै छैन सएह करै छैथ से बड़बढ़ियाँ मुदा हमरा बेरमे भबडाह हुअ लगै छैन!”

‘भबडाह’ सुनि काकियोक मन बेसम्हार भऽ गेलैन। कहलखिन-

“कनियाँ, हम भबडाहि नै छी जे केकरोसँ भबडाह करब। आँखि तकै छी तँए चिन्ता अछि। अखने आँखि मूनि देब, घर सम्हारए पड़त तखन अहूँ यएह बात बुझबै।”

भण्डार कोणक जेठुआ गड़े जकाँ दुनूक बीच रसे-रसे अन्हर-विहाड़ि उठए लगल। कियो पाछू हटैले तैयार नहि। दुनूक सीमा-सरहद टुटि-एकबट्ट भऽ गेल। एक्के-दुइए धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ आबए लगली। आँगन भरि गेल।

चौकसँ किछु पाछूए नित्यानन्द काका रहैथ कि मनमे उठलैन, चौरंगी हवा बहैक समए अछि। कखन कोन हवा केमहरसँ उठत आ घर-दुआर खसबैत केमहर मुहेँ चलि जाएत तेकर ठेकान नहि। ठोर बिदैक गेलैन। हुलकी दैत मुस्की बहरेलैन-

“एह, अजीब-अजीब करामाती मनुखो सभ भऽ गेल। कनियेँ गलती विधातोक भेलैन जे सींग-नाँगैर काटि लेलखिन।”

तहीकाल लॉडस्पीकरक अवाज नित्यानन्द कक्काक कानमे पड़लैन। राधा-कृष्ण मन्दिरपर झूला चलि रहल अछि। अवाज सुनि मन पसीज गेलैन।

सौन मास। सुहावन। मन भावन। विशाल वसुन्धरा, रंग-रंगक वस्त्र पहिर मधुमय वातावरणक बीच, बिहुँसि रहल अछि। कृष्णक कदम-सँ-कदम मिलबैत राधा बिहुँसैत झूला झूलए कदमक गाछ दिस

जा रहल छैथ। असीम उल्लास। अदम्य साहस दुनूक बीच। कातेसँ गाछमे गोल-गोल, लाल-पीअर झुमका लगल फल-फूलसँ लदल देख राधा कृष्णकेँ पुछलखिन-

“डोरी लगा डारिमे झूला लगाएब आकि डारियेपर बैस झूलब?”

राधाक प्रश्न सुनि कृष्ण आँखियेक इशारासँ उत्तर देलखिन-

“जेहेन समए तेहेन काज।”

चौकक गनगनाइत अवाज, नित्यानन्द कक्काक धियान अपना दिस खिंचलकैन। तखने एकटा नवयुवककेँ स्कूलमे भेटल बहिनक साइकिलपर जाइत मुहसँ- ‘रेशम की डोर’ गुनगुनाइत सुनलैन।

चिप्पी सजल विदेशी वस्त्रमे डुमल युवक। जहिना दिन-रातिक मध्य जाड़-गरमीक मध्यक संग जिनगियोक मध्य मधुआएल होइत तहिना कक्काक मनमे भेलैन। युवककेँ पुछि देलखिन-

“बाउ, परिवारमे के सभ छैथ?”

युवक कहलकैन-

“बाबा, हिनका सबहक चरणक दयासँ सभ छैथ। माइयो-बाबू आ दूटा बहिनो अछि। एक बहिन सासुर बसैए, जेतए जा रहल छी आ दोसर पढ़ैए। सोलहम बर्ख छिऐ। दू-तीन साल बाद बिआहो करब।”

काका पुछलखिन-

“अपने?”

युवक कहलकैन-

“बाबा, ई देवतुल्य छैथ, झूठ नै बाजब। अपना खेत-पथार नहियेँ जकाँ अछि मुदा खेतबला सभकेँ बाहर गेने बँटाइ खेत पर्याप्त अछि। एक जोड़ा बरद रखने छी। बाबू-माए खेते-पथारमे खटै छैथ,

अपने बम्बइमे रहै छी।”

काका पुछलखिन-

“राखी पाबैन तँ काल्हि छिऐ, आइए किए जाइ छी?”

युवक कहलकैन- “साल भरिपर बम्बइसँ एलौं हेन। एको दिन पहिने जँ बहिनक ऐठाम नै जाएब, से केहेन हएत? भगिनो-भगिनी-ले आ बहिनो-बहनोइ-ले सालो भरिक कपड़ा नेने जाइ छिऐन। काल्हि बेरमे घूमब तखन छोटकी बहिनक हाथे राखी पहिरब। अच्छा अखन जाइ छी बाबा। काल्हि फेर घुमती बेर भेँट करब।”

काका कहलखिन-

“काजे जाइ छी। जाउ?”

जेना-जेना ओ युवक साइकिलसँ आगू बढ़ल जाइत तेना-तेना नित्यानन्दो कक्काक मन दौड़ए लगलैन। मनमे एलैन पैछला सालक मोबाइलिक घटना। कनी मन खुशी भेलैन। बुदबुदेलैथ-

“अजीब-अजीब मदारी सभ अछि। गड़ लगा-लगा नचबैए।”

मन रूकलैन। पहिनेसँ ने लोक किए बुझैए जइसँ एहेन-एहेन घटनाकेँ बढ़ैये ने देत। मुदा मन ठमकलैन। घटना भेल। राखी पाबैन दिन, दस बजे रातिमे बम्बैसँ एक गोरेकेँ मोबाइलसँ समाचार आएल जे बौआ सबहक हाथक राखी जल्दी खोलि दियौ नै तँ अनहोनी घटना हएत! एमहर मुहेँ-मुँह समाचार पसरब शुरू भेल, ओमहरसँ मोबाइलिक समाचार दिल्ली, कलकत्ता, बंगलोर इत्यादिसँ अकासमे गनगनाए लगल। हाँइ-हाँइ राखी हाथसँ उतरए लगल। भरि रातिक हलचल दिनक दस बजे धरि चलिते रहल। राति भरिक नीनो दिनेमे वौआ गेल। मुदा दस बजेक पछातिक तीखर रौद पाबि वातावरण शान्त भेल।

नित्यानन्द काकाकेँ मनमे उठलैन बाल-बच्चाक संग माए-बापक सम्बन्ध? ओतए केना मनुखक वंश आगू मुहेँ ससरत जेतए माइए-बाप दुश्मन बनि ठाढ़ भऽ रहल अछि? तहूमे जिनगीक अन्तिम बेलामे नहि, उदयक तीनियेँ मासमे हथियार लऽ आगूमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि..!

मन तुरछए लगलैन। थूक फेक मन हल्लुक केलैन। मन पड़लैन भाए-बहिनक ओ पुरान बात। भाए बहिन ऐठाम पहुँचल तँ बहिन भायकेँ कहलकैन- भैया जखन अकासक डगर उत्तरे दछिने हएत तखन आएब। मन पड़िते उठलैन सालो भरि तँ प्राकृतिक संग खेल होइते रहैए, जिनगीसँ केतेक लग धरि सम्बन्ध बनि सकैए, तेतबे ने?

जेना मेघौनमे हवाक सिहकी लगने घुसकैत-फुसकैत तहिना नित्यानन्द कक्काक मन घुसकलैन। देखलैन जे चकेबा कोन तरहेँ बहिन समाकेँ जरैत वृन्दावनमे संग दऽ रहल छैथ। जे मनुख चित्ती-कौड़ी फेक नागसँ दोस्ती करैत बाघ, सिंह आ भाउल सहित गाए, महींस तथा बकरीक संग मुनियासँ हंस धरि प्रेमसँ एकठाम रहैत ओकरा मनुखसँ एते घृणा किएक छइ। जहिना धी-जमाए-भगिना लेल कहल जाइत, ओइमे कियो अपन नहि। तहिना भाए-बहिनकेँ महींसक सींग सदृश कहल जाइत। एक जातिक संहार कऽ बगीचाक काँट हटाएब कहल जाइत अछि। मन तरैंग गेलैन।

तखने एकटा बेदरा आबि कहलकैन-

“बाबा, अँगनामे बिर्ड़ो उठल अछि।”

बेदरासँ किछु पुछब नित्यानन्द काका उचित नै बुझलैन। उड़ैत अकासमे कौआ अपन टाँहि थोड़े दोहरबैए। ओ तँ समैक घड़ी छी।

..मन आँगन पहुँचलैन। पत्नीपर नजैर पड़िते विचार उठलैन। झगड़ी आकि रगड़ी ओहो छैथ। बुढ़ भेलौं, एतबो होश नै रहै छैन।

होशो केना रहतैन जइ परिवारकेँ फुलवाड़ी सदृश जिनगीक कमाइसँ बनौने छैथ तेकरा जँ कियो उजाड़ए चाहत से केना उजाड़ए देथिन। मुदा रगड़ी रहितो एकटा गुण तँ छैन्हे जे ने रग्गड़ ठाढ़ करैमे देरी लगै छैन आ ने सीढ़ीक भीतर फरियबैमे।

..नजैर पुतोहु दिस बढ़लैन अजीब-अजीब लोको सभ फड़ि गेल। कहत जुगे बदैल गेल। मुदा की जुग बदलल से कहबे ने करत आ कहत जे जुगे बदैल गेल! तहमे तेहेनठाम देखाएत जे अनेरे देहमे झड़क उठत। सासुकेँ उनटा-पुनटा पुतोहु कहथिन तैकाल जुग बदैल गेल। मुदा सासुक लगौल फुलवाड़ीकेँ केते समृद्ध बनेलौं तइ काल..? जहिना अपन बाप-माए लगसँ कानि कऽ एलौं तहिना अहू परिवारकेँ कनाएब! अनठा कऽ नित्यानन्द काका चौकपर पहुँचला।

चौकपर पहुँचते चाहक दोकानमे गदमिशान होइत देखलैन। चाह पीबनिहार अपना धुनिमे आ दोकानदार अपन धुनिमे। चाहबला आगि-अगोंरा होइत जे सभटा फोकटिया आबि बैस पूजी बुड़बै पाछू अछि। गिलासपर गिलास चाह ढारने जाइए आ पाइक कोनो पते नहि!

मुदा खुलि कऽ ऐ दुआरे नै बजैत जे अखन दोकानपर सँ थोड़े चलि गेल जे बुझबै पाइ बुड़ि गेल। तँए दम कसि लिअए। ओना भीतर शंका पुनः उठि जाइ। चेहरा मिलानी करै तँ वएह चेहरा बुझि पड़ै जे अदहासँ बेसी ओहन अछि जे सौ-पचास पीब-पीब कऽ दोसर दोकान पकैड़ नेने अछि। किछु जे अछि ओकरासँ कोनो नै कोनो काज हेबे करत। तँए पहिलुके उपकार ने पछाइत जुआ कऽ नमहर भऽ जाइए। तँए मुस्की दऽ दोकानदार मन माड़ि लिअए।

मुदा चाह पीबनिहारक उत्साह भिन्ने रहए तँए चाहबला दिस कियो तकबे ने करैत। खाली एतबे कहैत जे दूध जरा कऽ स्पेशल

बनाएब। गप्पोक धारा एहेन रहै जे जहिना जुलुशमे लोक पैरमे लगैत गन्दगीकेँ रस्तापर आरो चारि बेर रगैड़ आगू बढ़ैए तहिना। एक संग अनेको पर्व। लोक भलेँ लोकसँ जेते हटि जाए, मुदा पाबैन थोड़े हटत। कम-बेसी भलेँ भऽ जाए। अजीब-सिनेहक संग राधा-कृष्ण बाँहि-मे-बाँहि जोड़ि झूला झूलै छैथ। भाए-बहिनक बीच एहेन पर्व दोसर कहाँ अछि। भरदुतिया तँ भरदुतिये छी। कमलाक जल सेहो बैद्यनाथ बाबाकेँ विदेश्वरमे भेटबे करतैन। अजीब उमंग-उत्साहसँ हँसिते-हँसिते महिना दिनक संकल्प निमाहि लइ छैथ।

नित्यानन्द काकापर नजैर पड़िते प्रेम कुमार चाहेक दोकानपर सँ कहलकैन-

“काका, एतै आउ। सभकेँ-सभ छैथ।”

मुस्की दैत नित्यानन्द काका कहलखिन-

“खाली लोकेटा नइ ने, फगुआक रमझौआ होइए। अइमे की सुनब आ की बाजब। तइसँ नीक बाहरेमे आबह। चौसैठम स्वतंत्रता दिवसक बरखी छी, नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ सुआगत करबे करबैन।”

तहीकाल अँगनाक समाचार नेने बेटा पहुँचलैन। हाथसँ आँखि मलि-मलि बल्लौसँ ललिया-करिया नोर बहबए चाहैत देख नित्यानन्द काका बेटाकेँ बजैसँ पहिनहि पुछि देलखिन-

“किए मन मन्हुआएल छह?”

“दुनू गोरे[2] अँगनामे झगड़ा करै छैथ।”

“झगड़ा शान्त करितह आकि कहए एलह?”

“हमर बात के सुनत?”

---

[2] सासु-पुतोहु

मुस्की दैत नित्यानन्द काका घर दिस विदा भेला। जेते घर लग आएल जानि तेते झगड़ो नरमाएल जाइत रहइ। सुनै दुआरे कक्को छोटकी डेग बनबैत रहैथ। मुदा जहिना-जहिना डेग छोट होइत जानि तहिना-तहिना अछियाक मुरदा जकाँ झगड़ा शान्त भऽ गेल। दुआरपर पहुँचते नित्यानन्द काका देखलैन जे जहिना भारी काज केलापर वा रौदाएल एलापर छाहैरमे ठाढ़ भऽ नमहर-नमहर साँस लैत तहिना अँगना-दलानक कोनचर लग ठाढ़ भऽ पत्नी साँस छोड़ि रहल छैथ।

आगू आँखि उठा देखलैन तँ पुतोहु थारी-लोटा मँजैबला ओचोना लग ठंठाइते साँस छोड़ि रहल छैथ। बजैत कियो नहि।

जहिना मुकदमाक खलीफा मुद्दालह बनि लड़ैमे प्रतिष्ठा बुझैत, तहिना दुनू गोरेकेँ देख नित्यानन्द कक्काक मनमे उठलैन केकरो प्रतिष्ठाक सीमामे नइ जेबाक चाहिऐ।

◌

शब्द संख्या : 2105

परिवारक प्रतिष्ठा

समाजमे सभकेँ छगुन्ता लगैत जे होइत भिनसर सौंसे गाम हड़-हड़-खट-खट शुरू भऽ जाइए मुदा कमला कक्काक परिवारमे एको दिन नै सुनै छी, तेकर की कारण? जहिना रंग-बिरंगक लोक समाजमे रहैए तहिना ने रंग-बिरंगक रोगो-बियाधि आ क्रियो-कलाप रहैए। मुदा लंकाक विभीषण जकाँ यमुना काकी-कमला कक्काक परिवार केहेन हलसैत-फुलसैत कलशै छैन..!

बहुत आँट-पेटक परिवार कमला कक्काक नहि। आने परिवार जकाँ अपन दसे कट्ठा जमीन। मुदा पनरह कट्ठा बँटाइयो करै छैथ। जइसँ सहि-मरि कहुना साल लगि जाइ छैन। ओना, आन परिवार जकाँ धिया-पुता झमटगर नहि, सिरिफ चारिए गोरेक परिवार छैन। दू परानी अपने आ बेटा-पुतोहु। हँ! मुदा डोरामे गाँथि जहिना फूलक माला बनैत तहिना परिवारोक डोरा सक्कत छैन। अपन-अपन सीमाक बीच चारू गोरे कोल्हुक बरद जकाँ चौबीसो घन्टा चलैत रहै छैथ। ओना गामक अदहासँ बेसी परिवारक समांग गाम-सँ-बाहर धरि रहि परिवार चलबैत, मुदा कमला काक्काक परिवारमे के बाहर जाएत तेकर अँटाबेशे ने होइत। कमला कक्काक मनमे रहैन जे एक्केटा समांग अछि जँ ओहो बाहरे चलि जाएत तँ बेर-कुबेरमे एक लोटा पानियोँ के देत? मौका-कुमौकामे कोटो-कचहरी के करत? तेतबे नहि, जँ कहीं

किष्कारक समए बेमारे पड़ि जाएब तँ खेती-पथारी के सम्हारत? जनीजाति तँ जनीजातिये होइत, खेत केना जोताएत? आ जँ खेते नै जोताएत तँ खेती केना हएत? जँ खेतीए नै हएत तँ परिवार केना चलत? अपन की आब ओ समरथाइ रहल जे बलधकेलो किछु कऽ लेब...।

जहिना कमला कक्काक मनमे अपन काजक ओझरी लगैत रहैन तहिना यमुनो काकीक मन ओझराएले रहैन। मनमे होनि जे मुँह झाड़ि पतिकेँ किछु तँ नहियेँ कहि सकै छिऐन मुदा पुतोहु लगा बेटाकेँ तँ कहि सकै छी। जखने बेटाकेँ कहबै तखने ओहो ने सुनता। कोनो की कानमे ठेकी थोड़े रहतैन।

रधवाक मनमे तेसरे बात उठइ जे गिरहस्तीक काज बेसी वरसातमे होइए। मिरगिसरा-अद्राक पानि तेहेन होइए जे हाथ-पएर सड़ा दइए। एक तँ हाथ-पएर घबाह भऽ जाइए तैपर सँ काजो बढ़ि जाइए। तइसँ नीक जे परदेशे खटब। मुदा विचार लगले रधवाक मनकेँ बदैल दइ। बरहम स्थानक भागवत कथाक एकटा बात मन पड़ि जाइ।

ओना सुनने रहए पनरहो दिन मुदा एक्केटा बात मन रहलै। ओ ई जे 'माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धर्म छी।'

पुतोहु लेल धैनसन। 'कोउ नृप हौउ हमे का हानी।' एकटा गारजनकेँ के कहए जे तीन-तीनटा गारजनक तरमे छी। जेहने दिन तेहने राति..!

पिताक पीठपोहू बनि रधवा कमला कक्काक संग खेती-बाड़ीमे पूरैत। एते बात रधवा बुझि गेल रहए जे खेतीक भरिगर काजमे हरवाहि, कोदरवाहि आ करीनवाहि अछि। ओना, धनरोपनीमे सेहो डाँड़ दुखाइ छै तँए पिताकेँ ऐ सभ काजसँ फारकती दऽ देने रहैन।

गिरहस्तियो तँ अमरलत्ती जकाँ सघन होइए। काजक इत्ता नहि। कलमसँ कोदारि धरिक काज। जेते समए तेते काज पसारि लिअ। तेतबे नहि, किछु काज एहनो होइत जइमे कम तरद्दुत होइत आ किछु एहनो होइत जे तीन-तीन बेर केलोपर गड़बड़ाएले रहैत। तैपर सँ मेठनियोँ बेसी।

भरिगर काज रधवा सम्हारियो लैत रहैन तैयो कमला काकाकेँ सोहरी लागल काज रहबे करैन। जेते हाथ-पैरसँ करैथ तइसँ कम बुधियोक नहि। महिना, ग्रह, नक्षत्रक काज सेहो रहबे करैन। कोन नक्षत्रक धानक बीआ निरोग होइए आ कोनमे पाड़ने कललग्गू भऽ जाएत, कोन नक्षत्रमे कोन चीजक बीआ पाड़ल जाएत आ कोन चीज रोपल जाएत इत्यादि, बारहो मासक हिसाब कण्ठस्थ रखने छैथ। जेकर खगता अखन धरि रधवाकेँ भेबे ने कएल। जेतेकाल काजमे लगल रहैत तेतबे बुझैत। बाँकी समए ने मारी माछ ने उपछी खत्ता। बिना धैन-फिकिरक वैरागी जकाँ चैनसँ रहैत। कमेनाइ-खेनाइ आ सुतनाइक जिनगी। तीनूक गतियो एकरंगाहे...।

आँगनसँ बाहरक काज जहिना दुनू बापूत कमला कक्काक बीच अड़ियाएल चलैत रहैन तहिना अँगनाक भीतरक काज दुनू सासु-पुतोहुक बीच चलैत रहैन। चूल्हि-चीनमार बहारब-नीपब, घर-अँगना बहारबसँ लऽ कऽ थारी-लोटा धूअब, भनसा-भात करब धरिक भार पुतोहुक ऊपर। जे पुतोहुओ आ साउसो बुझैत, तँए ने केकरो चड़ियबैक जरूरत आ ने कियो अढ़बैक आशा करैत। तहिना यमुनो काकीक काज रहैन। कोठीक अन्न केना सुरक्षित रहत, तैठामसँ लऽ कऽ माल-जालक थैर-गोबर केनाइ, घास लौनाइ धरिक।

ओना किष्कारोक समैमे आ कटनियोँ-दौनीक समैमे गिरहस्ती काजमे सेहो काकी हाथ बँटबैत रहथिन।

चीनी मिलमे जहिना एकठाम कुशियार बोझिते, रेलबे टिकट लेनिहारक धाड़ी जकाँ रसे-रसे आगू बढ़ैत तहिना कमला कक्काक परिवार छैन। परिवारमे ने मुहाँ-ठुठी करैक कोनो जगह छैन आ ने कखनो से होइत।

ओना गाम नीचरस जमीनमे बसल तँए ऊँचरस जमीनक बारहो-बिरहिणीक खेती नै होइत। माने, भीठ जमीन नै रहने भीठक उपजो नहियेँ। जइसँ गाममे बेख-बुनियादि सेहो कम आ गाछियो-खरहोरि तहिना। तीन हीसमे बास आ एक हीसमे खेत-पथारसँ लऽ कऽ वाड़ियो-झाड़ी धरि छैन।

ओना तँ छह ऋतु होइ छै मुदा गिरहस्ती लेल मूलत: तीन मौसम होइत। ऋतु दुइए मासपर बदलैत, जखन कि फसिल तीन मासक उपरान्ते बदलैत। किछु-किछु तीन माससँ कम्मो समैमे होइत मुदा बेसी तीन माससँ बेसीए-मे। तँए मोटा-मोटी जाड़, गरमी आ वरसाती फसिल होइत। तहूमे डन्डी-तराजू जकाँ वरसात डन्डी पकड़ने अछि आ तराजूक पलरा जकाँ जाड़-गरमी। एक-दोसराक दुश्मनो, किएक तँ रहत कोनो एक्केटा। सन्यासी जकाँ एक-दोसरकेँ नै सोहाइत। मुदा बीचमे जँ पंच नै रहत तँ झगड़ेमे दुनू लगि जाएत, आगू की बढ़त। सालक वरसाते मौसम एहेन होइत जे सालो-भरिक भाग-तकदीर निर्धारित करैत। जहिना बेसी बरखा भेने दहार होइए तहिना नै भेने रौदी। जे दुनू, गिरहस्तीकेँ जान मारैए। हँ! एहनो होइए जे जइ साल समगम बरखा भेल तइ साल सुभ्यस्त समए भेल। जइसँ निच्चाँ-ऊपर एक रंग फसिल उपजल। जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहने रहथिन तहिना मौसमो होइए।

जइ धरतीपर गंगा, सरस्वती आ यमुना सन धार एकठाम मिलि कुम्भ सजबैए तैठाम दिन-दहार हत्या, बलात्कार अपहरण हुअए, बिनु

बुधिक लोकक भरमार लगल रहए, मनुखकेँ मनुख नै बुझल जाए, तखन तीनूक संगमक कोन उपकार? नमगर-चौड़गर आँट-पेटक तीनू धार जे हँसैत-झिलहोरि खेलैत समुद्रमे समाहित होइत, तैठाम..?

हमरा सभकेँ ईहो नै ओझल रखक चाही जे एकैसम सदीक स्वतंत्र प्रजातंत्रक बीच बास करै छी। अखन धरिक इतिहासमे एते सक्षम मनुख ऐ धरतीपर नै भेल छल। तँए, दायित्व बनैए जे युगक संग पकैड़ युग-युगान्तरक धाराकेँ स्वच्छ बना चलए दिऐ। काल मनुक्खेटा केँ नहि, सभ किछुकेँ प्रभावित करै छइ। जखने सभ किछु प्रभावित हएत तखने जीवन-पद्धतिमे धक्का लगत। ओइ धक्काकेँ निष्क्रिय करैले जीवन-शैलीमे बदलाव आनए पड़त। जहिना बीतल युग तहिना बदलल। माने सत्युगमे जे क्रिया-कलाप छल ओ त्रेतामे आबि सुधरल, जइसँ बदलाव आएल, युग-परिवर्त्तन भेल। तहिना त्रेतासँ द्वापर भेल। तँए जरूरी भऽ गेल अछि जे समयांकन इमानदारीसँ हुअए।

कहैले तँ कमला काका परिवारक गारजन छैथ मुदा अँगनाक सीमासँ अपनाकेँ बाहरे रखने छैथ। खेतक उपजावारी बाधसँ आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छथिन। यमुनो काकी कि आब नव-नौतारि छैथ जे परिवारक धक्का-पंजा नै बुझथिन। जिनगीक धक्का-पंजा जीबैक बहुत किछु लूरि सिखा देने छैन।

सुभ्यस्त समए भेने काकीक मनमे खुशीक कोढ़ी शुरूहे आद्रा नक्षत्रमे जे पकड़लकैन से बढ़ैत-बढ़ैत अगहनमे भकरार भऽ फुला गेलैन।

धान दौन होइते, आने साल जकाँ यमुना काकी उसनियाँ करैसँ पहिने उपजाक हिसाब बेटो-पुतोहु आ पतियोक कानमे दऽ देब, आने साल जकाँ नीक बुझलैन। मने-मन बुदबुदेली-

"केते धान भेल, तेकर केते चाउर हएत आ केते दिन चलत?"

'केते दिन चलत'मे ओझरी लगि गेलैन। लोकक पेटक कोनो हिसाब अछि, देखैमे ने बिते भरिक बुझि पड़ैए मुदा हाथियो खा-पी कऽ पचा लइए। फेर मन घुमलैन। जखन अपने परिवारक बात अछि तखन एना अग्गह-विग्गह किए सोचै छी? देखले परिवार नपले सिदहा। मुदा लगले यमुना काकीक मन आगू घुसैक गेलैन। आन-आन परिवार जकाँ तँ अपन परिवार नै अछि। आन-आन परिवारमे आनो-आनो उपाय छै मुदा अपना तँ से नइ अछि। लऽ दऽ कऽ खेतियेक आशा अछि। तहूमे एते दिन घटबी पुरबैले गाम-गाम महाजनो छेलै मुदा आब तँ ओहो नइ अछि। 'ने ओ देवी आ ने ओ कराह।' महाजनी मरैक कारणो भेल। राजे रोग जकाँ ने बाढ़ियो-रौदी छी। जे जेहेन अछि तेकरा तही रूपे पकड़ै छइ। माने जे जेते कम आँट-पेटक ओकरा ओते कम आ जे जेते नमहर ओकरा ओते बेसी नोकसान करै छइ। तैसंग ईहो भेल जे गामक लोक बाहरसँ सेहो कमा-कमा आनए लगल। जइसँ महाजनीक बीच रोड़ा अँटकल। ओना बहरबैयो बाहरक बहुत बात तँ नहियेँ बुझैत मुदा जिनगीक किछु बात तँ जरूर बुझए लगल। नै बुझैक कारण रहै जे पढ़ल-लिखल नै रहने एको गोरेकेँ ने बैंकक नोकरी रहै आ ने करखन्नाक ऑडिटरी। जैठाम धनक कँकोड़बा बिआन होइत से कियो ने बुझैत। मुदा रिक्शा चलौनिहार, ठेला ठेलनिहार, गोदाममे बोरा उठौनिहारकेँ लगक महाजनसँ भेँट जरूर भेलइ। जहिना छोट बच्चा हाथक ओंगरी मुँहमे लैत-लैत बाँहियो पकड़ए लगैत तहिना खुदरा महाजन लग एने भेल। ओना छोट महाजनी रहने साले भरिक लेन-देन चलैत मुदा पच्चीस हजारक सहयोगी तँ भेटल। बेटा-बेटीक बिआह, घर-घरहट आ बर-बिमारीक आशा तँ भेटल। गामक महाजनीसँ सुदियो छोट। जेतए आसिन-कातिकक कर्ज एक्के-दुइए मासमे सवैया-डेढ़िया वृद्धि करैत

तैठाम दस प्रतिशत बियाजक बदला पच्चीस प्रतिशत दिअ पड़ैत, तेतबे ने। मुदा तैयो तँ असाने भेल। दोसर ईहो भेल जे आध-मन, एक-मन कर्ज लेल जे भरि-भरि दिन साबेक जौरी खड़ए पड़ै छल सेहो बन्न भेल।

दुनू बापूत–कमलो काका, रधवो–केँ यमुना काकी बुझबैत कहलखिन- "एते धान भेल। एकर एते चाउर हएत आ एते दिनक पछाइत फेर ऐगला अन्न हएत। एते दिनमे एते साँझ भेल, एतेटा आश्रम अछि। दिनमे एते सिदहा लगैए।"

यमुना काकीक हिसाब सुनि कमला काका विचारक दुनियाँमे वौआ गेला। जेहो सुनलैन सेहो रसे-रसे बिसरए लगला आ जे नै सुनलैन से तँ नहियेँ सुनलैन।

अपन प्रस्तावक अनुमोदन लेल यमुना काकी आँखि नचबए लगली। नचैत आँखि कखनो पतिपर तँ कखनो बेटापर दैथ। आ उनैट कऽ जखन पाछू तकैथ तँ टाटक अढ़मे बैसल पुतोहुपर नजैर पड़ि जाइन। सभ अपने-अपने दुनियाँमे वौआइत...।

अपन प्रस्तावक उत्तर नइ पाबि यमुना काकी फेर दोहरबैत बजली- "अखन सोचै-विचारैक समए अछि, तँ कियो कान-बात नै दइ छिऐ आ जखन बेर पड़त तखन थुक्कम-थुक्का करैत घिनमा-घीन करब!"

यमुना काकीक करुआएल बात सुनि कमला कक्काक भक् खुजलैन। मनमे उठलैन जे मुहेँ चोरौनाइ नीक नहि। बजला-

"खेतसँ खरिहाँन आनि तैयार कऽ आँगन पहुँचा देलौं, आबो हमरे काज अछि। आकि ओकरा उसनब, रौद लगा कोठीमे राखब। की सेहो पुरुखे भरोसे छी।"

कक्काक उत्तरसँ यमुना काकीकेँ घरक लक्ष्मी मन पड़लैन।

खुशीसँ मन नाचि उठलैन। मुदा लगले, जेना घुरमी लगैए तहिना लगि गेलैन। बजली-

"जोड़ भरि धोती आकि जोड़ भरि साड़ी तँ कियो साले भरि ने पहिरत। साल भरिक पछाइत ओ थोड़े पहिरै-जोकर रहै छइ। एकर अर्थ ई नइ ने भेल जे वस्त्रक जरूरत मेटा गेल, साल भरि लेल मेटाएल, तोहूमे केते बिहंगरा अछि। कहीं चोरिये भऽ जाए आकि हेराइए जाए, आकि कुत्ते-बिलाइ दकैर दइ, आकि आगिए-छाइक प्रकोप भऽ जाइ।"

यमुना काकीक बात सुनियोँ कऽ कमला काका अनठा देलैन। चुप भऽ गेला। मुदा मनमे ओंढ़ मारए लगलैन जे माए-बापक अछैत बेटा-पुतोहुकेँ परिवारक चिन्ताक उत्तरी पहिराएब उचित नहि। ओना, काजक ढंग ओहन सिखा देब नीक, जइसँ जिनगीमे कहियो चिन्ता नै सतबै।

आगूमे बैसल रधवा, जेना संस्कृत आकि अंग्रेजी सुनि कोनो बच्चाकेँ होइत, तहिना सुनबे ने केलक। मुदा तैयो रधवाक मनमे घुरिआइ जे जे-गति सबहक हेतै से हमरो हएत। तइले अनेरे माथ-कपार पीटब आकि धुनब नीक नहि। रमरटियासँ खढ़कटिये नीक..! भरमे-सरम रधवा चुपे रहल। मुदा अढ़मे बैसल पुतोहुक मन बजैले लुस-फुस करैत। लुस-फुस करैक कारण जे के नै घर आकि गामक मुख्यियारी चाहैए? मुदा वेचारीकेँ कोनो एहेन गड़े ने भेटैत जे किछु बजितैथ। एक तँ नव-नौतुक कनियाँ, दोसर नैहरोमे माए भानसे-भात करैक लूरिटा सिखौने। घरक जुति-भाँतिक कोनो लूरि सीखेबे ने केलकैन। केना सीखेबो करितैथ? सभ गाम आ सभ परिवारमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइते छइ। जहिना कोनो नट ओहने बोल्टमे नीकसँ लगैत जे समतुल्य रहैए। परिवारो तहिना ने होइ छइ। माइए-बापक

परिवार जकाँ साउसो-ससुरक परिवार हएत, से कोनो जरूरी नहि। चाहियो कऽ वेचारी किछु ने बाजि सकल...। ओना धानक ढेरी देख कमला कक्काक मन उमड़ैत रहैन। जहिना पानिमे भीजने किताबक पन्ना एक-दोसरमे सटि जाइए तहिना कमलो काकाकेँ, परिवारक सभ हृदैमे सटि गेलैन। मन उमैड़ आगू बढ़लैन। पतिकेँ रहैत जँ पत्नीकेँ वा बाप-माएकेँ रहैत बाल-बच्चाकेँ कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर हुअए, तँ जरूर केतौ-ने-केतौ माए-बापक दोख छिपल अछि। मुदा दोखक कारण मनमे एबे ने करैन। ओछाइनपर जहिना नीन नै एने कछमछी लगैत तहिना कमला कक्काक मन कछमछाइत रहैन। मुदा लगले, जहिना सुतली रातिमे ओछाइनपर सूतल माएकेँ देख जागल बच्चा सूति रहैत तहिना कमलो काका केलैन।

पतिकेँ शान्त देख यमुनो काकी असथिर भऽ गेली। मनमे उठलैन जे चारि गोरेक आश्रममे तीन गोरे तँ एक्के परिवारक छी, खाली कनियेँटा ने अखन दस-आना छह-आनामे छैथ। ओहो दू-चारि सालमे रिताइत-रिताइत रिता जेती। मुदा अखन तँ नैहरेक चालि-ढालि छैन। अखन थोड़े ऐ घरक तीत-मीठ पचौती। नैहर गेलापर जखन सखी-बहिनपा वा माए-पितियाइन पुछतैन जे बुच्ची अन्न-वस्त्रक ने तँ दुख-तकलीफ होइ छह, तखन ओ थोड़े आगू-पाछू ताकि बजती। ओ तँ परिवारेक बँचौने बँचत। वएह ने परिवारक प्रतिष्ठा छी। जानियेँ कऽ तँ हमरा सबहक घरक छप्पर भगवानक डेङ्गेलहा छी, तेहीमे ने बँचि-खुचि कऽ घरक मर्यादाकेँ संगे लऽ कऽ चलैक अछि। अहीमे ने अपन इमान-धर्म बँचबैत परिवार चलाएब तखन ने समाजक संग कुटुमो-परिवारक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहत।

◌

शब्द संख्या : 1974

फॉगु

कौआ डकैसँ पहिने केतौ-केतौ गाछपर पौरुकीक बोल फुटल कि रघुनी बाबाक नीन टुटलैन। जहिना अर्द्धचेत अवस्थामे किछु बजा जाइत तहिना मुहसँ निकललैन-

“आइ फगुआ छी। राति भरिक हँसैत चानकेँ सुरूजक लालिमा अरियाति कऽ आबि चुकल अछि। केतेक सुन्दर राति दिनक संग मिलि रहल अछि। जे जीबए से खेलए फाउग...।”

बजैत-बजैत रघुनी बाबाक चेतना चेत गेलैन। चेतते मन दोहरौलकैन-

“जे जीबए से खेलए फाउग।”

मुदा जीवित-मृत्युक बीच एहेन लट्टा-पट्टी अछि जे के मरल आ के जीबैए से बिलगाएब कठिन अछि। कियो जीवित-मृत्यु बुझबे ने करैत, तँ कियो बुझितो मानबे नै करैत। कियो जँ बुझबो करैत तँ काते हटौने रहैत। शिवजीक सीमा खिंचब कठिन अछि...।

पौह फटिते जहिना सुरूजक आगमन हुअ लगैत तहिना रघुनी बाबाक अलिसाएल मन जिनगी दिस नजैर उठौलकैन।

जहिना कोनो विद्यार्थीक पहिल कलम कोनो प्रश्नमे अँटैक जाइत तहिना रघुनी बाबाक मन अँटैक गेलैन। ओछाइनपर पड़ले-

पड़ल कड़ फेरलैन। मनमे उठलैन, अनाड़ियो-धुनाड़ियो कोदारिसँ परती खेत तामि लइए। कहाँ ओकरा हर जकाँ लूरि सिखए पड़ै छइ। मुदा बिना लूरिये तँ कोदारियो नै पाड़ल जा सकैए।

अँटकल मनमे फेर उठलैन- किछु लूरि देखियो कऽ भऽ जाइत, किछु हाथ पकैड़ सिखौलो जाइत आ किछु रगैड़-रगैड़ कऽ सिखए...। रघुनी बाबा ठमकला। पुन: मनमे एलैन- जहिना पानि माटिक ऊपर छिछैल धारा बनि आगू बढ़ैत तहिना तँ सुरूजोक किरिण छिछलैत पूब-सँ-पच्छिम चलैए। अँटकैत कहाँ अछि? हँ अँटकैए! खाधिमे पानि अँटकैए, तामल खेतक गोलामे सुरूजक किरिण अँटकैए। मनमे संचार भेलैन। दिनक सगुन उचाड़ए लगला। फगुआक दिन छी। फागुनक विदाइ सेहो छी। आइए रातिमे चैतक आगमन सेहो हएत। मन मधुएलैन। पाबैनक दिन छी। वसन्ती पाबैन। पुआ-मलपुआ खाएब, रंग-अबीर खेलब, होलीक संग विरहा वसन्त, ढोल-डम्फाक संग गेबो करब आ नचबो करब। मुदा मन पसीज गेलैन। पसीज ई गेलैन जे- ‘एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की।’

रघुनी बाबाक ठमकल मन पाछू बढ़लैन। वसन्तक मध्य, होली पाबैन। माघक इजोरिया-पंचमी होलीसँ एक मास बीस दिन पूर्व वसन्तक जन्म भेल। मुदा चैत-बैशाखकेँ वसन्त मानने तँ पूर्व पक्षे हेरा जाइत अछि। जँ मध्य मानब तैयो पचास-साठिक दूरी बनि जाइत अछि...।

ओझराएल मन मुड़ैछ कऽ तुड़ैछ गेलैन। भने दस बर्खसँ होली मनाएबे छोड़ि देने छी। लऽ दऽ कऽ भोजने-टा शेष बँचैए। सेहो दिनेक फल छी। मुदा फलो तँ अनेक तरहक होइए- मिठो होइए, खट्टो होइए आ खट-मधुर सेहो होइए। तीनू संगो रहैए आ अलगो-अलगो रहैए। जामन्तो प्रकारक भोजनमे तीनूक अपन-अपन महत छइ।

भोजमे जएह अचार अपन विशेष महत बनौने अछि, वएह असगरमे दाँतकेँ तेना कोतिया कात कऽ दइ छै जे काज करैसँ हनछिन करए लगैए। मनकेँ घुमिते उपकलैन- वसन्तक आगमनक दिन। आइए सरस्वती पूजा सेहो छी। आइए हरबाह गृहस्तक हर परतीपर ठाढ़ करत। ठाढ़े नै करत, अढ़ाइ मोड़ घुमबो करत। अढ़ाइए मोड़क बोइनो तहिना। सभ परानी खेबो करत आ जेते धानसँ हरक नास डुमतै तेते लैयो जाएत। पसारी भाथीक आगिमे धान-मरूआ लाबा फोड़ि सालक समए गुनत। मुदा सेहो होइ कहाँ छइ? हेबो केना करतै, गाए-महींसिक मास एक्कैस-बाइस दिनक होइ छै आ मनुखक भऽ जाइ छै तीस दिनक। जहन कि दुनू संगे रहैए। संगे लक्ष्मी बनैए, संगे ऐरावत।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन- अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छी। पाबैनक दिन छी, हँसी-खुशीसँ उठब खाएब-पीब मौज-मस्ती करब। जे गति सबहक से गति हमरो। तइले अनेरे एते मगज-मारी करैक कोन जरूरत?

राम-श्याम करैत रघुनी बाबा ओछाइनसँ उठैक विचार केलैन। तखने गाम दिससँ ‘पीह-पाह’क अवाज कानमे पड़लैन। भोरहरबा नढ़ियाक अवाज जकाँ अकानए लगला जे की कहै छइ।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन, ओह! अनेरे पाबैन छोड़लौं। जाबे जीबै छी ताबैये ने। मरि जाएब तँ के देखत आ केकरा देखब। मनमे फेर उपकलैन- किए नै पाबैन छोड़ी? जइ होली पाबैनक नाओंपर इज्जत-आबरू आ धन-सम्पैतक लूट हुअए ओ पाबैन किए करब? मुदा भुताहि गाछ बुझि कियो आमक गाछतर जाएब छोड़ि देत तँ आम केना खाएत? जामुनपर सहजे जम बैसले अछि। बेल फड़ने कौआकेँ की? खाएर जानह जअ जानह जात्ता...। गामक बात गौँआँ जानह। मुदा परिवार तँ अपन छी। परिवारक नीक-अधलाक तँ जवाब

दिअ पड़त। मुहोँ चोरा कऽ रहब नीक नहि। केते दिन जीबे करब। आइसँ फेर फगुआ खेलब। मुदा खेलब केतए? परिवारक संग खेलब...।

रघुनी बाबाक मन नीक जकाँ असथिरो नै भेल छेलैन कि दादी आबि टोकलकैन-

"सौंसे गामक लोक हर-बिर्ड़ो करैए आ अहाँले भोरो ने भेल! आबो उठब की सुतले रहब?"

जहिना नुनगर बिस्कुट खेलापर चाह पीबैक मन होइत तहिना रघुनी बाबाकेँ भेलैन। घोकचल भौंहुक बीचक करिया तीर तनैत बजला-

"जखन अहाँ आबिए गेलौं तखन किए ने गाछक जड़िए-मे पानि ढारी जे डारि-पात सगतैर पहुँच जाएत। अहीं संग फगुआ खेलब।"

बाबाक बात दादीक हृदैकेँ बेधि देलकैन। छटपटाइत उत्तर देलखिन-

"अखन जे तीस-पैंतीस गोरेक फुलवाड़ी लगल अछि ओ केकर छिऐ? जहिना कृष्ण वृन्दावनमे फाउग खेलाइ छला तइसँ कि कम हमर अछि।"

मुस्की दैत रघुनी बाबा बजला-

"अखनो धरि मनमे बेइमानी ऐछे जे अपन कहलिऐ आ हमर छोड़ि देलिऐ?"

अड़हुलक कली सद्दश तीर साधि दादी दगलैन-

"अहाँकेँ आन बुझै छी जे फुटा कऽ कहितौं।"

"अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ। परिवारमे सभकेँ कहि दियौ जे दुपहर तक सभ कियो नहा-खा तैयार भऽ जाए। बेरू पहर दुनू गोरे केना

जुआनी बितेलौं से सौंसे परिवारकेँ सुना देबइ।"

बाबाक बात सुनिते दादीक आँखि मधुआ गेलैन। बजली-

"आबक लोककेँ निमहतै। मन अछि की नहि जे दुरागमनक तेसरे दिन पटुआ काटए पू-भर गेल रही। ऐठाम रौदी भऽ गेल रहै आ डेढ़ बर्खक पछाइत आएल रही?"

दादीक बात सुनिते रघुनी बाबा उठि कऽ बैसैत बजला-

"औझुका लोकक मने बदैल गेल अछि। जेकर देखा-देखीसँ बालो-बच्चा प्रभावित भऽ रहल अछि।"

बजैत-बजैत जहिना दादी-दुनियाँ बिसैर गेली तहिना सुनैत-सुनैत कथा-वक्ता-श्रोता जकाँ रघुनी बाबा अपन जिनगीक बोनमे बोना गेला। एक मन औनाए लगलैन तँ दोसर मन गाबए लगलैन-

"सदा आनन्द रहे अही दुआरे मोहन खेले होरी हो...।"

दादी दरबज्जासँ आँगन दिस गुनगुनाइत बढ़ली-

"कियो लूटबए अपन महिमा।"

जुआनीक रंगमे रंगि रघुनी बाबा गाम दिस विदा भेला। दरबज्जाक बाट टपि गामक बाटपर पहुँचते मनमे उठलैन- देखा चाही, केते नवतुरिया सभ देहपर रंग फेकैए आ केते जुआन-जहान अकाससँ अबीर उड़बैए।

मुदा लगले मनमे उठि गेलैन लोको लाज तँ किछु छी किने। धिया-पुता केना रंग देत। हँ तखन खेलाएत अपनामे मुदा छिच्चा उड़ि जँ पड़त तँ ओकरा की कहबै..?

एका-एकी दादी परिवारक सभकेँ अपने मुहेँ कहलैन। माने बाबाक समाद दादी भरि मन बँटलैन। नीक-बेजाए दुनूक समीक्षा हुअ लगल। अन्तो-अन्त सभ यएह बुझलक जे कहियो ने से पाबैन दिन!

बुढ़-पुरानक हुकुम छिऐन, तँए यादि स्वरूप सुनि लेब नीके हएत। के कहलक ऐगला होली देखता कि नहि देखता। जँ देखबो करता तँ के कहलक जे पाँखि तोड़ि कऽ देखता आकि ओछाइन धेने देखता, तेकर कोन ठेकान।

मुदा ईहो बात मने-मन उठैत जे वएह देखता हमहीं नै देखिऐ? कम-सँ-कम तँ ई हएत किने जे सौंसे परिवार एकठाम बैस पाबैनक दिन बिताएब..। दादीकेँ पोती कहियो देलकैन जे आइ भानसो तोरे करए पड़तौं।

समैसँ किछु पहिने परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल। बाबा-दादीक बात तँए महादेव-पार्वतीक फॉगु सबहक मनमे घुमैत, सबहक मुँह बन्न। सभ बाबा-दादीक बात सुनैले कान पाथि नजैर अँटकौने।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन जे तिल-तण्डुल जँ फेंटा जाए तँ बिलगाएल जा सकैए मुदा जँ पानि-माटि फेंटा जाएत तखन केना बिलगौल जाएत? तीन खाढ़ीक बीच परिवार अछि। सबहक अपन-अपन स्तर अछि, अपन-अपन जिनगी अछि। जिनगीए-मे खुशियो अबैत-जाइत रहै छइ। मुदा जहिना लोक अपन नीक लेल सभ किछु करैए तहिना ने परिवारो लेल करैए। भलेँ परिवार पैघसँ छोटे किए ने भऽ गेल हुअए।

फगुआ दिनक उमकीमे मन उमैक गेलैन। जहिना बरखाक पानिमे धिया-पुता उमकैए तहिना बबो-दादीक मन उमकए लगलैन। दादीकेँ बाबा टीप देलखिन-

"जइ साल दुरागमन भेल रहए आ परदेश गेल रही, से मन अछि आकि बिसैर गेलौं?"

बाबाक प्रश्नक उत्तर दादी केना नै देथिन। बाबाक रोच छैन मुदा

परिवारक तँ गारजने छैथ। तेतबे नहि, निचलासँ ऊपर सेहो छथिए। सिनेमाक कलाकार जकाँ पोजमे बजली-

"लोक सुख ने बिसैर जाइ छै मुदा दुख तँ मोने रहै छइ। किए ने मन रहत।"

दादीक पोज देख छोटकी पोत-पुतोहु अपन हालक दुरागमन बुझि बाबाक प्रश्नपर जोर देलक।

पुतोहुक टाँट बोली सुनि दादीक मनमे उठलैन जे मुँहजोर पुतोहु अछि, एकटा उत्तर देबै तँ दोसर दोहरा देत। मुँह नोचि कऽ खा जाएत। तइसँ नीक जे अपने मुहेँ कहए दिऐन।

हारि मानैत देख रघुनी बाबा लपैक कऽ दादीक प्रश्न पकैड़ बाजए लगला-

"कनियाँ, नव-कबरिये रही। मोँछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। तीन सालसँ परदेश खटैत रही। जेठ मास रहइ, दुरागमन भेले रहए। दुरागमनक तेसरे दिन मेड़िया सभ पू-भर जेबाक समए बनौलक। अपनो घरमे चूड़ा-भुसबा रहबे करए, बटखरचा लऽ लेलौं। भाड़ा-भुड़ी लेल गोर लगाइबला रूपैआ सेहो रहबे करए। तेसरा दिन चलि गेलौं।"

जिज्ञासा करैत पुतोहु पुछलकैन-

"पएरे गेलखिन आकि गाड़ी-सवारीसँ?"

जेना गुड़ घावसँ पीज निकलैकाल सुआस पड़ै छै तहिना बाबाक मनमे भेलैन। विह्वल होइत बजला-

"निरमली तक रेलगाड़ीसँ गेलौं। तेकर बाद पूब दिसक रस्ता धेने कोसी घाटपर पहुँचलौं।"

"धार केना टपलखिन?"

"कनियाँ, जेठुआ समए रहइ। धारक पेट खाली भऽ गेल रहै

मुदा तैयो अगम पानि तँ रहबे करइ। ओना धार फुलाइक समए भऽ गेल रहै मुदा फुलाएल नै रहए। बेसी नाव भदबरियामे डुमइ। एक बेर अहिना भेल जे अपने गौँआँक मेड़िया घुमैकाल डुमि गेलइ।"

उत्सुक होइत पुतोहु पुछलकैन-

"केते गोरे रहथिन?"

"तेरह-चौदह गोरे अपना गामक रहैथ आ आर गोरे आन-आन गामक। चालिस-पैंतालिस गोरे नाहपर चढ़ल रहैथ।"

"केते दिन पू-भर कमाइ लेल गेलखिन?"

मन पाड़ैत रघुनी बाबा किछु कालक पछाइत बजला-

"कनियाँ, तेकर ठेकान अछि। मुदा तैयो बीस-पच्चीस बर्ख तँ गेलै हएब।"

"कए दिने पहुँचै छेलखिन?"

"ओइबेर तीनियेँ दिनमे रंगैली पहुँच गेलौं। बजारसँ थोड़बे हटि कऽ काज पकड़ा गेल। चिन्हरबे गिरहत रहए।"

"जँ ओइठीम काज नै पकड़ैतैन तखन की करितथिन?"

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक जुआनी मन पड़लैन। जोशमे बजला-

"की करितिऐ! कोनो कि ओतबे देखल-सुनल रहए। मोरंगमे नै काज भेटैत तँ आगू बढ़ि जइतौं। सिलीगुड़ी, असाम, ढाका तक ठेका दैतिऐ। मुदा काज केने बिना नै अबितौं।"

"कोन काज करै छेलखिन?"

काजक नाओं सुनि बाबाक मन वौरा गेलैन। कहलखिन-

"कनियाँ, काजक कोनो ठेकान अछि। गिरहस्तौआ सभ काजक लूरि अछि। ओना धन-रोपनी, धन-कटनी आ पटुआ कटैले

जाइ छेलौं।"

"केते दिन रहै छेलखिन?"

"सालमे दू-बेर जाइ छेलौं। घुमा-फिरा कऽ छह मास लगि जाइ छेलए। धन-कटनीमे तँ एकलगना काज रहै छेलै, मुदा पटुआ काटैक समैमे काज छिड़िया जाइ छेलए।"

मुँहपर एकटा आँगुर लैत पुतोहु फेर पुछलकैन-

"एकलगना काज केकरा कहै छथिन?"

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक गुरुमन जगलैन। नजैर-पर-नजैर दैत बजला-

"एकलगना काज ओ भेल जे क्रमबद्ध चलैए। एकक बाद एक काज अबैए। जेना भानस करैकाल चूल्हि पजारि बरतन चढ़बै छी। अदहन दइ छिऐ। पानि गरम होइए, तखन सिदहा लगबै छी। यएह क्रम एकगलना भेल। मुदा जखन रोटियो पकाएब रहत, तरकारियो बनाएब रहत आ भातो रान्हब रहत तखन ओ काज छिड़िया जाएत। छिड़ियाएल काजमे अधिक भनसियो आ चुल्हियोक जरूरत पड़ि जाइ छइ। नहि जँ भनसिया असगरुआ रहल तँ छिगड़ी-तानमे पड़ि गेल।"

"एकलगना काज केना करै छेलखिन?"

"पटुएक कहै छी। पहिने ओकरा कटलौं। काटि कऽ जमा कऽ देलिऐ। तीन-चारि दिनमे पत्ता झड़ि जाइ छेलइ। तखन ओकरा अँटियाहा बोझ बनबै छेलौं। पानि ठेकना उघि कऽ लऽ जाइ छेलौं। पानिमे बाँसक खुट्टी पाटि कऽ, तीन-चारि छल्ली लगा दइ छेलिऐ जइसँ एक-दोसराकेँ दबबो केलक आ ऊपरसँ माटिक चेका चढ़ा दइ छेलिऐ। पानिक तरमे सभ डुमि जाइ छेलइ। गोरलाक बीस-पच्चीस दिनमे सीझ जाइ छेलइ। तखन ओकरा मुंगरीसँ झाड़ि-झाड़ि साफ करै छेलौं।"

"पटुआमे भरिगर काज की होइ छइ?"

प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक आँखि ढबढबा गेलैन। आँखि ढबढबाइते पानि पड़ल खौजरी जकाँ मन मधुर भऽ गेलैन। बजला-

"कनियाँ, अखन अहाँ बाल-बोध छी। दुनियाँक तीत-मीठ नै बुझलिऐए मुदा कहै छी- काजे जिनगी छी। तँए काजसँ सटबाक कोशिश हरिदम करी। हरिदम करैक मतलब ई नइ जे भरि दिन देहे धुनी। जहिना राज मिस्त्री मकानक नक्शा बना मकान बनबैए तहिना काजोक छइ। छोटे-काज नमहर लग लऽ जाइ छै आ आगू मुहेँ टुस्कियेबो करै छइ।"

बिच्चेमे पुतोहु बजली-

"प्रश्न छुटि गेलैन बाबा?"

"कनियाँ, की कहब। तरकारी तँ ओलो छी जे गाछमे एकेटा होइए, जा कऽ खट-दे उखाड़ि लेब। ओल उखाड़ैमे जेते समए लगल ओइसँ कम समैमे सजमैन तोड़ल जा सकैए। मुदा सैकड़ो फड़ैबला सजमैन बिना देखने-सुनने टेब केना सकै छी। टेबब असान तँ नहि। दूटाक तुलना करब छी, जे असान नहि, किएक तँ किछु एहेन होइत जे कमे उमेरमे फुफुआ कऽ नमहर भऽ जाइत आ किछु लुलुआ कऽ बौना भऽ जाइत। जँ छोट जानि, छोड़ैत जाएब तँ ओ तरेतर जुआ जाएत, मेहनत डुमि जाएत। तँए हल्लुको काज भारी होइए।"

बिच्चेमे फेर पुतोहु टोकि देलखिन- "बाबा, फेर भँसिया गेलखिन?"

"नै कनियाँ, भँसियाइ कहाँ छी। होइए जे हृदए फाड़ि अहाँ सबहक बीच छिड़िया दी आ अहाँ सभ तितिर जकाँ सभ पीब ली। मर्द बनि जखन काज करए निकललौं, तखन भरिगर की आ हल्लुक की। मुदा एकटा बात धियानमे जरूर रखक चाही जे कोन काजमे केते

जोखिम उठबए पड़त। जइ काजमे जेते जोखिम होइ ओइमे ओते सतर्क रही। तर्के रस्ता बनबैए। पटुआक काजमे सभसँ भरिगर अछि पटुआ झाड़ि सोन बनौनाइ। जहिना एक-दोसर जिनगी पबैत तहिना डाँड़ भरि सड़ल पानिमे जोंक-ठेंगीक संग विषैला साँप सेहो रहैत। चानिपर टहटहौआ रौद, निच्चाँ डाँड़ भरि पानि। सर्द-गर्मक बीच शरीर रहैए। तैपर एकलगना ठाढ़ भऽ कखनो एकटँगा ठेहुन बना पटुआक जड़ि जोड़ल जाइत, तँ कखनो वामा हाथमे उठा दहिना हाथे मुंगरीसँ झाड़ल जाइत। माछी-मच्छरक तँ ठेकाने कोन।"

सिनेहासिक्त होइत पुतोहु पुछलकैन-

"केते दिनक पछाइत घुमलखिन?"

"डेढ़ बर्खपर घुमलौं। ओइ साल रौदी भऽ गेल रहइ। रूपैआ पठा दिऐ आ अपने कमाय।"

"अनदिना, बिना सिजनक समैमे कोन काज करै छेलखिन?"

"कनियाँ, वएह समान सभ–पटुआ, तोरी, धान इत्यादि–जखन तैयार भऽ कऽ देहातसँ बजार अबै छेलै तँ बजारोमे काज बढ़ि जाइ छेलइ। पछाइत उट्ठा काज करै छेलौं।"

◌

शब्द संख्या : 2134

लफ साग

गाममे खेतीक चर्च होइते लाल काकीक लफ सागक चर्च उठिए जाइत अछि। ओना चरचोक क्रम अछि, मुदा लाल काकीक अलग पहचान रहने उपजा-वाड़ीसँ उठैत चर्चक संग बेकतीत्वक चर्च रामायण-महाभारतक प्रमुख पद्यक चर्च जकाँ हुनको होइते छैन।

चरचोक भिन्न-भिन्न क्रम, केतौ-केतौ खाली गहुमेक चर्च चलैत तँ केतौ अगबे धानक। केतौ खैहनक संग दलिहनोक चर्च चलैत तँ केतौ खैहन, दलिहन आ तेलहनक चर्च एक संग उठि जाइत। केतौ अन्नक संग तीमनो-तरकारीक चर्च उठैत तँ केतौ तीमन-तरकारीक संग फलो-फलहरिक। एतबे नहि, केतौ एहनो होइत जे खेतीक संग माछो आ दूधोक चर्च उठि जाइत।

भनडाराक भजनमे जहिना केतौ साखीसँ भजन शुरू होइत तँ केतौ भजनक बीच-बीचमे साखी चलैत, आ केतौ साखीए-सँ विसर्जनो होइत अछि तहिना लाल काकीकेँ सेहो छैन। लफ सागक संग लाल काकीक सिनेह आ खाली सिनेहे नहि, जिनगियो ओहन छैन जेहेन वैवाहिक बन्धन होइत। जहिना कनाह-खोरसँ लऽ कऽ दिबड़ा भीड़मे बसैबलाक संग एकसँ एक देवसुन्नैर अपन जिनगी समरपित कऽ अपन कुल-खनदानक संग समाजक मुरेठा सम्हारि रखैत तहिना लालो काकी छैथ।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तही दिन लफ साग सेहो संगे-संग एलैन। दुरागमन भेलापर जखन लाल काकी सासुर विदा हुअ लगली तँ सतरिया धान खोंछिमे दइले जे रखल रहैन तहीमे लफ सागक बीआ छिपा कऽ ओही धानमे ई सोचि मिला लेलैन जे जँ कागतक पुड़ियामे वा लत्तामे बान्हि राखब तँ खोंछि भरनिहारि देखिए जेती, जखने देखती तँ खोलबे करती। जखने खोलती आ सागक बीआ देखती तँ हो-ने-हो डाइन-जोगिनक फसाद ने कहीं उठि जाए। से नइ तँ निछोहैमे कनी समैये ने लगत मुदा कियो बुझत तँ नहि। सएह केलैन।

सागक बीआ नैहरसँ सासुर अनैक कारणो रहैन। जहिना हजारोक भीड़मे प्रेमीक नजैर प्रेमिकापर रहैत तहिना लाल काकी अपन प्रेमी-साग-क संग छोड़ए नहि चाहैथ। ओना मनमे ईहो होइत रहैन जे अनेरे किए सागेक बीआ लऽ जाएब, जइ गाम जाएब तोहू गाममे तँ लफ साग होइते हेतै, मुदा मन नै मानलकैन। मनोक मानब तँ साधारण नहियेँ अछि।

भलेँ साधारणो बात वा काज कहि मना लेब, ई अलग अछि। मुदा लाल काकीक मन ओहू दुआरे नै मानलकैन जे गाम-गाममे जहिना धानक खेती होइतो एकरंगाहो धान होइत आ नहियोँ होइत, तहिना ने सागोक अछि, केतौ मतौना-ढेकी साग होइत तँ केतौ पालक-ठढ़िया, केतौ ललका ठढ़िया तँ केतौ हरियरका, केतौ उजरा भुल्ला तँ केतौ सतरंगा...।

तँए जहिना गाम-गामक पानि, तहिना वाणि, तहिना खेती, तहिना बाड़ी, तहिना झाड़ी, तहिना फुलवाड़ी तहिना ने आनो-आन होइत अछि। तँए कोनो जरूरी नहि, जे लफ साग ओहू गाममे होइते हेतइ। जँ नै होइत हेतै तँ लल्लो-विल्लो भऽ जाएब। लइए जाइमे की

लागत, बुझब जे धाने छी। यएह सभ सोचि लाल काकी जहिना तीर्थस्थानक यात्री पनपीबा बरतनक संग सिदहो-समर संगे लऽ चलैत तहिना लफ सागक बीआ संगे लऽ अनली।

लफ सागक गुण लाल काकीकेँ बुझल रहैन। किएक तँ नैहरोमे बेसीकाल खेबो करैथ आ उपजेबो करैथ। खेतियो हल्लुक। जखन सागक गाछ जुआ जाइत तखन ओइमे फड़ल बीआ सेहो रसे-रसे पाकि जाइत। जहिना बुढ़-बुढ़ानुसक विचार बिनु पुछनौं फुटि-फुटि झड़ए लगैत तहिना सागोक बीआ गाछक आशा छोड़ि खापैड़क लाबा जकाँ चनैक-चनैक बहरा जाइत। केतबो पानि-पाथर बरसौ आकि ठनका खसौ जहिना छह-मसुआ बच्चा माइक छातीमे सटि सूति रहैत तहिना सागोक बीआ पृथ्वीक कोरामे सूति रहैत अछि। मुदा अचेतन रहितो चेतन भऽ ओइ दिन फुरफुरा कऽ उठि जाइत जइ दिन उठैक समए अबैत। तँए कियो सागक बीआ जोगा समैपर खेतकेँ तामि-कोरि बाउग नहियोँ करैत तैयो ओइ खेतमे अपनो जनैम जाइत जइमे पैछला साल भेल रहैत।

लफ सागमे लाल काकीक जहैनिक कारण छैन जे ओ जनै छैथ जे जैठाम लोक नून-भात आकि नून-रोटी खा जीवन बसर करैए तैठाम जँ चारिटा लफ सागक पत्ताकेँ एकलोटा पानिमे कनी नून दऽ मेरचाइक फोरनसँ फोरना देबै तँ तेहेन सिनेही भऽ भात-रोटीमे सटि ओहन गति पकैड़ लैत जेना खाली सड़कमे वाहन धड़ैत। चारिए पातक मेजनक संग अदहा किलो मीटर ससाइर लिअ।

जिनगीक संग पुरनिहार साग अपन कथा-बेथा लाल काकी छोड़ि केकरा लग बाजत। जे ओकरा दिस घुमियो कऽ ने तकैए तेकरा कहिए कऽ की हेतइ। खेतक आड़िपर पहुँचते भुखाएल नेरू-पर्ड़ू जकाँ लाल काकीकेँ साग कहैत-

“काकी, आइए नहि, हजारो बर्खसँ गेनहारी, बथुआ, नोनी इत्यादिक संगे-संग चलैत एलौं, कियो हवाइ जहाजपर भोज-भात करैए मुदा हमरापर किए ने केकरो नजैर पड़लै! जँ नजैर पड़ल रहितै तँ अहिना धरती धेने रहितौं?”

सागक दुखनामा सुनि लाल काकी विह्वल भऽ कहलखिन-

“बहिन, कियो अपना भागे-करमे जीबैए-मरैए। तइले अनेरे किए दुख करै छह। जइ दिन उपैट जेबह तइ दिन बुझिहक जे या तँ ई धरती नै रहए दिअ चाहैए वा ई धरती रहै-जोकर नइए।”

साग बाजल-

“लाल काकी, लोक बड़ कुभेला करैए। नै तँ, कहू जे सिमटीक आँगन-घर बना कऽ रहैए आ हमरो जँ अखाढ़मे कनी माटि छिड़िया सिमटीक अँगनोमे आकि छज्जियोपर लगा देत तँ की आसीन-कातिक तक भाँज नै पुरबै। मुदा आने साग जकाँ जे फुटा दइए जे ई गरमीक छी तँ ई जाड़क छी। भदवारिमे साग खेबोक नै चाही, से कहू जे ई होइ?”

सान्त्वना दैत लाल काकी कहलखिन-

“अइले किए दुख करै छह, तोहर तँ मान-मर्जादा एते छह जे बिनु तोरे अपन माइयो-बापक उद्धार नै कऽ सकैए। करह दहक जेते कुभेला करबाक छै से करह।”

मिथिलांचलक भोज जहिना अदौसँ आइ धरिक भोजनक इतिहास अपना पेटमे समेटने अछि तहिना गामो ने समेटने अछि। एक दिस जहिना भात दालिक संग तरकारी, तैसंग-संग पानिमे बनल अदौरी, तेलमे बनल बर-बरी आ दही-चिन्नीक संग विसर्जन होइत। जे भोज्यक इतिहास प्रदर्शित करैत तहिना बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीक संग बहुमंजिला मकानक बीच आदि मनुखसँ लऽ कऽ सभ्य

मनुख माने आधुनिक मनुख तकक इतिहासक झलकी सेहो दैत अछि। जइ दिन लाल काकी सासुर एली तइ दिन ओ पनरहे-सोलहे बर्खक छेली। आने-आन जकाँ दुइए बर्खक पछाइत पतिकेँ मुइने विधवा भऽ गेली। दुइए बर्खक अभियन्तर 'लाल भौजी', 'लाल काकी', 'लाल दादी'क माला समाज पहिरा देलकैन। एकोटा सन्तान नै भेल छेलैन। जइ दिन पति मुइलैन तइ दिन एहेन ओझरीमे लाल काकी ओझरा गेली जे भरि पोख कानियोँ नै सकली। ओझरी ई लगलैन जे जइ समाजमे वैधव्य बान्ह एतेक सक्कत अछि जे ता-जिनगी वैधव्य धारण केने रहैत, तैपर अशुभक उपराग ऊपरसँ। मुदा, की समाज ई भार लइए जे ओकर जिनगी इज्जतक संग केना चलतै। जे समाज केकरो जीवन नै दऽ सकैए की ओइ समाजकेँ केकरो ओंगरी बतबैक अधिकार छइ? विधवाक संग जे-जे किरदानी समाज करैत आएल अछि आ काइयो रहल अछि, की ओ समाज समाजिक बन्धन बनबैक अधिकार रखैए?

नारी जागरण लेल ओकर सुरक्षाक पक्का बेवस्था सेहो हेबा चाही जँ से नहि, तँ ने ओ परिवारक संग अपन प्रतिष्ठा बँचा सकैए आ ने बाहरे केतौ बँचि सकतै।

पतिक परोछ भेलापर माइयो-बाप आ सरो-समाज लाल काकीकेँ केतबो हिलौलखिन-डोलौलखिन मुदा लाल काकी अड़ि गेली जे समाजमे हमरा सन बहुतो छैथ, जहिना हुनका सबहक जिनगी कटतैन तहिना हमरो कटत। जेते भोग पारस छल तेते भोगलौं, आब माँ मिथिलाक फुलवाड़ी छोड़ि केतौ ने जाएब। जखन अपने हँसुआ, खुरपी आ कोदारि चलबैक लूरि अछि, तखन केतौ रहि जीवन-यापन कऽ सकै छी। अपन मान-मर्यादा अपने नइ बिगाड़ब।

अस्सी बर्ख पार केलापर लाल काकीक नजैर ओइ दिस गेलैन

जे-जे नजैरसँ देखने रहैथ। जहिना नजैर-सँ-नजैर मिलाएब आ टकराएब दुनू होइत तहिना लाल काकीक मनमे सेहो उठलैन। एहेन निचेनसँ जिनगीमे कहियो बैसबो ने कएल रहैथ जे बुझबो करितैथ आ सोचबो करितैथ जे जइ जिनगीमे बुधि-विचार जँ जिनगीक संग नै चलत ओ जिनगीए केहेन हएत।

गुनधुनमे पड़ल एक मन कहलकैन-

"हमरा सन-सन लोक लेल जे बेवहार चलि रहल अछि ओकर निमरजना के करत?"

तँ दोसर मन उत्तर देलकैन-

"जे निमरजना करैबला छैथ ओ जखन अपने चालिए ओंघराएल छैथ तखन अनका की देखथिन। पच्छिम मुहेँक गाड़ी पकैड़ पूब मुहेँ जाए चाहै छैथ, से केना हेतैन।"

मनक घंघौज देख लाल काकी काल्हिये जे ओराहै-ले बदाम अनने छेली, ओराहैले विदा भेली।

◌

शब्द संख्या : 1203

तिलकोरक तरुआ

जहिना नमहर दोकानमे प्रवेश करिते जीवनोपयोगी वस्तु देख मन हुअ लगैत जे ईहो कीनि लेब, ओहो कीनि लेब। मुदा पाइयो आ विचारो तँ ओतबे रहैए जेते पहिनेसँ विचार भेल अबैए। तहिना इच्छा रहितो किसुनलाल कोठरीमे डाइनिंग टेबुल नै लगा ओसारेपर अपनो दुनू परानी आ अतिथियो-अभ्यागतकेँ खुअबैत अछि। कम दरमाहा साधारण जिनगी। शहरमे रहितो गामक चालि-ढालि बेसी, कारणो स्पष्ट जे शहरी बनैले शहरी जिनगी बनबए पड़ैत। जे ओहिना नहि, पाइक हाथे बनैत। पाइयक काज मुहसँ थोड़े होइ छइ। भलेँ मुँहक आगू पाइक मोल जेहेन होइ। खास्ता कचौड़ी मुँहमे लाड़ैत-चाड़ैत गड़ लगबैत देवकान्त बजला-

"आह! बुझलह किने किसुनलाल, किछु हौउ, दुनियाँ सात बेर किए ने उनटै-पुनटै मुदा अपना ऐठाम गामक जे तिलकोरक तरुआ अछि ओकर तुलना केतए हएत?"

देवकान्त भाइक बात सुनि किसुनलालक मनमे कनियोँ हिलकोर नै उठलै। किएक तँ मनमे यएह नाच होइत रहै जे डेरामे गौआँ एला हेन, तँए ई नै अजश हुअए जे खेनाइयोमे ठकि लेलक। नीक कि दब भरि पेट कहुना खाथि। जँ से नै हेतैन तँ दसठाम बजता जे खाइयो-ले भरि पेट नै देलक। तही बीच मनमे उठलै जे पुछि-पुछि

खुआएब नीक। जे कम-सँ-कम पहिल बेर तँ कहता जे हँ इच्छापूर्ण खेलौं, आब कनी अराम करैक ओरियान करह आ तोहूँ सभ खा-पीबह, काज-उदम देखहक...। दैन्य दृष्टिए देख किसुनलाल बाजल-

"भाय साहैब, खाइ-जोकर बनल अछि की नहि। कहाँ खाइ छिऐ, चारिटा आरो नेने आबी?"

पहिल ढकार ढकरैत देवकान्त उत्तर देलखिन-

"अँए हौ किसुनलाल, तूँ हमरा राक्षस बुझै छह जे आगूमे एते वस्तु ढेरिया देलह हेन आ तैपर सँ परसन लइले कहै छह?"

जहिना डारिमे लागल मचकीक पहिल आस होइत तहिना, मनमे आस जगिते किसुनलाल बाजल-

"भाय साहैब, कनियेँ-कनियेँ समान सभ परसैले घरवालीकेँ कहने छेलिऐन। जेना-जेना भोजन करैत जेता तेना-तेना परैस-परैस दैत जेबैन।"

तहसाना जकाँ तहियाएल भोजन पाबि देवकान्त भाइक मन गदगदाएल रहबे करैन। किसुनलालक बात अन्तो ने भेल छेलै कि बिच्चेमे देवकान्त बजला-

"अँए हौ किसुनलाल, तूँ अनठिया बुझै छह। अपन घर छी! जे खगत आकि बेसी खाइक मन हएत ओ मांगि कऽ लेब। तइले तोरा मनमे किए होइ छह जे भुखले उठि जेता। हम ओहन लोक नइ छी जे खाइयो लेब आ दुसियो देब।"

तखने किसुनलालकेँ पत्नी–सिंहेश्वरी–हाथक इशारासँ शोर पाड़ि पुछलखिन- "तिलकोरक तरुआ-दे किछु कहलैन कि नहि?"

"किए?" किसुनलाल पुछलक।

"तिलकोरक साग आ चटनी तँ खाइ छी, बनबैयोक लूरि अछि, मुदा

तरुआ नै खेने छी।"

ओना सिंहेश्वरी देवकान्त भायसँ अढ़ भऽ पतिकेँ कहैत रहथिन मुदा बोलीमे एहेन टाँस देने जे देवकान्तो बुझथिन। साग आ चटनी सुनिते देवकान्तक मनमे उठलैन- साग तँ केते दिन खेने छी। तहूमे पेशाबमे गड़बड़ी रहने पथ्यमे यएह चलैए। मुदा चटनी तँ नै खेने छी। लाज-संकोच तँ ओकरा ने होइ छै जेकरा बुझि पड़ै छै जे भारी छी, मुदा हम कोन भारी छी जँ भारी रहितौं तँ बुझले रहैत। नै बुझल अछि तँ बुझि लेब कोन अधला हएत। जँ कहियो खाइयेक मन हएत तँ बुझलेहे ने काज देत...।

अचार मुँहमे लैत देवकान्त मुँहक कर समेट कऽ घोंटैत बजला-

"किसुन, ई की कोनो गाम-घर छी जे कनियाँ एते संकोच करै छैथ। एतै आबह कहुन, कनी एकटा बातो बुझैक अछि।"

देवकान्तक बात सुनि किसुनलाल तँ ससैर कऽ लगमे आबि गेल, मुदा सिंहेश्वरी किछु आगू बढ़ि, किछु पाछू आबि कऽ ठाढ़ भेली।

जहिना कोनो बच्चोसँ कोनो गप बुझै बेरमे रंग-रंगक प्रश्न पूरक प्रश्न पुछि संतुष्ट होइत अछि। तहिना देवकान्तोक मनमे हुअ लगलैन जे कोनो बात बुझैले सोझहा-सोझही नीक होइ छै। लजकोटर तँ बहुत बात छोड़िए दैत अछि आ बहुत बिसरियो जाइत अछि। दोखाह तँ दुनू भेल। अपने निच्चाँ उतैर सिंहेश्वरीकेँ ऊपर चढ़बैत देवकान्त बजला-

"कनियाँ, आइ ने किसुनलाल दू-पाइ कमाएल हेन तँ फुलपेन्टो पहिरने देखै छिऐ, मुदा जखन गाममे छल तखन तँ वएह एकटा चरिहत्थी गामछा छेलइ। डाँड़मे लपेटने रहै छल। गप-सप्प करैमे कोनो लाज-धाक नै हेबा चाही। हम जे बुझै छिऐ से अहूँ पुछू आ जे नै बुझै छिऐ से हमहूँ किए ने पुछब। तइले लाज-संकोचक कोन काज छइ।"

पत्नीकेँ चुप देख किसुनलाल बजला-

"भाय साहैब, कहैले तँ गाममे नै छी मुदा गामे जकाँ एतौ छी। ने ओते कमाइ होइए जे होटल घुमब आकि ज्वेलरी घुमब। खाली डेरासँ कारखाना आ कारखानासँ डेरा अबै-जाइ छी। अठबारे छुट्टी दिन कनी-मनी घुमि लइ छी, सेहो पएरे।"

पतिक बात सुनि सिंहेश्वरी पाछूसँ ससैर कनी आगू बढ़ि तिरछिया कऽ ठाढ़ होइत बजली-

"की कहलखिन?"

देवकान्त बजला- "कहलौं यएह जे तिलकोरक चटनी केना बनबै छिऐ?"

सिंहेश्वरी- "भैया, हिनका कि कोनो नै बुझल हेतैन?"

देवकान्त–

"नइ कनियाँ, कोनो कि हमरा जँचैक अछि, धरमागती कहै छी नै बुझल अछि।"

तैबीच सामंजस करैत किसुनलाल बाजल-

"भाय साहैब, ओना हम तरूओ खेने छी, सागो खेने छी, आ चटनियोँ खेने छी आ धिया-पुतामे पाकल तिलकोरक फड़ सेहो खेने छी। जाबे माए जीबैत रहए ताबे आन दिन तँ नहियेँ मुदा जुड़शीतल पाबैनमे तिलकोरक तरुआ अबस्से तरए। बड़ खर्चाक चीज छी। ओतेक खर्च करि कऽ खाएब असान थोड़े छइ।"

पतिक सह पबिते सिंहेश्वरी बजली-

"भैया, हमर माए-बाप बड़ गरीब छला। भरि पेट अन्नो ने भेटै छेलैन, तखन जे तरुआ-बगहरुआक सेहन्ते करितैथ से पार लगितैन?"

सिंहेश्वरीक बात सुनि मुड़ी डोलबैत देवकान्त बजला-

"हँ, से तँ ठीके। हमहूँ की कोनो बेसी खेने छी। जहिया कहियो घरदेखीमे केतौ जाइ छी, तखन खाइ छी। सेहो आब उठाबे भेल जाइए। आब तँ सहजे लोक तेहेन चिकनिया भऽ गेल जे अल्लुएक पाँचटा पूरा लइए। नवका तूर तँ खाइक कोन गप जे बुझबो ने करैत हएत। पात-पुत कहि थोड़े खाएत। अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ, असल बात तँ छुटले अछि।"

विचारक सामंजस पाबि सिंहेश्वरीक उत्साह जगलैन, बजली-

"भैया, साग तँ बुझले हेतैन जहिना कदीमा पात आकि अरिकंचन पातकेँ कत्तासँ काटि भूजल जाइ छै तहिना तिलकोरो पातक होइ छइ।"

हुँहकारी भरैत सिंहेश्वरीक बातकेँ मानि देवकान्त बजला-

"हँ-हँ, तिलकोरक साग तँ केत्तादिन खेने छी। मुदा चटनी नहि।"

जहिना नव काज केने, नव जगहपर पहुँचने वा नव लोकसँ दोस्ती भेने मनमे खुशी होइत तहिना दस बर्ख पहिलुका खेलहाक चर्च करैमे सिंहेश्वरीकेँ मनमे खुशी उपकलैन। मुस्कियाइत बजली-

"भैया, जहिना अरिकंचन-पातकेँ कदीमा पात वा आन पातक तरमे दऽ पतौड़ा बना आगिमे पकौल जाइ छै, तहिना तिलकोरो पातकेँ पकौल जाइए। जखन उपरका पात झड़ैक जाइ छै तखन बुझि जाइयौ जे तिलकोरक पात सीझ गेल हएत। ओकरा चूल्हि सँ निकालि चाहे पानिक बरतनमे दऽ दियौ नै तँ कनीकाल सराइ-ले छोड़ि दियौ। जखन सरा जाएत तखन ओकरा पतौड़ासँ निकालि सिलौटपर थकुचि कऽ पीसि लिअ। बहुत मसल्लाक काजो नै पड़ै छइ। चसगरसँ नून मिरचाइ दऽ दियौ। बस भऽ गेल। ओना, लोक भातोमे खाइए मुदा रोटीक तँ बुझियौ जे जहिना भातक दालि छी, तहिना रोटीक

तिलकोरक चटनी छी।"

सिंहेश्वरीक बात सुनि तेसर ढकार करैत देवकान्त लोटा उठा पानि पीब बजला-

"किसुनलाल, बहुत खेलियह समानक आगू खेनिहार थोड़े ठठत। बड़ ओरियान केने छेलह।"

जहिना नीक विद्यार्थी बोर्ड वा युनिवर्सिटीमे टॉप केलोपर झुझुआइत जे दुइयो प्रतिशत नम्बर और रहैत तँ अस्सी प्रतिशत पूरि जइतए, तहिना किसुनलाल कहलकैन- "भाय साहैब, कनियोँ आर खाइयौ।"

आग्रह सुनि देवकान्त बजला-

"हम कि कोनो राक्षस छी जे केतबो खाएब तँ पेटे ने भरत। मनुखक जे भोजन छिऐ से तँ खेबे केलौं। तूँ नै अन्दाज केलहक जे लोक केते खाइए। पेटेक कोन बात जे मनो भरि गेल। अच्छा एकटा बात कहह जे अपन गौआँ के सभ ऐठाम, रहै छैथ?"

देवकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलाल मने-मन सोचए लगल जे बम्बइ सनक शहरमे के केतए रहैए, ई भाँज तँ मात्र दुइए गोरेकेँ रहै छइ। पहिल जे काज नै करैए आ दोसर जे कोनो कम्पनीक एजेंसी करैत हुअए। बाँकीकेँ कोन जरूरत छइ। अठबारे छुट्टी होइए तइमे कि सभ करब, केते करब। कपड़ा-लत्ता खींचब आकि सप्ताह भरिक अधखरूआ नीन पुराएब, आकि दुनू परानी मिलि कोनो नव जगह देखए जाएब आकि भेँट-घाँट करब। तखन तँ ओहुना कियो-ने-कियो दर्शनीय जगहपर भेँट-घाँट भाइए जाइ छैथ। गाम-घरक हालो-चाल बुझि लइ छी आ संग मिलि चाहो-पान कऽ लइ छी...।

अपन मजबूरीकेँ छिपबैत किसुनलाल बाजल-

"भाय साहैब, अहूँक जेठजन तँ परिवारे लऽ कऽ रहै छैथ,

हुनकासँ सभ भाँज लगि जाएत। तखन हम एते जरूर कहब जे जइ करखानामे काज करै छी तइमे तीन गोरे छी। कहैले तँ उठे काज अछि मुदा सभ दिन काजो लगैए आ एकेठाम सात दिनक पगारो भेटैए। जइमे रबि दिनक सेहो भेटैए।"

देवकान्त- "औझुका तँ छुट्टी लिअ पड़ल हेतह?"

"किए छुट्टी लिअ पड़त। कोनो कि ओकर दरमाहाबला नोकरी करै छिऐ। औझुका बदला रबि दिन काज कऽ देबइ। कोनो की स्कूल-ऑफिस छी जे सोलहन्नी बन्न होइए। करखाना छिऐ, सभ दिन चलिते रहै छइ।"

"परिवार किए गामसँ लऽ अनलहक ऐठामसँ कमे खर्चमे गामक परिवार चलैए?"

"भाय साहैब, अहूँ अनठा कऽ बजै छी। गाम-घरक लोकक किरदानी नै देखै छिऐ जे ताड़ी-दारू पीब-पीब कि सभ करैए। अपन इज्जत अपने सोझहामे नीको होइ छै आ लोक बँचाइयो सकैए। तखन देखियौ, मनमे तँ ऐछे जे जखने गाममे रहै-जोकर, कोनो काज ठाढ़ करै-जोकर पूजी भऽ जाएत, तँ गामे चलि जाएब।"

"केते महिना बँचै छह?"

"एते दिन तँ बुझू जे कहुना कऽ गुजर केलौं मुदा आब छह महिनासँ गोटे मास हजार रूपैआ आ गोटे मास पनरहो सौ बँचि जाइए।"

"बैंकमे जमा करैत जाइ छह किने?"

"बैक जाएब से छुट्टी होइए। एजेन्ट-फेजेन्ट तँ ढेरी अबैए मुदा ओकरा सबहक भाँजमे नइ पड़ए चाहै छी।"

"कमो पूजीसँ तँ गाममे काज चलै छै आ बिनु पूजियोक चलै

छइ।"

"हँ से तँ चलै छइ। जेकरा अपन कारोबार नै छै ओ दोसराक काज करैए। मुदा देखते छिऐ जे केते बोइन दइ छइ। तहूमे आब कहुना-कहुना दुनू परानीमे आठ हजार महिना उठबै छी, ऐठाम महगी अछि तँए कम बँचैए। मुदा गाममे तँ कम-सँ-कम ओते कमाइ हुअए जे जहुना गुजर कटै छी तहुना पूरा सकी।"

"अपन की अन्दाज छह जे केते दिनमे पूरा लेबह?"

"जँ भगवान नीकेना रखलैन तँ डेढ़-दू सालमे जरूर पूरि जाएत। अहाँक भाय-साहैब सबहक दोसरे दिन-दुनियाँ छैन।"

'भाय साहैब'क नाओं सुनिते जहिना भरल पेटक गरमी होइ छै तहिना देवकान्तकेँ फुकि देलकैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"सुथनी भाय-साहैब! मन भेल जे कनी बम्बै देखी, दरभंगामे टिकट कटेलौं चलि एलौं। तोहर नाओं-ठेकान लऽ नेने रहिहह तँए तोरा डेरापर चलि एलौं। भाइए छिआ तँ की, ओइसँ सतरह-बर नीक तूँ छह। कम-सँ-कम समाज बुझि सुआगत तँ केलह।"

अपन प्रशंसा सुनि किसुनलाल विह्वल भऽ गेल। बाजल-

"भाय साहैब, ओते तँ कमाइए ने अछि जे अइल-फइलसँ खर्च करब, मुदा समाजक जँ कियो डेरापर औता तँ अनका जकाँ मुँह नै घुमा लेब।"

किसुनलालक सह पबैत देवकान्त बजला-

"किसुनलाल, जखन परिवारे सभ कोकैन गेल तँ समाज केहेन हएत। मुदा तँए सोल्होअना परिवार कोकनियेँ गेल सेहो बात नइए। जाबे धरतीपर धर्म नै छै ताबे चलै केना छइ।"

किसुनलाल- "भाय साहैबक भेँट करबैन की नहि?"

"मन तँ एको पाइ नइ अछि मुदा जखन ऐठाम आबि गेलौं तखन नहियोँ भेँट करब उचित नहियेँ हएत। तोरा तँ हुनकर मोबाइल नम्बर बुझल हेतह किने?"

"हँ, से तँ लिखल अछि। मुदा मोबाइल अपना कहाँ अछि?"

"बुथपर सँ तोहीं कहि दहुन जे देवकान्त गामसँ एला अछि। जँ गप करए चाहता तँ अपने कहथुन, नहि तँ जानकारी तँ भेटिये जेतैन।"

भायपर बिगड़ल देख सिंहेश्वरी देवकान्तकेँ पुछलकैन-

"भैया, एना खिसियाएल किए छथिन?"

देवकान्त-

"कनियाँ, की कहब! कहैले तँ पाइ-कौड़ीबला कहबै छैथ। तहिना घरक घरोवाली छथिन। अपना तँ कनी-मनी कुल-खनदानक लाजो होइ छैन मुदा घरवाली जे छैन ओ भगवानेक देल..!"

सिंहेश्वरी-

"जखन अपने नीक छैथ तखन हुनकर घरवालीसँ कोन मतलब छैन?"

देवकान्त-

"मतलब पुछै छी। की कहब, बजितो लाज होइए जे एके परिवारक छी तखन एना किए बजै छी। मुदा नहियोँ बाजब सेहो तँ गलतिये हएत। अपने जे भाय साहैब छैथ से ने मरदे छैथ आ ने मौगीए। बलिगोबना छैथ। जहाँ किछु बाजए लगता आ पत्नीक आँखिपर नजैर पड़तैन आकि बोलीए बदैल जाइ छैन।"

ः

शब्द संख्या : 1835

एकोटा ने

पुरमपुर गाममे पुरन कक्काक परिवारकेँ गौओं आ अनगौओं पुनचन परिवारसँ जनै छैन। ओना अस्सियो बर्खक अवस्थामे कहियो पुरन काका कनमा-कनइ नै पढ़लैन मुदा कनमा-कनइक किरदानी देखः-देख सदिकाल क्षुब्ध जरूर रहै छैथ। गड़े ने बैसै छैन जे जे वस्तु तराजूपर रखि बटिखाड़ासँ तौलल जाएत ओ जँ बँटाइत-खोंटाइत पौआ-कनमा होइत रत्ती-माशामे चलि जाएत। खाएर ओ तँ चलि जाह, मुदा दुनियाँक एते नमहर धरती केना बँटाइत-खोंटाइत कनमा-कनइ होइत फनइ दिस पहुँच जाइए? वादलक किरदानी की पतालक पानि सोंखि लेत? जँ सोंखउ चाहत तँ राखत केतए? हवा-बिहाड़ि केत्तेकाल अँटका कऽ रखि सकैए। खाएर जे हौउ मुदा करैला लत्तीक मचान जकाँ अपना परिवारकेँ पुरन काका बनौने छैथ।

जहिना सक्कत-कड़गर बीआ धरती धारण करिते, दियारीक तेल-बाती जकाँ अपन तिल-तिल अर्पित करए लगैत अछि, तहिना ने करैलोक बीआ केने अछि। वएह अँकुर ने धरती धारण करैत ऊपर आबि लत्ती बनि लतड़ैए। भलेँ पातर-छीतर कड़चीक आलनक संग मचानपर किए ने पहुँचैए। तँए कि ओ अपन शरीरक रक्षा करैत, अपन मुँह बँचबैत नै पहुँचैए? जरूर पहुँचैए।

पुरन कक्काक परिवारोक सभ तेहने छैन जे अपनामे जँ घंघौज

होनि मुदा काकाकेँ लग पहुँचते सभ सकदम भऽ जाइ छैथ, किएक तँ सभ बुझै छैथ जे अगियाएलमे हँसियो हिहिया कऽ धड़ै छइ। तँए जहिना रस्तापर ऐंठैत-जुठैत चलैबला साँप बोहैरमे प्रवेश करिते सोझ भऽ जाइए तहिना कक्काक सोझहामे परिवारक सभ सदस्यक चालि-बेवहार सोझ भऽ जाइत अछि। ओना, बिनु पैरक चलैबला साँप माटिपर चलि केना सकैए। मन-चित्त मारि पुरनो काका राति-दिन परिवारेक पाछू लगल रहै छैथ। अखनो मनमे ओहिना ओ बात तरगरे छैन जे वीर भोग्या बसुंधरा.., माने जे ऐ धरतीसँ प्रेम करत ओकरे ई कखनो प्रेमी बनि तँ कखनो माए-बहिन बनि चुम्मा लेत।

चेतनसँ बालबोध धरिक परिवार पुरन कक्काक छैन। सबहक बीच तालो मेल अजीव छैन। चेतन सभ जहिना पुरन काकाकेँ गारजन बुझि छुट्टी नेने रहै छैथ तहिना तँ बालो-बोध सभ अपन बाबा बुझि अपने सभ किछु बुझैए। परिवारक सभसँ छोट बच्चा चारि सालक छैन। तालो-मेल नीक छैन।

अँगनाक सभ समाचारक समदिया रहितो संवाद-बाहकक काज बच्चा सभ करिते छैन। एहेन चेला भेटबो मोसकिल, मुदा से तँ छैन्हे। नवका दोस्तियारे तँए बेसीकाल एकठाम रहने चाहो-बिस्कुट संगे करै छैथ, खुशी रहै छैथ। पुरन काका ऐ दुआरे खुशी रहै छैथ जे अपन बात पहिने उसारि, भरि दिन गप सुनैले दिनमा तैयार रहैए। आ दिनमाक खुशीक कारण अछि जे आँखि-कान तँ तखने ने काजक बनतै जखन ओकरासँ काज कराएत। नइ तँ गमे-गमे गेड़ी बनि जाएत। मुदा से कहाँ होइ छै, एक काने सुनैए आ दोसर कान देने उड़ि जाइ छइ। उड़ैत-उड़ैत सुतली रातिमे सभटा उड़ि जाए छइ।

वसन्तक आगमन भऽ गेल। किछु दिन पहिने तक जे मौसम जाड़सँ जड़ियाएल छल, पालासँ पलाएल छल, ओ आब फुरफुरा कऽ

उठल। सुखाएल-सड़ल लत्ती आ कुमही जकाँ पबिते वसन्ती हवामे उड़ए लगल। बेदरंग भेल धरती, घर-आँगन जकाँ बाहरै-सोहरै लेल इशारा दिअ लगल। रसे-रसे रस भरल हवाक रमकी रमकए लगल। जहिना सेवा निवृत्तिक समए कोनो अफसरकेँ स्वर्ग सुझैत तँ कोनोक आगूमे नांगट नर्कक नाच होइत, तहिना शिशिर–सिरसिराइत समए–वसन्तक बीच हुअ लगल। मुदा से बात पुरन कक्काक परिवारमे नै छैन। कोल्हुक बरद जकाँ परिवारक सभ सदस्य अपने-अपने नाचक पाछू भरि दिन लागल रहै छैथ।

दिन उगिते दिनमा, बाइस खा माटिक बनौल जत्ताक दुनू पट्टा दुनू हाथमे नेने दरबज्जाक आगूमे बैस, रस्ताक धूरा-गरदाकेँ जत्तामे पीसए लगल। बिनु देखनौं आशा बनले रहै जे बाबा दरबज्जेमे छैथ। सूतल छैथ कि जागल छैथ, तइसँ कोन मतलब दिनमाकेँ। ओ तँ अपन काजमे बेहाल अछि। मनमे रहबे करै जे चाहक बेर भऽ गेल अछि माए चाह आनि देबे करतैन, हमहूँ जा कऽ पीबे करब। दिनमाक एहेन बिसवास किए ने रहतै, परिवारक बोझसँ दबल थोड़े अछि जे नून नै अछि, तेल नइ अछि आकि केसक तारीखपर जाए पड़त...।

जहिना तत्त्व-वेत्ता तत्त्व-चिन्तनमे रमल रहैत तहिना दिनमा अपन काजमे हेराएल रहैए। कोन मतलब ओकरा छै जे बुझत काजक हेराएल अधखरूआ रहि जाइए।

माइक हाथमे चाह देखते दिनमा, जत्ता छोड़ि आगूए आगू दरबज्जापर ऊपर चढ़ल।

दिनमापर नजैर पड़िते पुरन काका मुस्की दैत बजला-

“की दिनबाबू, चाहो-ताहक बेर भेलै की नहि?”

तैबीच चाह नेने पुतोहु पहुँच पुरन कक्काक लगमे गेलैन। दिनमाक नजैर देबालमे टाँगल हनुमानजीक छातीक रामपर पहुँच

गेल। फोटो देख दिनमा बाजल-

“बाबा, उ फोटो उतारि दिअ।”

दिनमाकेँ पोल्हबैत पुरन काका बजला-

“बौआ, पहिने चाह पीब लिअ पछाइत ई सभ हेतइ?”

दिनमाकेँ जेना बुझले रहै तहिना बाजल-

“पहिने अहाँ पीब ने लिअ, पाछू हम पीअब।”

बहन्ना पकड़ाइत देख पुरन काका बजला-

“अखन हमरा हाथमे गिलास अछि केना उतारल हएत?”

चाह पीब, खिड़कीपर रखल खुरपी उतारि पुरन काका बाड़ी दिस विदा हुअ लगला। हाथसँ खुरपी छिनैत दिनमो आगू-आगू विदा भेल। दारीमक बाड़ी पहुँच पुरन काका हिया-हिया हियबए लगला तँ बुझि पड़लैन जे दारीमक जड़िमे पानिक अभाव अछि। मुदा गाछक डगडगी आ लदल फूल देख मन ललिया गेलैन। लाल-लाल फूलसँ लदल गाछ। सभ डारिमे फूल फुलाएल।

खुरपी नेने दिनमा खाधि खुनैक जगह हियबैत रहए। आ पुरन काका फूल सभकेँ हिया-हिया देखैत हरियाएल-हरियाएल फड़ो सभपर नजैर पड़लैन। मन भेलैन जे जेतबे-तेतबे जड़ि सबहक खढ़ उखाड़ि दिऐ। मुदा नजैर दारीमक काँटपर गेलैन। डारिये काँट भऽ जाइए। ऊपर-निच्चाँ सगतैर काँट। जखने अपने खढ़ उखाड़ए लगब तखने दीनमो किछु-ने-किछु करइ लगत। तहूमे खुरपी हाथेमे छइ। तेहेन झाड़ी अछि जे सुगबा साँप जकाँ माथमे गड़तै कि गरदेनमे गड़तै तेकर कोन ठेकान। जखने काँट गड़तै की कानब शुरू करत। जखने कानत तखने ओकरा चुप करब आकि गाछक जड़िक खढ़ उखाड़ब...।

समझौता करैत पुरन कक्काक सोझमे दोसर काज एलैन। काज

ई जे फड़क गिनती कऽ ली...। हाथक खुरपी आड़िपर रखि दिनमाकेँ कोरामे उठा काका कहलखिन-

“बौआ, अहाँकेँ नेने हम टहलब आ अहाँ फड़ गनब।”

नव फड़क गिनतीक काज देख दिनमाक मन खुशीसँ आरो खुशिया गेल। मुदा मनमे एलै जे कट्टा भरि झाड़ीक बगानमे पचासोसँ ऊपर गाछक फड़ केना गनि लेब? तहूमे बीसे तक गनल होइए? तैबीच पुरन काका गाछक सभ फड़केँ अपने हिया-हिया देखए लगला। मनमे उठलैन- फड़क बीच कीड़ोक असर भेल अछि कि नहि, सेहो देख ली। एक्केटा गाछक फड़ देख काका अन्दाजि लेलैन जे केते हएत। जहिना गोल-गोल, किछु नमती नेने लाल-लाल फूल हरियर होइत अपन जिनगीक फल पकैड़ रहल अछि, तहिना तँ गोटि-पँगरा करुआएल आमक आकार सेहो पकैड़ रहल अछि।

एकसँ दोसर गाछक फड़ गनैमे दिनमा बेर-बेर बिसैर जाए। कखनो गिनतिये छुटि जाइ तँ कखनो अंके बिसैर जाए। अनेको परियासक बीच एक्को बेर दिनमा बीससँ ऊपर नै बढ़ल।

तैबीच काका पुछलखिन-

“बौआ, केते फड़ भेलह?”

बाबाक प्रश्न सुनि दिनमाक मुहसँ निकैल गेल-

“दसटा।”

“अच्छा बड़बढ़ियाँ। आबसँ एत्तै आबि कऽ खेलिहह। ओगरवाहियो भऽ जेतह आ खेलबो करबह।”

नीक फसल भेलैन। खाइ-जोकर फल हुअ लगल। फड़ फल बनि गेल। ओना सजमैन फड़क-फड़े रहि जाइत अछि। मुदा दारीम, आम, लताम इत्यादि फड़सँ फल बनि जाइत अछि। अन्तिम अवस्था

अबैत-अबैत तुबि-तुबि फल अपने खसए लगल।

गाछक सभ फल समाप्त भऽ गेल। जहिना परसौती जनानीकें देख-भालक जरूरत पड़ैए तहिना ने वाड़ियो-झाड़ीक अछि। ई सोचि पुरन काका दिनमाक संगे दारीमक गाछ लग पहुँचला। पहुँचते देखलैन जे जे गाछ कहियो फड़-फूलसँ लदल छल ओ आइ सून-सून भेल अपन बेथा सुना रहल अछि..!

बेथित मने काका दिनमाकें पुछलखिन-

“बौआ, केते फड़ अछि?”

विचलित होइत दिनमा बाजल-

“एकोटा ने।”

“ऐ लेल विचलित किए होइ छी। जहिना समए आएल छेलै तहिना फेर औत।”

“केना औत?”

“समए अनुसार एकर ताक-हेर करैत रहब तँ एबे करत।”

◌

शब्द संख्या : 1149

धोतीक मान

जहिना तेहैया बोखार तरे-तर अबितो आ जाइतो गहियेने रहैत तहिना लाल काकाकें तीन दिनसँ विचित्र सोग गहि कऽ पकैड़ लेलकैन। ओना, जखन कोनो काजक अनमेनामे लगि जाइ छैथ तखन छोड़ियो दइ छैन। मुदा काज बदैलते पुन: आबि जाइ छैन। मुदा कहबो केकरा करथिन, घरेलू सोग छिऐन। सोगो तेहेन जे जहिना तिआरि जालमे माछ फँसि जाइत, जे ने बंशी जकाँ जे बोरक सुगन्धसँ फँसि जान गमबैत आ ने सहतक ठनका जकाँ मरैत। मुदा तैयो तँ घाउ लगले छैन।

लाल कक्काक सोगक दोसरो कारण छैन। ओ ई छैन जे दुनू परानीक बीच ने कहियो वैचारिक संघर्ष भेल छेलैन आ ने रक्का-टोकी। मुदा आइ ओ सद्य: भऽ गेलैन।

बात किछु ने, बुढ़िया फूसि। मुदा सोग तेहेन जे रोगेनहिटा नहि, सोगेनौं छैन। जइसँ कोनो काज करैमे मने ने लगए दइ छैन।

तीन दिन पहिने जखन सढ़ुआरेसँ भरपूरा नोत, एलैन तखनेसँ सोगक आक्रमण लाल काकापर भेलैन जे गहिया कऽ धेने छैन। ने छोड़ैत बनै छैन आ ने पूरैत। साधारण जिनगी जीबैक अभ्यास तँए पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि समुचित काज करैत जिनगी चैनसँ चलैत रहै छैन। मुदा गतिक अनुकूले आमद-खर्च रहने भातक उजरा आँकर

जकाँ दाँत तर खटखटा रहल छैन, जे आँकरक संग भातो फेकए पड़तैन। नजैर उठा कऽ देखैथ तँ सोझहेमे देख पड़ैन जे भारमे धोतीक खर्च वाह्ययात अछि, किएक तँ धोतीक मान तँ ओइ समए सर्व-सम्मैत छल जखन एकाधिकार वेपार जकाँ छल, मुदा जैठाम दू साए रूपैआक धोती लऽ जाएब तैठाम कियो पहिरनिहार नै अछि, मांगलिक काज छोड़ि धोती म्यूजियमक वस्तु बनि गेल अछि। अपन तँ दू दिनक कमाइ दहा जाएत। मुदा पत्नी तँ मानती नहि। अपना सीमामे सभ बताह होइए, भलें आन सीमामे नाँगैर पटपटबए आकि दाँत चिआरए। मानबो उचित नहियेँ। किएक तँ पत्नीक मान तँ परिवारमे दादीक छैन। बाबा-दादाक पकिया संगी। शुभ काजक शुरूहेमे खट-पट भेने कहीं अन्त धरि ने खटपटाइते रहि जाए, तेकर डरो रहैन...।

मुदा तैयो विचारि लेब जरूरी बुझि लाल काकीकें पुछलखिन-

“काल्हियेे ने नोत पूरए जाएब। आइए ने सभ ओरियान-बात कऽ लेब?”

लाल काकी कहलखिन-

“घरक ओरियान ने हम करब, हाटो-बजारक हमहीं करब?”

लाल काकीक चढ़ल तर्क देख लाल काका दोहरौलैन-

“बजारक काज की सभ अछि?”

“आर किछु ने अछि। खाली जोड़ भरि धोती आ अँगा-गमछा कीनि लेब।”

लाल काकी आढ़ैत सुनि लाल काका मने-मन जोड़ैथ तँ देख पड़ैन जे कियो धोती पहिरनिहारे परिवारमे नै अछि, जखन धोती नइ, तखन कुर्ता आ गमछा तँ सुखल नून-चूड़ा भेल। केतबो हएत तँ जलखैइए। मुदा रहैथ तँ बेवस। पुछलखिन-

“आब कि कोनो भार-दौर चलै छै जे ई सभ लऽ जाएब?”

लाल काकाकें चिलहोरि जकाँ झपटैत लाल काकी बजली-

“एक तँ चाउर दहीक बदला रूपैये लऽ जाएब मुदा नव वस्त्रो नै लऽ जाएब से केहेन हएत?”

बजैत लाल काकीक आँखिसँ नोर ढवढबए लगलैन। फटैत छातीक दरद बाँसक झाँझन जकाँ झनझनाए लगली-

“बहिन मरमा मरिये गेल, मुदा अन्तमे मुँह नै देख पेलौं। भगवानो तेहेन छैथ जे सभटा दुख ओकरे घरमे देलखिन। चढ़ल जुआनी दुनू परानी मरल, अढ़ाइ बर्खक मइटुग्गर-बपटुग्गर बेटाक बिआह छिऐ, तेकरा पाँच हाथ वस्त्र हमहूँ नै देबै तँ दुनियाँमे के देतइ?”

◌

शब्द संख्या : 480

साझी

गामक पहिल घटना तँए गाममे विचित्र हलचल भोरेसँ उठि गेल। उठबो केना ने करैत, अखन धरि तँ इतिहासो यएह कहलक आ समाजो सएह। मुदा घटना बदलने इतिहासक रस्तो बदैल जाइ छै आ बहिला समाज सेहो बाह पकड़ै छइ। विचित्र हलचलक कारण भेल विचित्र घटना। विचित्रक कारण भेल चित्र विचित्र बनि गेल, तँए गामक सबहक मनकेँ कुचित्र सुचित्र बनबए लगल। जेहेन जेकर रंग-गाढ़ तेहेन तेकर चित्र गढ़गर। तँए एक रंगाह नै भेने आरो बेसी हलचल। मनक प्रेम तँ तखन ने बढ़ै छै जखन अनुकूल प्रेमी भेटै छइ। प्रेमियो कि कोनो एक्के रंगक होइए जे ओहीपर नजैर पड़तै आ नजैर पड़िते धारक पानि जकाँ मोटाए लगतै। जँ से नइ हेतै तँ जेहो छै तइमे सँ किछु रौदमे उड़तै, किछु धरती पीतै आ किछु लोको घटौतै, जहिना बिलंबसँ चलैवाली गाड़ी टीशने-टीशन विलैमते चलैए, भलेँ कुमेल भेने रस्ता-बाटमे छोड़ि आन-आन दौड़ैत चलैए…।

ओना, गामक विचित्र घटना देख सबहक मन उड़ैत मुदा जिनगीक काज पकैड़ि-पकैड़ हटबैत गेल। मुदा केतबो हटल तैयो तँ बाँकीए रहि गेल, सोलहन्नी नहियेँ हटल। नहियेँ हटल तँ की हेतइ? अदहासँ बेसी तँ रहिए गेल, तँए बहुमतेसँ ने समाज, देश सभ चलै छइ। तखन गामेमे कोन उनटन भऽ गेलै जे गाम-समाज नै चलतै।

मुदा गामो तँ सोलहन्नी मरिये नै गेल अछि जे कियो नामो लइबला नै रहतै। से तँ अछिए। सेहो तेहेन अछि जे हजार कानकेँ एक्के बेर भरि देत। जहिना पूजा करब काज छी तइसँ कि हल्लुक काज फूल तोड़ब थोड़े छी। जखन नै छी तखन किए दुनू दू रंग हेतइ।

चौबट्टी परहक इनारक चलती सभसँ बेसी भऽ गेल। नवकी पनिभरनी सभ थैर-गोबर छोड़ि-छोड़ि पहिने पानियेँ भरए इनारपर पहुँच गेली। मुदा तँए कि पुनियाँ दादी आ घुरनियोँ दीदी ओहने अगुताएल छैथ जे पहिने पानियेँ भरए पहुँचती। एक तँ बेटा-पुतोहुकेँ डाकैन देती जे ऐसँ निपुत्रे नीक, ने तँ ऐ चौथापनमे अपने चैल उठाबी। तहूमे नवका आगि गाममे पजरल। माघमे जँ अनको धधगर घूर भेटए तँ ओकरा छोड़ि देब बेवकुफीए छी, भलेँ अपनो धिया-पुता किए ने घरमे कठुआ जाए। ओना दुनू गोरेक घर इनारसँ बहुत हटल नहि, मुदा लग-दूर कोन बात भेल। लगोक बाटमे दसटा गप करैबला भेटल तँ बेसीए समए लगत आ नहियेँ भेटने दूरो लग भऽ जाइ छइ। सएह दुनू गोरे–पुनियाँ दादी आ घुरनियोँ दीदी–केँ भेलैन। जवाबदेहियो तँ कम नहियेँ छैन अनकर बातसँ ऊपर उठा अपन बात नै रखती तँ पुनियाँ दादी आ घुरनी दीदी कथीक। तइसँ नीक तँ नवकीए, जे कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित लग रसगर बात बजै छैथ।

संजोग तँ संजोगे छी, चाहै काज करैक संजोग हुअए आकि भोज खाइक, नीके होइ छइ। भलेँ ओ चालि बदैल कुसंजोगे किए ने भऽ जाए। पूबसँ पुनियाँ दादी आ दच्छिनसँ घुरनी दीदी पहुँचली। पुनियाँ दादी घुरनी दीदीसँ जेठ। तँए जेठक आदर करैत घुरनी दीदी इनारपर चढ़ैसँ पहिने स्वागत करैत पुनियाँ दादीकेँ टुसि देलखिन-

“जहिना पाबैन दिन परिवार हड़बड़ा जाइए तहिना दादीकेँ देखै छिऐन!”

अपन स्वागत देख पुनियाँ दादीक मन खुशीसँ खुशिया गेलैन। टुटल दाँतक मुहसँ मुस्की दिअ लगलखिन। अखन धरि पुनियाँ दादीकेँ धेनहि जे गामक बात हमरा छोड़ि दोसर बुझबे ने करैए। भलेँ सात पुतोहु हाथे मारि-गारि किए ने खाइत हेती। खाएर.., पुनियाँ दादी पहिने आँखि उठा इनार दिस तकली तँ बुझि पड़लैन जे जिज्ञासु बेसी अछि। घुरनी दीदी दिस देखैत बजली-

“गै घुरनी, कहुना भेलेँ तँ बेटीए भेलेँ, आइ-काल्हिक नव-नौतुक हमर-तोहर बात सुनतौ। देह देख सभ अपने मोटाएल अछि। मुदा तोरा नै कहबो से केहेन हएत…।”

जिज्ञासा भरैत घुरनी दीदी मलसारि दैत बजली-

“कोनो तेहेन गप छैन दादी?”

पुनियाँकेँ सभ दादी कहैत आ घुरनीकेँ दीदी। ओना उमेरोक हिसाबसँ उचिते छइ। मुदा दुनू गामक पुतोहुए बनि गाम आएल छैथ। दीदीक आदरसँ दादी आरो अह्लादित होइत। जहिना संज्ञाक संग सर्वनाम, विशेषण आदि सभ अगुआ-पछुआ बनि रथकेँ खिंचैत तहिना दादीक मनमे सेहो उठलैन। सोझहे बजैसँ नीक बुझि पड़लैन जे अलंकार-छन्द बनबे किए कएल जखन ओकर बेवहारे नै हेतइ। अलंकार शैलीमे दादी गामक चौहद्दी बान्हि बाजए लगली-

“एहेन अतहतह तँ एक गामक के कहए जे परोपट्टामे केतौ ने देखै छी, जे..?”

दादीकेँ विह्वल होइत देख दीदीक जिज्ञासा तेज भेलैन। लपैक कऽ पुछलखिन-

“से की, से की दादी?”

जहिना आमक गाछक डारिमे पाकल आम देख झमाड़ि-झमाड़ि डोला पाकल आम खसबए चाहैत, मुदा डोलौनिहार ई नै बुझि पबैत

जे पाकले खसत आ काँच नै खसत। हँ एहनो होइ छै जे बेसी पाकलक डण्टीक रस सुखने असानीसँ खसैत मुदा जे डमहा पाकल छै ओ तँ ओहिना छै जहिना डमहा काँच होइ छइ। तहिना दादीक मन छगुन्तासँ छनकैत रहैन जे एहेन तँ केतौ ने भेल से गाममे केना हएत। मुदा भऽ तँ गेल!

भेल ई जे ज्ञानचन काकाकेँ तीन बेटा आ दू बेटी छैन। तीनू बेटा पढ़ि-लिखि कऽ आने जकाँ नोकरी करए गाम छोड़ि देलैन। भीन भऽ गेलखिन कि साझीए-मे से नै कहि, मुदा ज्ञानचन काकाकेँ एको पाइ मदैत नै केलखिन। ओना तीनू भाँइ ऊपरा-ऊपरी पढ़लो-लिखल छैथ आ नीक नोकरियो छैन। पहिल बेटी डाक्टर पतिक संग सेहो बाहरे रहै छथिन। छोट बेटी वैधव्य भऽ गेलैन। असमए बेटीकेँ विधवा भेने ज्ञानचन काकाकेँ जबरदस धक्का मनमे लगलैन। अपनोसँ बेसी काकीकेँ लगलैन। एहेन कोन माइक छाती हएत जे अपने सुहागिन आ बेटीकेँ वैधव्य देखए चाहत। मुदा उपाइये की! दुखक तँ सभसँ पैघ दबाइ नोर छी। जेते नोर झड़त तेते भारी दुख मेटाएत।

जहिना रेहीक संग मक्खन, छालही मोहि आगिपर लोहियामे चढ़ा घी बरकौल जाइत से दादीकेँ बरकौले ने होनि तँए क्षुब्ध रहैथ। बजली-

“आब तँ अपनो उमेर ढेरी भेल तैपर नाना-जनम एहेन काज नै देखने छेलौं से गाममे देखै छी।”

दादीक बात सुननिहारकेँ आरो जिज्ञासा बढ़ा देलकैन। एक्के-दुइए सभ पनिभरनी एक्के बेर दादीपर जोर देलकैन। थकथकाइत दादी बजली-

“ज्ञानचनक तीनू बेटा–रूपचन, गुनचन आ विचारचन–केँ जखन नोकरी छुटलैन तखन गाम आबि साझी भऽ गेलखिन।”

दादीक उत्तरसँ दीदी संतुष्ट नै भेली, मुदा संतोष नै भेलैन तँए पूरक प्रश्न केलखिन-

“तइसँ पहिनहि भीन भेल छेलखिन?”

दीदीक प्रश्नसँ दादीकेँ क्रोध उठलैन, बजली-

“जेना लोक केबाड़ चौकी काटि-काटि बँटबारा करैए तेना होइतै तखन बुझितहक। आकि मनुखकेँ इशारा होइ छइ। मझिला बेटा अपन बेटीक बिआहमे चालीस लाख रूपैआ खर्च केलकै मुदा छोटका भाएकेँ पाइ नै देलकै तँ नून-तेल लगा केलक। की यएह सझिया भैयारी छिऐ?”

दीदी बजली-

“तखन तँ कमाइयो ने सबहक सभ रंग हेतै, ओ केना मिलौत?”

तैपर दादी बजली-

“सएह ने देखहक। जेकरे बेसी छै सएह पहिने कहलकै जे हमरा एते अछि, सभ मिला कऽ परिवार चलौ।”

◌

शब्द संख्या : 998

सतभैंया पोखैर

पोखैर कहिया खुनौल गेल आ के खुनौलैन ई मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखन धरि हेराएले अछि, मुदा एते गामक सभ मानैए जे पोखैरक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरीछ अछि आ ने आन कोनो चीज। ओना, पोखैर नमहर रहने रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी अछिए। कियो दैंतक खुनल कहैए तँ कियो राजा-रजवारक। मुदा जे हौउ, हजार बर्खसँ ऊपरक पोखैर जरूर अछि, जे सभ मानैए। शुरूमे पोखैरक महार जेहेन रहल हुअए मुदा अखन झड़ि-झूड़ि गेल अछि आ पोखैरक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि।

गाममे एकेटा यएह पोखैर अछि, मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखैरक अभाव गौंआँकेँ नै हुअ दइ छैन। चाकर-चौड़गर पेट अखनो ऐछे, मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सदृश...।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलैन। पोखैरो हुनके सबहक छिऐन। केना भेलैन से तँ नीक जकाँ किनको नै बुझल अछि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलैन अछि। ओना पोखैर तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखैरसँ ऐ पोखैरक अलग पहचान अखनो अछिए। ने एते नमहर कोनो गामक पोखैर अछि आ ने चौबगली महारक घाट। एक्के घाट रहने पारो नहियेँ लगैत जेना आन-आन गामक पोखैरमे अछि।

आन गामक पोखैरमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा-दूटा घाट अछि। एकटा मरद आ दोसर जनाना लेल। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि, जइक चलैत जँ कहियो गाममे आगि-छाइ लगै छै तँ गामे सुन भऽ जाइ छै, मुदा एकोटा पोखैर रहने आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे एना नै भेल अछि। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछि। केते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमण्डल-गढ़ैनक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे आगि लगिते धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखैर रहने अनगौंआँ तँ पोखैर मानबे ने करैत मुदा पोखैरक सभ काजक पूर्ति तँ होइते अछि, तँए गौंआँ लेल धैनसन। कियो अनगौंआँक गपपर धियानो ने दइत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक कहने थोड़े नीक भऽ जाएत। जँ एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै, से तँ अछिए। चारू महार घाट रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक ऐछे नहि, जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक, ई फल्लाँक खुनौल छिऐन तँए दोसरकेँ नहाए देथिन कि नहि से हुनकर मन-मरजी छिऐन। कियो जाठि गाड़ि पोखैरक पहचान बनौने छैथ तँ छैथ। पोखैरक पहचान भलेँ जाठि हौउ, मुदा झील-सरोवर आकि धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबइ। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि ओ गाछ-गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौंआँ नचै छैथ ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छइ? जँ बीच पोखैरक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखैरक किनछैरेमे उपयोग करै-जोकर नहाइ-धोइक पानि रहत, ओकर बीचक

नाप नपैक जरूरते की रहत? ओहन पोखैरक मानियेँ केते हएत जे एकटा घाट–जे भलेँ सिमटीए-ईटाक किए ने हौउ–बना बाँकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब आ जँ कहीं गाममे आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखैरकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ-जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खाएर जे हौउ, मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखैरो तँ अछिए।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकियौल खेत जकाँ समतल रहल अछि। ओना, बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत उभर-खाभर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सेरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविस दिस नै देख, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छइ। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपाय होइते अछि।

बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहचान परोपट्टामे बनौने रहल अछि। ओना, सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबा चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतैर गेल, तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेला। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलैन से ठीके सातसँ सतरह तँ नहि, मुदा एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलैन। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नइ भेलैन। मनक विश्वास अन्त धरि बनले रहि गेलैन जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैए। जँ से नहि, तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत अछि। भऽ तँ ईहो सकै छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकै छल। मुदा से कहाँ होइए? जहिना एकसँ

साए धरि गनू आ साएसँ एक दिस गनू, पचास तँ बिच्चेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि अबौ आकि रौदी हौउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेला से पुन: घुमि कऽ नहियेँ एला। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरत होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखन वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छैथ, तखन हुनक विवेक की कहै छैन से तँ आनक-आन नै बुझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलता। खाएर जखन धरतिये भूमि छी तँ जेतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनियेँ जाइ छै जेकर जन्म जेतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जँ धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखन अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ? जँ से नहि, तँ हम केतए छी ई तँ देखए पड़त?

मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जँ से नहि, तँ कहाँ अरब करोड़पर लटकल आ करोड़ लाखपर? सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलेँ केतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाँइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लैन जे शरीरसँ निरोग रहितो मनसनक बच्चेसँ भऽ गेला। जइसँ ने बिआह केलैन आ ने कोनो भाँइक बात-विचारमे कहियो रहला। तहिना बाँकी भैयारी मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकैन। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहियेँ जन्म लेलकैन। जखन भाय सभ लगमे बैसैथ तँ गरैज-गरैज बजैथ जे 'मने सभ किछु छी, जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक।' मुदा भाइयो सभ बिना किछु टोकारा देने चुपे-चाप सुनि

लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदियाएब। से नहि तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेता आ जेमहर मन हेतैन तेमहर विदा हेता। असगरूआ परिवारमे एककेँ वौड़ने परिवारेक उसरन होइए मुदा गनगुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि की हएत। एक भाँइ तँ परिवार-टोलसँ लऽ कऽ समाज धरि गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बाँझी लगने डारि फड़ै नइए मुदा तँए कि ओ गाछसँ हटल रहैए, एहेन तँ नै होइत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आँगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार, सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखैरक बीच सबहक जिनगियो संयमित रहैन तँए परिवारमे हर-हर खट-खटक प्रश्ने किए उठत। ओना सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगी लेल सातो उपयोगी मुदा गुण-बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ सभ अपन-अपन काज सम्हारै छला। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत–जे एना-हेतै, एना नै हेतइ–मुदा एक विचारमे तँ से नइ होएत। समतल बिछानक सुख जहिना सुतनिहारकेँ होएत, तहिना ने समतल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइकाल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत, जहिना वस्तु वेपारक सहायक छी तहिना वेपार उपयोगक। जइ वस्तुक जेते उपयोग जिनगी लेल होएत ओ वेपार ओते चतरल। मुदा प्रश्न अछि जँ सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बँटाएल किए अछि? जँ देवताक परसाद परसादे छी तखन महादेव किए बाँतर छैथ?

अखन धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक जमीनमे दुइए बेर बँटबारा भेल छेलैन जे खूटे-खूट भेल छेलैन मुदा ऐबेर रूप बदैल गेल। भितरिया गुमराहट आबि गेल। मुदा खुलि कऽ

आगू भऽ बजैले कियो अपन डेग नै बढ़बए चाहैथ।

जहिना सुखल जारैनक बीच आगि हवा पबिते धधैक उठैए तहिना पोखैरक लहैर जकाँ सतभैंया परिवारमे उठए लगलैन। कारणो अछि जे कहिया केतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलैन सएह अखनो धरि चलि आबि रहल छैन। निच्चाँ जहिना मुसहैनक माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे काज करैकाल बरखा हुअए आकि सुतली रातिमे, अन्तर कोनो नहि। जहिना गोनैरक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-सुनटाक प्रश्ने नहि, पहिलुका चद्दैरक चारूभाग बराबरे होइ छेलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो ऐछे, तहिना धोतियोक, मुदा आजुक जे सिंग-मांगबला चद्दैर वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एकभग्गुए नहि, संयुक्त परिवारक एकाकी रूप जकाँ बनि गेल अछि। जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिरिफ मानवे नहि, महामानवो बनैत अछि मुदा वएह मनुख मृत्युक पश्चात अछियामे जखन जरबैले जाए लगैए तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि। ओना, खूटे-खूट जमीन बँटनौं जहिना छुतकाबला केश कटबैकाल सभ बरबरिये भऽ जाइ छैथ। तहिना बाधक जमीनमे कनी घटियो-बढ़ी भेलैन मुदा घराड़ी आ पोखैरमे कोनो तरहक कमी-बेसी नइ भेलैन, सभ अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छैथ। तँए सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बुझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोनो लसैर नहियेँ लगल छेलैन। जखन लसैरे नै तँ असर किए। तेतबे नहि, ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने फूल-फड़ थोड़े बदैल जाइ छै तहिना अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करत। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ चारिए-टा रहि गेलैन आ तहू चारिमे दूटा बँझियाइए गेलैन, तँए फल-

फूलक आशे नै रहलैन। मुदा दुइयो भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै-जोकर तँ भाइए गेला। गड़बड़ एतबे भेलैन जे एक भाँइकेँ एक आ एक भाँइकेँ तीन बेटा भेलैन। एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदैल रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल।

जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे पड़त तँ निसचिते छह हाथ पैरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपेबे करत। मुदा चद्दैर तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़ियबैत जैठाम ओढ़निहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भाइए गेल छैन। विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलैन जँ से नै रहलैन तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियामेटे नहि, केते जहल भोगलक तँ केते अस्पताल, केते फाँसीपर लटकल तँ केते कपार फोड़ा मरल। मुदा विचारेक चलैत ने परिवारकेँ ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनियोँ डोलौलकैन। समैक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलैन। ओना जेकरा समए कहै छिऐ–दिन-राति–ओइमे ओतेक बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ बँचौनहि अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भाइए गेलैन। ओ ई जे एक भाँइक बेटा–श्याम–भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहियेँ भेल, मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाइक बेटा रहने किछु गड़बड़क सम्भावना तँ जनमियेँ गेलैन।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बँटबारा भेलैन मुदा ओ पुन: समटा गेलैन। कारण ई जे शुरूमे तँ बँटबारा भेलैन मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलैन। केना नै समटाइत, तीनूकेँ कियो पानियोँ देनिहार तँ नहियेँ रहलैन।

चारू भाँइक बीच एहेन सम्बन्ध बनल रहलैन जे भीन-

भीनौजीक परिस्थितिये पैदा नै लेलकैन। तेकर कारण भेल जे चारू भाँइक चारि तरहक कारोबार रहलैन। एक काजमे चारि गोरेकेँ रहने वैचारिक मतभेद होइक सम्भावना रहै छइ। किएक तँ एक्के काज केते ढंगसँ कएल जा सकैए। तहूमे जखन समैक मोड़ अबै छै तखन काजोमे मोड़ अबै छइ। सभठाम भलेँ नहि अबौ मुदा नहियेँ अबै छै सेहो नइ कहल जा सकैए। चारू भाँइकेँ परोछ भेने परिवारमे भीन-भिनौजक सम्भावना बनलैन। सम्भावनाक कारण भेलैन जे एक भाँइकेँ एकेटा बेटा, जखन कि दोसरकेँ तीनिटा भेलैन। दू भाँइ तँ मेटाइए गेला।

छोट भाइक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ, खाली भैयारीए-मे जेठ नहि, पढ़ै-लिखै दिस सेहो विशेष झूकान रहैन। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर सुभ्यस्त परिवार रहबे करैन। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिकाल सिनेमे-पत्रिका आ खेले-पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओतेक नजैर नहि, मुदा फोटोपर बेसी नजैर पड़ैत।

अखन धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छेलैन जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्ने नै उठल छल। जे किछु कारोबार छेलैन सामूहिक छेलैन। तहूमे एकटा जबरदस गुण श्याममे छैन जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छैन ओ तीनू भाँइ– अपना लगा चारू–केँ जरूर जानकारीमे दैये दइ छथिन। मुदा भैयारीक संग दियादनियोँ तँ बरबैर भाइए जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पित्ती-पितियाइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादनीकेँ एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भाइए जाइत अछि। कारणो छै, मिथिलांचलेमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक जँ दूरी अछि तइमे खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणी इत्यादिमे किछु-ने-किछु अन्तर बनले आबि रहल अछि।

तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे सेहो बदलाब अबै छइ। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन लीला बदलए लगै छइ। तहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भाइए जाइ छइ।

तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम–भोजपुरी सीमा–क्षेत्रक सुआसिन एने, भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै जइसँ भाषापर माने बोली-वाणीपर प्रभाव पड़ै छइ। तहिना पूवरिया इलाका वा दछिनवरिया इलाकाक प्रभाव सेहो पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भैयारीक प्रति सिनेह किछु कमए लगलैन। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलैन। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबै छेलखिन तइमे किछु कमी आबए लगलैन। तीनू भाँइ खेलौड़िया सोभावक रहबे करैथ, तैबीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेला।

अखन धरि घनश्यामकेँ श्याममे कोनो कमी नै देख पड़ैन। तँए हिसाबक कोनो जरूरतो नहियेँ बुझैथ।

श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदैतकाल कानमे घोरि-घोरि पियबैन जे सम्पैत अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए! पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छला, ई नै बुझै छला जे दियादनीसँ दियादियो ठाढ़ होइ छइ। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ, अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिया-खिसिया बाजए लगलैन-

“जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै ओ पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी!”

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकैन। मन कहए लगलैन जे ‘झड़’क अर्थ तँ ओ होइत जे कखन अछि आ कखन अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए? मुदा अखन मुँह खोलैक तँ समए नै अछि सिरिफ सुनैक समए अछि...।

जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिए देने तँ सरबत नै बनैए। नेबोकेँ काटि गाड़ि कऽ रस मिलौल जाइत अछि तहिना चिन्नियोक अछि। जहिना एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बुझिमे नै अबैत बल्कि दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा ऐगला-पैछला पाँतिक मिलानसँ बुझल जाइत अछि तहिना ऐगला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलैन।

नजैरक पानि देख पत्नी बुझि गेली जे ऐगला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छैथ। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसियो रहैत आ तइ संग-संग नव-पुरान–पहिलुका-पैछला–सेहो रहैत। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुधियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैए। किएक तँ पुरना मधु दबाइ-दारू लेल नीक होइ छै, खाइले तँ नवके नीक हएत, तहिना वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजली- “अखन धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आँगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ सागीरदेमे सँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि, मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन केते हएत आ दियाद-वादक केतबे छैन?”

श्यामक नजैर धँसए लगलैन। पत्नीक विचारमे किछु तत्त्व बुझि पड़लैन मुदा से स्पष्ट नै भऽ सकल! प्रतीक्षाक नजैर उठा श्याम आगू दिस ताकए लगला। तैबीच अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरौकैन-

“पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाँकी बारह तँ भैयारीए-क भेल। तैसंग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अदहा हिस्सामे अपन केते हएत आ केते हुनका सबहक हेतैन।”

श्यामक मन सहमलैन। सहैमते उठलैन- जे पत्नी अक्षरस: सत्य कहि रहली हेन। सम्पैतक अर्थ सुख-भोग होइ छै, परसादी बाँटब नहि।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे केते छौड़ाकेँ मोँछक पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजे धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।”

जेना घनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ-दे बाजल-

“भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम अछि। भलेँ ओ दुनू छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।”

“बड़ बढ़ियाँ, अखन जा कऽ पुछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखन फेर गप करब।”

घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

तीनू दियादनियोँ आ दुनू भाइयोकेँ एकत्रित कऽ घनश्याम पुछलक-

“सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलैन जे भीन भऽ

जाह। से की विचार?”

बलराम कहलकैन-

“विचार की भैया, ओ असगर छैथ तँ जीविए लेता आ हम तँ सहजे तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतैन तँ ने कियो डाक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला हेतैन आ ने बजारसँ दबाइ कीनि कऽ अनैबला हेतैन।”

घनश्याम-

“सबहक की विचार?”

पहिल दियादनी-

“अपन परिवार बुझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तैपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतैन तँ साँढ़-पारा जकाँ गर्द करए लगता। भने नीक हएत। जानो हल्लुक हएत।”

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैस कहलकैन-

“जे विचार अहाँक अछि भैया, सएह हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।”

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमला। मनमे उठलैन, हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जँ पाछू हटब सेहो नीक नहि। बजला-

“बँटबारामे कोनो बेवधान तँ छहे नहि। सभ किछु अदहा-अदही भेलह। तखन बाप-पुरुखाक बनौल जेठौंस होइए से तँ तोहीं बजबह?”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम कहलकैन-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छला। संयोग नीक रहलैन जे

भिनौजी नै भेलैन। जखन पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बँटै छी तँ हुनकर जेठौंस केते हेतैन से तँ हमर हएत किने?”

श्याम कहलकैन-

“देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार ‘विचारक परिवार’ मानल जाइत रहल अछि, तैठाम कनी-मनी चीज लेल झगड़ब नीक नहि।”

घनश्याम मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बँटाइत-बँटाइत एते बँटा जाइ जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

तैपर श्याम पुछलखिन- “तोहर की विचार?”

घनश्याम कहलकैन- “तीनू भाँइक विचार अछि जे घर-सँ-घराड़ी, खरिहाँन-सँ-खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। जँ से नहि, तँ...।”

श्याम- “तँ की?”

घनश्याम- “ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखैर सेहो तहिना बाँटब। जँ से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।”

श्याम-

“सएह।”

घनश्याम-

“हँ! सोलहन्नी सहए।”

शब्द संख्या : 2999

न्याय चाही

झूनाएल धान जकाँ पचासी बर्खक शम्भु काकाकेँ ओछाइन छौड़ैसँ पहिनहि मनमे उठलैन जे आब तँ चल-चलौए छी, से नहि तँ जिनगीक अपन हिसाब-किताब दैये दिऐ, सएह नीक। नै तँ शासनक कोन बिसवास केकरो दोख गारा मढ़ि सजा केकरो भेटै छइ। मुदा सोझहामे एते तँ जरूर हएत जे अपन बात अपने रखि सकै छी। तैपर जँ नहि मानत तँ हमहूँ नइ मानबै। लड़ि मरी कि सड़ि मरी; शेषे कथी बँचल अछि...।

जहिना नमहर काजमे समैयो अधिक लगैए आ छोट काजमे थोड़ मुदा काज तँ दुनू कहबैए। कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सभ अछिए। गंभीर प्रश्नमे ओझराएल शम्भु काका, तँए मन-चित्त आ देह एकबट्ट भेल रहैन।

पत्नी कुमुदनीक मनमे उठलैन जे भरिसक सुतले तँ ने रहि जेता। लगमे पहुँच छाती डोलबैत पुछलकैन- “अखन धरि किए बिछान पकड़नहि छी?”

पत्नीक स्वरलहरीमे लहराइत शम्भु काका हलैस बजला-

“अखन धरि यएह बुझै छेलौं जे अपने केलहाक भागी कियो बनैए, मुदा..?”

बजैत शम्भु काका ओछाइनपरसँ उठि जहिना उगैत सुरूजक दर्शन लोक दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैए तहिना दुनू हाथ जोड़ि पत्नीक आगूमे ठाढ़ होइत दोहरा कऽ बजला-

“माफी मंगै छी, गलती भेल अछि मुदा दोसराक गलती ऊपर मढ़ल गेल अछि।”

अकचकाइत कुमुदनी, बिनु किछु सोचनहि बजली-

“से की, से की, एना किए भोरे-भोर पाप चढ़बै छी?”

“पाप नै चढ़बै छी जिनगीक जे घटल घटना अछि, तइ निमित्ते मांगि रहल छी।”

“जखन एते कहबे केलौं तखन किए ने मनो पाड़ि देब। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे बसिया भात खेनिहारि बिसराह होइए मुदा रौतुका उगरल अन्न फेक देब नीक हएत?”

पतालसँ अबैत बलुआएल पानि जहिना छन-छनाइत पवित्र भऽ अबैए तहिना कुमुदनीक विचार सुनि प्रोफेसर शम्भु काकाकेँ भेलैन, बजला-

“अपना दुनू गोरेक एक जिनगी ऐ धरतीपर रहल अछि की नहि?”

“हँ, से तँ रहले अछि। तँए ने अर्द्धांगिनी छी।”

“हमर देहक अर्द्धांगिनी छी आकि जिनगीक?”

“ई बात अहाँ बुझेलौं कहिया जे पुछै छी?”

पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोफेसर शम्भु काका सकदम भऽ गेला। मुदा लगले मनमे उठलैन जे टटको घटना बसिया जाइ छै आ बसियो घटना टटका भऽ जाइ छइ। ई निर्भर करैए कारीगरपर। जेहेन कारीगर रहत तेहेन टटकाकेँ बसिया आ बसियाकेँ टटका बनबैत रहत। खाएर जे

हौउ। पत्नीकेँ पुछलखिन- “अपना दुनू गोरे एकठाम केना भेलिऐ?”

“एना अरथा-अरथा किए पुछै छी? जे कहैक अछि से सोझ डारिये कहू। एना जे हरसीकार-दिरघीकार लगा-लगा बजै छी से नइ बाजू। जेकरा नीक बुझबै तेकरा नीक कहब आ जेकरा अधला बुझबै तेकरा अधला कहब। अहाँ लग जे कनी दबो-उनार भऽ जाएत तँ हारि मानि लेब सएह ने हएत, आकि छाउर-गोबर जकाँ छिट्टामे उठा बाध दऽ आएब।”

जहिना पोखैरक पवित्र जलमे स्नान कऽ पूजाक मूर्ति गढ़ि मंत्र पढ़ैत दान कएल जाइत तहिना शम्भु काका बड़बड़ाए लगला-

“जखन हम चौबीस बर्खक रही तखन अहाँ चौदह बर्खक छेलौं। दस बर्खक अन्तर। आइ धरि कहाँ केतौ देख पेलौं जे पुरुष-नारीक बीच उमरोक विभाजन भेल। जँ से नहि तँ..? जँ एको औरूदे दुनू गोरे जीब तैयो तँ अहाँ दस बर्ख विधवे बनि रहब। ऐ विधवाक सर्जक के? समाजमे कलंकक मोटरी देनिहार के? की ई बात झूठ जे जइ घरमे जेते कम वस्तु रहै छै आगि लगलापर ओतबे कम जरै छै आ जइ घरमे अधिक वस्तु रहै छै आगि लगलापर जरबो बेसी करै छइ? पचास बर्खक तपल-तपाएल जिनगीक अन्त केना हएत?”

दुनू हाथ जोड़ि शम्भु काका पत्नीसँ माफी मंगलैन।

मुदा जहिना बच्चाकेँ नव दाँत रहने अधिक-सँ-अधिक काज लिअ चाहैत, नव औजार हाथमे एने अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समए सेहो संग मिलि बीतबए चाहैत तहिना कुमुदनीक सिनेह आरो जगलैन। बजली-

“माँफी-ताँफी नै मानब? पति छी तँए पुछै छी। एहन गलती भेल किए, से जाबे नै कहब ताबे किछु ने मानब।”

पत्नीक प्रश्न सुनि शम्भु काका स्तब्ध भऽ गेला। मन कछमछाए

लगलैन। सत् बड़ कटु होइ छइ। मुदा जँ पत्नियोँ लग सत्यक उद्घाटन नै कऽ सकब तँ दुनियाँमे दोसरठाम कइए केतए सकै छी?

शम्भु काका साँप-छुछुनैरक स्थितिमे पड़ि गेला। एहेन कोनो विचार मनमे उठबे ने करैन जइसँ मन मानि लइतैन जे ऐसँ पत्नी मानि जेती। अल्ल-बल्ल किछु बच्चाकेँ कहल जाइ छै, एक तँ सियान कि जे सियानोक ऐगला खाढ़ीमे पत्नी पहुँचल छैथ, दोसर अर्द्धांगिनी सेहो छैथ। कोनो विचारकेँ बलजोरी थोपि नै सकै छिऐन, जँ थोपियो देबैन तँ मानिए लेती सेहो नै कहल जा सकैए। जेते दवाब दऽ कऽ बजैक अधिकार हमरा अछि तेते हुनको तँ छैन्हे। जँ किछु नै कहबैन तखन तँ आरो स्थिति बिगैड़ जाएत। जहिना हुनका मनमे गेंठी जकाँ जनमगाँठ पड़ि जेतैन तहिना तँ अपनो मन नहियेँ बँचत। जँ से नै बँचत तँ आँखि उठा देख केना पेबैन? जँ से नै देख पाएब तँ पति कथीक? सिरिफ रंगे-रभसटा तँ पत्नीक सम्बन्ध नै छी? जँ ओतबे मानि बुझबैन तँ पति-पत्नीक सम्बन्ध बुझब थोड़े हएत। पति-पत्नीक सम्बन्ध तँ ओ छी, जहिना जनकक एक हाथ हवन-कुण्डमे आ दोसर पत्नीक करेजपर रहै छेलैन, मुदा जहिना नव जीवनक दिशा विपैतक अन्तिम अवस्थामे भेटैए तहिना शम्भुओ काकाकेँ भेटलैन। थालमे गड़ल मोती जहिना जहुरी हाथमे देखते नयन कमलनयन बनि जाइत तहिना कक्कोक नजैरकेँ भेलैन। मन मुस्किएलैन।

पतिक मुस्की देख कुमुदनी मने-मन नमन केलकैन।

जिज्ञासु छात्र जकाँ पत्नीक जिज्ञासु नजैरकेँ देख प्रोफेसर शम्भु बजला-

“देखू, प्रश्न एकेटा नै घनेरो अछि, जँ एक-एक प्रश्नक उत्तरो दिअ लगब तँ प्रश्ने छुटि जाएत। जँ प्रश्ने छुटि जाएत तखन उत्तरे केना देब। तँए किछु नहि बुढ़िया फूसि।”

पतिक विचार सुनि कुमुदनी अधखिल्लू कुमुदनी जकाँ जइ अवस्थामे भौंरा फरिच तँ देखैत मुदा अधखिल्लू कपाटसँ निकैल नै पबैत, तहिना कुमुदनी असमंजसमे पड़ि गेली।

पत्नीकेँ असमंजसमे पड़ैत देरी प्रोफेसर शम्भुक मनमे उठलैन जे जहिना माटिक ढेपा, गोला, चेका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ बान्ह बान्हल जाइए तहिना जँ बान्हि दिऐन तँ जरूर ठमैक जेती। मुदा मन मानलकैन नहि। पत्नीक बातमे तँ अखन धरि ओझराएल रहलौं। जरूर माए-बापक काज मानल जाएत। मुदा, की हमरे टा परिवारमे भेल आकि दोसरो-तेसरो परिवारमे? जँ एक समाज नहि, एक गाम नहि, अनेक समाज आ अनेक गाममे होइत अछि तँ जरूर दोषक जड़ि केतौ आरो छइ। अन्तए केतए छै से कहि देबैन, मानती तँ मानती, नहि तँ आगू कहबैन नेति-नेति।

जहिना उगैत गुज्जर, उगैत कलशकेँ कहैत जे दुनू गोरे संगे-संग रहि दुनियाँ देखब तहिना प्रोफेसर शम्भु पत्नीकेँ कहलखिन-

“सुनू, सभ बात सबहक नजैरपर सदिकाल नै रहै छै, भऽ सकैए जे जे बात दस-बीस बर्ख पहिने कहि देबाक चाहै छल, से नै कहलौं। अपनो धियानमे नै रहल। जहिना असगरे धान तौलनिहार गनि-गनि तौलबो करत आ उठि-उठि लिखबो करत तँ गिनती-गिनतीमे झगड़ा हेबे करतै, किएक तँ जे जोरगर रहतै ओ मन रहत आ जे अब्बल रहत ओ हेरा जाएत। तहिना ने अपनो दुनू गोरेक बीच अछि।”

“दुनू गोरे” सुनि कुमुदनी कछमछेली। कछमछाइते पाछू उनैट-उनैट देखए लगली।

प्रोफेसर शम्भु बुझि गेला जे शिकारीक वाण सटीक बैसल। जहिना बाल-बोधक उनटा-पुनटा काज देख सियानकेँ हँसी-लगैत तहिना प्रोफेसर शम्भुकेँ हँसी लगलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे

अपनो पैछला कएल काज मन पड़ने तँ से होइए। एकाएक मुँह बन्न भऽ गेलैन। आने-आन पुरुख जकाँ अपन पुरुषत्व देखबैत प्रोफेसर शम्भु बजला-

“आइ धरि, अखन धरि कहियो हमरा मुहसँ फुटल जे हम न्यायालयसँ दण्डित भेल जिनगी जीब रहल छी? कियो एको दिन पुछाड़ियो करए आएल जे केना जीबै छी? समाजमे जाधैर बुढ़-बुढ़ानुसक पूछ नै हएत ताधैर समाजक पैछला पीढ़ी नाँगैर पकैड़ वैतरणी पार केना हएत। हँ ई जरूर जे साँपकेँ डोरी नै कही, मुदा विचार तँ हेबाके चाही किने।”

घरमे चौंकल बरतनक ढनमनी जकाँ कुमुदनी ढनमनाइत बजली-

“जखन अहाँ दुनियाँक नजैरमे दण्डित छी तखन..?”

पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ प्रोफेसर शम्भु बजला-

“अखन धरि तँ छिपेने रहलौं जे अपन दोख अहाँकेँ किए दी।”

पतिक बेथासँ बेथित कुमुदनी बजली-

“कनी फरिछा कऽ कहू?”

“सेवा-निवृत्त होइसँ छह मास पहिने प्रिंसिपल बनौल गेलौं। कौलेजक भार बढ़ल। परीक्षा विभाग सेहो छइ। सुननहि हेबे जे केते हो-हल्ला भेल। मामला न्यायालय चलि गेल। गोल-माल जरूर भेल रहइ, जानकारीमे नै रहए। मुदा तैयो जवाबदेहक रूपमे फँसलौं।”

कुमुदनी-

“अहाँक किछु दोष नै रहए?”

प्रोफेसर शम्भु-

“एकदम नहि।”

कुमुदनी-

“फैसला केना भेल?”

प्रोफेसर शम्भु-

“सेवा निवृत्त लग देख न्यायालय दोषी बना छोड़ि देलक।”

कुमुदनी-

“आ हुनका सभकेँ?”

प्रोफेसर शम्भु-

“कमो दोखबला बेसी सजा पौलक आ बेसियो दोखबला कम सजा पौलक।”

तैपर कुमुदनी पुछलखिन-

“एना किए भेल?”

प्रोफेसर शम्भु बजला-

“जँ पहिने बुझितौं तँ ऐ भीर जेबो ने करितौं, मुदा से नै भेल। जाधैर लिखित-मौखिक रूपमे बेवस्था चलत ताधैर अहिना हएत।”

◌

शब्द संख्या : 1311

पनियाहा दूध

आँगन बहारि, बाढ़ैन धोइ कऽ पछबरिया दावा लगा रखि सुनयना दरबज्जा दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे मास्टर साहैब (पति) भरिसक सुतले छैथ, उठा देब उचित हएत मुदा मन ठमैक गेलैन। ठमैकते मन कहलकैन-

‘आठमे दिन गाम आएल रहैथ तँ चारि बजे भोरेसँ हरविर्रो केने रहै छला जे घरमे कोढ़ियाक बाढ़ि आबि गेल अछि, जे काजक बेरमे सूतल रहत ओकरा कहियो भाभन्स हेतइ? मुदा आठे दिनक दूरीमे एना किए देखै छी?’

फेर मन घुमि कहलकैन-

‘उमेरोक दोख होइ छइ। ओना सठिया तँ गेले छैथ।’

तत्-मत् करैत सुनयना दरबज्जा-आँगनक बीच ठकुआ कऽ ठाढ़ भऽ गेली, ने आगू डेग उठैत रहैन आ ने पाछूए ससरैत रहैन।

ओना जीवानन्दक नीन समैपर टुटि गेल छल, एक तँ ओहुना उमेर बढ़ने खूनो पनियाए लगै छै आ नीनो पतराए जाइ छइ। जे जीवानन्दोकेँ भेले रहैन, नीन टुटिते मनमे उठलैन जे उठिए कऽ की करब? काजे कोन अछि जे तइ पाछू लागब। आँखि बन्न केने सोचैत रहैथ।

जहिना चिन्तक चिन्तनक अवस्थामे निष्तेज भऽ जाइत तहिना जीवानन्द बिछौनपर निष्तेज छला। ओना आँखियो खुजैक आ बन्न होइक ढेरो कारण अछि मुदा हुनका से नहि रहैन। मनमे केतेको रंगक विचार टकराइत रहैन, तँए ऐगला रस्ता देखैमे एक-दिसाह भऽ गेल छला। आलमारीक किताब जकाँ रंग-रंगक विषय एकेठाम सैंतल रहैन, असल विचार परिवारमे गड़ल रहैन। मुदा परिवारसँ पहिने जे अपनापर नजैर पड़लैन तँ तेतइ गड़ि गेला। सेवा-निवृत्त भऽ गेलौं, जीवैक उपाय भलेँ जे हुअए मुदा काज तँ हेरा गेल! आब काजे की अछि जइ अनमेनामे समए गूदस करब? जखन काजे हेरा गेल तखन जिनगी केना चलत? जँ जिनगीए नइ चलत तँ जीवित-मृत्युमे अन्तरे की भेल?

ई सभ बात जीवानन्द बाबूक मनपर लधले रहैन तैबीच दोसर उठि गेलैन जे करबो केकरा लेल करब? पैछला कियो छैथे नहि, ऐगलो उड़िए गेल। बीचमे अपनाकेँ पाबि मन दहैल गेलैन। सेवा-निवृत्तिक तँ एक अर्थ ईहो होएत ने जे काज करै-जोकर नै रहलौं?

फेर मन ओझरा गेलैन। ‘अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा’क पइर भऽ गेल! काजो तँ दू रंगक होइत अछि, एक शरीरक शक्तिसँ कएल जाइत अछि दोसर वौद्धिक शक्तिसँ। हम तँ शरीरक शक्तिसँ नै वौद्धिक शक्तिसँ करै छेलौं तखन किए नै करैबला रहलौं? आमक आँठी जहिना कोइलीसँ धीरे-धीरे सक्कत बनि सृजन शक्ति प्राप्त करैए, से कहाँ भेल? जँ वौद्धिक शक्तिकेँ शरीरक शक्तिक सीमांकन कएल जाएत तँ केहेन हएत? खाएर जे हौउ, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए। मुदा सेहो तँ नै भऽ रहल अछि। जे ठनका शरीरकेँ के कहए जे घरो-दुआर आ गाछो-बिरीछकेँ तोड़ि-फाड़ि दइए ओइ ठनकाकेँ हाथ केतेकाल बँचा सकैए?

जीवानन्द बाबूक मन फेर ठमैक गेलैन। मुइल धार जकाँ परिवारो भऽ गेल अछि, की हमरा बँचौने बँचत? बँचबो केना करत, ने पैछला घुमि औता आ ने ऐगला आबए चाहत। लऽ दऽ कऽ दू परानी भेलौं, तहूमे तेहेन पाकल आम जकाँ भऽ गेल छी जे कखन तुबि खसब तेकर कोन ठेकान...। खाएर जे हौउ, जाबे आँखि तकै छी ताबे तँ जीबए पड़त आ जाबे जीब ताबे जीबैक उपाय सेहो करैये पड़त। अपने जीने जिनगी आ अपने मुइने मृत्यु..!

गुन-धुनमे पड़ल जीवानन्दक मन समाज दिस बढ़लैन। समाजे लेल की केलिऐ जे हमरा लेल करत। जहिना देवस्थान दस गोरेक सहयोगसँ ठाढ़ो होइत आ चलबो करैत तहिना तँ समाजो अछि, मुदा से तँ किछु ने केलिऐ..! थकथकाएल मन कहलकैन-

“की ओछाइने धेने रहब आकि उठबो करब?”

मुदा लगले दोसर मन कहलकैन-

“उठिए कऽ की करब?”

मन आगू बढ़ि शिक्षक समाज दिस बढ़लैन। सेवा-निवृत्ति तँ सभ होइ छैथ, मुदा, की हमरे जकाँ सभकेँ हेतैन? भलेँ सभकेँ होनि वा नइ होनि मुदा किछु गोरेकेँ तँ हेबे करतैन। जखन सबहक जिनगी एक वृत्तमे बीतल तखन किए सभकेँ सभ रंग हेतैन? परिवारो आ समाजो तँ सबहक सभ रंग छैन। से तँ छैन्हे। दिनानाथ बाबूकेँ देखै छिऐन जे सेवा-निवृत्तिक उपरान्तो विद्यालय छोड़ि नै रहलैन अछि। जखन कि सुखदेव बाबू सेवा-निवृत्ति होइसँ तीन बर्ख पहिनहि जे ओछाइन धेलैन से अखनो धेनहि छैथ। परिवारमे जँ केकरो किछु अढ़बै छथिन तँ मुँह दुसि कहै छैन जे भरि दिन कौआ जकाँ कॉउ-कॉउ करैत रहै छैथ। मनुखकेँ जँ कौआ मानि लेल जाए तँ बोलकेँ की कहबै?

जीवानन्दक मन आरो घुरिया गेलैन। फेर मनमे उठलैन जे अनेरे

औनाइ छी। जेतबे रहए तेतबे टाँग पसारी नै तँ पओल जाएब। सुतले-सूतल पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन-

“कनी एमहर आउ?”

आँगन-दरबज्जाक बीच ठाढ़ सुनयना पतिक हाक सुनिते डेग आगू डेग बढ़ौलैन। केबाड़ लग आबि हिया-हिया देखए लगली। पहिलुका माने सेवा-निवृत्तिसँ पूर्वक अपेक्षा पतिक रूप बदलल-बदलल बुझि पड़लैन। मन कहलकैन- एना केना भेलैन, अखन धरि तँ किछु कहबो ने केलैन, तखन किए पानि उतरल बुझि पड़ै छैन?

केबाड़क एकटा पट्टा खोलि देने रहथिन आ दोसर ओहिना लागल रहइ। तही बीच जीवानन्दक मनमे उठलैन जे जाबे नोकरी करै छेलौं ताबे बाहरसँ कमा कऽ आनि पत्नीक हाथमे दइ छेलिऐन, आ अपने अपनाकेँ गारजन बुझै छेलौं, से तँ आब नै हएत! जँ से नै हएत तँ परिवार आगू मुहेँ केना ससरत? पाहुन जकाँ आठ दिनपर अबै छेलौं आ कमासुत बनि जाइ छेलौं।

पतिक बदलल रूप देख सुनयनाक मनमे उठलैन जे अखन धरि किछु करबो ने केलैन हेन आ तरे-तर फटि रहल छैथ..!

नवकवरियाक चुटकीक अवाज जकाँ सुनयनाक आगमन बुझितो जीवानन्दकेँ उठैक हूबा देहमे नै रहलैन। मनोक बोझ तँ माथकेँ ओहिना भरिया दैत जहिना कोनो वस्तुक बोझ भरियबैत।

जीवानन्दक मनकेँ जिनगीक बोझ ऐ रूपे दबने जेना सवारी कसल घोड़ा वा खलीफा होइत। भरियाएल मनमे उठलैन- जाबे धरि बाहरसँ कमा घर अनै छेलौं, जइ बले परिवार ससरै छल ओ तँ टुटि गेल! ओहीपर ने अपनो आ घरो-परिवारक छहर-महर छल। मुदा से नइ भेने तँ ओहिना भऽ जाइ छै जहिना माटिक बनल रस्ताकेँ पानिक धार काटि अवरूद्ध कऽ दइ छइ। की कमाइएपर गारजनी छल?

पत्नीए-केँ की सुख हमरासँ भेलैन? घर-गिरहस्ती सम्हारैमे दिन-राति एकबट्ट केने रहै छैथ। एक तँ मिथिलांचलक किसान परिवारक अजीव गढ़ैन अछि, जैठाम एलापर देवियो-देवता भोथिया गेला। सौंसे जनकपुरमे जनकेक दरवार जकाँ बुझि पड़लैन? नान्हिटा बात थोड़े छी? जैठाम गाम-गाम व्यास भागवत बचै छैथ, गाम-गाम कीर्तन-भजन, भोज-भनडारा होइत रहैए, तैठाम समाज विपरीत दिशामे बहि गेल, मुदा देखलैन कियो ने। दरबज्जाक सौभाग्य छल नीक-नीक बात-विचार करब, तैठाम दरबज्जा टुटि आँगन घरक कोठरी बनि गेल अछि! जैठाम कम-सँ-कम लोकक पैठ रहैत, जैठाम आनक सुख-दुख सुनैक आ सुख-दुखक दबाइ बुझैक अवसर नै भेटैत, तैठाम पति-पत्नीक सम्बन्धक आधार की बनि सकैए। देखा-देखीक दुनियाँमे चिन्ता–चिन्तन किए रहत। जँ से नै रहत तँ मनक सुखक दिशाक धारा किए ने बदलत। जीवित-मृत्युक निर्णए के करत? केना हएत? कोनो मुसरा गाछ होइ आकि लतियाएल लत्तीक होइ, ओकर बाढ़ि ताधैर समीचीन होइत जाधैर ओकरा अनुकूल वातावरण भेटैत रहैत। ओना, लाखो किड़ी-मकौड़ी कोमल-किसलयकेँ नष्ट करैबला अछि मुदा प्रकृतोक तँ गजब गढ़ैन अछि, एक-दोसरकेँ नष्ट करैबला सेहो मौजूद अछि। बिनु मुँहक गाछ वा लत्तीक दशा तँ ओहने होइ छै जेहने साँपक मुँह थकुचेला पछाइत होइ छइ।

जीवानन्दकेँ एहसास भेलैन जे हमरापर नहि, पत्नीपर घर-ठाढ़ अछि। जँए घर ठाढ़ अछि तँए समाजक परिवार कहबैक लाली अछि। मुदा समाज तँ ओहिना नइ केकरो महत दैत, सेवाक अनुकूल केकरो महत दैत अछि। से हमरासँ की भेलइ? जखन किछु ने भेलै तखन केते महत हेबा चाही? मुदा जेकरा घर-परिवार आ गाम बुझै छी, तेकरा छोड़िए केना देब? मुदा ई प्रश्न तँ गामक छी, अपन नहि। परिवारमे जे छहर-महर भेल ओइमे हमरा कमाइसँ की भेल। यएह ने भेल जे

बेटीक बिआह केलौं, बेटाकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं आ अन्तिम अवस्थामे अपन घर बनेलौं। मुदा बेटीक बिआह, पढ़ाइ-लिखाइ एते भारी किए अछि जे जिनगी भरिक कमाइसँ लोककेँ पारो ने लगै छइ। जँ एतबेमे सभ ओझरा जाएत तँ समाजक गति केहेन हएत? जँ समाज दुरगैतक चालि पकैड़ चलत तँ मनुखक पैदाइस केहेन हएत। जैठामक जेहेन मनुख तैठाम तेहने दुनियाँ...।

करोट फेरते जीवानन्दक मनमे उठलैन जे हारि मानी झगड़ा फड़ियए। पत्नीसँ क्षमा माँगि लेब। जँ से नइ माँगब तँ हुनकर विचार छिऐन जे घरमे रहए दैथ वा नहि। समाजक संग तँ वएह रहली। पत्नीक प्रति जे प्रेम हेबा चाही से कहाँ कहियो भेल। क्षण-पलक सम्बन्ध रहल, जीवन-लीलाक सम्बन्ध कहाँ रहल! हुनकर दुनियाँ हमरासँ भिन्न रहलैन। मुदा आइ तँ ओही दुनियाँक जरूरत हमरो भऽ गेल अछि। खण्ड विकसित देशमे जहिना जनता-सरकारक बीच सम्बन्ध रहैत, तहिना ने भऽ गेल अछि। जेना पति रूपमे ओ सेवा केलैन तेना हम कहाँ केलिऐन। जँ से करितिऐन तँ ओ ओहिना ओत्तै अँटकल रहितैथ, जेतए नामो-गाम नै सीखि पेली। जतबो समए गाममे बितेलौं, हुनकर कमाइ खेलौं, तेतबो तँ हुनका नै कऽ सकलयैन। एतबे नहि, दरबज्जापर जे माल अछि, आ हुनका[3] देख भूख-पियास कहए लगै छैन मुदा हमरा देख घिरनी जकाँ नाचि भगबए चाहैए। अठबारैयो जँ अबैत रहलौं तैयो तँ अपन बुझि खाइ-पीबैले किछु ने केलिऐ! कोनो कि मनुख छी जे घड़ी-मोबाइल देख मिनट-सेकेण्ड बुझत, ओकरा लेल तँ अठबारैयो सटले-दिन भेल। तहिना तँ गाछियो-बिरछीक अछि। जुड़शीतल दिनसँ ओकरा जलढार हेबा चाही से अनका तँ कहलिऐ, मुदा अपना...। किए ओ अपन बुझत?

[3] पत्नी

जहिना सासुरमे जमाए सासु-ससुरक आगू लाड़-झाड़ करैत जे ई नै अछि तँ ओ नै अछि, तहिना जीवानन्द ओछाइनसँ उठि, बैसैत पत्नी दिस देख बजला- “एते दिनक जिनगीमे कहियो निठुर दूध नै खेलौं। आब अहाँक दरबारमे छी, जेना राखी।”

पतिक बात सुनि सुनयना विह्वल भऽ गेली। अपन कर्तव्यक बोध भेलैन। मन कहलकैन- पतिक सेवा पत्नीक पहिल दायित्व छी। मुदा लटारम करैत सुनयना बजली-

“एना संस्कृतमे नै कहू, भखियौटीमे कहू जे की कहै छी?”

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन हेरा गेलैन। जैठाम सुग्गा-मेना संस्कृत-पाठ करै छल तैठाम मनुखक दूरी एते किए भेल? प्रश्नमे ओझराइते जीवानन्दकेँ बुकौर लगि गेलैन। बोली नै फुटलैन।

आजुक शिक्षक जकाँ जीवानन्दक जिनगी नै रहलैन। शिक्षक समाजक प्रति समरपित छला। ओइ समाजक बीच पढ़ाइ-लिखाइ प्रतिष्ठाक मूल बिन्दु छल। ओ सभ मानै छैथ जे जइ विषयक जरूरत विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़बाक होइ छै ओइ विषयक पढ़ाइमे कमी छइ। विद्यार्थी लेल किछु सहज विषय होइत अछि किछु कठिन। मुदा जइ विषयक जे शिक्षक होइ छैथ हुनका लेल तँ ई समस्या नै भेल। जँ हुनकामे शिक्षणकलाक पूर्णता हेतैन तँ विद्यार्थीकेँ किए समस्या ग्रस्त रहए देथिन। की वजह छै जे अपना ऐठाम अदौसँ लऽ कऽ अखन धरि शिक्षण-संस्थानमे छड़ीक चलैन नै रहल] मुदा तँए कि कियो पढ़ि-लिखि विद्वान नै भेला? भेला।

जइ हाइ स्कूलमे जीवानन्द शिक्षण कार्य करै छला ओइ विद्यालयकेँ अपन छात्रावास सेहो छइ। जइमे पचाससँ ऊपर छात्रो आ अदहासँ बेसी शिक्षको रहैत। मेसमे भोजन जएह विद्यार्थी लेल सहए शिक्षको लेल बनैत। ओना, शिक्षक सभ अलगसँ दूध कीनि

रातिमे सुतै बेर पीबैथ।

जहिना बाटमे हेराएल बटोही दोसरकेँ पुछैत, मुदा उत्तर देनिहारो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। कियो एहनो होइत जे अपने हरेबाक चर्च करैत, तँ कियो हेराएलकेँ आरो हेराएल बाट देखा दैत, आ कियो एहनो होइत जे कहैत जे संगे चलू। ओ ऐ आशाक संग चलैक बात कहैत जे जँ किछु नै कहबै तँ गोंग कहत, मुदा बिनु बुझलमे की जवाबो देल जा सकैए। ओ संग केने ताधैर चलैत रहैए जाधैर आँखिगर नै भेट जाइ छइ। तहिना अर्द्धांगिनी रूपमे सुनयना पुछलखिन-

"की सुच्चा दूध कहलिऐ?"

जीवानन्द बजला-

"पैंतीस सालक नोकरीमे कहियो सुच्चा दूध नहि पीब सकलौं। पीलौं जरूर मुदा ओकरा अदहासँ बेसी थोड़े कहल जेतइ।"

जहिना मृत्तासनपर चढ़ल राहीकेँ सर-समाजसँ लऽ कऽ आ कुटुम-परिवारक लोक आबि-आबि जिज्ञासा करैत जे 'भैया', कि 'काका', आकि 'बाबा' कथी खाइ-पीबैक मन होइए, तहिना सुनयना पुछलखिन-

"एते दिन जेतए अहाँ छेलौं छेलौं आ हम छेलौं छेलौं। मुदा आब तँ ओत्तै अहूँ रहब जेतए हम छी।"

पत्नीक विचारक गाम्भीर्यसँ जीवानन्द आँखि पड़ल अजगर साँपक सोझसँ पड़ा नहि पाबि, बजला-

"कहलौं तँ बेस बात मुदा मनुख तँ मनुखक बीच किछु बन्धन निर्धारित कऽ रहैत अछि। डोरी-पगहाक जरूरत तँ पशु लेल होएत, मुदा बान्ह तँ एकमुड़िया नै भऽ सकैए। ओकरा लेल तँ जाधैर दू-मुड़िया नै लटपटौल जाएत, ताधैर गीरह केना पड़तै। जाधैर

कुशियारक गाछ जकाँ गीरह नै बनत ताधैर रस-जल केना समटाएल रहत?"

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जिनगीक ओझरी देखए लगला जे ई बन्धन छुटल कहिया। तरसैत मन पत्नीक करेजमे पहुँचलैन। जहिना निशाँएल लोक अपने अड़-दड़ बजैत तहिना जीवानन्द बाजए लगला-

"कामिनी, सेविकाक रूप छोड़ि संगी कहिया बुझलयैन। ई दोख केकर? मुदा दोख तँ दुनू दिस देखए पड़त। पत्नी कोन रूप देखलैन। सभ दिन ओ पति बुझि सेवा करैत एली। कहियो किछु नै मंगलैन। अपन परिवारक स्तर बुझि अपनाकेँ सम्हारि रखली।"

बड़बड़ाइत पतिकेँ देख सुनयना बजली-

"हारि मानी झगड़ा फरियाए। एके बेर बाजि जाउ जे जे हूसल से हेराएल, जे जीबए से खेलए फॉगु।"

मरैत रोगी जकाँ जीवानन्द बजला-

"सुच्चा दूध आबो नै पीब सकै छी?"

"पीब सकै छी। जखन गाए पोसैक लूरि अछि तखन किए ने पीब सकै छी। मुदा जैठाम दिन-राति लूटनिहार लूटि रहल अछि तैठाम थनक दूध कण्ठ लग पहुँचत कि नहि, तेकर कोन बिसवास?"

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जी-जी कऽ उठला। बिसरल बात मन पड़लापर जहिना ओकर रूपो-रेखा सोझमे आबए लगैत तहिना भेलैन। बजला-

"शुद्ध-अशुद्ध दूध ने एक परिवारक समस्या छी आ ने एक गामक। दूधमे पानि देब चलैन भऽ गेल अछि। ओना जे अपने गाए-महींस पोसि दूध खाइ छैथ, तिनकर संख्या कम अछि। जे बेचनिहार छैथ ओ दूध बेचि चाउर-दालि, तरकारी इत्यादि कीनै छैथ। खाली

दूधेटामे पानि नै देखै छथिन। आनो-आनो तहिना अछि, तखन कएल की जाए। कुल-मिला कऽ देखलापर यएह ने देखा रहल अछि जे ताड़ी पीयाक, गांजा पीयाककेँ गारि पढ़ि कहैत जे फोकटिया अछि। अहिना एक-दोसरमे सटल सम्बन्ध अछि। सभकेँ सभ गारि पढ़ैए आ सबहक सभ सुनैए। तहूसँ टपि अपने मुहेँ गरिया अपने सेहो सुनैए।"

विह्वल होइत सुनयना टोकलकैन-

"तखन उपाय?"

"उपाय एतबे जे जेते परिवारमे खर्च हएत कम-सँ-कम ओतबो उपारजन कऽ लेब तखन परिवारक पार लगि जाएत। तहिना गाममे जेतेक खर्च अछि ओते जँ गौआँ मिलि उपारजन कऽ लेता तँ गामोक पार लगि जाएत। जइसँ समाजेक कल्याण नहि, देशक कल्याण सेहो हएत।"

◌

शब्द संख्या : 2152

कर्ज

जमीन निलामीक नोटिश पाबि बरिसलालक सभ आशा ओहिना झड़ए लगल जहिना वसन्तसँ पूर्व गाछक पतझड़ होइत वा फलसँ पहिने फूल झड़ए लगैत। हलसैत जिनगीक आशा देख बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलक। मुदा समैपर कर्ज अदा नै कए सकल, जइले कर्ज लेलक सएह हाथसँ निकलैत देख सोगसँ सोगाएल अखड़े चौकीपर पेटकान दऽ मने-मन सोचैत जे की करैत की भेल। सौनक मेघ जकाँ बरिसलालक दुनू आँखिमे नोर भरि गेल।

बीसम शताब्दीक आठम दशकमे हरित-क्रान्तिक हवा घुसकैत-घुसकैत गाम धरि पहुँचल। नव हवाक सुगन्ध नाके-नाकसँ लऽ कऽ खेतो-खरिहाँनमे पहुँचल। गामक किसानक सीमांकन शुरू भेल। ओना सीमांकन नाम-मात्रेक भेल मुदा भेल तँ। नाम-मात्र ऐ लेल जे सैद्धान्तिक रूपमे तँ सीमांकनक रूप रेखा तैयार भेल, मुदा जमीनक ओझरी कँटहा बाँस जकाँ ओझराएल छल। जइमे कड़चीसँ बेसी काँट। एक-एक कड़चीमे साइयो काँट। सोरगर-मोटगर पाकल देख भलेँ आरीसँ जड़ि काटि दियौ मुदा झोंझसँ निकालब असान नहि। जइसँ बेवहारिक पक्ष कमजोर पड़ल। चारि श्रेणीक अन्तर्गत किसानकेँ रखल गेलैन। अढ़ाइ एकड़सँ निच्चाँ एक श्रेणी, चारि एकड़सँ निच्चाँ दोसर श्रेणी, दससँ निच्चाँ तेसर आ तइसँ ऊपर चारिम

श्रेणी। निचला किसान लेल सरकारी खजाना खुजल। रंग-रंगक प्रोत्साहनक घोषणा भेल। सरकारी घोषणा, तँए सभले भेल जे बैंकक माध्यमसँ बोरिंग-दमकल भेटत।

मुदा जइ माध्यमसँ बोरिंग-दमकल भेटत सएह नगण्य। एक दिस फौज जकाँ किसान तँ दोसर दिस जैठामसँ भेटत सएह नहि। मुदा तैयो गोटि-पँगरा तँ छेलैहे। सरकारी सुविधा सब्सिडीक रूपमे भेटत। तेकर कार्यालय भिन्न बनल।

किसानक बीच प्रोत्साहनक घोषणासँ नव जागरणक संचार भेल। गाम-गाममे भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ काजक सूत्र तैयार भेल। आने किसान जकाँ बरिसलालोक डेग बढ़ल। एक-तिहाइ सब्सिडी सुनि बढ़बो केना ने करैत। जखने किसानक हाथ पानि औत तखने चौमसिया खेती बारहमसिया बनि जाएत। जखने बारहमसिया बनत तखने ने किसान डारि-डारि झूला लगा बरहमासा गौत। जँ से नहि, तँ छहमासे, चौमासा ने गबैत रहत। जे चौमास किसानक बखारी छी, तेहीमे ने भाँग-धुथुर उपजैए।

वस्तुगत काज तँ नहि, मुदा चौरीसँ चौमास धरिक, चारि गुणा उपजाक नक्शा तँ किसानक मनमे बनबे कएल। बीघा-एकड़क हिसाब भलेँ अखनो धरि नै फरियाएल मुदा-एकड़-हेक्टेयर तँ आबिए गेल अछि। किछु एनए आ किछु ओनए करैत किसान अपन हिसाब तँ बैसाइए लेलक।

अखन धरिक जे छोट आ मध्यम किसान महाजनीक कर्जमे डुमल छल ओइमे पूजीपतिक प्रवेशक दुआर खुजल। कम सुदिक बात तँ आएल, मुदा छह मासक पछाइत सुदि-मुरि बनि जाएत से एबे ने कएल। अखन धरि जे सुदिक सुदक प्रथा नै छल सेहो आएल। भलेँ केतौ महाजन सप्पत खा केकरो घराड़ी लऽ नेने होइ आकि केतौ

सप्पत खा कर्जा डुमा देने होइ, ई अलग बात। औझुका जकाँ दहेजो ओते भारी नै छल जेते माए-बापक सराध। ओना दहेजोक जड़ि मजगूत बनि रहल छल, किएक तँ शहरक आमदनी गाम दिस आबए लगल छल। गाममे छोट पैघ किसानोक संख्या बेसी, मुदा बोनिहारक संख्यासँ कम अछि। ओना सभ गामक रूपो-रेखा एक रंग नहियेँ अछि। कोनो गाम एहेन अछि जइमे पाँच प्रतिशतसँ कम जनसंख्या गामक नबे-पनचानबे प्रतिशत जमीन पकड़ने अछि, तँ कोनो गाम एहेनो अछि जइमे दस-पनरह प्रतिशतक अन्तर छइ। ओना, एहनो किसान छैथे जिनका अपन जमीनक अता-पता नै बुझल तँ एहनो किसान जे अपने सबतूर मिलि खेती करै छैथ। तैसंग एहनो ऐछे जे खेतक आड़िपर पहुँच जूति-भाँति तँ लगबैत अछि मुदा अपने हाथे किछु नै करैए।

गाछी, खरहोरि, बँसवाड़ि आ घराड़ी लगा बरिसलालकेँ पाँच बीघा जमीन अछि। जइमे दू बीघा बेख-बुनियादिमे फँसल छै, बाँकी तीन बीघा जोतसीम। एकटा बरद राखि सफटैती कऽ खेती करैत अछि। ओहू तीन बीघा जोतसीममे तीन मेलक जमीन छइ। पनरह कट्ठा चौरीमे छै, जेकर मलगुजारीक संग लगतो साले-साल डुमि जाइ छइ। मुदा छोड़ियो केना देत, आखिर खेत तँ खेत छी। रौदी भेने ओहीमे ने उपजा होइ छइ। बाँकी सवा दू बीघा मध्यमसँ भीठ धरिक जमीन छइ। दसो कट्ठा भीठमे मरूआ, भदै आ गदैरक संग कुरथी-तेबखा होइ छइ।

गहुमक खेती तँ आबि गेल मुदा तइले तँ पानि चाही। पानिक साधन मात्र पोखैर अछि, जइमे करीन लगा किछु अगल-बगलक खेतक पटबन लोक करैए। लोकक बीच ने पढ़बै-लिखबैक जिज्ञासा रहै आ ने सुविधा। गनल-गूथल विद्यालय-महाविद्यालय। बरिसलालो दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा खेतीए-वाड़ीमे लगौने....।

मिथिलाक किसान खेतक ओहन प्रेमी बनल रहला जेहेन पतिव्रता नारी जे बाल विधवा होइतो प्रतिष्ठाकेँ कमलक माला बना गरदेनमे लटका हँसि रहली अछि। जँ से नै रहल छैथ तँ भागि-पड़ा अर्थशास्त्री बनि किए अपन खेत-पथारकेँ सम्पैत नै बुझि प्रतिष्ठाक वस्तु बुझि रहल छैथ? की ओहिना खेतीकेँ उत्तम आ नोकरीकेँ मध्यमक विचार देलैन? जँ एकरा मुहावरा-कहावत बना देखब तँ मिथिलाक चिन्तनधारा धरि नै पहुँच पाएब। जैठाम खेतकेँ अपन अधिकारक वस्तु बुझि अपना हाथक हथियार बना अपन स्वतंत्रताकेँ अक्षुण्य रखैक विचार सेहो देलैन। ई तँ अपन-अपन विचार होइ छै जे कियो हथियारकेँ बम-बारूद बुझैत तँ कियो हाथक यार बुझि विचारक बाट बनबैक विचार व्यक्त करैत। तहिना अस्त्र–शस्त्र सेहो अछि।

मध्यम किसान वा लघु किसानक जीबैक जिनगी ब्लौटिंग पेपर सदृश बनि गेल छैन। जेकरामे लालो आ कारियो रोशनाइकेँ सोंखैक शक्ति छै। बाढ़ि-रौदी एकैसम शताब्दीक ऊपज नहि, अदौसँ रहल अछि। भलेँ कहि सकै छी जे धार-धुरक बान्ह-छान्ह दुआरे हुअ लगल अछि, भऽ सकै छै, केतौ-होइत हेतै, मुदा प्रश्न धारेक पानिक नहि अछि, तहिना रौदियो रहल अछि। धारोक कटनी-खोंटनी कम नहि अछि। मिथिलांचलकेँ कोसी-कमला तेखार कऽ देने अछि। प्रश्न अछि बाढ़िक जड़ि। पहाड़ी धार छी, जे दुब्बरसँ धोधिगर धरि अछि। पानिक एक साधन भेल, दोसर बरखा भेल। ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जे पनरह-पनरह दिनक ओरियान पहिनहिसँ कऽ कऽ पूर्वज रखै छला। हथिया मात्र एक नहि जेकरा बरखा ऋतुक अन्तिम नक्षत्र कहि टारि देब। पनरह-पनरह दिन लधले रहै छल। ओना, बरखाक कोनो ठेकान नहि, माघोमे पाथर खसि उपजल उपजाकेँ नास करैत रहल अछि। अन्तिमक जन्म ताधैर नै होइत जाधैर आदि नै होइत, बरखा ऋतुक आदि आद्रा छी। तँए 'आदि आद्रा

अन्त हस्त' ई भेल बरखाक आँट-पेट। पूर्वज सभ स्पष्ट विचार देने छैथ जे बरखाक कोनो बिसवास नहि जे केते हएत। 1971 ई.मे बंगला देशक लड़ाइक लगभग सालो भरि बरखा होइते रहल, ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जइमे साएक-साए घर खसैत रहल अछि। घरमे दबल बाल-वृद्ध, माल-जाल, धन-सम्पैत इत्यादि नष्ट होइत रहल अछि मुदा तैयो ब्लौटिंग पेपर जकाँ सभ किछुकेँ सोंखि ऐठामक किसान जीबैक बाट धेने आबि रहल अछि। दुनियाँमे ने साधकक कमी अछि आ ने साधना भूमिक, मुदा मिथिलांचल श्रेष्ठ किए? केतौ जाड़क साधना तँ केतौ तापक तप तपि तपस्या करैत, तँ केतौ पानिक तपस्या सौभरी ऋषि बनि करैत। मुदा तैयो मिथिलांचल साधनाक फुलवाड़ी लगा रखने अछि जइ फुलवाड़ीक फूल मैथिलानी सीता सजबैत रहली अछि। ने मिथिलाक भूमि बदलल, आ ने बदलल ऋतु ऋतुराज, बदैल रहल अछि खाली बोतलक रस। घरक समस्या कहाँ? समस्या तँ तखन उठैत जखन रहैक घरसँ घर-भाड़ा असुलैक विचार जगैत। गाछक निच्चाँ सात हाथ, नौ हाथक घरमे जीवन-यापन कऽ वेद-पुराण सिरजलैन। की दुनियाँक देखनिहार मिथिलांचल छोड़ि देख रहला अछि? जँ से नहि तँ समस्याकेँ कोन रूपे देखलैन? यएह ने सरकारी योजना जहिना कागतपर औषधालय बना साले-साल मरम्मतक नाओंपर योजना लूटाइत रहह आ पान सालक बाद माटिपर खसा मलबा हटबैक खर्च होइत रहह।

खेतसँ उपजल खढ़, बाँस आ साबेक घर बना समस्याक समाधान करै छला। ओ सभ अपन विचारकेँ स्वतंत्र रखि स्वतंत्र जीवन बेतित करै छला। पढ़ै-लिखैक ओते समस्या नहि, किएक तँ जेहेन जिनगी रहत, तेतबे बुधिक ने जरूरत हएत। बेसी भेलासँ तँ लोक छड़ैप-छड़ैप अनको गाछक आम तोड़ए लगैए। भलेँ अपन पूर्वजक घराड़ीपर नढ़िया किए ने भुकए, मुदा दुनियाँकेँ मातृभूमि कहि

सेवारत् रहै छी। ओही रूपक फूसिघर बना जिनगीक गारंटी केने छला। अखुनका जकाँ नहि, जे एक दिस लग्गी लगा भाँटा तोड़ैक बाट धेने छी आ दोसर दिस हजार-दस-हजार बर्ख जीबैबला ऋषि-मुनिक दुहाइ दइ छी। एकैसम सदीमे कियो अपनाकेँ ऐगला पीढ़ीक नजैरक पुतली बना रहल छी। जहिना बरखा, तहिना जाड़ आ तहिना रौदक ताप तपैत लोक अपन बाल जीवनसँ लऽ कऽ वृद्ध तकक अनुभव करैत जिनगीकेँ असथिर बना नीक-नीक उमेर पबैत रहला अछि।

प्रश्न उठैत जे की एहेन विचार मरि गेल आकि जीवित अछि? ने मरल आ ने स्वस्थ भऽ जीवित अछि। गाम-समाजमे लटपटाइत जीवित जरूर अछि मुदा...। जीवित ऐ रूपे अछि जे अखनो खेतीकेँ उत्तम मानल जाइत अछि। कृषि जिनगीकेँ थाहि चलबैए। तहूमे समाजिक स्तरपर तँ आरो थाहल अछि। जइ जिनगीमे दोसराक जरूरत नै हुअए तँ ऐ सँ नीक जीवन केकरा कहबै? आजुक हवा भलेँ जेतेक जोर मारए मुदा असथिर वस्तुकेँ कहाँ किछु बिगाड़ि पबैए। अनभुआर धारमे ने नमहर-नमहर जलचरक भय रहै छै किएक तँ धुमैत धार गहींर-गहींर मोइन फोरि लइए जइमे ने डुमैक डर रहै छै, जँ से नहि, तँ डुमैक डर केतए। तहिना ने धरतियोक बीच अछि। जहिना पानिमे गोहि, नकार आदि रहैए तहिना ने धरतियोपर बाघ, सिंहसँ लऽ कऽ नाग सेहो बास करैए।

..थाहल जिनगीक अर्थ ई जे जँ तीन बीघा वा दू बीघा जमीनमे समुचित बेवस्था कऽ खेती कएल जाए तँ युगानुकूल मनुख बनब बड़ भारी नहि। जिनगी तखन भारी बनैए जखन गरथाहमे पड़ि जाइत अछि। ओना, किसानक जिनगीकेँ पंगु बना देल गेल अछि। जँ से नहि, तँ किसान हितैषी कोन जरूरतक पूर्ति सरकारी बेवस्थामे नै भऽ पाबि सकैए। मुदा नीको-नीको परिवार माने दस बीघासँ ऊपरबला

किसान परिवार ने अपना बेटाकेँ नीक शिक्षा दऽ पाबि रहल अछि आ ने जनमारा बिमारीक इलाज कऽ पाबि रहल अछि। जहिना सुति उठि 'सीता-राम', 'राधा-कृष्ण' वा 'सतनाम'क नाम लेल जाइत तहिना ने आब 'टाटा-पापा' लैत उठै छी। मुदा, की हम सभ नढ़रा मकै सदृश जिनगी नै जीबै छी जे भोगर गाछ रहितो अन्नक केतौ पता नहि! कृषि तँ आमक बगीचा वा खीड़ाक लत्ती सदृश अछि। जहिना गाछक पल्लवक मुहसँ गिरहे-गिरहे पल्लव निकैल डारि बनैत रहैए, खीड़ा लत्तीक मुहसँ लत्ती बनि फुलाइत-फड़ैत रहैए तहिना ने जिनगियो छी जे धरतीसँ जनैम फुलाइत-फड़ैत विसरजन करत। खेत तँ ओहन सम्पैत छी जे जिनगीकेँ आगू-बढ़बैक शक्ति रखैए। केतबो शक्तिशाली किए ने आगि हुअए मुदा जँ ओइमे नव ज्वलनशील वस्तुक समागम नै हेतै, तँ केतेकाल ओ जीवित रहि सकैए। मुदा जाधैर धार टपनिहार वा सरोवरमे स्नान केनिहारकेँ पानिक थाह नै लगि जाएत, ताधैर धार टपब वा स्नान करब तँ अथाहे रहत। आ जाधैर अथाह रहत ताधैर शंका रहबे करत। जाधैर आशंका रहत ताधैर विचार प्रभावित हेबे करत। मुदा एतेकक बावजूद हम किए..? की हम नै जनै छी जे जाधैर कृषिकेँ सर्वांगिन विकासक प्रक्रियामे नै अपनौल जाएत ताधैर नचारी-सोहर केतेकाल सोहनगर हएत। हर आदमी आ हर परिवारकेँ ठाढ़ भऽ चलैक प्रश्न अछि, नै कि एक दोसराकेँ छिटकी मारि खसबैक...।

पाँचटा किसानक संग बरिसलाल सेहो बोरिंग-दमकलक विचारकेँ आगू बढ़ौलक। प्रखण्ड कार्यालयसँ फार्म लऽ बैंकमे आवेदन देलक। संगीक जरूरत तँ पड़बे केलै, किएक तँ जिनगीमे पहिल खेप प्रखण्ड कार्यालय आ बैंक पहुँचैक अवसर भेटलै। नव योजनाक काज बैंकमे आएल। ओना गामक आ गामक किसानक हिसाबे बैंकक संख्या दूधक डाढ़िए छल, मुदा छल तँ।

बरिसलालक आवेदन स्वीकृति करैत जमीनक बौन्ड बना माइनर एरिगेशनकेँ काज करैक भार देलक। बैंक-कर्जक सुदि शुरू भेल।

माइनर ऐरिगेशनक आँट-पेट छोट। एकाएक काजमे बढ़ोत्तरी भेल। ने काज करैक औजार अधिक आ ने करैबला। तँए ठीकेदारीक चलैन। तहूमे एक अनुमण्डलक बीच एकटा कार्यालय। लेनिहार हजार हाथ, देनिहार एक हाथ। मुदा तैयो बरिसलालक आदेश पत्रकेँ फाइलमे लगा देल गेल। एक-तिहाइ सब्सिडी लेल सब्सिडी कार्यालयक जरूरत रहबे करइ जे जिलाक अन्तर्गत छल।

दौड़-बरहा करैत बरिसलालकेँ खर्चक संग-संग साल बीति गेल। वरसातमे एक तँ धसना धँसैक डर दोसर लोक खेती कहिया करत। बोरिंगक काज छोड़ि बरिसलाल खेतीमे लगि गेल। पहिल साल बीतल, दोसर साल शुरू भेल। ताधैर बैंकक कर्ज चक्रवृद्धि ब्याजक दरसँ एते मोटा गेल जे सब्सिडी तहीमे उधिया गेल।

दोसर साल, शुरूहेसँ बरिसलाल अपन काजक पाछू पड़ि गेल। मुदा आइ-काल्हि करैत माइनरो-एरिगेशनक काज आ सब्सिडियो ऑफिसक काज लटकले रहलै। चढ़ैत बैसाख बरिसलाल रघुनन्दनकेँ कहलक-

"बौआ, छोड़ि दहक। बोरिंग नै भेल तँ करजो तँ नहियेँ भेल। बुझबै जे एते दिन घुमबे-फिरबे केलौं।"

बैंकक प्रक्रिया रघुनन्दनकेँ बुझल। बरिसलालक बात सुनि अवाक् भऽ गेल। मन कलैप उठलै- बाप रे, सुदि-मुरि लदा गेलै, कोट-कचहरीक मुद्दा बनि गेलइ! दोख केकरा लगतै? कोन मुँह लऽ कऽ समाजमे रहब!

ग्लानिसँ रघुनन्दनक मन बिसाइन भऽ गेलइ। साहस बटोरि

बाजल-

"काका, जँए एते दिन तँए दू मास आरो। बैसाख-जेठ बँचल अछि। काल्हि चलू, या तँ अपन काज आपस लेब वा हाथ पकैड़ काज कराएब। तइले जे हेतै से देखल जेतइ।"

रघुनन्दनक बात सुनि बरिसलाल ठमैक गेल। बाजल-

"बौआ, हम तँ तोरेपर छी, आगिमे जाइले कहह आकि पानिमे, तोरासँ बाहर थोड़े हएब।"

बरिसलालक विचार सुनि रघुनन्दनक मनमे उत्साह जगल। दोसर दिन दुनू गोरे माइनर एरिगेशनक कार्यालयसँ बोरिंग गाड़ैक सामान नेने आएल। गाड़ैक दिन तकबए गेल तँ आगूमे भदबा पड़ैत रहइ। जोड़-घटाउ करैत आठ दिन पछाइत बोर करब शुरू भेल। सिरिफ ठीकेदारेटा आएल बाँकी सभ काज गामेक मजदूर करत। ओना बोरिंगक काजमे गामक मजदूर अनाड़ीए छल मुदा अनाड़ियो तँ केते रंगक होइ छइ किने। जेते काज तेते जीवनी आ तेते अनाड़ी। जखने काजक लूरि भऽ गेल तखने जीवनी, आ जाधैर नै भेल रहल ताधैर अनाड़ी।

तेतबे नहि, एक काजक जीवनी दोसर काजक अनाड़ी सेहो होइते अछि। तँए जीवनी-अनाड़ीक भेद करब कठिन। ओना, काजक भितरो जीवनी-अनाड़ी होइत अछि। जहिना एकपर साए खड़ा अछि तहिना कहैले तँ 'एक' पहिल सीमा भेल आ 'साए' दोसर सीमा, मुदा दुनूक बीच अन्तर ओतेक अछि जेते एक प्रतिशत आ साए प्रतिशत होइए। तहिना काजोक अछि। एके काजक भीतर साइयो रंगक काजक अंश होइत अछि। किछु अंशक बादे जीवनी मानल जाए लगैत अछि मुदा लूरिगर होइतो पूर्ण लूरिगर नहियोँ मानल जाइत। पूर्ण लूरिगर तखन मानल जाएत जखन काज एक समए-सीमाक भीतर

होइत अछि। ओना, काजोक सीमाक निर्धारन व्यास पद्धतिक अनुकूल होएत। जँ से नै होएत तँ किछु एहनो काज केनिहार छैथ जे समैयो-सीमासँ पहिनहि कऽ लइ छैथ आ किछु एहनो छैथ जे काज तँ कऽ लइ छैथ मुदा समए-सीमा टपा कऽ। तँए कि ओकरा अनाड़ी कहल जेतइ?

मुलाइम माटि रहने सबा साए फीट बोर आठे दिनमे भऽ गेल। लेयरो बढ़ियाँ, चालीस फीट लेयर। ओना जँ नीक लेयर होइत तँ पनरहो फीटमे पाँच हार्स पावरक इंजन पूर्ण पानि पकड़ैत, मुदा लेयरोक तँ ठेकान नहि, नीक-अधला संगे अछि। कोनो बाउल–जेना सौतबी–एहेन होइत जइमे पानिक मात्रा पनरह प्रतिशतक आस-पास रहैत आ कोनो एहेन होइत जइमे अस्सी प्रतिशत तक पानि रहैत। मुदा बरिसलालक बोरक लेयरक स्थिति किछु भिन्न छल। निच्चाँक तीस फीट लेयरमे अस्सी प्रतिशत पानि छल आ ऊपरकामे कम। तँए ठीकेदार बाजल-

“बरिसलाल बाबू, अहाँक तकदीर नीक अछि। कहियो बोरिंग-भथन नै हएत। किएक तँ तेहेन निचला बाउल अछि जे सभ दिन पानि दनदनाइते रहत। तँए नीक हएत जे जहिना भीत-घरमे ठेमा-ठेमा रद्दा पड़ैए तहिना किछु दिन जे बोर ठेमा जाएत तँ धँसना धँसैक सम्भावना समाप्त भऽ जाएत। ओना क्रेसिंग-पाइपसँ बोर कएल अछि, पाइप लोड करैमे कोनो दिक्कत हेबे ने करत, मुदा अहीं हितमे कहै छी।”

ठीकेदारक मुहसँ ‘तकदीर’ सुनि बरिसलालक मन उधिया गेल। ठीकेदारक ऐगला बात नीक नहाँति सुनबे ने केलक। अन्तिममे ‘हित’क चर्च सुनि बाजल-

“ठीकेदार साहैब, अहाँ कि कियो बीरान थोड़े छी जे अधला करब। अहाँ तँ सद्य: इन्द्र भगवान छी, जेमहर ताकि देबै तेम्हरे ताड़ि

देबइ। जेना-जेना अहाँ कहब तेना-तेना करैले तैयार छी।”

ठीकेदार बाजल-

“हमरो गाम गेना बहुत दिन भऽ गेल। अखन ऑफिसक छुट्टीक काजो ने अछि। किएक तँ बोर करैक सीमा जेते अछि तइ पूरैमे एकबेर गामसँ घुमि आएब। अहूँक काज नीक हएत आ अपनो काज भऽ जाएत।”

कहि ठीकेदार गाम चलि गेल।

पनरह दिन बीति गेल। जेठ चलए लगल। रोहैण नक्षत्रक आगमन भऽ गेल। संयोगो नीक रहल जे अगते विहड़िया हाल सेहो भऽ गेल। जहिना भक्त भगवानक मिलन होइत तहिना बरिसलालक मनमे उठल- अपनो हाथ पानि आबि गेल, ऊपरसँ भगवानो देता। पानिक धनिक बनि जाएब...।

जहिना टिकुली अपन पाँखिक होश केने बिना हवामे उड़ैत-उधियाइत ओतए तक पहुँच जाइए जेतए ओकर पाँखि बेकाबू भऽ टुटि जाइ छै, माने माटिक चुट्टी वा गाछक घोड़नकेँ पाँखि होइते जहिना मरैक दिन लगिचा जाइ छै, मुदा बुझि नै पबैत अछि तहिना बरिसलालोकेँ हुअ लगल। मुदा रोहणियाँ हाल जहिना धरतीक शक्तिमे नव उर्जा दैत तहिना बरिसलालोक मनमे आएल। पत्नियोँ आ दुनू बेटोकेँ शोर पाड़लक।

लगमे अबिते तेल विहीन बच्चाक मुँह लाली धरैत अनरनेबा जकाँ हरियरसँ लाल होइत देखलक। तहिना पत्नियोँक ओ दिन मन पड़लै जइ दिन हाथ पकैड़ जिनगीक भार उठौने छल। किए ने लोक भार उठौत। जखन एकटा नव शब्द ताधैर संग पूरैत जाधैर ओकर मथन होइत। नै तँ संगे किए रहत, बड़ीटा दुनियाँ छै केतौ वौड़ जाएत। पत्नीक नव रूप देख बेटाकेँ सम्बोधित करैत बरिसलाल

बाजल- “बौआ, तोरा सभकेँ जहिना कोरा-काँखमे खेलेलियह तहिना हँसी-खुशीसँ जीबैक ओरियान सेहो कऽ देलियह।”

पतिक बात सुनि सुशीलाक मन पहाड़क झरनासँ झड़ैत पानिक चमकैत रेत जकाँ चमकए लगलैन। बजली-

“सोझहे दीक्षा देने नै हाएत। एक-एक दिन, एक-एक क्षणक काजक बात बुझा दियौ तखन हएत?”

अखन धरि बरिसलाल कोट-कचहरी करैत बहुत किछु सीख नेने छल। गाम-गामक खेती-पथारी, फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक संग गाम-गामक माल-जालसँ लऽ कऽ माछ पोसब इत्यादि सभ किछुकेँ देख-सुनि चुकल छल।

जहिना मिडिल स्कूलक बच्चा हाइ स्कूलमे प्रवेश करैत नव-नव पोथी देख ललाए लगैत तहिना बरिसलालक दुनू बेटाक जिज्ञासा जगल। जिज्ञासा देख बरिसलाल बाजल- “बौआ, माटिमे धन छिड़ियाएल छै खाली बीछिनिहार चाही।”

अखन धरि दुनू भाँइ आमक टुकलासँ लऽ कऽ पाकल आम धरि बीछि चुकल छल, तँए बीछैक बात सुनिते जेठका बेटा–महावीर–पुछलक- “केना बिछबै बाबू?”

बरिसलाल बेटाक प्रश्न सुनि खुशिया गेल। आजुक बेटा जकाँ नहि, जे नोकरियो करैत आ नोकरो रखैत। जखन अपने काज अछि तखन अपनासँ जे समए बँचत सहए ने दोसरकेँ देब। बाजल-

“बौआ, अखन तूँ सभ भारी काज करै-जोकर नै भेलह हेन। ओना, कनी-कनी जँ हेन्डिल मारब सीख लेबह तँ दमकलो चलाएल भाइए जेतह। मुदा जँ दस कट्ठामे सालो भरि तरकारीक खेती करबह तँ ओते कोन परदेशिया कमाएत। हँ समए बदलने लोक रंग-बिरंगक वृत्तियो बदैल लेलक हेन। जइसँ किछु अनाप-सनाप सेहो भऽ रहल

छइ। मुदा बुधिक संग पूजी आ पूजीक संग बुधि नै चलत तँ अनेरे दब-उनार होइत रहत।”

जेठक पूर्णिमा दिन बोरिंग लोड भेल। लोड होइसँ तीन दिन पहिने अपन ऊषा मशीन आबि गेल रहइ। बोरिंग लोड कऽ ठीकेदार-मजदूर मिलि माछक भोज खा, सोलह घन्टा पानि चला काज सम्पन्न केलक। अखाढ़ चढ़िते मानसून उतैर गेल। पहिलुके दिन तेहेन बरखा भेल जे खेत-पथारमे पानि लगि गेल। नीचला खेती बुड़ैक लक्षण धऽ लेलक। तेसरे दिन बाढ़ि चलि आएल। पोखैर-झाँखैर, चर-चाँचर भरि गेल। पानिपर पानि आ बाढ़िपर बाढ़ि केते बेर आबि गेल। दहार भऽ गेल। एहेन दहार भेल जे नवान पाबैनोकेँ लोक बिसैर गेल। मुदा कातिक अबैत-अबैत रब्बी-राय छीटब शुरू भेल। गहुमक खेती नै भऽ सकल। किएत तँ अन्नमे गहुमक खेती सभसँ महग खेती होइत। मुदा धान नै भेने किसानक स्थिति बिगैड़ गेल। एक तँ ओहिना बरिसलालक स्थिति दू सालक दौड़-बरहामे बिगड़ले छेलै तैपर दाही आरो बिगाड़ि देलकै। सालो भरि बोरिंग-दमकल बैसल रहि गेलइ। तरकारी खेतीक ओहन दशा बनि गेल जेकर बजार नहि। कच्चा सौदा, नष्ट होएत। देखैत-देखैत सतासीक बाढ़ि आ अठासीक भुमकम आबि गेल। जर-जर बरिसलाल फड़-फड़ करैत फड़फड़ा रहल छल। तही बीच बैंकक पक्षसँ जमीन-निलामीक नोटिश भेटलै।

◌

शब्द संख्या : 2949

परदेशी बेटी

उबाइन होइते घटक काका दाँत पीसैत काकीपर बिगड़ैत घर छोड़ि विदा भेला। मनमे उठलैन- एहेन पड़ाइन पड़ा जाइ जे दोहरा कऽ ने घरक मुँह देखी आ ने घरेवालीक। मुदा ओहन क्रोधे आकि हँसबे कि जे दोसरपर नै बिसाए। एक तँ घरक बात तहूमे पति-पत्नीक बीचक, तँए अनका बजबो उचित नहि। दुनियाँमे केकरो कियो ने कहै छइ। भलेँ बिनु कहनौं दुनियाँ किए ने बुझिते हौउ...।

मने मन घटक काकाकेँ पकिया निर्णए भऽ गेलैन। लोकोकेँ कोन मतलब छै जे बताह जकाँ अनेरो अनका देख हँसि देब आकि बिनु मतलबो-के घन्टा भरि केतौ सोखर पसारि देब। ओना, घटको काका आन जकाँ नहि, जे आँगनसँ निकैलते डेढ़िएपर-सँ पाछू घुमि-घुमि देखए लगितैथ, देखबो केना करितैथ? कोनो कि अदी-गुदी विचारक चोट लागल छैन, पुरुखे छिआ जे अखनो धरि बरदास केने छैथ, नहि तँ मूसक दबाइ पीब नेने रहितैथ।

एक तँ ओहुना अखन घटक काकाकेँ टोकैक लग्न नहि, कारण लगनक समए नै छी, लगनक समैमे ने पतियानी लागल काज रहै छैन, कुसमैमे तँ दुनियाँक निअमे छै जे अपनो लोक पुछैले तैयार नै होइत अछि, घटक काका तँ सहजे विदाइ लेनिहार छैथ। बिनु रेटक आमदनी। जेहेन मुँह तेहने आमद। ओना, नइ टोकैक ईहो कारण

अछि जे मध-असरेसक गिरहस्ती चलैए, आइ-काल्हि जेते समए लोक केकरोसँ गप करत तेतेकाल जँ देहे कुरिया लेत तँ ओइसँ बेसी नीक। भगवान केकरो अधला बना पठबै छथिन, भलेँ रोगे-बियाधि किए ने हौउ। जँ सभ अधले रहैत तँ किए कियो देह कुरियबैले सोनाक सिक्का बना-बना आगूमे रखैत। ओहिना पैघ शैरीकार कहै छैथ-

"न हौहैठमे मजा है, न कलकैल में मजा है,

खुदा ने दिया खुजली खुजलाने में मजा है।"

खाएर जे हौउ। ओना किष्कारक समए रहने देवियो देवता अखन छुट्टी लऽ नेने छैथ, चौड़चनक पछाइत ज्वाइन करता। जहिना फुलही थारीमे जेतेकाल दही रहैत ओते बेसी कसाइन होइत तहिना घटक कक्काक मन कसाइन भेल जाइत रहैन। जहिना भरल पेटक प्रेम-गीतक स्वर आ जरल पेटक प्रेम-गीतक स्वरमे मात्राक भेद होइत तहिना घटक कक्काक मनमे उठैत रहैन जे आइ धरि कहियो नइ उठल छेलैन। केना नै उठितैन? सभ दिन दस गोरेक बीच हँसि-बाजि समए खटियबैत रहला आ आब जखन शिव लिंगक, फूल जकाँ वा नारियल-ताड़ जकाँ फड़ैबला भेला तँ आनक कोन गप जे जाँघतर बसैवाली पत्नियोँ दुतकारि देलकैन। ई तँ हिनके चाबस्सी होनि जे जहर-माहुरक कोन गप जे केकरो लग बजौ नै चाहै छैथ।

कसाइन बीच बिसाइन भेल घटक कक्काक मनमे उठलैन। जिनगी भरि घरे बसबैक काज करैत एलौं मुदा..? बेटा, प्रेमसँ चाहे बिगैड़ कऽ आकि पड़ा कऽ परदेश चलि गेल तँ चलि गेल। सबहक बेटी सासुर बास करैए, ओहो करह। मुदा पत्नी तँ पत्नी छी। जँ घरे नहि, तँ घरवाली की, आ घरेवाली नहि, तँ घर केहेन। भाड़ाक घर जँ अपना घर सन होइतै तँ मूसे किए घरमे घर बनबैत। ओकरो तँ पानियेँसँ आ पाथरोसँ ने जान बँचबैक छइ। मुदा किए? अपन घर

कियो अपना विचारे अपन आँट-पेटक अनुकूल लम्बाइ-चौड़ाइ नापि कऽ बनबैए तँए बेसी सुरक्षित होइ छइ। मुदा गणेशजी अपन वाहनकेँ ई बात ने किए बुझा देलखिन जे लोकक घरमे जे घर बनबै छेँ, से अपने-जोकर बनबिहेँ। जइ भीतपर घर ठाढ़ अछि ओकरे किए जंजल बना दइए। जखन भीते जंजल भऽ जाएत तखन हथियाक झाँट केना बरदास करत! घर खसत घर बन्हनिहारक मुदा मूस तँ बीलेमे अन्नक ढेरीपर आरामसँ पड़ल रहत। ओकरा थोड़े किछु हेतै, ओ तँ अपन घर पताल दिस बनौने अछि, आ घर खसत धरतीपर। किए ने ओकर जान बँचले रहतै..?

तैबीच घटक कक्काक मनमे एकटा घटकैती आबि गेलैन। मन पड़िते ठोरपर तेना मुस्की आबि गेलैन जे ठोर बरदास नै कऽ सकलैन। खापैड़क तीसी जकाँ चनचना उठलैन। कहू जे बेंगबा सन छौड़ाकेँ इन्द्रक परी सन कनियाँ केकरा किरतबे भेलइ। मुदा कलयुगक उपकार हत्या बरबैर। जँ से नहि, तँ ओकरा जँ अपन उपकार मन पाड़ि देबै तँ कि ओ नै कहत जे पाँचो टुक कपड़ा आ दैछना कथीक नेने रहिऐ। ओ खुशनामा देने रहए आकि काज करैक बोइन। मन घुमि कऽ पत्नीक कहल बातपर आबि अँटैक गेलैन। कहू ई केहेन भेल जे मुँह फोड़ि दुसैत पत्नी कहलैन जे अहाँ आगू-पाछू किछु सोचै नै छी, जहाँ कोसीकातक बकेनमा दूधक दही आ तिलकोरक तरुआ आगू पड़ैए आकि बुधिए बिगैड़ जाइए! जइ परिवार लेल जिनगी भरि झूठ-फूस बाजि, नीक-अधला काजक विचार नै केलौं तइ परिवारमे एहेन गंजन हुअए तँ मनुख केतए रहत?

घटक कक्काक खौंझ आरो तेज भेलैन। खौंझाइत मन कहलकैन- पत्नी रस्तामे रोड़ा अँटकौनिहार के? दस गाम घूमै छी, दस लोकमे रहै छी हम आ उपदेश देती ओ! जे सभ दिन जाँघक निच्चाँ रहली ओ छड़ैप कऽ छातीपर चढ़ि मुक्का देखौती; एहेन पुरुष हम नै

छी। जहिया जे हेतै से हेतै अखन घरसँ नै पड़ाएब।

घटक कक्काक भक् खुजलैन तँ देखलैन जे आब तँ किलोमीटर भरि हटि दोसर टोल लग पहुँच गेल छी, घुमि कऽ आँगन केना जाएब? केतबो किछु भेल तँ भेल मुदा पुरुष अपन पुरुखपना केना छोड़ि देत? नेरौल थूक केना चाटत? मुदा अपने फुरने घुमबो केहेन हएत? मरदक बात वाण समान होइए जे धनुषसँ निकैल गेल निकैल गेल..! बड़बड़ाइत घटक काका अपन दुनू हाथक तरहत्थी माथपर लऽ बैस रहला।

जहिना किसान, बिनु खुरपियोक गाछक जड़ि लग बैस चुटकीए-सँ खढ़ उखाड़ि कमठौन करए लगैत तहिना घटक काका घुमैक ओरियान सोचए लगला। मुदा लगले मन तुरुछए लगलैन। ई तँ धोबियो कुकुरसँ टपब हएत, जे ने घरक आ ने घाटक रहब। जँ बलजोरी घरमे रहौ चाहब तँ पत्नी केते मोजर देती। मन घुमलैन। हमरो एते नै अगुतेबाक चाही छल। गलती अपनो भेल। एना जे लोक छोट-छोट बातपर घरसँ पड़ाएत तँ कहियो कुकुर-बिलाइ जकाँ अपन घर हेतइ। साँझू पहर, जखन लोक बाध-बोनसँ अबैए तखन केकरा घरमे ने हर-हर-खट-खट होइ छै, मुदा कहाँ कियो हमरे जकाँ रूसि-फुलि कऽ पड़ा जाइए। जँ एकरत्ती दब-उनार बात पत्नी कहबे केलैन तँ की हेतइ। कोनो कि जड़ि भीरा कऽ टिक काटि लेलैन। अर्द्धांगिनी छैथ, बाल-बच्चा आ परिवारपर जेते अधिकार पतिक होइत तइसँ की कम पत्नियोँक होइत अछि। बेटा-बेटी तँ दुनूक छी। ई तँ समैक दोख छी जे कखनो गरमी आनि गरमा दैत अछि तँ कखनो ठंढी आनि ठंढा दैत अछि। सौंझुका झगड़ा राति खसैत-खसैत मेटाइए जाइए किने। आकि हमरे जकाँ दिन-राति धेने रहत। भोर होइते दुनू परानी घर-अँगनाक काजमे लगि जाइए। कहाँ एको मिसिया मान-रोख मनमे रखैए। जहिना डिक्शनरीमे नवका शब्द अबितो अछि आ जाइतो

अछि तहिना ने घरोमे किछु-ने-किछु अबितो रहत आ किछु-ने-किछु जाइतो रहत। मन आगू घुसकलैन। आगू घुसैकते घटक काकाकेँ मन पड़लैन अपन बिआहक दिन समाजक बीच सरियाती-बरियातीक बीच तँ हमहीं ने हाथ पकैड़ जिनगी भरि संगे रहैक वादा केने रही, से की भेल? जहिना कटही गाड़ी कुगरक रस्तामे कनी दब-उनार भऽ उनटिये जाइए तँए कि गाड़ीवान गाड़ी रखनाइए छोड़ि देत। जँ छोड़ि देत तँ आगू केना घुसकत? औगुताइमे एहेन भारी गलती नै करक चाही। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एना केलौं। एकोरत्ती उम्रोक लेहाज-विचार केलौं? जुआन जकाँ निर्णए केलौं। कहू जे आब हमर उमेर अछि जे संगी छोड़ि असगरे रही। कोनो कि संयासी छी जे दोसर नै सोहाएत। अपने दिन-राति घीमे डुमल रहब मुदा दोसरकेँ कुत्ता जकाँ पचैये ने देब। भरि दिन शनियाही गुड़-चाउर चिबबैत रहब आ अनका देखबे ने करब। जँ केतौ जाएब तँ पेटो संगे जाएत। पेटक आगि जेहने परिवारमे तेहने तीर्थ-स्थानोमे जगितै अछि। ओकरा तृप्ति करब आवश्यक होइत। जँ से नहि, तँ भूखे भजन किए ने होइत। खाइले के देत? जँ देबो करत तँ एक मुट्ठी देत। एक दिन खेलासँ जिनगीक भूख मेटाएत? जँ से होइत तँ डिबियो लऽ कऽ तकलापर एकोटा भिखमंगा नै भेटैत...।

मन घुमलैन। हारि मानी झगड़ा फरियाए। जहिना बाढ़िक तेसरा दिन पानि ठाढ़ भऽ उनटा-पुनटा दिशा पकड़ए लगैत तहिना घटक कक्काक मनमे हुअ लगलैन। अपन विचारक अनुकूल बात केकरा अधला लगै छइ। संयोगो नीक रहलैन। मुदा मनमे खरौंच लगलैन। समाजो तेहेन भऽ गेल अछि जे केकरा के पुछत? जहिना भोजक जएह बारीक मिठाइ परसैए सएह माछो-मौसु। कहू ई केहेन भेल? सभ तरहक पनचैती बड़के काका करता। जमीनोक पनचैती आ दुनू परानियोँक झगड़ा हुनके चाही। जँ जमीनक पनचैती अमीन नै

करत, अहिना सभ गुणक आधारक से आदमी नै करत तँ खीर-खिचड़ीमे कोनो भेद रहत..!

ई सभ गप घटक कक्काक मनमे नचिते रहैन, तखने सुन्दरलाल टोकलकैन-

"भाय साहैब, अहीं ऐठाम जाइ छी?"

'अहीं ऐठाम जाइ छी' सुनि घटक काका औनाए लगला। अपन ठौर केतए अछि जे जाएत। की कहबै? से नइ तँ भरमे-सरम आँखि मुनि लइ छी जे बुझत हवामे अलिसा गेल छैथ।

उत्तर नै पाबि सुन्दरलाल दोहरा देलकैन-

"भाय साहैब भकुआएल छी, भक् खोलू।"

अकचकाइत घटक काका बजला-

"नइ, नइ! कनी आँखि लागि गेल। की कहलह?"

सुन्दरलाल कहलकैन-

"घरपर चलू। निचेनसँ बुझा देब, रस्ता-पेराक गप नै छी।"

एक तँ राकश दोसर नौतल। घटक काका हरे-हरे कऽ घर दिस विदा भेला। मनमे उठलैन जे कोनो विचार दोहराइयो कऽ होइत अछि, किए ने दुनू परानी मिलि फेरसँ विचारि लेब...।

घर दिस विदा होइते घटक काका सुन्दरलालकेँ कहलखिन-

"गपो शुरू करह। जेते भेल रहत ओते तँ काजे ने भेल रहत।"

क्षुब्ध होइत सुन्दरलाल कहलकैन-

"देखियौ भाय, बिआह भेल केकरो आ जहलमे अछि हमर बेटा!"

अकचकाइत घटक काका पुछलखिन-

"से की, से केना?"

'से की, से केना?' बाजि घटक काका मने-मन महावीरजी केँ गोड़ लागि निसाँस छोड़ैत, सोचए लगला- बाप रे एकटा काजमे जँ एना भेल, हम तँ जिनगी भरि यएह केलौं! खुनी केसमे बेसी दिनक सजा होइ छइ। मुदा खुदरो-खुदरी केस मिला तँ ओहूसँ बेसियाइए जाइ छइ। हे भगवान, रच्छ रखलह! आबो छोड़ि देबाक चाही!

घटक कक्काक मन जेना ठमकए लगलैन। ठमकैत मनमे उठलैन- जइ इंजीनियरकेँ जइ मशीनक बोध भऽ गेल अछि, जँ ओइ मशीनक तकनीक बदैल जाएत, तखन की हएत? दोसर काजक लूरि कहिया भेल जे करब। हे भगवान, जनिहह तूँ..!

तैबीच सुन्दरलाल कहलकैन-

"भैया देखियौ, हमरे बेटा फुलबाक बिआह बंगलोरमे करा देलकै। ओहन-ओहनकेँ गाममे के पुछै छइ। मुदा ट्रन्सपोर्टमे नोकरी भेने दिन-दुनियाँ बदैल गेलइ। भषो सीखि लेलक। अलगर्जा कमाइ हुअ लगलै। बी.ए. पास लड़कीक संग बिआह करा देलकै।"

घटक काका-

"बी.ए. पास लड़की गछलकै केना?"

सुन्दरलाल-

"केहेन गप करै छी। जखने लोक कमाए-खटाए लगैए तखने ने सर्टिफिकेटक ओरियान करए लगैए। एम.ए. पासक सर्टिफिकेट कीनि नेने अछि।"

घटक काका-

"लड़कीबला केतए-के छिऐ?"

सुन्दरलाल- "नवटोलीक छिऐ। तीस-पैंतीस बर्ख पहिने गामसँ

पड़ा कऽ गेल। नोकरी करए लगल। ओत्तै परिवारो रखैए, घरो-दुआर बना लेलक। अपन इलाकाक जाति बुझि कुटुमैती कऽ लेलक।"

घटक काका-

"आब की भेल?"

सुन्दरलाल कहलकैन-

"बिआहक बाद लड़की जोर केलक जे गाम जाएब। एबो कएल। मुदा जहिना पढ़ल सुग्गा बौक होइत तहिना वेचारीकेँ भऽ गेलइ। पनरहे दिनमे नाकोदम भऽ गेलइ। जहिना सासु अल्हैर कहए लगलै तहिना ससुरो माथा पीटए लगलै। सर-समाजक तँ चर्चे छोड़ू। ने भाषाक ताल-मेल बैसै आ ने खाइ-पीबैक वस्तुक।"

बिच्चेमे घटक काका बजला-

"ई तँ भारी जुलुम भेल! तखन की भेलइ?"

सुन्दरलाल-

"लड़की पड़ा कऽ दरभंगामे गाड़ी पकैड़ बंगलोर चलि गेल। हमरा बेटापर केस कऽ देलक। जेलमे पड़ल अछि।"

डेढ़ियापर अबिते घटक काका बजला-

"एहेन खच्चरपन्नी गाममे चलतै। अच्छा कनी ओहू पार्टीक बात बुझि लेब तखन कहबह। अखैन जाह, कनी हमहूँ औगुताएले छी।"

दरबज्जापर गल-गूल सुनि रेखा आँगनसँ आबि खरिहाँनक मेह जकाँ बीचमे ठाढ़ भऽ सोचए लगली- केहेन पुरुख छैथ जे थूक फेक पड़ाएल रहैथ जे घुमि कऽ ऐ घरक मुँह नै देखब, से सालक कोन गप जे दिनो भरि नै निमाहि सकला! मुदा मन ठमकलैन। सप्पत-किरिया लोककेँ थोड़े टिक पकैड़ उखाड़ै छै, जँ से उखाड़ितै तँ भरि दिन लोक किए सभ बातमे 'जय गंगाजी' बाजि आकि माटि उठा-उठा सप्पत

खाइए। जहिना लोक भात-रोटी खाइए तहिना ने सप्पतो-किरिया खाइक वस्तु भेल। खेलक पचलै, फेर खेलक फेर पचलै। रसे-रसे एहेन पचान पचि जाइ छै जेहेन झूठ-सच्चमे पचल अछि आ सच्च-झूठमे। जँ तुकबन्दी करैक लूरि भऽ जाए तँ शायर-कवि बनबे करब आ जँ झूठ-सच्च पचबैक लूरि भऽ गेल तँ वक्ताकेँ के कहए सेसर 'अनुभवी वक्ता' बनबे करब। तहिना तँ हिनको जिनगी तेहने रहल छैन। तहूमे समाज तेहेन लाइसेंस दऽ देने छैन जे साले-साल थोड़े रिनुअल करबए पड़तैन, ता-जिनगी लेल बनि गेल छैन।

आँखि उठा घटक काकापर देलैन तँ देखलैन जे मुँह धुआँ केने लटकौने छैथ आ जहिना कोयलाक धुआँमे चमकैत बिजली बनैत तहिना उपदेश झाड़ि रहल छैथ। रेखाक मन रोषा गेलैन। घरे परिवारक लोक किए ने होथि मुदा जहिना गलत, गलत छी तहिना सहियो सेहो सही छीहे। गलतीक की कोनो पारावार छइ? रावण जकाँ लाख-सबा लाख धिया-पुता जहिना त्रेतामे छेलै, जे घटि कऽ द्वापरमे साए-सैंकड़ापर चलि एलै तहिना ने अखनो अछि। तहूमे कलयुग छी। पापेक युग। देवतो सभ पड़ा कऽ उनीकुटी चलि गेल छैथ। जाए तँ चाहलैन समुद्र दिस मुदा भोर होइते लाजे सभ रस्तेमे रहि गेला...। रोषाएल रेखा झपैट कऽ बजली-

"बौआ, अहीं सभ ने सर-समाज छी। जेहने समाज रहैए तेहने लोक काजो-उदेम करैए?"

रेखाक बात सुनि सुन्दरलालक मनमे पंचक एहसास भेलइ। पंचक एहसास होइते अपन बात बिसैर गेल। बिसैर गेल बेटाक जहलक उपाय। दमकलक चक्का जकाँ पहियाक रूप बदैल एक सुरे मुड़ी डोलबैत बाजल- "हँ, से तँ छीहे। केकरो कटने समाज कटै छइ। तेहेन लस्सा बनल छै जे केतबो कटतै तैयो सटिते रहतै।"

सुन्दरलालक बात रेखा नइ बुझि बजली-

"नइ बुझलौं अहाँक बात।"

जहिना नमहर नाँगैर नमहर जानवरक पहचान छी तहिना ने काजक नाँगैर मनुखोक पहचान होइ छइ। जँ से नहि, तँ रावणसँ पैघ आसन हनुमान कथीक बनौलैन। ओही नाँगैरक बले ने सौंसे लंका जरा देलखिन आ अपना किछु ने भेलैन। बुझल-बिनु-बुझल दुनियाँमे केहेन हएत जे नै हएत। कोनो प्रश्नक उत्तर दुनूक एक भऽ सकैए। मुदा से होइ छइ। बुझनिहार संग बुझनिहार रहैत तँ बिनु बुझनिहारोक संग तँ बिनु बुझनिहार हेबे करतै...।

जइ काजमे सुन्दरलाल अपने ओझराएल छल तही काजक ओझरी छोड़बैक भार लैत बाजल-

"भौजी, अहाँ-हमरामे कोन भेद अछि। नीक-अधला सभ गप तँ दिअर-भौजाइमे होइते छइ। से कि कोनो आइए आकि अदौसँ होइत आबि रहल अछि। देखियौ, जहिना करोटन फूलक पत्ता-पत्तामे गाछ पैदा करैक शक्ति अछि, तहिना ने समाजोकेँ बनबै-मेटबैक दुनू शक्ति छइ।"

सुन्दरलालक विचारक सूरमे अपन विचारक सूर मिलबैत रेखा बजली-

"बौआ, पहिने कनी भैयाकेँ बुझा दियौन जे रूसि कऽ जे भगला से कोन अनचित बात कहलयैन।"

नमहर झगड़ा देख सुन्दरलालकेँ नमहर पंचक एहसास भेल। जहिना नमहर लीब जाइत, तहिना सुन्दरलाल लीबैत बाजल-

"भौजी, केना कहबैन हम। सँए-बहुक झगड़ामे लबड़ेटा पड़ैए। अहाँ जे कहलौं से तँ भाइयो-साहैब सुनबे केलैन।"

जहिना एक चुरुक जलसँ सौंसे घरक वस्तु पवित्र बनि जाइत तहिना घटक काका अपन गनजन सम्हारैत बजला-

"हौ सुन्दरलाल, जहिना तूँ छोट भाए भेलह तहिना ईहो घरेवाली भेली। तँए बजैमे थोड़े कोनो धरी-धोखा हएत। जुआनमे मौगी घरसँ पड़ाइत अछि आ उमेर बढ़ने पुरुख। तोहीं कहह जे कोन गलती केलौं?"

मुड़ी डोलबैत सुन्दरलाल बाजल-

"से के कहैए जे अहाँ अधला केलौं।"

पाशा बदलैत देख रेखा बजली-

"बौआ, नौंए-कौंए कऽ भगवान एकटा बेटा देलैन। अपने दुनू परानी ने सोचब जे केहेन पुतोहु एने घरक गाड़ी ससरत। सिनेमा-नाटक जकाँ थोड़े मनुखक जिनगी क्षणे-क्षण बदैल सकैए आकि क्षणे-क्षण आगू-पाछू भऽ सकैए।"

रेखाक बात सुनि, मुड़ी डोलबैत सुन्दरलाल बाजल-

"हँ, से तँ होइते छइ। अहीं कहू भौजी, केकरा चलैत हमहीं एते तबाह छी। उहए छौड़ा माने हमरे बेटा एहेन किरदानी किए केलक? जहिना बिआह भेने अनेरे लोक घटक बनि जाइए तहिना किए बनल? नै बनल तँ जहलमे किए अछि?"

रेखा-

"अहाँ अपनापर नै लिऔ। बेटा केलहा काजक दोखी बाप नै होइए मुदा माए-बापक...। काल्हि भऽ कऽ जे कोनो दोख लगा बेटाकेँ कहबै तँ ओ नै मुँह दुसैत कहत जे केकर केलहा छिऐ। जहिना अपन बेटीकेँ पोसि-पालि बिआह करै छिऐ तहिना ने सभ करैए। मुदा घरक मिलानी जँ नै करबै तखन पढ़ल सुग्गा बौक नै हेतइ।"

पत्नीक बात सुनि घटक काका सहमला। पाछू घुमि तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे केते घुर-बहुर काज भेल अछि। ईहो हएत। यएह ने दस गोरेमे बजलौं। कोनो कि इएहटा बात बजलौं। सदिकाल तँ एहेन-एहेन बात चलिते रहैए। बड़ हएत तँ बाजब जे पत्नीक विचार नै भेलैन। तहूमे के एहेन छैथ जे पत्नीक बात काटि सकै छैथ।

मन झिलहोरि खेलए लगलैन। जहिना पघिलल कटहर गाछसँ खसिते छँहोछित भऽ छिड़िया जाइए तहिना घटक कक्काक मन छँहोछित भऽ छिड़िया गेलैन।

◌

शब्द संख्या : 2515, तिथि : 25 जून 2012

मान

तराजूक दुनू पलराक बीच जहिना डन्डी लागल रहैत, जइ सहारासँ वस्तु-जातक ओजन मानल जाइत तहिना जिनगीक बीच सेहो डन्डी होइत अछि। कमल फूलक डण्टीक सहारासँ जहिना फूलक सभ अंग समान रूपे खिल-खिल खिलैत तहिना जिनगियोक होइत, मुदा से कहाँ होइए? जिनगीक तराजूक पलरा दू रंगक होइए, एक पुड़ल दोसर घटबी। पलराक घटी-बढ़ी भेने तराजू पसगाँह भऽ जाइए जइसँ घटैत-बढ़ैत जिनगी जीवनक दू धारामे प्रवाहित होइत चलए लगैए। एक महिना अखाढ़ रहितो दू नक्षत्रमे विभाजित होइत, ओना एक पूर्ण होइत दोसर अपूर्ण भेने बीच-बीचमे तेसरो चलि अबैत। तैबीच आद्रा नक्षत्र अपन पूर्ण जिनगी बितबैए। भलेँ अखाढ़क पहिल भाग हो वा मध्य वा अन्त। पनरह दिन अन्हार बीति आठ इजोरिया मास टपि गेल। हाजरी भुकबैले मौसम जोगार लगा नेने अछि मुदा आद्राक उपस्थिति दर्ज नै भेल अछि। ओना कहैले सालक पाँच बरखा भऽ चुकल अछि मुदा तैयो आद्रक जगह उम्मस अपन पूर्ण जुआनीमे जगमगा रहल अछि। गोनूझाक हरवाहिक जलखैक खीर जकाँ हाल धरतीकेँ छुछुओने अछि। दिन उगिते जहिना दिनानाथक दर्शन होइत तहिना किसानक बीच नव दर्शन आएल। ओ छी श्री-विधिसँ खेती करब। मास दिन पूर्व धानक बीआ, जैविक खाद आ

किटनासक दबाइ इत्यादिक बँटबारा, पैछला हिसाबे ऐबेर इमानदारीसँ भेल। इमानदारी ऐ लेल जे जहिना बैंकक कर्जकेँ लोक चौक परहक भुज्जा खा सठा दैत तहिना अखन धरिक बीआ-बालिक हिसाब रहल। वैचारिक रूपमे बीआ पाड़ि खेती करैक समए सेहो पौलक। संयोगो नीक रहल जे एकटा बरखा सेहो भेल। बरखा हाथ लगने किछु गोरे बीआ खसौलैन। देखबामे बरखा भेल, मुदा बीआ पाड़ैबला नै भेल। जइसँ बीआ अदहा-छिदहा जनमल। किछु गोरे कलसँ आ चैलसँ पटा डुमा हाल बना बीआ खसौलैन। जनम्बैमे ओ सभ जीतला। मुदा किछु गोरे अखनो बीआ घरेमे आद्राक आशापर रखने छैथ। ओना, अद्रोसँ रोहैण नक्षत्रक बीआकेँ निरोग मानल गेल अछि। मुदा रोहैण नक्षत्रक पछाइत हिसाबकेँ अनदेखी केने बीराड़ेमे बीआ जरबो करैत। खेतीक एक उपाय तँ हाथ आएल मुदा मूल उपाय–पानि–नै आएल। एक पाशापर भगवान बैसल, दोसर 2008 ई.क कोसीक विभिषिका नहरकेँ खा गेल, तइ लगल 1987 ई.क बाढ़ि आ 1988ई.क भुमकम बीस-पच्चीस बर्ख पहिने बोरिंगकेँ खा गेल छल। जुड़शीतलक चलती कमने पोखैरक उड़ाही सेहो रूकिये गेल जइसँ ओ अपने तेना रोगा गेल अछि जे जान-ले रबिक संग एकादशियो करैए। मनुखक जन्म-संस्कार ओतए पनपब शुरू होइत जेतए ओकर जन्म होइत अछि। ई दीगर बात जे केतौ पेटक बच्चाक सेवा पोनगैसँ पहिनहि हुअ लगैत आ केतौ रस्ते-पेरे जन्मो लैत आ पाललो-पोसल जाइत।

आद्राक कर्त्तव्यक लापरवाहीसँ जन-जनक बीच तबाही तँ ऐछे, जे श्रमक घटबी सेहो बेसियाइए गेल अछि। मुदा किछुओ किए ने हौउ आखिर वसन्तक उनाड़ियो मास तँ छीहे। तँए किए ने बाग-बगीचामे बगवार वसन्तक संग चैतावर आ बरहमासा गाएत। आमक संग-संग जमुनिया धार सेहो बहिते अछि। टोलक पाँच गोरेक गाछी एकठाम

छैन। साधारण परिवार तँए छोट-छोट गाछी छैन। मुदा कलमी-सरही सभ रंगक आम लुबधल अछि। सभ मिला कऽ करीब पच्चीस तीस गाछ पाँचो परिवारक जीवन-शैली एक रंग कऽ देने अछि तँए विचारोमे एकरूपता छैन। एते जरूर छैन जे बिनु कहने कियो कोनो गाछपर ने ढेपा फेकैत आ ने हाथसँ तोड़ैत। मुदा खसल आमक कोनो रोक नहि। जइसँ चेतन तँ अपन-आनक ठेकान जरूर बुझैत मुदा बाल-बोध नहि। पाँचो परिवारक धिया-पुता एकेठाम खेलबो करैत आ आम खसलापर पबैले दौड़बो करैत। ओना अबोध बच्चा रहने, अवाजकेँ ठीकसँ नै अकानि कियो केम्हरो कियो केम्हरो दौड़ जाइत मुदा केकरो भेटलापर एते खुशी सभकेँ जरूर होइत जे हेराएल भेटल।

रातिक दू बजैत। उमस भरल दिनक संग अदहा रातियो बीति गेल। एक बजेक बाद पूर्बाक लहकी उठल। दिन भरिक गुमराएल मन नीन दिस दौड़ल। दुनू बेटाकेँ संग केने गुलजारी आमक गाछी विदा भेल। अष्टमीक चान लुप्त भऽ गेल छल। जइसँ अन्हारक साम्राज्य पसैर गेल छल। आठ गोरेक परिवार गुलजारीक। तीनू बापूत मिला आठटा पाकल आम भेटलै। आँगन आबि डिबियाक इजोतमे आठो आम गनि छोटका बेटा बाजल- “जेते गोरे घरमे छी सभ-ले एक-एकक हिसाबसँ आमो अछि।”

राधेश्यामक बात सुनि गौरीशंकर बाजल- “जहिना छोट-पैघ आम अछि तहिना तँ घरमे लोको अछि, तँए... ।”

“भैया, अखन माएकेँ रखैले दऽ दहक। अपना सभ खाइबेर-मे खाएब।”

राधेश्याम बाजि कऽ चुप भऽ गेल।

◌

शब्द संख्या : 648

मनोरथ

जहिना शोभा काका सभ छुट्टी गाममे बितबै छैथ तहिना सभ रबियो बितबै छैथ। सुविधो छैन। पाँचे कोसपर विद्यालय छैन, साइकिल छैन्हे तँए अबै-जाइमे असोकर्जो नहियेँ होइ छैन। शनिकेँ स्कूलो अदहे होइ छैन, सेहो सुविधा भाइए जाइ छैन।

आने शनि जकाँ सात बजे साँझमे शोभा काका गाम पहुँचला। पछबरिया घरक दाबा लगा साइकिल ठाढ़ कऽ कैरियरपर सँ झोरा उतारि आँगनमे पएर रखिते छला कि पत्नीपर नजैर पड़लैन।

जेठ-अखाढ़ मास तँए डिबिया नेसैक ओरियान सुगिया काकी करै छेली। ओना, डेढ़ियापर जखने साइकिल खड़खड़ाएब सुनलैन कि बुझि गेली जे एहेन अवाज तँ अपने साइकिलक छी। आ आँखि उठैबते नजरियो पड़िए गेलैन।

जेठ-अखाढ़ मास ऐ लेल जे पूर्णिमा भऽ गेल मुदा सकराँइत पछुआएले छल। मुदा काकीक संयोग नीक रहलैन जे नजैर-मे-नजैर नै मिललैन। जँ नजैर मिलि जइतैन तँ चूल्हि पजारि डिबिया नेसब बाधित भऽ जइतैन। तेकर लाभ सुगिया काकी उठेबो केली। लाभ ई उठौली जे पतिक आगत-भागतकेँ एक नम्बर काजक सूचीसँ निच्चाँ उतारि दू नम्बरमे रखि, कुशल कारीगर-कलाकार जकाँ एक काजकेँ विसर्जन करैसँ पहिने दोसरक संकल्प लऽ लेली। मने-मन विचारि

लेली जे जाबे जारैनक धुआँ फरिच हएत-हएत ताबे साँझो घुमा लेब। काजमे लगल देख शोभो काका बिनु किछु बजने कोनचरे लगसँ झोरा ओसारक चौकीपर रखि पानिक प्रतीक्षा करए लगला। केना ने करितैथ, जाधैर घरबैया दिससँ पएर धोइले पानि नै पहुँचैत ताधैर कारखाना जकाँ उपस्थिति केना बनैत। मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे अभ्यागतक सेवा योग्य परिवार नै हुअए? सुगिया काकीक मनमे ईहो उठैत रहैन जे भाषणक कलाकारी होइत जे एतबे समैमे एतेटा बात बाजि देब मुदा काज तइसँ बहुत दूर होइत। ओना, चलनिहारकेँ पैरक गति रोकिनिहार सेहो बीचमे आबि सकैए। नहियोँ औत, तँए जइमे 'हँ-नइ' दुनूक सम्भावना होइ ओकर गारंटी शत-प्रतिशत नै कएल जा सकैए। तँए सुगिया काकीकेँ होनि जे जैठाम दुविधा अछि तैठाम सावधानी नै करब तँ रेलबे-ट्रेन जकाँ एकठाम बिलंम भेने गन्तव्य स्थान धरि बिलैमते ससरब। तेतबे नहि, अदहा दिनक चलल छैथ, बाटमे केतए आ की देखने हेता, जँ कहीं एहेन समस्या देखने आएल होथि आ रस्तापर अमती काँटक झाँगैड़ जकाँ रखि दैथ, तखन तँ जिनगीए ढंस भऽ जाएत! भोजनकाल जँ पानिक बरतने फुटि जाए तखन पानि केना परसब..?

सभ काज सम्हारि सुगिया काकी हाथमे लोटा धरबैत शोभा काकाकेँ पुछलखिन-

"हाल-चाल सभ आनन्द किने?"

काकीक पुछब जेना शोभा कक्काक मनकेँ हौंर देलकैन तहिना मन सहैम गेलैन जे भरिसक कोनो आक्रोश छैन। मुदा अनुकूल समए नै पाबि, उत्तर देखखिन-

"पुरबते।"

शोभा कक्काक उत्तर सेहो सुगिया काकी तारि लेली। तँए उचित

समए नै पाबि सुगिया काकीक मनमे भेलैन जे पएर धोइले दरबज्जापर जेबे करता तँ किए ने टिकमे चिड़चिड़ी लगा दिऐन जे जाबे चिड़चिड़ी छोड़ौता-छोड़ौता ताबे चाह बना लेब। काज औगतेने तँ नइ होइ छइ। बड़ भूख लागए तँ पातक बदला हाथे नै पसारि दिऐ..!

बजली-

"नीमक गाछमे गराड़ लगि गेल अछि से कनी देख लेब?"

सुगिया काकीक बात सुनि शोभा काका बजला किछु नहि, मुदा मनमे उठलैन जे नीमक गाछमे केतौ गराड़ लगइ! एहेन बात किए कहलैन? गराड़केँ मीठ जड़ि पचै छइ? तीत केना पचत। मुदा फेर मनमे उठलैन जे पुरुखक नाड़ी नारीक नाड़ीसँ भिन्न चलैए तँए समए लगबै दुआरे जँ कहने होथि। मुदा से केना बुझब जे केते समए लगाएब? भऽ सकैए जे जेतबे समए जड़ि खोरि गराड़ देखैमे लगत तेते, मुदा से अपने केना बुझब? तइसँ नीक जे जाबे बजबए नै औती ताबे नै जाएब। पैछलो शनिमे जखन आएल रही तँ पएर धोलाक बाद चाह पिऔने रहैथ। तहिना चाहे बनबै दुआरे जँ टारने होथि। नीक हएत जे ताबे धरि कड़ची लऽ कऽ जड़ि खोरैत-खारैत रहब जाबे धरि बजबए नै औती।

चाह छानि ओसारक चौकीपर रखि काकी दरबज्जा दिस बढ़ैत बजली-

"जअ काटए गेलौं तँ सतुआइन केनहि एलौं! चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल। आ झूठे-फूसेमे लटकल छी!"

'झूठ-फूस' सुनि शोभा काका चौंकला, कहू जे अपने लटकल छी आकि हुनके किरदानीए लटकल छी? मुदा किछु बजला नहि। मनमे उठलैन जे जइ शून्यक कोनो मोजर नै छै, सेहो घुमैत-फिरैत

केतए-सँ-केतए उड़ि जाइत अछि। मुदा ई तँ शब्दवाण छी, कागभुशुण्डी जकाँ समुच्चा दुनियाँ देखौत..!

पुछलखिन- "केहेन चाह बनेलौं जे लगले पानि भऽ जाएत?"

जहिना मन्दिरक बीच भक्त भगवानक आगू ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि अपन मनोरथ मनमे दाबि, पहिने स्तुति करैत तहिना मनक बात मनेमे रखि सुगिया काकी बजली-

"तबधलमे तपते चाहक ने सुआद होइ छै, जँ से नहि, तँ जहिना अधिक बोखारक आगू कम बोखार, बोखार नै रहि जाइत तहिना ने चाहो होइ छइ।"

भूखलकेँ पहिल कौर आ पियासलकेँ पहिल घोंट जहिना सुखद होइ छै तहिना चाहक घोंट लगैबते शोभा काका बजला-

"गाम-घरक की हाल-चाल अछि?"

गाम-घरक हाल-चाल सुनि सुगिया काकीक मन उड़ए लगलैन। बजैसँ पहिने सोचए लगली जे केमहरसँ बाजी। गाम दिससँ आकि परिवार दिससँ। सम्हारैत बजली-

"गाममे तँ ऐबेर साक्षात् सरोसतिये आबि गेली। एकोटा विद्यार्थी फेल नै भेल।"

सभकेँ पास सुनि शोभा कक्काक मन ओझरा गेलैन। जखन सभ पास केलक तखन सुशीलक केना बुझब जे केतेसँ नीक केतेसँ अधला केलक। पाशा बदलैत पुछलखिन-

"केकरा कोन डिबीजन भेल?"

काकीक मन पहिनहिसँ उड़ल रहबे करैन, जहिना दौड़ैकाल पैरक ठेकान नै रहैत तहिना प्रश्नकेँ सुआदने बिना बजली-

"सभसँ बेसी नम्बर अपने सुशीलकेँ अछि।"

'सभसँ नीक सुशील'केँ सुनि शोभा काका बजला-

"अपने जे हुअए मुदा सुशीलकेँ आगूओ पढ़ाएब।"

आगूक नाओं सुनि सुगिया काकी भकरार फूल जकाँ बजली-

"रिजल्ट निकललापर जखन सुशील संगी-साथी सभसँ भेँट कऽ आएल तखनेसँ मन खसल देखै छिऐ!"

"से किए?"

"कहैए जे आगू पढ़ैले सभ बाहर जाएत..?"

सुगिया काकीक विचारकेँ शोभा काका विचारक अलमारीमे चौपेतैत बजला-

"नीक हएत जे बौऔकेँ एतै सोर पाड़ि लियौ। परिवारक सभ मिलि कऽ किए ने परिवारक काजक विचार करब। केकरो मनोरथकेँ किए कियो दाबत?"

शोभा कक्काक विचार सुनि सुगिया काकीक मन खापैड़क धान जकाँ ऐ भागसँ ओइ भाग करए लगलैन। मुदा पतिक बात बुझि हनछीन नै कऽ कन्हलग्गू बरद जकाँ जू गेली।

सुशीलक संग आबि काकी अपन घरमे अभ्यागत जकाँ बजली-

"बौआ, पहिने बाबूकेँ गोड़ लगहुन।"

ओना सुशीलक मनमे अपनो रहबे करै जे अपन कर्त्तव्यक पालन केना केने छी से तँ पितेक बतौल रस्ता छिऐन, तँए ओइ पगक पग-सँ-पग टपलौं। तखन किए ने ओकरे हथियार बना जीवन-कर्म करब...।

पिताकेँ गोड़ लागि सुशील मुँह उठा असीरवादक प्रतिक्षा करए लगल।

सुशीलक माथपर हाथ रखैत शोभा काका पुछलखिन-

"बाउ! आगूक की विचार होइए?"

सुशील बाजल- "सभ बाहर जा-जा नाओं लिखौत।"

शोभा काका कहलखिन-

"मनोरथ अपनो अछि, माइयोक मन तेहने देखै छी। चारि-पाँच साल नोकरी रहल अछि। तैबीच देखबे करै छहक चारू भाए-बहिन पढ़ै छह, दिनो-दिन आगूए बढ़बह। जइसँ खरचो बढ़िते जाएत। केते कमाइ छी से केकरोसँ छिपल अछि। तखन तँ आमद-खर्च देख कऽ जँ परिवारक गाड़ी नै खिंचबह तँ केते दिन परिवार ठाढ़ रहतह।"

पतिक बातकेँ अनसुन करैत सुगिया काकी बिच्चेमे टपैक उठली- "हम केकरासँ थोड़ छी जे अपन मनोरथ पूरा नै करब। जहिना सबहक बेटा पढ़ैले बाहर जाएत तहिना हमरो सुशील जाएत।"

पत्नीक विचारसँ शोभा काका सकपकेला नहि। अपनो मनोरथ, पत्नियोँक मनोरथ आ बेटोक मनोरथकेँ पानि-चिन्नी-नेबोक रस जकाँ घोड़ए लगला। मुदा मनक बात कहथिन केकरा। नजैर उठा कखनो पत्नी तँ कखनो पुत्रपर दैत विचारए लगला। विचित्र स्थिति बनि गेल अछि। नोकरीक चाहमे लोक केतए-सँ-केतए भागि रहल अछि! किए ने भागत? जे हवा बनि गेल अछि आकि बनल जा रहल अछि तइमे जिनगीक ज्ञान पाछू पड़ि रहल अछि। नव तकनीक संग नव मनुख पैदा लऽ रहल अछि जेकर दूरी एते-बढ़ि रहल अछि जे चिन-पहचिन्ह तक समाप्त भऽ रहल अछि..!

◌

शब्द संख्या : 1161

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-23-0

साहित्य

उलबा चाउर

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

उलबा चाउर

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

समरपित

ISBN : 978-93-87675-17-9

दाम : ₹ 251/-

दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

ULBA CHAUR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर-

कियो ने

डेढ़ मासक शीतलहरी समयक रोहणियेँ उतारि देलक। पला-पला ओस पाला बनि दिन-राति बर्फवारी करैत जइसँ मनुखकेँ के कहए जे मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ जिनगीसँ तंग-तंग भऽ काहि कटैसँ मरबे नीक बुझए लगल। काहि काटि कऽ मरबसँ नीक चटपट मरब होइते छइ। जहिना माल-जालक रूइयाँ भरि दिन भुलकल ठाढ़ तहिना मनुखोक। मुदा माल-जाल जकाँ सौंसे देहक नहि। कारणो अछि जे मनुखकेँ रूइयाँ संग केशो होइ छै, माल-जालकेँ से नै होइ छइ। गाछ-बिरीछक पात अपन रंगेटा नै बदललक, पीअर भऽ भऽ सुखौ लागल आ तुबि-तुबि खसौ लागल अछि।

आने-आन जकाँ पचासी बर्खक सुगियोकाकीक मनमे हुअ लगलैन जे आब छियासियम अगहन भरिसक नहियेँ देखब। जेहो जारैन-काठी आ अन-पानि घरमे छल सेहो सठि गेल, शीतलहरीक कोनो ठेकान नै अछि, जीब केना?

सुगियाकाकीकेँ आगूक कोनो बाटे ने भेटैन। भेटबो केना करितैन, जँ माटिक रस्ता बाट होइ आ दिन-राति बर्खा होइत रहै, तखन पक्की सड़कक सुख कल्पने हएत किने? मुदा मरितो दम तक लोक जीबैक आशा थोड़े तोड़ैए जे सुगिया काकी तोड़ितैथ, कोनो कि हिनकर पचासी बर्खक पाकल फलक आँठी जकाँ देह सक्कत नै छैन। सकताएले आँठीमे ने अँकुरैक शक्ति सेहो अबै छइ।

सुगिया काकीक नजैर गेलैन व्यास बाबापर। ओ जे कण्ठ फाड़ि-फाड़ि कहै छथिन जे 'लूटि लाउ, कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।' से समयक ठेकान किए ने केलखिन जे जखन घरसँ निकलैबला समए बनत तखने ने लोक घरसँ निकैल किछु करत आ जखन घरसँ निकलैबला समैये ने हेतै, तखन केना दोसर दिन किछु करए निकलत? मुदा पेट से थोड़े बुझत। देहक जे सुख छै से केना भेटतै? आकि व्यासबाबा एअर कंडीशन मकान आ भरल-पूरल अन-पानिक जिनगी बुझि बजै छथिन..?

जेते सुगिया काकी मनकेँ मथैत तेते ओझराएले जाइत। जीबैक बाट कि भेटितैन जे आरो मन सोगाएले चलि गेलैन। असगर छोड़ि घरमे दोसराइतो तँ नहियेँ अछि जे दुनू गोरेक बुधियो आ हाथो-पएर लड़ा-चला कऽ देखितिऐ जे जीब सकै छी की नहि। एहने समैमे ने दोसराइतिक जरूरत होइ छइ। आन समए हेबे किए करतै। असकरे लोक चाह पीब लइए, खेनाइ खा लइए, सुति-पड़ि रहैए। तखन दोसराइतक जरूरते की? दिन-रातिमे ऐसँ बेसी चाहबे की करी? चौबीसो घन्टा कटैक धार तँ बनले अछि किए ने कटत। मुदा से नहि, उमेरो तँ किछु छी? बुढ़ाड़ी मृत्युक कारण छी मुदा जुआनीकेँ केना से कहबै? होइ छै तेकरो हजारो कारण मुदा कारण कारण तँ नहि भऽ सकै छइ। अकारण कारण केना भऽ सकै छइ।

हिया कऽ दुनियाँ दिस सुगिया काकी तकली तँ बुझि पड़लैन बेसौंगरकेँ ठेंगो एकटा टाँगक काज करै छै तँए एकटा सहयोगीक जरूरत तँ अछिए। मुदा सहयोगी हएत के? बेटी सासुरे बसैए, नैहरो हटले अछि, तखन? मुदा जरूरत तँ अछि औझुका। से तँ लगेक लोकसँ भऽ सकैए।

मनमे प्रश्न अबिते उत्तर स्पष्ट भऽ गेलैन जे रीतलालक ऐठाम जा

अपन बात कहिऐ जे ओ की कहैए। 'अनेरे बाबू जन लेबह हौ, तँ पनरह बापूत अपने छी।' तइसँ तँ काज नै चलत, काज तँ अछि अपन बनि अपना जकाँ जिनगीक पार लगबैक? मुदा तइसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत जे जँ भार उठा लेलक तँ बड़ बेस आ जँ नै उठौत तखन? तखन की, तखन यएह ने जे रीतलाल सन-सन बाबन गाही गाममे पसरल अछि। सभ कि कोलिफटुए आकि रसफटुए भऽ जाएत। जेकरा हम अपन बना अपनेबै से किए ने अपनौत। जँ सेहो नहि अपनौत तँ पहिने बुझा कऽ कहबै पछाइत बुझेबै...।

उमेद-नाउमेदक बीच सुगिया काकी रीतलाल ऐठाम विदा भेली। ठंढसँ जहिना देह सिरसिराइत तहिना देहक फाटल-पुरान वस्त्र सिमसिमाएल रहैन।

सुगिया काकीकेँ देखते रीतलाल अचम्भित भऽ गेल जे एहनो समैमे निकैल काकी दरबज्जापर एली! सुगिया काकीकेँ रीतलाल साक्षात् लक्ष्मी रूप बुझैत। गुणसँ भरल, जेहने कण्ठक स्वर, तेहने नजैरक गुण आ तेहने हाथक लूरिसँ भरल-पूरल सुगिया काकी। जाड़सँ सिरसिराइत देखते रीतलाल अपन देह परहक कम्मल सुगिया काकीकेँ ओढ़बैत अगियासी जोड़लक।

अगियासीक दुनू कात दुनू गोरेकेँ बैसते गप-सप्प उखड़ैक मनसून बनए लगल। मुदा दुनू अपन-अपन मुँह दबने। मनमे अपन-अपन राग-दोख।

रीतलालक मनमे होइत जे केना पुछबैन, काकी केमहर एलौं। दरबज्जापर एली तँ चाहक बेर चाह, जलखै बेर जलखै, कलौबेर कलौ आ सुतैबेर ओछाइनिक ओरियान कऽ देबैन।

तहिना सुगिया काकीक मनमे उठैत जे घरवारी पहिने किछु हँ-निहँस बाजत तखन ने उतारामे अपनो दुखनामा कहबै।

गुमा-गुम्मी पसरल रहल। गुमा-गुमी देख किछुकाल भेला पछाइत सुगिया काकी गुमगुमबैत गुमगुमा जकाँ बजली-

"बौआ, एक तँ तूँ एक वंशक छह, दोसर अंश तोरामे अछि जे सुतलो-सूतल कानसँ सुनैत रहै छी, तँए...।"

'तँए' कहिते सुगिया काकीक बोल ब्लॉटिंग पेपरमे सोंखल रोसनाइ जकाँ बन्न भऽ गेलैन। मुदा किछु प्रश्न तँ उठिए गेल छल- 'जे तूँ एक वंशक छह। तैसंग लूरि-बुधिक अंश सेहो अछिए।'

रीतलाल बाजल-

"काकी, तेहेन दुरकाल भऽ गेल अछि जे चिड़ै-चुनमुनीक कोन बात जे नमहरको-नमहरकाक जान बँचब कठिन भऽ गेल अछि। चीन-पहचीन सेहो मेटाएल जा रहल छै, तखन तँ लोक ताबते धरि ने धीरज रखत जाबत धरि आँखि तकैए। ओना, तकितो आँखि देहक दुआरे अथबल भऽ जाइ छै मुदा तैयो तँ भूख लगने टंगटुटा चुट्टी जकाँ नेंगराइतो चलिते अछि। नेंगराइत-नेंगराइत जखन बेदम भऽ जाइए आ पेटक आगिमे जरए लगैए तखने ने अपनाकेँ हवन चढ़बैए। मनुख तँ सहजे मनुख छी।"

रीतलालक बातकेँ सुगिया काकी किछु बेसीए बुझलैन। बेसी बुझैक कारण काकीक सोचक धार छिऐन। होइतो अहिना छै जे एक्के मुँहक बात कियो बेसी बुझैए तँ कियो कम। मुदा तैसंग तेसरो बुझनिहार तँ होइते अछि जे समगम बुझैए। समगम ई जे जेते प्रश्नकर्ताक बात रहल तेतबे सुननिहार बुझलक। सुगिया काकी तँ सहजे सुग्गाक बोल परखनिहारि छथिए।

जहिना कोनो रंगक वस्त्रपर दोसर रंग चढ़बैक विधि अलग-अलग अछि, अलग-अलग ई जे कियो बेधड़क दोसर रंग घोरि वस्त्रकेँ डुमा देलक तँ कियो आस्ते-आस्ते रंग घोरि बेर-बेर डुमा-डुमा रंग

चढ़बैए, तहिना काकी मने-मन सोचए लगली जे बेधड़क अपन विचार रखैसँ पहिने, आस्ते-आस्ते मनक उदगार व्यक्त करब बेसी नीक हएत।

काकी विचारिते छेली कि रीतलालक पत्नी चाह नेने पहुँचली। काकीक हाथमे चाहक गिलास पकड़बैत कबुतरी कहलकैन-

"काकी, तेहेन टिकजरौना समए भऽ गेल जे एक तँ दुनियाँ जाड़सँ जड़ा गेल अछि तैपर आगियो-छाइकेँ कि ओ तेजी छै जे बैशाख-जेठमे रहै छइ। ओइ समैमे जेते जारैनसँ रोटी-तरकारी बनैए तेतेसँ अखन खाली चाह बनैए।"

कबुतरीक रस-रसाएल बोल सुनि कोइली-बोलीमे सुगिया काकी बाझक स्वरलहरी छिटकबैत बजली-

"कनियाँ, एहने-एहने समैमे पुरुखक पुरुखपना परिवारमे देखल जाइ छइ। सभ किछु सुरीत रहने भारियो काज हल्लुके बुझि पड़ै छै, मुदा सभ किछु विपरीत रहने जे अपन-अपन परिवार, समाज आ मातृभूमिक सेवा करैए, वएह ने पुरुखपना भेल। बुढ़ भेलौं, कोनो कि भगवान छी जे जे कहब से भाइए जाएत। मुदा एते तँ कहबे करबह जे भगवान हमरे सनक नमहर जिनगी सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत दुनियाँ देखैत चलत।"

एक संग अनेको बात काकी बाजि गेली। किछु बात कबुतरी बुझबो केलक आ किछु नहियोँ बुझलक। तहिना रीतलालो सोल्हन्नी बात तँ नहियेँ बुझलक मुदा पत्नीसँ बेसी तँ बुझबे केलक। दोसर बात रीतलालक मनमे ईहो ठहकल जे परिवारक भीतरक जे प्रश्न अछि ओइमे परिवारक सभकेँ विचार रखैक समान अधिकार छै मुदा समाजक बीच तँ एक-मतक जरूरत होइ छइ। तइले परिपक विचारक जरूरत होइते छइ...।

कबुतरियोकेँ गर भेटल, मुँहमे ताला-लगा पति दिस आँखि उठौलक।

पत्नीक नजैर पड़िते रीतलाल बाजल-

"काकी, अखने देखियौ जे एक गिलास चाह पीलौं। यएह चाह गरम समैमे मन भरि दैत मुदा अदहोसँ कम शक्ति रहि गेल छै, तहिना तँ मनुखोक शक्तिकेँ होइ छइ?"

रीतलालक प्रश्न सुगिया काकी ठाढ़ काने सुनलैन। प्रश्नक एकभग्गू उत्तर नइ दैत बजली-

"रीतलाल, तोंही दुनू परानी अखन ऐठाम छह। परिवार तँ दुनू गोरेक छिअ। जे सन्तान छह ओहो सम्मिलिते छह, तँए परिवारमे ओहन विचारक धार बहबैक छह जे जिनगीक संग हँसैत-खेलैत-बोहैत चलए। हँसी-खेल दुनियाँमे कहाँ छै, ओ छै अपन काजमे। अपन परिवार छी आकि परिवार अपन छी, एकरा नीक जकाँ बुझनहि लोक अपन परिचए बुझि पबैए।"

काकीक विचार सुनि रीतलाल, पत्नीकेँ कहलक-

"काकी की केतौ पड़ाएल जाइ छैथ जे गपे सुनैमे रहि जाएब। जाउ, भानसक जोगार करू। खेला-पीला पछाइत निचेनसँ गप-सप्प करब।"

पतिक सह पाबि कबुतरी बाजल-

"एहेन समैमे काकियो केतए जेती। हम सभ जुआन-जहान छी से तँ एक मोटा वस्त्र देहमे सटने छी, काकीक तँ सहजे सुखाएल हड्डी छैन, बेसीए जाड़ होइत हेतैन। पहिने चाइटा गोरहा आनि कऽ घूरमे दऽ दइ छिऐन जे लगले टनगर भऽ जेती। अच्छा ई कहौथ जे कथी खाइक मन होइ छैन ?"

आशा पाबि सुगिया काकी आश दैत आस मारली-

"कनियाँ, भने दुनू बेकती छह, एक तँ भगवान बेसी अज-गज नै देलैन, तैयो अपन काजे ओहन रहल जे सभ दिन अजे-गजेमे बीतल। मुदा जे किछु अपन अछि सभ समेट लिअ। पाँच कट्ठा खेत बढ़ने अहूँक उपजा बढ़ि जाएत आ हमरो दिन घुसकैत कटि जाएत।"

काकीक बात सुनि रीतलाल बाजल-

"काकी, हमरासँ लगो अहाँकेँ बहुत अज-गज अछि पहिने ओ..?"

झपैट कऽ काकी बजली-

"पहिने पाछू किछु नहि, चिड़ैकेँ जेतए घोघ भरै छै तेतए रहै छइ। जे कियो अपन छैथ ओ एहेन दुरकाल समए नै देख रहल छैथ।"

"देख किए ने रहल छैथ मुदा सबहक तँ अपने जान भौर भऽ गेल छैन, तखन अनकापर नजैर केना जेतैन?"

रीतलालक बात सुनि सुगिया काकीकेँ कटु लगलैन। कटु लगिते मन रबरबेलैन। रबरबाइते कबकबाइत बजली-

"बौआ रीतलाल, कहलह तँ बड़-बढ़ियाँ मुदा मनुख तँ विवेकी होइ छै, ओकरा तँ विवेकसँ डेग उठबए पड़ै छइ। जँ से नइ उठौत तँ मनुखता केना औतै। खाली दूटा हाथे-पएर रहने तँ नइ हेतइ। दूटाकेँ के कहए जे चारियोटा पएर रहने पशु तँ पशुए भेल किने। जे हाथी पाँच गोरेकेँ पीठपर लादि चलैए। मुदा ओकरो तँ अपना रहैक ठौर-ठेकान आ खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि नहियेँ होइ छइ। ई दीगर बात जे बिनु दोसराइते बोन-झाड़मे रहि जीवन-जापन कऽ लइए मुदा पालतू तँ तखने कहबैए जखन मनुखक संग जीबैए।"

सुगिया काकीक बात रीतलाल नीक जकाँ नै बुझि सकल। प्रश्न

उनटबैत बाजल-

“काकी, जखन मनुख मनुख छी तखन दोसराइतकेँ बाँहि पकैड़ उठाबए आकि दोसराक बाँहिक आशा अपने उठैमे करए...।”

रीतलालक विचार सुनि सुगिया काकी मुस्कियाइत बजली-

“बौआ, कालक्रमे मनुख धरतीपर आबि आगू मुहेँ चलैत अछि। तहीले परिवार-समाजक जरूरत होइ छइ। जखन बच्चाक जन्म होइ छै तखन जँ ओकरा दोसर रक्षा नै करतै तँ की ओ उठि ठाढ़ भऽ सकैए। नइ भऽ सकैए। तहिना बुढ़ाड़ीमे, जखन शरीरक सभ अंग आस्ते-आस्ते काज करब छोड़ि दइ छै तखनो तँ दोसराइतक जरूरत होइते छइ। जँ एतबो बात लोक नै बुझत तँ की ओ मनुख कहबैक अधिकार रखैए?”

सुगिया काकीक बात सुनि रीतलालक मनमे उठल- अनेरे काकी सन लोककेँ ओझरीमे ओझरबै छिऐन। अपनो नीक नहियेँ होइए। नीक तँ तखन हएत जखन कामधेनु सन काकीसँ दूधक आशा राखब। तइले दुधारू भोजन आ रहैक ओरियान करए पड़त। मुदा जइ लीकपर गप-सप्प उतैर गेल अछि, तइसँ हटि दोसर लीकपर जाइमे बाधा तँ बीचमे अछिए...।

अपनाकेँ ओझराएल देख रीतलाल बाजल-

“काकी, अहाँ अपन जिनगी आ अपन विचारक मालिक अपने छी। जे मन हुअए से करब, अखन एतबे जे जेते दिन अपन बुझि रहए चाहब, तइमे बाधा नै हएत। आगू अपन जानी।”

रीतलालक विचार सुनि सुगिया काकीक मन मानि गेलैन जे रहै-जोकर स्थानपर पहुँच गेलौं।

सात भाए-बहिनक बीच सुगिया काकी अन्तिम तेसर बहिन। श्याम वर्ण, चाकर-चौरस देह, गोल मुँह, मझोल कदक सुगिया

काकी। गाममे बेछप जनाना। ओना, समाजक जनानाक बीच एकरूपता बेसी मुदा तइसँ भिन्न रहने सुगिया काकी बेछप रहली। समाजक बहुलांश जनाना खेती-बाड़ीसँ जुड़ल तँए दिन-राति ओइ चक्कीकेँ चलबै पाछू बेहाल...।

बेहालो किए ने रहती? मनुख बनि जखन ऐ धरतीपर खेल खेलैले एलौं, भिनसरमे घर-दुआर बना लेब, दुपहरमे बिलैम रौद-बसात जीड़ा लेब आ साँझमे सभकेँ उसारि अपने उसैर जाएब, यएह ने भेल जिनगी। से तँ सबहक सोझहेमे अछि। पतियानी लगौने बाबा अपन बेटाकेँ बाबा बना अपने उसैर-बिसैर जाइ छैथ। अहिना ने दोसर दिससँ पोता-बेटा बनैत, बाबाक कुट्टी लग पहुँच अपन समाधि लइए। मुदा ऐ बीच जे कुत्सित बाधा बिचमाइन करैत रहल ओकरा तँ देखए पड़त किने?

समाजमे सुगिया काकी ऐ दुआरे बेछप छेली जे जेहने हाथक लूरि बदलल छेलैन तेहने छातीक धड़कनक संग कण्ठक स्वर रहलैन, जे मुँहक बोल होइत निकलैत रहलैन। गीत-संगीतक प्रेमी सुगिया काकी। भित्तिि-चित्र वृत्तिवाली सुगिया काकी। अदौरी, दनौरी, बिऔड़ी इत्यादिक संग आमक अँचार-मोरब्बासँ लऽ कऽ तिल-तिसी धरिक अँचार बनौनिहारि सुगिया काकी। तैसंग सतरंग सागक संग सतरंग तरकारी-भुजिया-तरूआ बनौनिहारि सुगिया काकी।

साठि बर्ख पूर्व सुगिया काकी वसन्तपुर एली। जइ परिवारमे एली ओ परिवार बहुत जत्था-जमीनबला नहि। घराड़ीक संग पाँच कट्ठा चास। मुदा जेकरा संग बिआह भेलैन, ओ जेहने देखैमे भव्य तेहने कण्ठक सुरील। भजन-कीर्तन, नाच-गानसँ सोमनाथकेँ बच्चेसँ सिनेह छेलैन। जेना पाछूए-सँ नेने आएल होथि तहिना। दसे-बारह बर्खसँ जे घर छोड़ि वौड़ाए लगल ओ रंगमंचक धीर कलाकार बनि

वौड़ाइते रहला।

पुश्तैनी–तीन पुश्त आगूसँ–सुगिया काकीक नैहरक परिवार गीत-संगीतसँ जुड़ल। सोमनाथो घुमैत-घामैत सालक तीन-तीन-चरि-चरि मास रहबो करैथ आ सीखबो करैथ।

किसान परिवार रहितो सुगिया काकीक पिता–विश्वनाथ–क परिवार कृषि कार्यसँ अलग छेलैन। ओना परिवारमे बीस बीघा चास आ पाँच बीघा गाछी-कलमक संग नमगर-चौरगर बासो आ पोखैरो-इनार छेलैन्हे। कला-मर्मज्ञ विश्वनाथक परिवार, सोमनाथक बिआह अपन परिवारमे करा लेलैन। ने सोमनाथक घर-दुआर देखलैन आ ने धन-सम्पैतक हिसाब-किताब पढ़लैन।

वसन्तपुर अबिते सुगिया काकी परिवारक स्थिति देख मर्माहत भेली। मुदा उपाए की। अर्थ रूपमे पतिक कमाइ किछु ने, सालमे पाहुने-परक जकाँ पतिक आन-जान। पेटक आगि शान्त करै-खातिर सासु-ससुर दिन-राति एकबट्ट केने मुदा कटमटी तँ रहबे करैन।

नव कनियाँ बनि सुगिया काकी घरमे एली, केना सासु-ससुर कहितैन जे कनियाँ बोइन-बुत्ता करए संगे चलू...।

परिवारक प्रतिष्ठा तँ प्रतिष्ठा छिऐ, भलेँ जिनगी भरि नै निमहौ। एको दिन आकि एको क्षणक महत तँ जिनगीमे अछिए।

अपन दिन-दुनियाँ देखैत सुगिया काकी अपना दिस तकलैन तँ भरल-पूरल खजाना देखलैन। परती देख जहिना किसानीक जिज्ञासा जगैत, बजार देख बेपारक जिज्ञासा जगैत तहिना सुगिया काकीकेँ भेलैन। मुदा, सासु-ससुरक आगू मुँह केना उठौती, ई तँ प्रश्न रहबे करैन।

जिनगी जीबैत-जीबैत मनुखो आ पशुओ-पक्षी अभ्यस्त भेने आनन्दित जिनगीक सुख-भोग तँ करिते अछि। मुदा जँ बरिसल

पानिकेँ खेतक आड़ि बान्हि-बान्हि नै राखब तँ खेतमे पानि केना अड़त? आ जाबे खेतमे पानि नै अड़त ताबे धान केना रोपब? जँ से नै रोपब तँ बोनिहारिन-बोनिहारक पुतोहुक कलंक केना धुआएत? आ जँ से नै धुआएत तँ जिनगीए केहेन भेल..?

रंग-बिरंगक प्रश्न सुगिया काकीक मन बरसैत पानिक बुलबुला जकाँ इन्द्रधनुषी रंग नेने बनैत आ फुटैत...। मने-मन विचारली जे सभसँ पहिने अपन ढेकी-जत्ताक ओरियान करी। जखन ढेकी-जत्ता भऽ जाएत तखन समाजक कुटौन-पिसौन कऽ अपन स्वतंत्र कारोबार अपना घर-आँगनमे करब। की हमरा चूरा-चाउर कुटैक लूरि नइए। की हमरा मेदा-चिक्कस पीसैक लूरि नइए। तखन तँ भेल जे उक्खैर-समाठ, ढेकी-जात्ताक ओरियान करब। केना सासु-ससुरकेँ कहबैन जे अहाँ कर्जा लऽ कऽ हमरा कीनि दिअ। मुदा अपना माए-बापकेँ तँ कहि सकै छी। देह-हाथ मारि जे आँगनमे बैसल रहै छी तइसँ नीक जे अपन घर-आँगनमे किए ने अपन लूरिक किताब लिखब शुरू करी।

आँगनक ओसारपर ओछाएल ओछाइनपर बैस सुगिया काकी अपन दिन-रातिक झख-झखैत मने-मन सुमारक करए लगली जे केना पौतीमे राखल खीरा-करैलाक बीआ समैपर माटिमे गाड़ल जाइ छै आ समए पाबि जखन माटि पकैड़ हाल पबिते फुरफुरा कऽ अँकुरि माटिक ऊपर आबि अपनाकेँ गाछ कहए लगै छइ..!

बौधिक रूपे अगुआएल सुगिया काकीक उत्साह जगलैन- किए ने फूल जकाँ गन्ध सिरैज हवाक संग वायुमण्डलमे पसरब। मुदा बीचमे बाधा तँ ऐछे, ओ अछि जइ परिवारमे एलौं ओ परिवार अपन छी कि नहि। कहैले तँ सभ कियो छैथ मुदा अपन विचारक केते महत अछि से तँ थाहला पछाइत बुझब। मुदा थाहो लेब तँ कठिन अछिए। एकरूपा सासुकेँ तँ सम्हारि बाजि सम्हारि लेब मुदा ससुर तँ पुरुख

छैथ। पुरुखक करेज बेसी स्वार्थी होइए, अपन विचारकेँ दाव-चाप बले राखए चाहैए...। सुगिया काकीक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे बिजलोका जकाँ छिटकलैन। मन मानि गेलैन जे सासुकेँ संगी बनौल जा सकैए। जखने सासु समटेती तखने ससुर उसरता, उसरैत-उसरैत अपने उसरागा बनि सोझ भऽ जेता।

दोसर दिन, साँझू पहर सुगिया काकी चुल्हिक ओरियान करिते छेली कि तखन सासु-ससुर अनका खेतसँ खटि पहुँचलैन। पुतोहुकेँ काजमे लगल देख रधिया पतिकेँ कहलखिन-

“बड़ काजुल कनियाँ घरमे पएर रखलैन अछि।”

पत्नीक बोलकेँ नकारब सोहनलाल उचित नै बुझलैन, बुझलैन ई जे संगे-संग संगी बनि भरि दिन संगे काज केलौं तखन जेहने विचार अपन अछि तेहने ने हुनको हेतैन, लोकक काजो तँ लोकक पहचान छी। तहूमे भरि दिनक थाकल-मारल अपनो घरमे जँ अराम नै करब से केहेन हएत...।

अष्टयाम कीर्तनमे जहिना अगुआ-पछुआ एक्के धूनमे जयकार करैए तहिना सोहनलाल ताल मिलबैत बजला-

“हम सभ तँ हिनके सबहक नौकरी करै छी। ओना उचितो अछि। तेहेन भगवान जनम देलैन जे सोझहे हाथे-पैरटा देलैन। मुदा ओइमे बेइमानी नै केलैन, ओ चारू सुरेब अछि। जँ चारूमे सँ एकोटा अबाह रहैत तखन के केकरा पुछैत। अहीं हमरा पुछितौं कि हमहीं अहाँकेँ पुछितौं? भीख मांगब छोड़ि दोसर कोनो रस्ता जीबैक रहितए?”

नमगर-चौड़गर पतिक बात सुनि रधिया भाव-विह्वल भऽ गेली। निशाँएल साहित्यकार जकाँ जे जहिना गुदरी-चेथरीक आगिसँ सोनाक लंका जरबै छैथ, तहिना सासुक बोल सुगिया काकीक कानमे पड़लैन।

अनुकूल मनसून देख सुगियाकाकी अपन दाउ सम्हारली, भरल बाल्टीन पानि आ लोटा नेने पुतोहु आगूमे पहुँच गेली।

पुतोहुक आग्रह देखते जहिना बरफ-पानि हवा बनि अकासमे उड़ि जाइए तहिना रधिया उड़ैत बजली-

“कनियाँक सभटा सीख-लीक खनदानीए छैन!”

रधियाक संग सोहनलाल आरो उड़िया गेला। उड़ियाइत बजला-

“जहिना दबो भोज्य-वस्तु चमकैत थारीमे परसलापर अनेरो खेबैयाक मन भरछए लगैत तहिना घरक चिष्टेचार ने घरकेँ घर बनबैए। ई घर कि कोनो हमरे छी कि आब हिनके सबहक भेलैन। जेना सम्हारैथ।”

ससुरक बोल सुनि सुगिया काकीक मन कहलकैन- जेहने परिवारमे भगवान जन्म देलैन भरिसक सासुरो तेहने भेला। मने-मन भगवानकेँ गोड़ लगिते जगलैन- ई दलिदता केते दिन छहटा हाथ पैरक आगू ठाढ़ रहत? मुदा सासु-ससुरकेँ जे जिनगी भरिक बात पेटमे छैन से जाबे सुनि नै लेब ताबे बुढ़ी थोड़े कहती अपन चौथारीक गप-सप्प। तइ सुनैले तँ किछु पूजी[1] लगबै पड़त...।

जहिना बड़का करखन्ना बैसबैले बड़का घर बनबए पड़ै छै तहिना नमहर गप-सप्प सुनैले बेसी धैर्यक जरूरत पड़िते अछि। जइ बनबैमे किछु बेसियो समए लागि सकैए किने।

खेला-पीला पछाइत सुगिया काकी मालीमे तेल नेने सासु-ससुर लग पहुँचली। भरि दिनक थाकल-ठेहियाएलक दबाइयो छी तेल।

सोहनलाल रधियाकेँ कहलखिन-

“काल्हि धनरोपनी समापत भऽ जाएत। गाममे केते गिरहत तँ

[1] समए

आठ दिन पहिनहि रोपनी उसारलैन। ई तँ गुण अछि जे अपना सभ केकरो बान्हल जन नै छी, नहि तँ अपनो सबहक काज आठ दिन पहिनहि समापत भऽ गेल रहितए।”

आगूक बात सोहनलालक पेटेमे रहैन कि तैबीच पुतोहुक हाथमे माली देखलैन। माली देखते घरक मालीपर[2] नजैर गेलैन। अपने फूरने बाजए लगला-

“भगवान तेहेन बेटा देलैन जेकरा ने अपन खाइये-पीबैक ठेकान छै आ ने परिवारेक ठेकान। ओहन मनुख बुते घर चलत। अखन अपने दुनू बेकती थेहगर छी, कहुना कऽ घीच-तीड़ परिवारकेँ ससारने चलै छी।”

बेटापर पिताक आछेप सुनिते रधियाक मनक महथीन बाजल-

“बेटा धन छी, कोनो कि बेटी छी जे घर-अँगनाक टाटक अढ़मे नुकाएल रहत। भगवान हमरो सबहक औरुदा ओकरे दउ जे आरो वोनाएल रहए।”

ससुरक बात सुनि जहिना सुगियाक मन विसविसेलैन तहिना सासुक बात सुनि मन तनतनेबो केलैन। मुदा सासु-ससुरक बीचक बातमे नव कनियाँकेँ पड़क चाही की नहि? सुगियाक मन तहीमे ओझरा गेलैन। मुदा नीककेँ ‘नीक’ आ ‘अधला’केँ अधला जँ नै कहल जाए तँ के पटकाएत तेकर कोनो ठीक छइ। हँसियो होइ छै आ हहासो होइ छइ। गंभीरो हँसब होइ छै आ फुलहो हँसब होइ छै, मुदा से बुझत के? हँसी तँ हँसीए छी। मुँह खोलि बत्तीसीकेँ जोरसँ छिड़िया देलिऐ, बड़का हँसब भेल..!

तारतम करैत सुगिया सासुक विचारपर, सासु दिस घुमि,

[2] घरक मालिक- बेटापर

डिबियाक इजोतमे–मन्हुआएल चोकटल फूल जकाँ नहि, खिलैत कली जकाँ–आँखि-भौ-नाकक संग मुस्कियेली।

पुतोहुक मधुर मुस्कान देख रधियाकेँ जहिना गोबरखत्तोक पानि धाराक संग पाबि गंगामे पहुँच गंगाजल बनि जाइए तहिना भेलैन। सौंझुका बेला-बेली जहिना अपन चौंसैठो कलासँ नाचए-गाबए लगैए तहिना रधिया पतिकेँ देखबैत बजली-

“सोमनाथ अपन गुणक हिसाबसँ दुनियाँक गुणा-भाग जोड़ैए। जोड़ह, आरो जोड़ह। हम सभ माए-बाप भेलिऐ, तँए जीता-जिनगी ई नै कानमे आबए जे माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ बान्हि कऽ रखने छइ।”

सासुक बात सुनि सुगियाकेँ जहिना अपन शक्ति मुँह जगौलकैन तहिना रधियाकेँ सेहो दमपति-शक्ति जगलैन।

मन्दिरक आगू दुनू हाथ जोड़ि भक्त जहिना आराधना करैत तहिना अखन धरि सुगियो हाथमे माली रखने आराधना करैत रहली। माली देख रधिया सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, अहाँ बैसू जे सेवा सासुरक छी ओ तँ सासुरेमे ने सीखब। हम अपने अहाँ ससुरकेँ देह-हाथ ससारि दइ छिऐन।

ओना, ससुरोक सेवा पुतोहुक करतब छी मुदा स्थान-विशेषक अनुकूल। पिताक सेवा आ ससुरक सेवा एक रहितो दू प्रक्रियासँ चलै छइ। तहिना जन्मदात्ती माए आ पोसनिहारि सासु-माइक सेवामे सेहो भेद होइ छइ। अहाँक ससुर सन भगवान केकरा ससुर देलखिन। भगवान एहने सभकेँ देथुन।”

परिवारक बीच अपन प्रतिष्ठा पबैत सोहनलालक मन सोहनगर होइत-होइत सोन्हाएल दूधक डाबाक मक्खन सदृश सुगन्ध निकालैत बजला-

“कनियाँ, ऐठाम तीनियेँ गोरे छी। अही तीनू गोरेक ने ई घर

छी। ऐ घरक भार तँ तीनियेँ गोरेक ऊपर अछि किने। अहूँ खनदानी घरक बेटी छी। अहाँ दुनू गोरे[3] विचारि जे कहब से मानैत चलब। सएह ने..?"

ससुरक विचार सुनि सुगिया शुभ प्रभातकेँ प्रणाम केलीह।

दोसर दिन सबेरे सासु-ससुर बोइन करए घरसँ निकललैथ आ एमहर भानस करैसँ पहिने चाह-ताह पीला पछाइत, सोलह बर्खक नव कनियाँ–सुगिया–घरक चौकैठ लग बैस अपन शक्तिकेँ खोजए लगली।

मनमे उठलैन- हमरा सन परिवारमे जँ देह धूनि श्रम नै कएल जाएत तँ परिवारक नीवमे मजगूती नहि औत। ओना, शक्तिक क्षय 'श्रम' आ 'भोग' दुनूमे होइ छइ। यएह छी अकास-पतालक दूरी। खाएर जेतए जे हौउ मुदा आइसँ अपन दिनचर्या बना चलब।

भोरहरबामे पाँचटा प्रभाती गाएब आ पहिल-दोसर साँझमे पाँचटा मंगल सेहो गाएब, अपना घरमे गाएब, अपन सासु-ससुरकेँ सुनाएब। सभ अपन घरऽ देवताकेँ पूजा करैए, हमहूँ करब। तइसँ पहिने अखने चिक्कनि माटि घोरि सभ घर-ओसारकेँ ढोरब शुरू कऽ ली। सुखैयोमे दू-तीन दिन लगबे करत। कहिया-ले आ केकरा-ले भित्ती-चित्रक लूरि राखब। जिनगीक ठेकान नहि अछि। बिनु बँटने जे संगे जरि जाएत तँ अधरम हएत किने। से नहि तँ सभ घर-ओसारमे रंग-रंगक रूप-चित्र बना लेब। कोहवर, भानस, पढ़ैक, सुतैक रूप बना नै रखब तँ लूरियो-बुधि तँ हराइते छै, हराइते जाएत।

मुदा ई सभ तँ भेल घर सजबैक। मूल तँ अछि पेट। जखन अपना खेत नै अछि तखन खेती केना करब?

---

[3] सासु-पुतोहु

ओना, नैहरमे जँ खेत छेबे करैन तैयो तँ खेती अपने नहियेँ करै छैथ। ई तँ निसचित अछि जे जखने घर-ओसारमे चित्र बनबैक लूरि अछि तँ काजो-रोजगार अछिए। मुदा जैठाम छी तैठाम की रेडियो-अखबार छै जे लोक बुझत? लोक तँ बुझत देखिये-परेख कऽ, गाम-समाज बनत बजार। शुभ-अवसरक संग नव-नव घर बनत, नव-नव चित्रसँ घर सजौल जाएत। से नहि तँ सभसँ पहिने पेटक मुँह भरैक ओरियान कऽ ली, तखन बुझल जेतइ। ने दुनियाँ पड़ाएल जाइ छै आ ने अपने पड़ाएल जाइ छी। रहैयोक ऐछे आ रहब तँ संगो चलइ पड़त।

परिवारमे सुगियाक सासुरक जिनगीक पहिल जीत यएह भेलैन जे परिवारक सबहक विचारसँ घर चलत। सभ मिलि काजो-राज सिरजन करब आ सभ कियो मिलि-बाँटि करबो करब...।

अपन तीनू श्रमकेँ एकठाम होइते शक्तिक रूप बनल। वएह शक्ति पूजी बनि ठाढ़ भेलैन। परिवारक दिन-दशा सुधरए लगलैन। जेना-जेना अर्थक स्तर सुधरैत गेल तेना-तेना श्रमक रूप बदलैत परिवार चलए लगल। कमो अपन पूजी–श्रम-अर्थ–जँ अपना मनोनुकूल उपयोग कएल जाएत तँ कर्कशतामे कमी अबैत। कर्कशता ओतए विकृत रूप पकड़ैत जेतए मनकेँ प्रतिकूल श्रम करए पड़ै छइ।

समए बीतैत गेल। सासु-ससुर पुतोहुक सहयोगी बनि एकधारामे परिवारकेँ ठाढ़ केलैन। ओना दस बर्ख बीतैत-बीतैत सुगियाक नाओं-जश चरिकोसीमे पसैर गेल छेलैन मुदा एते-सघन काजक समाजमे गाम छोड़ि अनतए जेबाक समैये ने भेटैन। एक बोनिहार परिवार समाजक ओइ मानचित्रपर पहुँच गेल जेकरा 'सुतिहार परिवार' कहल जाइए।

बीस बर्ख पुरैत-पुरैत सुगिया काकीकेँ पाँचटा सन्तान भेलैन। तीनटा बेटी आ दू बेटा। सासु-ससुरकेँ रहने सुगिया काकीक काजमे

ओते बाधा नै पड़लैन जेते असगरूआ परिवारक चिलकौरकेँ पड़ै छइ। मनुख पैदा करब आ मनुख बना ठाढ़ करब, धिया-पुताक खेल नहि।

ऐ बातपर सुगिया काकी सदिकाल धियान रखै छेली। मुदा धियान रखलो पछाइत दुनू बेटा मरि गेलैन। मात्र तीनू बेटी बँचलैन। समाजक लोक सुगिया काकीकेँ जेहने गीत गौनिहारि, तेहने चित्रकार आ तेहने पाक पकौनिहारि एक स्वरसँ मानै छैन।

समए बीतैत गेल। सुगिया काकीक पति–सोमनाथ–उड़ि कऽ बम्बइ चलि गेल। ओत्तै दोहरा कऽ बिआहो कऽ लेलक। साउसो-ससुर मरि गेलैन...।

आइ तीनू बेटीक संग सुगिया काकी वसन्तपुरमे बँचि गेली।

अपना जनैत सुगिया काकी तीनू बेटीक बिआह नीके घर जानि केलैन मुदा समयक विर्ड़ोमे उधिया तीनू जमाइयो आ बेटियो मद्रासे-कर्नाटकमे जा कऽ बसि गेलैन।

अखन धरि, पचासी बर्खसँ पहिने धरि–सुगिया काकी समाजक समुद्र रूपी पेटमे हराएल रहली, मुदा सालक शीतलहरी सुगिया काकीकेँ असहनीय बना देलकैन।

◌

शब्द संख्या : 3780

सूदि भरना

बालपनमे लागल चोट जहिना अधवेशू वा बुढ़ाड़ीमे उपैक जाइत तहिना डोमीकाकाकेँ बेटी बिआहक चोट मास दिनक पछाइत उपकलैन। रोगाएल अवस्थामे जखन कियो जिनगी-मृत्युक मचकीपर झूलए लगैत आ तखन जहिना धर्मराजक दरबार लगैत तहिना डोमी काकाकेँ हुअ लगलैन। निष्पक्ष समीक्षक जहिना साहित्यक कोण-कोणक समीक्षा करैत तहिना डोमीकाका सेहो करए लगला। अन्तो-अन्त अही निर्णय-पर पहुँचला जे गाममे रहने जीवन-यापन नहि कऽ पाएब तँए बिनु परदेश गेने जीब असंभव अछि...।

केना नै असंभव होइतैन? पाँच बीघा जमीनबला डोमी कक्काक दू बीघा जमीन घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी आ खरहोरिमे बरदाएल बाँकी तीन बीघा मात्र जोतसीम जमीन छैन। समाजोक देखा-देखी आ कुटुमो-परिवारक स्तरक अनुकूल तँ करए पड़तैन। जहिना धरमोक स्वरूप समयानुसार बदैल जाइ छै तहिना ने समाजोमे अछि जे बेसी लाम-झामसँ बेटीक बिआह आ माए-बापक सराध करैए ओ समाजमे ओते ऊपर होइए। तेतबे नहि, जइ समाजमे दोससँ बेसी दुश्मन रहैत तइ समाजमे ईहो पुरौनाइ तँ जरूरीए होइत जे अनकासँ की मोर छी।

दलानक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर चीत भेल पड़ल डोमीकाका अपन दहिना हाथ मोरि दुनू आँखिपर नेने परिवारक

बदलैत स्वरूपपर आँखि गाड़ि सोचि रहल छला। मनमे उठलैन गलती अपनो भेल। ई तँ नजैरपर आएल जे समाज आ कुटुम-परिवारक देखौंस करब जरूरी अछि मुदा ई नहि आबि सकल जे ओहूमे पतियानी लगल अछि। एकठाम सभ समटल कहाँ छैथ! भैयारियोमे तँ होइते अछि जे संगे-संग जिनगी बनौनिहारि पितियौत बहिनक बीच एककेँ इंजीनियर-डाक्टर संगी भेटैए तँ दोसरकेँ ऑफिसक किरानी वा स्कूलक शिक्षक भेटैए। भूल भेल! आगू दिस तकलौं मुदा पजरबाहि आ पाछू दिस नै तकलौं। एकरा के उचित कहत जे एक-ओद्रक बेटा-बेटीक बीच इमान-बेइमान बनि जाउ। पाँच बीघा जमीन अछि चारू भाए-बहिनक हिस्साक संग पाँचम अपनो दुनू परानीक हेबे करत। जँ से नहि हएत तँ अपन जिनगी अनका हाथमे जेबे करत। मुदा गलती भेल औगताइ केने। तहूमे पत्नी आरो मन घोर कऽ देलैन। ई कहू जे अर्द्धांगिनी भऽ कऽ केहेन विचार देलैन जे ऐ गाममे कर्ज नै भेटत तँ हम नैहरसँ आनि देब। एकटा मुर्गीक जँ दसठाम हलाल होइ तँ ओकरा की कहबै?

एक तँ ओहिना परिवार महजालमे ओझराएल अछि तैपर हमरा किरतबे समाजक ऊपर आन समाजक कर्ज आबि जाए, एहेन काज जीता-जिनगी नइ करब। मुदा तइमे कनी औगताइ भेल। औगताइ ई भेल जे पच्चीस-तीस हजार रूपैए कट्ठाक चीज पाँचे हजार रूपैए भरना लगा देलिऐ। मुदा बीतलकेँ बिसरबे नीक। जँ से नै करब तँ भूतलग्गू जकाँ अपन देह-हाथ अपने नोचए पड़त..!

डोमी कक्काक नजैर भरना जमीनपर घुमलैन। केना लोक पाबैन-तिहारमे सेर-पसेरी लऽ खेतो भरना लगबैए आ बेचबो करैए? मनमे खौंझ उठलैन, कानूने बनने कि सुथनी हएत जे आठ बर्खक पछाइत भरना जमीन घुमि जाएत, मुदा होइ की छइ? तेतबे किए, जहिना महाजनीक सूदिकेँ सीमामे बान्हि देल गेल जे दोबरसँ बेसी

कहियो ने हएत, तहिना बैंकक कर्जकेँ किए ने बान्हल जाइए, जे ग्रामीण-दशा–माने गामक लोकक जिनगी–आगू मुहेँ नै ससैर पाछुए मुहेँ ढरैक रहल अछि। जैठाम एते महग पढ़ाइ भऽ गेल अछि, लाखक इलाज भऽ गेल अछि, लाखक घर बनि रहल अछि तैठाम की उपाय अछि। हँ एते जरूर हेबा चाही जे जखन सभ अपने छी तखन बीचमे इमान-बेइमान नइ बनए।

जहिना बरसातक मासमे एक दिसका पानिकेँ दोसर दिसका रोकि तेसर दिसक रस्ता पकड़ैत तहिना चिचा-तिरीमे डोमी कक्काक मन असथिर भेलैन। पड़ले-पड़ल पत्नीकेँ शोर पाड़लखिन।

आँगनक ओसारक शीतल पाटीपर बैस दायरानी बिआहक उनटा गिनती करै छेली। फल्लांक करौछ हेरा गेलै, ओकरा तँ कहब जरूरी अछि। जँ से नहि कहबै तँ अनेरे ओ दसठाम बाजत जे फल्लाँ करौछ रखि लेलक। कोन चीज छी जखन एते खर्च भेबे कएल तखन एकटा करौछे की छी। जिनगी बनबैमे जहिना जिनका जेहेन कठिन मेहनत भेल रहैए तहिना ने तिनकर जिनगियो ठाढ़ होइए। जँ से नहि तँ लाखक जिनगी केना पाँच-दसमे हारि मानत..?

दायरानीक मनमे खुशी एलैन, अपना जँ बौको डाँर लगल तैयो बैहरी दादीकेँ नफे भेलैन। टुटल चँगेरा लेलिऐन आ नवका कीनि कऽ देलिऐन। केना नै दैतिऐन ओ थोड़े बुझलखिन जे हमरा चँगेरामे केरा-आम छोड़ि दोसर चीज जाइबला नै अछि। ओना हमरो तँ काज चलिये गेल, भने पुरना गेल नव आएल। नीके भेल।

पतिक हाक सुनि ओसारेपर सँ काकी तेते जोरसँ बजली जे डोमीकाकाकेँ बुझि पड़लैन जे पत्नी लगेमे छैथ।

तैबीच काकी डोमीकाका लग चलि एली। आबि तँ गेली मुदा मनमे अपने घिरनी नचैत रहैन। एक चालि चलि जहिना घिरनी

विश्राम लैत तहिना काकीकेँ सेहो भेलैन। आँखि उठा तकली तँ देखलैन जे ग्रीष्मकालीन घास-पात जकाँ कुम्हलाएल मुँह, जेठुआ गरेक मेघ जकाँ चिन्तासँ लदल आँखि, निरजन वनमे हेराएल बटोही जकाँ पतिकेँ देख काकीक मन सहैम गेलैन। अपन कर्तव्यक एहसास भेलैन। पियासल-ले जहिना पानि आ तबधल-ले पंखाक हवाक जरूरत होइत तहिना चिन्ताएल मन-ले सेहो मीठ बोलक जरूरत होइए। आँचरसँ ढबढबाएल पतिक दुनू आँखि पोछैत बजली-

“एहेन सकल-सूरत किए बनौने छी?”

सिकीक वाण सदृश पत्नीक बोल डोमी कक्काक हृदयकेँ बेधि देलकैन। छटपटाइत बजला-

“उपाए कथी अछि जे..?”

काकी-

“तखन?”

पत्नीक मुहसँ ‘तखन’ सुनि डोमीकाका बजला-

“परदेश जाएब। दुनू बेटोकेँ नेने जाएब, नहियोँ कमा कऽ देत, मुदा पेट तँ पालत ने। जँ दसो हजार महिना कमाएब तँ एक बरखे नहि, दू बरखे नहि, पाँचो बरखे तँ खेत छोड़ाइए लेब।”

तैपर काकी बजली-

“आ तइ बीच?”

काका-

“अहाँकेँ जाबे धरि बरदाश हएत ताबे धरि रहब नइ तँ भाएकेँ नैहर समाद पठा देबैन।”

नैहरक नाओं सुनिते काकी बजली-

“अहाँ सभ जखन चलिये जाएब तखन घरमे कोठीए-भरली लऽ

कऽ की करब। मसोमातक चुड़ी जकाँ किए ने ओकरो सभकेँ फोड़ि-फाड़ि कऽ फेकिये देबइ।”

पत्नीक बातकेँ डोमीकाका तारि बजला-

“हँसी-ठठा छोड़ू एहेन गरूगर समए केना टपब से विचार दिअ। आखिर अहूँ तँ अर्द्धांगिनीए छी किने?”

पतिक विचार सुनि विचारवान पत्नी जकाँ दायरानी काकी बजली-

“पच्चीस-तीस हजार रूपैए कट्ठाक जमीन अछि। दस-बारह कट्ठा बेच लेब, भरना छुटि जाएत। बुझबै जे तीन बीघा जोतसीम नहि, अढ़ाइए बीघा अछि।”

अखाढ़क पहिल बर्खाक पहिल बून पड़लासँ जेहेन माटिक सुगन्ध निकलैत ओहने सुगन्ध डोमीकाकाकेँ पत्नीक विचारमे लगलैन। मुस्की दैत आँखि-पर-आँखि गड़ा धन्यवाद देलखिन।

◌

शब्द संख्या : 922

जन्मतिथि

तीस बर्ख नोकरी केला उत्तर रविकान्त आइ.जी. पदसँ सेवा निवृत्ति भेला। जखन कि रविशंकर आइ.जी.सँ आगू बढ़ि डी.जी.पी.क पदभार सम्हारलैन। साल भरि ऐ पदपर रहता, ओते नोकरीक अवधि बँचल छैन। रविशंकरकेँ डी.जी.पी.क पदभार सम्हारला जखन तीन दिन भऽ गेल तखन रविकान्तकेँ मन पड़लैन जे मीतकेँ बधाइ कहाँ देलिऐन। कारणो भेल जे पनरह दिन पहिनहिसँ जे कार्यभार दिअ लगलैन ओ नोकरीक अन्तिम दिन धरि नै फरिछौट भऽ सकलैन। समयक अभावमे रविकान्तकेँ मनमे एलैन जे मोबाइलेसँ बधाइ दऽ दिऐन। मुदा एक्के काजक तँ भिन्न-भिन्न जुइत होइए। जुइतिक अनुकूले ने काजो अनुकूल हएत, तँए मोबाइलसँ बधाइ देब उचित नै बुझि पड़लैन। ओना तत्काल जानकारीक रूपमे वधाइ दैत समए लेल जा सकै छल। मुदा से नै भेलैन। चाहक कप टेबुलपर रखि दहिना बाँहि उठबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"की ऐ बाँहिक शक्ति क्षीण भऽ गेल जे काज नै कऽ सकैए। मुदा..!"

रश्मि अपना धुनिमे छेली। ओना एक्के टेबुलपर बैस चाहो पीबै छेली आ मेद-मेदीन जकाँ मुँहमिलानीमे गपो-सप्प करै छेली आ अपने धुनिमे मनो वौआइ छेलैन। एकठाम बैस चाह पिबतो मन दुनूक दू-दिसिया छेलैन। रश्मिक मनमे रविशंकरक पत्नी 'किरण' नचैत रहैन।

जिनगी भरि सखी-बहीनपा जकाँ रहलौं मुदा आइ ओ रानीसँ महरानी बनि गेली आ..? की हम ओइ बटोहिनी सदृश तँ ने भऽ गेलौं जेकरा सभ किछु छीनि घरसँ निकालि देल जाइ छइ?

जहिना कोनो नीनभेर बच्चा माइक उठौलापर चहाइत उठैत बेसुधिमे बजैत तहिना पतिक प्रश्नक उत्तर रश्मि देलखिन-

"ऐ बाँहिक शक्ति ओतबेकाल रहै छै जेतेकाल शान चढ़ाएल हथियार ओकरा हाथमे रहै छइ। नहि तँ प्राणशक्ति निकलला उत्तर शरीर जहिना माटि बनि जाइ छै तहिना बनि कऽ रहि जाइए। हाथसँ हथियार हटिते जिनगी हहरए लगै छइ।"

तैबीच चाहक कप उठा चुस्की लैत रविकान्त बजला-

"बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। खेनाइ-पीनाइ, खेलनाइ-धुपनाइ, घुमनाइ-फीरनाइ सभ संगे रहल। कहाँ कहियो मनमे उठल जे दुनू मीतमे कोनो दूरी अछि। अपनाकेँ के कहए जे घरो-परिवार आ सरो-समाज कहाँ कहियो बुझलैन दुनूमे कनियोँ अन्तर छै, मुदा आइ..?"

"मुदा आइ की?"

"यएह जे आइ बहुत दूरी बुझि पड़ि रहल अछि। बुझि पड़ैए जेना अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि। कोन मुँह लऽ कऽ आगू जाएब, से किछु फुरिये ने रहल अछि।"

"तखन?"

"सएह ने मन असथिर नै भऽ रहल अछि। जिनगी भरिक संगीकेँ ऐहेन शुभ अवसरपर केना नै बधाइ दिऐन। मुदा एते दिन बरबैरक विचार छल आब ओ थोड़े रहत। कहाँ ओ सिंह दुआरपर विराजमान होइबला आ कहाँ हम देशक अदना एकटा नागरिक। की अपनाकेँ ओइ कुरसीक बुझी जइसँ हेट भेलौं? सीकपर रखल वा तिजोरीमे रखल वस्तु ओतबेकाल ने जेतेकाल ओ ओतए रहैए।

रविशंकर आइ ओतए छैथ जेतए हमरा सन-सन जिनगी जे अन्तिम छोड़पर पहुँचनिहार हुनकर हुकुमदारी करत। कोन नजैरिये ओ देखै छल आ आइ कोन नजैरिये देखता।"

रविकान्तक अन्तर-मनकेँ रश्मि आँकि रहल छेली। मुदा जेते आँकए चाहै छेली तइसँ बेसी घबाएल माछ जकाँ मनक सड़ैन बढ़ल जाइत रहैन। की आँखिक सोझक देखल झूठ भऽ जाएत? केना नै भऽ सकैए। दू गोरेक बीचक बात तँ ओतबेकाल धरि सत्य रहैए जेतेकाल धरि दुनू मानैए। काज थोड़े छी जे गरैज कऽ कहत जे तोरा पलटने हम थोड़े पलटबौ..!

असथिर होइते रश्मिक मनमे विचार जगलैन। दुखक दबाइ नोर छी। पैघ-सँ-पैघ दुख लोक नोरक धारमे बहा वैतरणी पार करैए। बजली-

"जहिना अहाँक मनमे उठि रहल अछि तहिना हमरो मनमे रंग-बिरंगक बात उठि रहल अछि। कहाँ रविशंकरक पत्नी किरण राजरानी आ कहाँ हम..? कहाँ राधाक संग कृष्ण आ कहाँ..! काल्हि धरि दुनू गोरे एकठाम बैस एक थारीमे खेबो करै छेलौं आ एक्के गिलासमे पानियोँ पीबै छेलौं मुदा आइ संभव अछि? आखिर किए?"

हवाक तेज झोंकमे जहिना डारि-डारिक पात डोलि-डोलि एक-दोसरमे सटबो करैत आ हटबो करैत तहिना पत्नीक डोलैत विचार सुनि रविकान्तो डोलए लगला। एक तँ पहिनेसँ रविकान्तक मन डोलि रहल छेलैन तैपर पत्नीक विचार आरो डोला देलकैन। अनभुआर जगह पहुँचलापर जहिना सभ हेरा जाइत तहिना रविकान्त हेरा गेला। औनाइत बजला-

"कानसँ सुनितो आ आँखिसँ देखितो किछु बुझि नै पाबि रहल छी जे की नीक की अधला! की करी की नै करी से किछु ने फूरि रहल

अछि। साठि बर्खक संगीकेँ एते दूर केना बुझब? मुदा लगो केना बुझब? साठि बर्खक पथिक-संगी जँ आब दू दिशामे चली तखन केते दूरी हएत, साठि बर्खक जिनगियो तँ छोट नै भेल।"

बिच्चेमे रश्मि टपैक पड़ली-

"जिनगी तँ एक दिन, एक क्षण वा एक घटनामे बदैल जाइए आ साठि-बर्ख की धो-धो चाटब!"

"तखन?"

"सएह नै बुझि रहल छी। एतेटा जिनगी एक संग बितेलौं मुदा आइ जइ जिनगीमे पहुँच गेल छी तइ जिनगीक सम्बन्धमे किछु विचार कहियो नहि केलौं।"

जहिना आन गामक चौबट्टी, तीनबट्टीपर पहुँचते भक्क लगि जाइत, जइसँ पूब-पच्छिमक दिशे बदैल जाइत तहिना पत्नीक बात सुनि रविकान्तकेँ भेलैन। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे ओहने चौबट्टी आकि तीनबट्टीपर भक्क खुजितो अछि। ओना रविकान्तक भक्क तेना भऽ कऽ तँ नहि खुजलैन मुदा एक प्रश्न मनमे जरूर उठलैन- बच्चासँ सियान भेलौं, सियानसँ चेतन भेलौं, चेतनसँ बुढ़ाड़ीक प्रमाणपत्र भेट गेल। हरबाह थोड़े छी जे अधमरुओ अवस्थामे बुढ़ाड़ीक प्रमाण नइ भेटत। मुदा मन किए धकधका रहल अछि? जिनगीक चारिम अवस्था वानप्रस्थक होइ छै, संयासीक होइ छै जे दिन-राति दौगैत दुनियाँक हाल-चाल जानए चाहैए। से कहाँ मन मानि कऽ बुझि रहल अछि..?

पतिकेँ गंभीर अवस्थामे देख रश्मि बजली-

"अहाँक मनमे जे नाचि रहल अछि वएह हमरो मनमे नाचि रहल अछि। मुदा ईहो बात तँ झूठ नहियेँ छी जे जिनगीक संग बाटो बनै छइ आ बाटे संग बटोहियो बाट बनबै छइ?"

तैपर रविकान्त बजला-

"की बाट?"

पतिक प्रश्न सुनि रश्मि विह्वल भऽ गेली। मनमे उठलैन- हेराइत संगीकेँ बाट देखाएब बहुत पैघ काज छी। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे तखन अपने किए एते वौआइ छी? कम-सँ-कम चाह पीबैकाल बैसारियोमे ऐ बातक विचार करैत अबितौं तँ औझुका जकाँ नहि वौऐतौं, जहिना जोतल आ बिनु जोतल खेतमे चललासँ पहिने धड़ियाइ छै, धड़ियेला पछाइत पतियाइ छै, पतिएला पछाइत पेरियाइत पेरा बनै छै आ वएह एकपेरिया बहुपेरिया बनैत चलै छइ...।

रश्मि बजली-

"अहाँ कौलेज छोड़ला उत्तर जिम्मा उठा सरकारी बाट पकैड़ साठि बर्ख पूरा लेलौं। ने कहियो जमीन दिस तकैक जरूरत महसूस भेल आ ने तकलौं। मुदा आइ तँ ओतइ उतैर आबि गेल छी जेकर रस्ता अखन धरिक रस्तासँ भिन्न अछि।"

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त मुड़ी डोलबैत आँखि उठा कखनो पत्नीक आँखिपर रखैथ तँ कखनो धरती दिस ताकए लगैथ। आगिपर चढ़ल कोनो बरतनक पानि जहिना निच्चाँसँ ताउ पाबि ऊपर उठि उधियाइक परियास करैत तहिना रविकान्तक वैचारिक मन उधियाइक परियास करए लगलैन। मुदा जहिना पिजराक बाघ पिजरेमे गुम्हैर कऽ रहि जाइत, तहिना आइ धरिक जे मन रूपी बाघ एहेन शरीर रूपी पिजरामे फँसि गेल छेलैन जे जेते आगू मुहेँ डेग उठबैक कोशिश करैथ ओते समुद्री वादल जकाँ आस्ते-आस्ते ढील होइत रहैन। आगूक झलफलाइत बाट देख रविकान्त बजला-

"विचारणीय बात जरूर अछि, मुदा बिनु बुझल जिनगीक संग तँ अहुँक जिनगी चलल कहाँ केतौ बेवधान भेल। आइ जे कहलौं ओ

तँ ओहू दिन कहि सकै छेलौं, जइ दिनसँ बहुत आगू धरि बढ़ि गेलौं। से तँ रोकि कऽ मोड़ि सकै छेलौं। मुदा आइ तँ जानल-बिनु जानल दुनू संगे वौआए चाहै छी!"

पतिक बात सुनि रश्मि मने-मन विचार करए लगली जे दुनियाँमे एहनो लोकक कमी नै अछि जेकरा जरूरत भरि लूरि-बुधि नै छै, मुदा ईहो तँ झूठ नहि, जे जेकरा छेबो करै ओइमे बेसी ओहने अछि जे या तँ उनटा वाण चलबैए वा नहियेँ चलबैए। तखन सुनटा वाण केना आगू बढ़त आ जँ बढ़बे करत तँ केते आगू बढ़त जेकरा आगू दुश्मन जकाँ चौबगली उनटा वाण घेरने अछि? मुदा कोन उपाय अछि, जखन शुद्ध तेल-मोबिल देल मजगूत इंजनो चढ़ाइपर दम तोड़ए लगैए आ टुटलो चक्का रहैत बिनु तेलो-मोबिलक गाड़ी भट्ठा गरे दौड़ैत रहैए जइमे बिनु ब्रेकक गाड़ी जकाँ केतेकेँ जानो जाइए आ केतेकेँ मुहौँ-कान फुटै छइ? रश्मिक मन कहलकैन- डेग आगू उठाएब जरूर कठिन अछि। मुदा लगले मनमे फेर उठलैन- जइ बाटकेँ पकैड़ आइ धरि चललौं जँ ओइ बाटकेँ छोड़ि दोसर बाट पकैड़ नव बटोही जकाँ विदा होइ, ई तँ संभव अछि। जहिना चिन्हार जगहक चोर पड़ा दूर देश जा अपन क्रिया-कलाप बदैल लइए आ नव-मनुखक जिनगी बना जीबए लगैए...।

वाण लगल पंछी जकाँ पतिकेँ देख रश्मि अपन अनुभवकेँ सान्त्वना भरल शब्दमे बजली-

"जहिना अहाँक जिनगी तहिना ने हमरो बनि गेल अछि। जएह बुढ़ापा अहाँक सएह ने हमरो अछि। मुदा एकठाम तँ दुनू गोरे एक छी। एक्के दबाइक जरूरत दुनू गोरेकेँ अछि, तँए विचार दइ छी जे आब ने ओ रुतबा रहल आ ने ओकाइत, तखन जानि कऽ जहरो-माहूर खा लेब सेहो नीक नहि। मनकेँ थीर करू।"

रश्मिकेँ आगूक बात पेटेमे घुरियाइत रहैन तइ बिच्चेमे रविकान्त बजला-

"बेसी दुख तँ नै बुझि पड़ैए मुदा साठि बर्खक प्रोढा अवस्था धरि हमरा सबहक नजैर नइ गेल! जखन कि सरकारक पैघ काजक जिम्मामे सभ दिन रहलौं। समयानुसार काज करितो अपन जिनगी तँ सुरक्षित रखितौं। साठि बर्खक पछाइतो तँ चालीस बर्ख जीबैक छल। जखन कि ईहो तँ जनिते रही जे पछाइत दरमाहा टुटि जाएत आ जिनगीक आवश्यकता बढ़ैत जाएत।"

पतिक विचारकेँ गहराइत समुद्र दिस जाइत देख मुँहक दसो वाण साधि रश्मि छोड़लैन-

"अनेरे मनमे जुड़शीतलक पोखैरक पानि जकाँ घोर-मट्ठा करै छी। ओना, घोरे मट्ठा ने घीओ निकालैए आ अन्है सेहो निकालैए। संयासी सभ केना फटलाहा कम्मल सबहक मोटरी बान्हि कन्हामे लटका लइए आ सौंसे दुनियाँ घुमैए। अहाँकेँ तँ सहजे चरि-चकिया गाड़ी चलबैक लूरियो अछि।"

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त ओझरा गेला जे एक दिस संयासीक बात बाजि कहि रहल छैथ जे जहिना कानूनी अधिकारसँ जीवन-रक्षा होइए तहिना ने संयास अवस्था–माने वानप्रस्थ अवस्था– पवित्र मनुखक नैतिक अधिकार सेहो छी। आ दोसर दिस चरिचकिया गाड़ीक चर्च सेहो करै छैथ जे भरिसक अपनो लगा कऽ कहै छैथ..!

संगी देख रविकान्त दहलाए लगला। जहिना कोसी-कमलाक बाढ़िमे भँसैत घरपर बैस घरवारी बंशियो खेलाइत आ कमला-कोसीक गीतो गबैत तहिना विह्वल भऽ रविकान्त बजला-

"हँसी-चौल छोड़ू। आब कोनो बाल-बोध नै छी। आबो जँ समाजिक जीवन नै बनाएब तँ देखते छिऐ जे मनुख एकदिस चान

छुबैए आ दोसर दिस सीकीक वाणक जगह बम-वारूद लऽ मनुखक बीच केहेन खेल दुनियाँमे खेला रहल अछि। खाएर, ओते सोचैक समए आब नइ रहल। जेकर तिल खेलिऐ ओकरा बहि देलिऐ। अपन चालीस बर्खक जिनगी अछि, ने हमर कियो मालिक आ ने हम केकरो मालिक छिऐ। भगवान रामकेँ जहिना अपन वानप्रस्थ जीवनमे अनेको ऋषि-मुनि, योगी-संयासी सभसँ भेँट भेलैन आ अपनो जा-जा भेँट केलखिन। तहिना ने अपनो दोसराक ऐठाम जाइ आ ओहो अपना ऐठाम आबए। मुदा विचारणीय प्रश्न ई अछि जे रामकेँ के सभ भेँट करए एलैन आ किनका-किनका ओतए भेँट करए ओ स्वयं गेला। ई प्रश्न मनमे अबिते गाछसँ खसल पचिलल कटहर जकाँ रविकान्तक मन छँहोछित्त भऽ गेलैन। छँहोछित्त होइते जहिना खोंइचा-कमरी एक दिस होइत कोह उड़ि कऽ कौआ आगू पहुँच जाइत, आँठी छड़ैप-छड़ैप बोन-झारमे बच्चा दइ दुआरे जान बँचबैत आ नेरहा उत्तर-दछिने सिरहाना दऽ पड़ल-पड़ल सोचए लगैत जे जेते पकबह तेते सक्कत हेबह तँए समए रहैत भक्ष बना लएह नहि तँ दुइर भऽ जेबह तहिना रविकान्त सोचैत-सौचैत जेना अलिसाए लगला तहिना हाफी-पर-हाफी हुअ लगलैन।

पतिकेँ हाफी होइत देख रश्मिक मनमे उठलैन जे हाफी तँ निनियाँ देवीक पहिल सिंह-दुआरिक घन्टी छी। भने नीक हेतैन जे सुति रहता, नहि तँ ऐ उमेरमे जँ नीन उड़लैन तँ अनेरे सालो-महिनेमे बदैल जेतैन। फटकैत रश्मि बजली-

"जेते माथ धुनैक हुअए वा देह धुनैक हुअए अपन धुनू। हमर जे काज अछि तइमे हम बिथूत नै हुअ देब। हमरा लिये तँ अहीं ने सभ किछु छी।"

तीन साए घरक बस्ती बसन्तपुर। छोट-नमहर चालीसटा

किसान परिवार गाममे शेष सभ खेत-बोनिहारसँ लऽ कऽ आनो-आनो रोजगार कऽ जीवन-बसर करैबला। अनेको जाति गाममे, जइमे मझोलका किसान बेसी। ओकरो सबहक दशा-दिशा भिन्न-भिन्न। तेकर अनेको कारणमे दूटा प्रमुख। जइसँ विधि-बेवहारमे सेहो अन्तर। किछु जातिक लोक अपने हाथे हरो जोइत लैत आ खेतक काजो करैत, जइसँ आमदनीक बँचतो होइत आ किछु एहनो जे अपने हाथसँ काज-उदम नै करैत तँए बँचत कम। कम बँचत भेने परिवार दिनानुदिन सिकुड़ैत गेल। ओना गामक बुनाबट सेहो भिन्न अछि। एक तँ ओहुना दू गामक बुनाबट एक रंग नहि, तेकर अनेको कारणमे प्रमुख अछि, खेतक बुनाबट, जनसंख्या आ जाति इत्यादि। बसन्तपुर गामक बुनाबट आरो भिन्न। ऊँचगर जमीन बेसी आ निचरस कम जइसँ गाछी-बिरछी सेहो बेसी अछि आ घर-घराड़ी, रस्ता-पेरा सेहो ऐल-फइल अछि।

बसन्तपुरमे दूटा नमहर किसान अछि। नमहर किसान परिवार रहने गामोक आ अगल-बगलक आनो गामक लोक जेठरैयती परिवारो बुझैत आ जेठरैयत कहबो करैए। राजक जमीन्दार तँ नहि, मुदा गमैया जमीन्दार सेहो किछु गोरे बुझैत। तेकर कारण जे दुनूक महाजनियोँ चलैत आ गामक झड़-झंझटक पनचैतियो करैत। कनी-मनी अनचितो काजकेँ गामक लोक अनठा दइत। तइमे राधाकान्त आ कुसुमलालक जमीनक बुनाबट सेहो भिन्न। चौबगली टोल सभ बसल अछि आ बीचक जे तीस-पैंतीस बीघाक प्लॉट छै ओ मध्यम गहींर अछि। जइसँ अधिक बर्खा भेने नाला होइत पानिक निकासी कऽ लैत आ कम भेने चौबगलीक ओहासीसँ रौदियाहो समैमे जमीन उपजिये जाइत। ओना दुनू गोरे बोरिंग सेहो गड़ौने छैथ तँए रौदियाहो समए भेने खेतक लाभ उठाइए लइ छैथ। पच्चीस-तीस बीघाक बीचक दुनू किसान छैथ। दुआरपर बखारियो आ पोखैरक महारपर दू-सलिया-तीन-सलिया

नारोक टाल रहिते छैन।

राधाकान्तो आ कुसुमलालोक परिवारक बीच तीन पुश्तसँ ऊपरेक दोस्ती रहल छैन। ओना दुनू दू जातिक छैथ, मुदा अपेक्षा-भाव एहेन छैन जे चालि-ढालिसँ अनठिया कियो नहि ई बुझि पबैत जे दुनू दू जातिक छैथ। किएक तँ कोनो काज-उदेममे एक-दोसराक बाले-बच्चे एक-दोसरठाम अबैत-जाइत रहल छैथ। तेतबे नहि, कुटुम-परिवार जकाँ दुनू परिवारक बीच कपड़ा-लत्ताक वर-विदाइक चलैन सेहो अछि। मुदा तैयो सराध-बिआह आदि परिवारिक काजमे दुनूक दू जातिक परिचय भाइये जाइ छैन।

नमहर भुमकम होइसँ पहिने जहिना नहियोँ होइबला बच्चा सबहक जन्म भऽ जाइ छै जइसँ दोस्तियारेक संभावना अनेरो बढ़ि जाइ छै मुदा से नहि, राधाकान्त आ कुसुमलाल–दुनू गोरे–केँ एक्के दिन बेटा भेलैन। ओना कियो-केकरो ऐठाम जिगेसा करए नै गेला तेकर कारण भेल जे अपने-अपन घर ओझरा गेलैन। ओना, पमरिया-हिजरनी महिना दिन तक दुनू परिवारमे दौग-बड़हा करैत रहल। रवि दिन जन्म भेने दाइयो-माइ छठिहारे दिन एकक नाओं 'रविकान्त' आ दोसराक नाओं 'रविशंकर' रखि देलखिन। अनेरे किए फूलक बोनमे आकि साँप-कीड़ाक बोनमे टहैलतैथ। बोन तँ बोने छी, दुनूक छी। तँए हरहर-खटखटसँ नीक दिनेकेँ पकैड़ लेलैन। ओना एकटा आरो केलैन जे दुनूमे सँ कियो जातिक पदवी नै लगौलैन।

सुभ्यस्त परिवार रहने तीन बर्खक पछाइते स्कूल जाइ-जोकर दुनू भऽ गेल मुदा चारिम बर्खमे दुनूक नाओं गामेक स्कूलमे लिखौल गेल। ओना जेहने सोझमतिया राधाकान्त तेहने कुसुमलालो, मुदा नाओं लिखबै दिन रविकान्तक पिता गेलखिन आ राधाकान्त अपने नै जा भायकेँ पठौलखिन। पित्ती एक बर्ख घटा कऽ रविशंकरक नाओं

लिखा देलखिन। ओना राधाकान्तकेँ स्कूलपर जेबाक मनो नहियेँ रहैन। किएक तँ स्कूल सबहक जे किरदानी भऽ गेल ओ देखै-जोग नै अछि। शिक्षक सभ विद्यार्थीकेँ नहियेँ पढ़ैले प्रेरित करै छैथ आ नहियेँ पढ़ैक जिज्ञासा जगा पबै छथिन, छड़ी हाथे पढ़बए चाहै छथिन।

एक तँ एकरंगाह परिवार तहूमे दोस्ती। दुनू गोरे तेहेन चन्सगर जे गामेक स्कूलसँ पटका-पटकी करैत निकलल। पटका-पटकी ई जे एक साल रविकान्त फस्ट करैत तँ दोसर साल रविशंकर, ओना हाइ स्कूलमे थोड़े गजपट भेलै, स्कूलक शिक्षक आँकि लेलैन जे केतबो ऊपरा-ऊपरी छै तैयो सोचन-शक्तिमे दुनूक बीच अन्तर किछु जरूर छइ। कौलेज तँ बिना माए-बापक होइए, केकरा के देखत। मुदा ऑनर्सक संग दुनू गोरे प्रथम श्रेणीमे निकलल।

आइ.पी.एस. कऽ दुनू गोरेक ट्रेनिंग आ ज्वानिंग सेहो भेल। दोस्तीमे बढ़ोतरी होइते गेल।

◌

शब्द संख्या : 2370

इमानदार घूसखोर

चुनमुन बाबूकेँ सभ जनैत–चाहे ओ आम आदमी होथि वा कचहरीक वकील, मुंशी, किरानी, चाहे इनटेलिजेन्स विभागक अफसर होथि वा प्रशासनिक पदाधिकारी–जे ओहन घूसखोर जिला भरिमे कियो नै छैथ मुदा ईहो सभ जनिते छैथ जे चुनमुन बाबू जिनगीमे कहियो अपन इमान नै डिगौलैन।

जिला सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज चुनमुन बाबू छैथ। ओना असल नाओं 'सुरेन्द्र प्रसाद' छिऐन मुदा दादीक पहिल पोता रहने उपहार देल नाओं 'चुनमुन' छिऐन जे पछाइत बाबू जोड़ा गेलैन। उर्फ कए कऽ अपनो चुनमुन बाबू लिखते छैथ जे नेमप्लेटमे सेहो छैन। ओना बहुतो लोक प्रेमचन्द आ दिनकरजी सन भेला जिनकर असली नाओंसँ बेसी लोक उपनामेकेँ जनै छैन।

बच्चेसँ चुनमुन बाबू इमानदारीक निर्वहन करैत आएल छैथ जेकर फलाफल सेहो जीवितेमे भेट रहल छैन। पढ़ै-लिखैमे एते इमानदार रहला जे कहियो मौलिक रचना छोड़ि नोट-फोंटक सहारा नइ लेलैन जइसँ सभ दिन नीक रिजल्ट होइत रहलैन। ओना सुभ्यस्त परिवार रहने कहियो अर्थक अभाव सेहो नहियेँ भेलैन। मुदा अपनो पढ़ैमे एते इमानदारी रखबे केलाह जे शिक्षकगणसँ परिवारजनक नजैरमे रहला। एम.ए; एल.एल.बी. कए प्रथम श्रेणीक जिला सत्र न्यायाधीश बनला।

चारि भाँइक बीच साए बीघासँ ऊपरे जमीन छैन जइमे तीन भाँइ नोकरी करै छैथ आ एक भाँइ देबेन्द्र प्रसाद गिरहस्ती करै छैथ। गिरहस्तीक अर्थ खाली खेतीए करब नहि, बल्कि परिवारकेँ संचालित करब सेहो होइत जे सुरेन्द्र प्रसादमे रहैन। नोकरिहरो भाँइ सभकेँ नै बुझि पड़ैन जे खनदानी परिवारमे कनियोँ केतौ घून-घान आकि दिवार-गराड़ लगल अछि। ओना, परिवारक एहेन बनाबटमे चुनमुने बाबूक विचार काज केलकैन। वएह कहलखिन जे जखन तीन भाँइ नोकरी करै छी तखन खेत आ परिवार देबेन्द्रेक भेलैन, जइ दिन हमसभ रिटायर भेलापर गाम आएब तइ दिन ऐगला विचार करब। मनमे ईहो रहैन जे जखने हम सभ खेत बाँटि लेब तखने ढेर तरहक बिहंगरा परिवारमे उठत। एक तँ ओहिना जमीन जाल छी तैपर भैयारीक तँ आरो महाजाल। जे सम्पैत आइ धरि मान-प्रतिष्ठा बनल रहल अछि वएह गाड़ा-घेघ बनि सभटाकेँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देत। जखन जिनगीमे माने-प्रतिष्ठा नहि तखन जिनगियो तँ एक्सपाइर डेटक दबाइसँ बेसी किछु नहियेँ होइत।

एक तँ ओहुना समए निर्धारित अछि जे केते उमेरमे बेटाक बिआह आ केते उमेरमे बेटीक बिआह करक चाही, तहूमे देहक लक्षण आगूमे ढाढ़ भाइए जाइत अछि। से सुरेन्द्रक पिता गौड़ीनाथ सेहो केलैन। जखन सुरेन्द्र प्रसाद बी.ए.मे पढ़ै छला तखने बिआह कऽ देलखिन। कहैले तँ ईहो अछि जे जखन पढ़ि-लिखि अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाइ तखन बिआह करक चाही, मुदा जैठाम पैरपर ठाढ़ होइक बेवस्थे नइ रहत तैठाम की सभ अविवाहित बनि बबाजीए भऽ जेता। कौलेजक अवस्थामे सुरेन्द्र प्रसाद रहैथ मुदा मिसियो भरि मनमे ई नहि उठलैन जे अखन बिआह अनुचित हएत। साहित्यसँ दिलचस्पी रहबे करैन तहूमे मध्ययुगीन साहित्यसँ बेसी, तँए मनमे चप-चपिये रहैन। पितोक मनमे कहियो दहेजक लोभ नइ उठलैन जे नीक शिक्षा पाबि

नीक नोकरी भेटलापर नीक दहेजो भेटै छइ। समान्य गिरहस्त परिवार जकाँ गौड़ीनाथ अपन दायित्व बुझि समैपर काज समेट लेलैन। किएक मनमे उठितैन जे बेटाकेँ पढ़ैमे बाधा उपस्थित हएत, तँए मन खुशीसँ खुशियाइते रहलैन।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखन सुरेन्द्र पढ़ै छला तखन जौंआँ बेटी भेलैन। नैहरेमे पत्नी रहथिन। ओना साले भरिपर दुरागमन भऽ गेल रहैन। जौंआँ बेटी देख माइक मनमे तँ कनी सोगो पैसलैन मुदा नानीक मनमे तेतेक खुशी रहैन जे सोल्होअना नातिने पाछू बेहाल रहए लगली। खुशीक कारण रहैन जे तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे अनेरे लोक बेटाक आशा करैए, तइसँ नीक बेटीए। जँ बेटीकेँ नाति नहियेँ देखत तैयो जँ दुनू बेटीक जिनगी-जान रहलै तँ कहियो माएकेँ थोड़े दवाइ-दारू आकि कपड़ा-लत्ताक दुख हुअ देत। अपनो पहिरन जँ दैत रहतै तैयो सभ दिन हराएले रहत। तहूमे तेहेन कपड़ा सभ बनि रहल अछि जे तीन साल तक नबे रहैए, आ चलत केते दिन तेकर कोनो ठीक छइ। सुइटर बीनैक लूरि सिखा देबै, भरि बाँहिसँ लऽ कऽ अदहा बाँहिंक तेते दैत रहतै जे दस-दसटा साटि कऽ पहिरत। की करतै माघक जाड़।

ओना, सुरेन्द्रक माइक मनमे सेहो खुशीए रहैन जे भगवान अपना कोखिमे बेटी नै देलैन तँ की हेतै पोतीक कन्याँदानक बाट तँ खुजिए गेल। जे नारी एकोटा कन्याँदान नै केलक ओ चाहे जे हुअए मुदा माइक एक सूत्रमे कम जरूर रहत।

जिला सत्र न्यायालयक न्यायाधीश बनि जुआइन करए सुरेन्द्र प्रसाद आइ जेता। असीरवाद दैत माइयो आ पितो कहलखिन-

“बौआ, नमहर काजक भार उठबए जा रहल छल, तँए नमहर बनि काज करिहह।”

माता पिताक असीरवाद सुनि सुरेन्द्र किछु नै बजला मुदा मनमे एकटा प्रश्न घुरियाए लगलैन, जे माए बुझि गेलखिन। तोसैत कहलखिन-

“बौआ, सभ दिन एकार बनि पढ़लह-लिखलह मुदा अपन परिवार अपने आगू नीक होइ छै तँए पत्नियोँ आ चारू कनटिरबियोकेँ संगे नेने जाह।”

सोझहेमे पिता सेहो रहथिन तँए सुरेन्द्र किछु बाजए नै चाहैथ मुदा मन गुनगुनाइत रहैन जे माए बुझि गेलखिन। बजली-

“बौआ, अपन बच्चाकेँ अपने देख-रेखमे पढ़ाएब बेसी नीक होइ छै, सेहो हेतह आ आइ-काल्हि देखै छिऐ दूधे लगसँ बच्चाकेँ अपन लगसँ माए-बाप हटा दइ छइ। दोसर हमरा सबहक आशा केते दिन करै छह, तँए जँ अपना सीखल नै रहतह तँ ऐगलाकेँ कथी सिखेबहक। मनमे होइत हेतह जे पिता की कहता मुदा नोकरीक अर्थ तँ ई नइ होइ छै जे गामे छोड़ि देब, परिवारे छोड़ि देब। मौका-मुनासिब अबैत-जाइत रहिहह। बेटा धन छह, तोरा माल-जाल जकाँ थोड़े डोरी बान्हि रखल जाएत। मनमे ई होइत हेतह जे परिवार टुटि जाएत मुदा से भ्रम हेतह।

भदवारि मासमे हिमालयक पानिक मिलान समुद्रसँ भऽ जाइत अछि जे अनदिना माने आन मौसममे कमजोर होइत-होइत सुखि कऽ छुटि जाइत अछि मुदा फेर भदवारिमे की देखै छहक। परिवार एक धार छी जेकर प्रवाह स्वच्छ पवित्र बनि अनवरत समाजिक दिशामे बहैत रहए यएह ने भेल। छाती सक्कत कए कऽ घरसँ जाह।”

अखन धरि सुरेन्द्र प्रसाद ‘छाती सक्कत’ करबक अर्थ खाली कहाबते धरि बुझै छला मुदा माइक असीरवादक शब्द मनमे औंढ़ मारलकैन। औंढ़ मारिते मनमे उठलैन- छाती सक्कत करब बाता-

बातीमे आकि काजमे? विचार सक्कत करब आकि पवित्र विचार सक्कत करब?

पवित्र विचारक संग पवित्र जिनगी सक्कत बना चलब आकि सक्कत मनुख बनब?

समुद्रक पानि जकाँ सुरेन्द्र प्रसाद जेते डुबकुनियाँ मारैथ तेते अथाह दिस डुमल जाइथ। अनासुरती मनमे उठलैन- आएल शुभक लगनमा शुभे हे शुभे...।

माइक शुभ बात सुनि शुभेक्षु नजैरसँ दलदलाइत सुरेन्द्र बजला-

“माए, तोहर असीरवाद शिरोधार्य अछि मुदा समस्यो तँ जिनगीक बाधक बनि दानव जकाँ अबैत रहै छै किने।”

ओना सुरेन्द्र खुशीमे दहैल गेल छला जइसँ ऐ विचारपर नजैर गेबे ने केलैन जे जहिना बड़का जंगलक कातमे पहिने झाड़े-झूड़ रहै छै जइमे छोट-छोट जानवर बास करैए तहिना ने मनुक्खोक बोन छै जइमे पहिने छोटका जीव-जन्तु रहै छइ।

चुपचाप भेल पिताक मनमे नचैत रहैन जे जुड़शीतलक अछींजल जकाँ घरसँ निकैल दोसराक सेवामे सुरेन्द्र जा रहल अछि की ओकरा बसौत आकि उजाड़त। मुदा बिनु गहन लगने अनुमाने ने होएत।

जहिना कौलेजक पहिल दिन, सासुरक पहिल भेँट, दोस्तीक पहिल मिलन भेने स्वत: हृदय डगमगाए लगैत तहिना सुरेन्द्रो प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचते डगमगाए लगलैन। तैबीच नव-नव संगी सभ भेँट करए आबए लगलैन। संगियो बेसी ओहन नहि, जे समतूल हुअए। मुदा सुरेन्द्र अवाक। सोझहे नमस्कारक उत्तर नमस्कारमे दैत रहला। आइ मात्र हाजरी बनाएब छेलैन तँए काजक भारो बेसी नहियेँ रहैन।

संगी सभ कमिते असकरे रहि गेला। मनमे परिवार आ दरमाहा, सोझहा-सोझही संगे उठलैन- दरमाहा तँ सीमित परिवारक स्तरक हिसाबसँ बनै छै, तहूमे जे देश जेहेन रहल ओकर ओइ तरहक बनै छइ। पाँच गोरेक परिवारमे छह गोरे अखने छी। तहूमे चारिटा बेटीए अछि। समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सवारी कसबे करत। घरक भाड़ा, बिजली-पानि, इन्कम टेक्स इत्यादि कटिये जाएत तखन हाथमे केते औत? महगी अपना चालिये चलबे करत। तहूमे तेहेन लफड़ल डेग पकैड़ नेने अछि जे मध्यवर्गीय जीवन धारक मोनि जकाँ चकभौंर लऽ रहल अछि..!

सुरेन्द्र प्रसादक मन विषसँ बिसाइन हुअ लगलैन। ओना, काज नै रहने कार्यालय समैसँ पहिने छोड़ब पहिल दिन उचित नै हएत। कुरसीक मुरेड़ापर मुड़ी अँटकौने अकास दिस देखैक कोशिश करैथ मुदा कार्यालयक छत बाधित करैत रहैन।

चारि बजिते कार्यालयसँ निकैल सुरेन्द्र प्रसाद सोझहे डेरा दिस विदा भेला। रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी रस्तामे होइत जे किछु नीको किछु अधलो छल। परदेशमे पति कमाए एला, से खुशी सुनयनाकेँ रहबे करैन। चारू बेटीक बीच सुनयना यक्षिणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिक्षा बेर-बेर नजैर उठा-उठा करैत रहैथ। ओसारपर पतिकेँ पहुँचते सुनयना मुस्की भरल नजैरक तीर छोड़ली।

वौड़ाएल मन सुरेन्द्र प्रसादक, जिनगीक समस्यासँ वौड़ाएल। ओना, कियो खुशियोसँ वौड़ाइत अछि तँ कियो दुखोसँ मुदा सुरेन्द्र वौड़ाएल छला- अपन आगूक जिनगीक समस्यासँ। अपनाकेँ संयमित करैत बेटीक हाथ पकड़ने कोठरी पहुँचला। पत्नी चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत गप-सप्प शुरू केलैन। अपन आमदनी देखबैत सुरेन्द्र बजला-

"अपन परिवार भेल, आमदनी सत्तैर हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा आ इन्कम टैक्सक संग अनेको खर्चक सूत्र लगले अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?"

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलैन तहिना पत्नी भोलीबौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली-

"देखू हमर कुल-खनदान एहेन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मासक पछाइत पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि, बाप थोड़े बुझत? आकि कहियो किछु कहबो केलौं?"

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद बजला-

"कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?"

सुनयना अपनाकेँ कमजोर महसूस करैत बजली-

"अहाँक जे विचार अछि से बाजू, जे अनुकूल हएत मानि लेब आ जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि लेब।"

गंभीर चिन्तक जकाँ सुरेन्द्र बजला-

"जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँक हाथमे दऽ देब आ अहाँ अपना विचारे परिवार चलाएब।"

नोकरीकेँ जिनगीक धार आ परिवारकेँ सवारी बुझि सुरेन्द्र प्रसाद नावपर सवार होइत भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलैन जे एकबेर पत्नीकेँ पुछि लिऐन जे केना घर चलाएब। मुदा एक मनकेँ दोसर मन रोकैत कहलकैन- जखन कुल-खनदानक रक्षक छैथ तखन किछु बाजब उचित नहि, तँए अपना-ले सोचब नीक हएत। चलैत धारमे

नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करैये पड़ै छइ। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जखन समाजे अपन रोग अपने अराधि-अराधि कऽ रोगाएल अछि तखन अपन रोग के देखत? मुदा एहनो रोग तँ होइते अछि जेकरा जाधैर दोसर नै बुझैत ताधैर दोसरकेँ कहलो नहियेँ जाइत। कमा कऽ जे परिवारमे आनब ओ पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देख चसकबे करती, जेते चसकती तेते लोको देखबे करत। देखबो किए ने करत कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक बिआह-दान–माने पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतरैक अवस्था धरिक काज–जँ नै कऽ लेब तँ कोन मुहेँ समाजमे जीब? नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे ने करैए, तेहने जँ उपाय होइ तँ नीक हएत...।

सुरेन्द्र प्रसादक नजैर काज दिस बढ़लैन। कोन एहेन कोर्ट अछि–माने न्यायालय–जइमे काजक बोझ नै पड़ल अछि? से तँ बोझक-बोझ काज अछिए। आ आनसँ भिन्न अपन पहचानो बनबैक अछिए...।

जेना किछु भेँट गेने उत्साह जगैत तहिना सुरेन्द्र प्रसादक मनक उत्साह जगलैन। कार्यालयक संग डेरोमे काज करब। काज बढ़ौने जँ किछु हथियाइयो लेब तँ ओते अनुचित नहियेँ हएत। जँ से नहि करब तँ परिवार साधारण नहि असाधारण रूपमे ठाढ़ अछि। खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ धरि तँ बेटे जकाँ बेटियोक हएत मुदा पढ़ाइ समाप्त होइते वा होइपर रहिते बिआहक भूत कपारपर चढ़ि जाएत। तँए जाधैर प्रतिकूलकेँ अनुकूल बना नै चलल जाएत ताधैर सड़क परहक गाड़ी जकाँ दुर्घटनाकेँ के रोकत। जहिना ओकाइतसँ भारी ढेंगकेँ बाँसक जोगार लगा उनटा-पुनटा घुसकौल

जाइत अछि तहिना उनटबै-पुनटबैक जोगार करैये पड़त, मुदा अनुचित रूपमे कदापि नहि..! हँ, तखन एकटा उपाय अछि जे अपन काज तँ यएह ने जे लोकक झगड़ाकेँ–माने मुकदमाकेँ–निर्णय करब। जेकर नोकरी करै छिऐ ओकर काज अनकासँ बेसी करबै। यएह जिनगीक पहचानो हएत। अनेरे किए एते मुकदमा कोर्टमे पड़ल अछि। महिनामे बीसटा मुकदमाक फैसला करब। जहिना सभकेँ सभ ओझरबै पाछू लगल रहैत अछि तहिना ने कोटो-कचहरी भऽ गेल अछि। ओना काज करैक दिशा सबहक निर्धारित अछि तखन किए ने अपनो अपन बाट पकैड़ तेज गतिये चलब..?

संकल्पित होइत सुरेन्द्र प्रसादक मन ठमकलैन। केकर फैसला करैक अछि, ओकरे ने जे अपन बात अपने नइ बुझि अनेरे ओझराइत आबि गेल अछि आ एकक ओझरीसँ दोसर ओझराएल अछि? जहिना रगड़ करैत आबि गेल अछि तहिना हमहूँ दू-चारि रन्दा चला आरो चिक्कन कऽ देबइ! बीसटा केसक फैसला मासक काजक संग डेढ़ लाखक ऊपरी आमदनी सेहो करब अछि। दुनू पार्टीसँ पाइ लेब आ जेकरा पक्षमे फैसला हेतै ओ अपन हएत आ जेकरा विपक्षमे हेतै ओकर पाइ घुमा देबइ। केकरो संग अनुचित नै करब। मुदा लोको तँ शेतानक चरखीए अछि, जे विचारलौं से चलए देत? किए ने चलए देत? चरखीकेँ चरखा बना घुमाएब तखन अनेरे ने सभ सुधैर जाएत। मुदा चरखी चरखा बनत केना?

सुरेन्द्र प्रसादक मन फेर ठमैक गेलैन। थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- जखने काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथैर लग पहुँचत। मास-दू-मास फोंक जाएत मुदा तेसर मास अबैत-अबैत तँ गर पकैड़िये लेत। जखने केसक बहस हएत आ फैसला करैक स्थितिमे औत, तखने ने ससारैक गर भेटत। तीन-तीन दिनपर तारीख देबै, अनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कऽ लिखाइ-फीस जमा करत।

चुनमुन बाबूक दस बर्ख नोकरी पूरि गेलैन। अनढड़न फुलबाड़ीक फूल जकाँ चारू बेटी खिलए लगलैन। तैपर अनढड़न भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा आरो देलकैन। मुदा पति-पत्नीक बीच सिनेहमे कमीक पेंपी पोनगए लगलैन।

सुनयनाक मन कनैत रहैन जे भगवान तेते धिया-पुता दऽ देलैन जे के केतए वौआएत तेकर ठीक नहि। तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे निहत्था बाप-माए बेटीक पार-घाट केना लगौत। अपने कहियो एक पाइ अनुचित नै कमाइ छैथ, की समाज हमरा छोड़ि देत? बिनु दहेजक बिआह बेटी सबहक हएत? केतए-सँ औत?

ओना पत्नीक मलिन चेहरा देख चुनमुन बाबू परखैक परियास करै छला मुदा लाख समस्याक बीच सुनयना पति लग पत्नीए जकाँ रहै छेली। काजक भार पतिपर छेलैन्हे। बेसी समैयो ने भेटै छेलैन जे बेसी बातो करितैथ।

दोसर साँझ, चाह नेने सुनयना पतिक हाथमे दैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। जहिना देवालयमे भक्त किछु याचना करए ठाढ़ होइत तहिना। मुदा सुरेन्द्रक मनमे मिसियो भरि प्रतिकुलता नहि एलैन। एक घोंट चाह पीब सुरेन्द्र बजला-

"मन मन्हुआएल देखै छी?"

ढलान पाबि जहिना पानि ढलैक जाइत तहिना ढलकैत सुनयना बजली-

"एक तँ भगवान बेइमान भेला जे केकरो रोटियोपर ने नून आ केकरो बोरे-बोरे नून दऽ दइ छथिन। नअ-नअटा बाल-बच्चाक परिमार्जन करब नान्हिटा खेल छी।"

सुनयनाक विचार मुहसँ निकलबो नै कएल छेलैन तइ बिच्चेमे सुरेन्द्र बजला-

"खेल-खेल खेलौं।"

'खेल-खेल खेलौं।' कहि सुरेन्द्र प्रसाद चुप भऽ अपन आँखि पत्नीक आँखिपर अँटकबए चाहै छला मुदा रोगाएल-सोगाएल-पीड़ाएल सुनयनाक आँखिमे सुखाइत जिनगीक बालुक टीला छोड़ि किछु नहि देख पड़लैन।

◌

शब्द संख्या : 2267

पटियाबला

जेठ मास, दिनक तीन बजैत। देखैमे रातिसँ बहुत नमहर दिन बनैत मुदा जहिना कायाक संग माया आ रौदक संग छाया चलिते रहैए तहिना नमहर दिनक संग धूपो एते बढ़ि-चढ़ि जाइत अछि जे श्रमशक्तिक दौड़मे मझोलको दिनसँ छोट बनि जाइए। सुरूजक शक्तिवाण एते उग्र रूप पकैड़ लैत अछि जे धरतियो ताबा जकाँ तबैध आगि उगलैपर उताहुल भऽ जाइए। धरती-अकासक बीच लुलुआएल लू एक-ताले बाधमे नाचए लगैए। जेना राम-रावणक बीच वा महाभारतक सतरहम दिन भेल तहिना आ तेहने तीरसँ बेधित सुलेमान बेहोश भेल ओइ चिड़ै जकाँ श्यामसुनरक दरबज्जापर आबि दाबामे साइकिल ओंगठा ओसारक भुइयेंपर चारूनाल चीत खसि पड़ल। खसिते आँखि मूना गेलइ। जहिना बन्न आखि साँस चलैत अधमरूक होइत तहिना सुलेमान बेहोश छल।

श्यामसुनरकेँ बेरूका तीन बजेक चाह पीबैक अभ्यास छैन। बगलक घरक ओसारपर चाह बनबैत रहैथ तँए साइकिलक खड़खड़ाएबसँ नै परेख सकला जे वाण लगल बाझ जकाँ कियो छैथ। साइकिलक बात समान्य तँए समुद्र उपछबसँ नीक जे जइ काजमे हाथ लागल अछि, ओकरा पूरा ली। सएह केलैन। चाह पीबैत श्यामसुनर दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ई अधमरू भेल के छिआ? मुँह निहारलैन तँ चिन्हल चेहरा सुलेमानक!

आँखि बन्न, कुहरैत मनबलाक तँ बोलियो अ-स्पष्ट जकाँ भऽ जाइ छै, तँए बाल-बोध वा पशु जकाँ दुख बुझब कठिन भऽ जाइत, तथापि छाती थीर करैत श्यामसुनर टोकलखिन-

"सुलेमान भाय, सुलेमान भाय?"

पानिक तहक अवाज जहिना ऊपर नइ अबैत, मुदा पानिक ऊपरक अवाज कम्पित होइत, लहैरिक अनुकूल तेतए धरि जाइत जेतए ओ पूर्ण थिर नै भऽ जाइत। मुदा कोनो उत्तर अबैसँ पहिनहि श्यामसुनरकेँ मन पड़ि गेलैन भिनसुरका अवाज- 'पटिया लेब पटिया, पटिया लेब पटिया।'

लगले मनकेँ नअ घन्टा उचैट कहलकैन- 'भरिसक रौदक चोट आ मेहनतक मारिसँ सुलेमान एते बेथा गेल अछि जे आँखि खोलैक साहस नहि भऽ रहल छइ!

तैबीच चिन्हल दरबज्जा आ चिन्हार बोली अकाइन करोट फेरैत अधखिल्लू आँखि उठा सुलेमान बाजल-

"श्याम भाय, केकर मुँह देख घरसँ निकललौं जे एको पाइक बोहैन नै भेल। उधार-पुधार ऐ उमेरमे खाएब नीक नै बुझै छी, करवन छी करवन नहि, केकरो खा कऽ मरब तँ कोसत। जलखै खा कऽ जे निकललौं, सएह छी। खाली पेटमे पानियोँ भोंकबे करै छै किने। पेटमे बगहा लगैए!"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरकेँ भेलैन जे भरिसक एकरे बिलाइ कुदब कहै छइ। भुखाएल बिलाइ जहिना छटपटाइत अपनो बच्चाकेँ कण्ठ चभैले तैयार हुअ लगैत तहिना भरिसक होइत हेतइ! मुदा रोगो तँ असान नहि, एक संग केते तीर लागल छैन। कोनो घुट्ठीमे तँ कोनो बाँहिमे, कोनो छातीमे तँ कोनो माथमे। भूख-पियास, थकान इत्यादिसँ बेधल छैथ! तोसैत श्यामसुनर कहलखिन-

"सुलेमान भाय, आँखि नीक नहाँति खोलू। एक्के कप चाह बनौने छेलौं जे आँइठ भऽ गेल अछि। बाजू पहिने चाह पीब आकि खेनाइ खाएब?"

पाश भरल बातमे आस लगबैत सुलेमान बाजल-

"भाय, ऐ घरकेँ कहियो दोसराक बुझलौं जे कोनो बात बजैमे संकोच हएत। देहमे तेते दर्द भऽ रहल अछि जे कनी पीठपर चढ़ि खुनि दिअ पहिने, तखन बुझल जेतइ।"

साए घरक जुलाहा परिवार गोधनपुरमे। झंझारपुरसँ पूब सुखेत पंचायतक गाम गोधनपुर। जैठाम मरदे-मौगीए मिलि बिछानक कारोबार करैए। गाम-गामसँ मोथी कीनि, अपनेसँ सोनक डोरी बाँटि बिछान बीनि, उत्तरमे अंधरा ठाढ़ी, दछिन घनश्यामपुर, पूब घोघरडीहा आ पच्छिममे मेंहथ-कोठिया-रैमा धरिक बजार बना कारोबार करैए। ओना जुलाहा खाली गोधनपुरेटा मे नहि आनो-आनो गाममे अछि मुदा बिछानक कारोबार गोधनपुरेटा मे होइत। शहर-बाजरमे जहिना रंग-बिरंगक वस्तु-जात बिकाइत तहिना गामो-समाजक बजारमे चलैए। जइमे रंग-बिरंगक वस्तु-जातक बिकरी-बट्टा होइए। किछु वस्तुगत अछि आ किछु भावगत।

साइयो परिवार अपन-अपन क्षेत्र बनौने अछि। सभ दिन सभकियो भिनसरे जेर बना-बना निकैल जाइए। ओना कहियोकाल सुलेमानो जेरेमे निकलैत रहए मुदा आइ असगरे निकलल छल। अपनामे सीमाक अतिक्रमण करबो करैत आ नहियों करैत। खुल्ला बजार तँ वएह ने टिकाउ होइत जे बिसवासू वस्तुक बिकरी करए। नइ तँ घटिया माल आ बेसी दाममे वस्तुक बिकरी हएत। मुदा गोधनपुरक पटियाबलामे से नहि, एकरंगाह वस्तु एकरंगाहे दाममे बेचैत।

पीठसँ घुट्ठी धरि जखन श्यामसुनर दस बेर बुलला तखन

सुलेमान पड़ले-पड़ल बाजल-

"भाय, आब उतैर जाउ। एह, अरे बाप रे! ओइ जिनगीसँ घुरलौं। मन हल्लुक भेल।"

कहि फुरफुरा कऽ उठि बैसैत बाजल-

"भाय, अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं। आँखि चोन्हिया गेल छेलए। सौंसे अन्हारे बुझि पड़ए लगल छेलए। ई तँ रच्छ रहल जे दरबज्जाक पैछला देबालक ठेकान रहल, नहि तँ केतए वौआ कऽ मरितौं तेकर ठीक नहि।"

श्यामसुनर सुलेमानक बातो सुनैत आ मने-मन विचारबो करैत जे हो-न-हो दरबज्जापर मरि जाइत तँ मुँहदुस्सी चिड़ै जकाँ लोक केना मुँह दुसैत तेकर कोनो ठीक नहि। जैठाम घरपर चिड़ै बैसने घरक सभ किछु चलि जाइत अछि तैठाम आइ हमरा संगे की होइत! मुदा जइ दुर्गतिक दुर्गपर सुलेमान पहुँच गेल छल ओइठाम मनुखक मनुखपना केहेन होइ, ईहो तँ एक प्रश्न अछि।

सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक सुलेमान सभ दिन पचास किलो मीटर बिछानक बोझ लऽ कऽ टहैल बेचि जीविकोपार्जन करैत अछि, ओहनकेँ की कहल जाए। जे खून-पसीना एकबट्ट कऽ जीब रहल अछि ओकर अन्तिम बोलो कियो परिवारक सुनि पबितै..?

श्यामसुनरक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते बजला-

"सुलेमान भाय, आब केहेन मन लगैए, किछु खाइ-पीबैक इच्छा होइए?"

मुस्की दैत सुलेमान बाजल-

"भाय, आब जीब गेलौं। आब खेबे करब किने। किछु दिन औरो दुनियाँक खेल-बेल देख लेब।"

जहिना गुड़ घाक टनक जेते बहैसँ पहिने रहैत अछि आ मुँह बनि निकैलते किछु बेसिया जाइत मुदा खिल–मूल–निकलला पछाइत जहिना सुआस पड़ए लगै छै, जइसँ रूप बदैल जाइ छै, पाशा आस लगबए लगै छै, तहिना सुलेमान बाजल-

"भाय, सरेलहा भात-रोटी खाइक मन नै होइए।"

"तखन?"

"टटका जँ गहुमक चारिटा रोटी भऽ जाइत तँ मन तिरपित भऽ जइत। ताबे नहा सेहो लेब।"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बजला-

"कल देखल अछि? बाल्टीन-लोटा आनि दइ छी, नीक नहाँति नहा लेब।"

श्यामसुनरक बात सुनि हँसैत सुलेमान बाजल-

"भाय, एना किए बजै छी। पचासो दिन पानि पीने हएब आ केतेको दिन नहेने हएब, तखन कल देखल नै रहत। लोटा-बाल्टीन कथीले आनब, आँगनमे काज हएत। हम सभ तरहक लूरि रखने छी ठाढ़े-ठाढ़ वा बैस कऽ सेहो नहा लइ छी आ जँ सासुर-समधियौर गेलौं तँ लोटो-बाल्टीन लऽ कऽ नहा लेलौं। ओना, भाय की कहूँ लोको सभ अजीब-अजीब अछि। ने माल-जाल जकाँ नाँगैर छै आ ने मनुखपना छइ। एक दिन अहिना रौदमे मन तबैध गेल रहए। एक गोरेक दरबज्जापर कल देखलिऐ, साइकिल अड़का नहाइले गेलौं। मन भेल पहिने चारि घोंट पानि पीब ली। तही बीच एकटा झोंटहा आबि झटहा फेकलक जे कल छुबा जाएत!"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरक मनमे वाल्मीकि आबि गेलैन। तमसा नदीक तटपर वाण लगल क्रोंच पक्षीपर नजैर गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हरैत बजला-

"अहूँ सुलेमान भाय कोन खिस्सा भुखाएलमे पसारै छी। झब-दे नहाउ, आँगनमे ताबे रोटी बनबबै छी।"

सुलेमान कल दिस आ श्यामसुनर आँगन दिस बढ़ला। जहिना भोजनक पूर्व स्नानसँ खुशी होइत तहिना खुशी होइत सुलेमान कल दिस बढ़ला। मुदा श्यामसुनरक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। पहिल प्रश्न उठलैन जे मृत्यु-सज्जापर पड़ल यात्रीकेँ वा फाँसीपर चढ़ैत यात्रीकेँ पुछि भोजन देल जाइत अछि। अपना मुहेँ सुलेमान कहलक जे गहुमक रोटी खाएब। बिनु मेजनक गहुमक रोटी ओहने होइत जेहेन डम्हाएल मालदह आम। जँ सोझहे रोटी कहैत तँ मरूआ रोटीक मेजन अचार, पिआजु, नून-मिरचाय, तेल सेहो होइत, मुदा टटका गहुमक रोटी केहेन हएत? सभकेँ अपन-अपन प्रेमी होइ छइ। जँ से नइ होइ छै तँ जुड़शीतलमे अरबा चाउरक बसिया भात-ले पहिने लोक तरूआ-भुजुआ किए बना लइए? मुदा तँए कि मोटका चाउरक बसिया भातक प्रेमी नून-पिआजु-अँचार नै हेतइ। मुदा जेते जल्दिबाजीक जरूरत अछि–जल्दिवाजी ई जे भुखाएल पेट, स्नानक पछाइत दोसर रूप पकड़ैत–तइमे रसदार तरकारी बनाएब संभव नहि, तँए दूटा घेरा पका चटनी आ रोटीसँ काज चलि सकैए। सएह केलैन।

स्नान कएल नोतहारी जकाँ दरबज्जापर अबिते सुलेमानक भुखाएल मन प्रेमी भोजनक बाट ताकए लगल।

आगूमे थारी देखते सुलेमानक मन सौनक सुहावन जकाँ हरैष उठल। रोटीक पहिल टुक चटनीक संग मुँहमे अबिते दँतिया कऽ दाँत पकैड़ जीह रस चूसए लगल। रस पबिते बिहुसैत सुलेमान बाजल-

"भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छइ। छै सबटा अपना मनमे। जाबे आँखि तकै छी ताबे बड़ बढ़ियाँ, आँखि मुनिते दुनियाँ धिया-पुताक खेल जकाँ उसैर जाइ छइ। अपने मुइने सृष्टिक लोप भऽ जाइ

छइ।”

सुलेमानक गंभीर विचार सुनि श्यामसुनरक मनमे उठलैन जे भोजैत जँ भोजहैरिक रसगर बात सुनै छै तँ ओ आरो बेसी आनन्दित होइ छइ। मुदा अपन बात तँ बिनु प्रश्न पुछने नै हएत। द्वैतमे दुनियाँ हेराएल छइ। बाढ़ि आएल धार जकाँ केतए-सँ-केतए भँसिया जाएत तेकर ठेकान रहत...। श्यामसुनर बजला-

“सुलेमान भाय, ऐ उमेरमे एते भारी काज किए करै छी?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जिनगीक हारल सिपाही जकाँ तरसैत बाजल-

“भाय, जखन अहाँ घरक बात पुछिये देलौं तखन किए ने सभ बात कहिये दी।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बुझि गेला जे बरियातीक भोज हुअ चाहैत अछि, से नहि तँ चरिया दिऐन-

“सुलेमान भाय, कहने छेलौं जे गरम-गरम रोटी खाएब सराएल नै खाएब आ अपने गपक पाछू सरबै छी?”

श्यामसुनरक बात सुनि हाँइ-हाँइ दूटा रोटी आ अदहा चटनी खा एक घोंट पानि पीब सुलेमान बाजल-

“भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भंडारसँ हाट धरिक कारोबार छल।”

श्यामसुनरक मनमे उठलैन- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक केतौ ठेकान नहि। भरि पेट अन्न नहि, फटलो वस्त्र नहि, मुदा छुच्छहो घरमे सबुर केना फड़ि जाइ छै! सुलेमानक परिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर

जिज्ञासा केलैन-

“ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ। मेहनतो आ आमदोक खियालसँ तँ नीके छेलए?”

अपन बामा हाथसँ चानि ठोकैत सुलेमान बाजल-

“गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भंडारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे की करितौं।”

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन-

“कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?”

सुलेमान-

“पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।”

डुमैत नाव देख जहिना नैया निराश भऽ जाइत जे जँ जिनगी बँचियो जाएत तँ जीब केना, तहिना सुलेमानक तरसैत मन काँपए लगल।

बातकेँ समटैत श्यामसुनर बजला-

“ई तँ धिया-पुताक खेल भेल, जाए दियौ।”

श्यामसुनर सुलेमानकेँ तँ कहि देलखिन ‘जाए दियौ’ मुदा अपन मन ठमकलैन। काजक रूपमे समाज बँटल अछि। ओइ काजक लूरि तँ ओकरा-ले सुरक्षित छइ। जँ कागजी ज्ञानक अभावो रहतै आ विकसित बेवहारिक ज्ञान देल जाइत तँ की घर-घर पाठशाला नै बनैत? जरूरत छल समयानुकूल ओकरा बनबैक। से नै भेल।

तेसर रोटी खाइत सुलेमान बाजल-

“भेल तँ सएह, मुदा परिवार बिलैट गेल।”

परिवारक बिलटब सुनि श्यामसुनर आगू बढ़ि पुछलखिन-

“अपन परिवारक कारोबार मरि गेला पछाइत की केलिऐ?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि उत्साहित होइत सुलेमान बाजल-

“की केलिऐ! हमरो जुआनीक उठाइन रहए। मनमे अरोपि लेलौं जे दुनियाँमे केतौसँ कमा कऽ परिवार जीवित रखबे करब।”

सुलेमानक संकल्पित बात सुनि वाह-वाही दैत श्यामसुनर पुछलखिन-

“दोसर कोन काज केलिऐ?”

“गाम-गामक कपड़ा बुननिहार बम्बइ चलि गेलिऐ।”

“बम्बइमे केतए?”

“भिवंडी। भिवंडीमे लूम चलै छइ। ओइमे कपड़ा बुनाइ होइ छइ। गमैया लूरि तँ रहबे करए, लगले नोकरी भऽ गेल। ओना मजदूरी रेट कम रहइ मुदा काजक माप सेहो रहइ। जेते करब तेते हएत। जुआन-जहान रहबे करी दिनकेँ ने दिन आ ने रातिकेँ राति बुझिऐ। खूब कमेलौं।”

श्यामसुनर-

“तखन ओकरा किए छोड़ि देलिऐ?”

श्यामसुनरक बात सुनि सुलेमानकेँ ओहिना भेलैन जहिना चोटेपर दोहरा-तेहरा कऽ चोट लगलासँ होइत। कुम्हलाएल फूल जकाँ मुँह मलिन आ ठोरमे फुरफुरी आबए लगलैन नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

“भाय, चारि साल खूब कमेलौं, पाँचम साल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नै उठल केतेकेँ जानो गेल, केतेकेँ बहु-बेटी छिनाएल, केतेकेँ कमाइ लूटाएल। सभ किछु छोड़ि जान बँचा गाम आबि गेलौं।”

तैपर श्यामसुनर फेर पुछलखिन-

“गाममे आबि फेर की केलिऐ?”

सुलेमान-

“तेही दिनसँ पटियाक ई कारोबार शुरू केलौं। सभ परानी लागल रहै छी, घीचि-तीड़ि कऽ कहुना दिन बीतबै छी।”

श्यामसुनर-

“सुलेमान भाय, हम ई नै कहब जे अहाँ नै काज करू, मुदा काजक ओकाति तँ देखए पड़त किने। कहुना-कहुना तँ चालीस-पचास किलोमीटर साइकिल चलैबते हेबइ?”

“हँ से ने किए चलबैत हएब। आब की ओ कोस रहल जे घन्टामे कोस चलैमे लगै छल।”

मुड़ी डोलबैत श्यामसुनर बजला-

“एक तँ ओहिना शरीर ढील भऽ रहल अछि तैपर साइकिल चलबै छी। तेतबे नहि, हो-न-हो केतौ रस्ता-पेरामे खसिये-तसिये पड़ब आ हाथ-पएर टुटि जाएत तँ के देखत?”

एक तँ सुलेमानक जरल मन ठंढाएल तैपर सँ परिवार-ले हाथ-पएर टुटब सुनि बाजल-

“भाय, केतबो अन्हारमे अनचिन्हार लोक ढेरिया किए ने गेल, मुदा हमहूँ तँ कोनो समाजक लोक छी तँए सभ समाज अपन-अपन धर्मक पालन करैए। तहूमे हम तँ चिन्हार छी, गोटे-गोटे अनठा कऽ आगू बढ़ि जाएत मुदा सभ तेहने तँ नहियेँ अछि। तहूमे जागल लोककेँ थोड़े विनाश होइ छइ।”

सुलेमानक जागल बात सुनि श्यामसुनर ठमकला। मन कहलकैन- बात तँ बड़ सुन्दर अछि मुदा जागलक की अर्थ सुलेमान

बुझैए, से बिनु जनने बात नै बुझि सकब। एक्के चीजक नाओं-शब्द ढेर अछि, नाओंक संग काज जुड़ल अछि। तैठाम बिनु पुछने काज नै चलत। पुछलखिन-

"भाय, जागल केकरा कहै छिऐ?"

जेना सुलेमानकेँ रटले रहै तहिना धाँइ-दे बाजल-

"भाय, जखन आँखि मूनल देखै छिऐ तँ बुझि जाइ छिऐ जे सूतल अछि आ आँखि तकैत रहैए तँ बुझि जाइ छिऐ जे जागल अछि।"

फेर 'ताकब' आ 'मुनब'क ओझरी श्यामसुनरकेँ लगलैन। मुदा ओझरीमे नै पड़ि आगू बढ़ैत पुछलखिन-

"केते गोरेक परिवार अछि?"

सुलेमान कहलकैन-

"अछि तँ बहुत मुदा चारू बेटीकेँ सासुर बसने अखन तीनियेँ गोरेक अछि।"

श्यामसुनर पुछलखिन-

"बेटासँ ने किए ई काज करबै छी, ओ तँ जुआन हएत?"

बेटाक नाओं सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जेना केतौ सुख-दुख दुनू बहिन गाड़ा-जोड़ी कऽ सामाक गीत गबैत होइ तहिना सुलेमान बाजल-

"भाय, उमेरक ढलानेमे बेटा भेल। सभसँ छोट अछि। ओकरो दू अक्षर नै पढ़ा देबै, तँ लोक की कहत?"

'लोक लाज' सुनि श्यामसुनर हेरा गेला। एहनो जिनगीमे लोक-लाज जीवित अछि! बिहुसैत पुछलखिन-

"मन लगा कऽ पढ़ैए किने?"

केकरा मनक बात ऐ युगमे के कहत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। सुलेमान बाजल-

"भाय, से तँ ओकरे मन कहतै जे मन लगा कऽ पढ़ै छी आकि मन उड़ा कऽ पढ़ै छी।"

"अहाँ की देखै छिऐ?"

"हम तँ अपना धंधामे लगल रहै छी। तखन केना देखबै?"

"संगी-साथी सभ कहैत हएत किने?"

"हँ, से तँ कहैए जे जाइए पढ़ैले आ चलि जाइए सिनेमा देखए, मैच देखए।"

"परीछामे पास करैए किने?"

"हँ से तँ ढौऔ-कौड़ी लगने पास कइए जाइए।"

"तब तँ आशा अछि?"

"हँ, से तँ ओकरेपर टक लगौने छी। जँ कहीं नोकरी भेलै तँ दिने बदैल जाएत।"

बेटाक बात छोड़ि श्यामसुनर पत्नी-दे पुछलखिन-

"घरवाली की सभ करै छैथ?"

पत्नीक नाओं सुनि सुलेमान पसिज गेल। मनमे उठलै- आब कि पत्नी ओ पत्नी रहल। संगे-संग चलबैवाली, काँट-कुशक परवाह केने बिना कखनो गुरुक काज करैवाली, तँ कखनो संगीक, कखनो प्रेमीक! जिनगीक अन्तिम क्षण धरि रहैक प्रतिज्ञा..! बाजल-

"भाय, कहुना कऽ बुढ़िया भानस भात कऽ लइए। बेचारी दम्मासँ पीड़ित अछि!"

"इलाज किए ने करा दइ छिऐन?"

"गरीब घरक लोकक इलाज की हेतइ। जेते पथ होइ छै तइसँ बेसी कुपथे भऽ जाइ छइ। तखन तँ चाहै छी जे बेचारी पहिने मरए।"

'पहिने मरए' सुनि श्यामसुनर पुछलखिन-

"से किए?"

"एतेटा जिनगीक सभ कमाइ लूटा जाएत, जखन हम मरि जेबै आ ओइ बेचारीक भीखक कलंक लागत।"

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर गुम भऽ गेला। किछु फूरबे ने करैन। सुलेमानक चेहरा दिस तकैत रहला। जेना आश्चर्यमे श्यामसुनर पड़ि गेला तहिना। किछुकालक पछाइत कहलखिन-

"आइ रहि जाउ। काल्हि एम्हरेसँ बेचैत-बिकनैत चलि जाएब।"

तैपर हँसैत सुलेमान बाजल-

"भाय, जेना आइ एको पाइ बोहैन नै भेल तेना नीके हएत। मुदा, बिमरयाह घरवालीकेँ एक नजैर नै देख लेब से केहेन हएत।"

◌

शब्द संख्या : 2395

सनेस

लक्ष्मण रेखाक बीच सीता नहाँति बैसल सनक काका प्रेम रस पीब प्रेमीक संग अधरुपिया चालि पकैड़ अधखिलू फूलक गमकमे गमियेला, गमियाइते सौंझुका सिंगहार जकाँ मुँहक मुस्की महमहेलैन- अजीब ईहो दुनियाँ अछि। ने सतीए अछि आ ने वेश्ये अछि। बनौनिहारकेँ धन्यवाद दी जे एक दिस विवेकक विन्यास बाँटि पाँतिए-पाँति, पाते-पात परैस देलैन तँ दोसर दिस दिन-राति बना आगूमे ठाढ़ कऽ देलैन। धर्मक संग पाप, सुकर्मक संग कुकर्म, विद्वानक संग मुरुख आ पुरुखक संग मौगीक जोड़ा लगा-लगा पतियानी बीच पात्रेक पत्ते-पत्ते सेहो परैस देलैन..!

जेते आगू दिस सनक काका देखै छला ओते छगुन्ता लगै छेलैन। एक दिस पानिक ठोप चन्द्रोदक कहबैत, तँ दोसर दिस असीम अथाह क्षीर सागर, मुदा चन्द्रोदको तँ केतौ दूधक तँ केतौ पानिक तँ केतौ दूधपनिया सेहो होइते अछि। कहू जे ई केहेन दुनियाँक खेल छी जे कियो असकरेमे सोल्होताल धऽ नचबो करैए, गेबो करैए, देखबो करैए आ कियो भीड़-भाड़ तकैत रहैए जे जेतेक देखिनहार रहत तेते नीक नाच हएत।

दुनियाँक चक्कर-भक्कर देख सनक कक्काक मन तरे-तर उदास भेल जाइत रहैन। जहिना घुमती बरियाती रंग-रंगक बात करैत तहिना मनमे उठैत रहैन। अनेरे मनुख बनि जन्म लेलौं। मनुखपना जखन एबे

ने कएल तखन मनुख किए भेलौं? मुदा 'पना' औत केना? बाँसक पना ओधि होइत अबै छै, केरा-मोथी-अड़िकोच इत्यादिमे सेहो ओहिना अबै छै, मुदा मनुखमे से कहाँ भेल? की बिनु 'पने'क मनुख ठाढ़ हएत? ठाढ़ तँ हएत मुदा शुद्ध ठाढ़ हएत आकि अशुद्ध? जखन जानवरोमे फेंट-फाँट होइते छै, तखन अपन हिस्सा मनुखे किए छोड़ि देत..?

थोड़ेकालक पछाइत सनक कक्काक मन कहलकैन- ओह! अनेरे दुनियाँक महजालमे फँसि मरैले छड़पटाइ छी। दुनियाँमे के एहेन अछि जे सुख-सागरमे बैस आनन्द नहि चाहैए, मुदा दुनियोँ तँ दुनियेँ छी जइमे रंग-बिरंगक सागरो सभ बसल अछि। क्षीर सागर, सुख सागर, लाल सागर, कारी सागर इत्यादि अनेक सागर...।

सनक कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे उठलैन- जीबैतमे जेतए वौआइ मुदा समाधि तँ ठौरपर लेब। जँ से नहि तँ हिटलर जकाँ थूकक धारमे भँसियाइत रहब!

उदास मन, बिरहाइत बगए सनक कक्काक रहैन। तखने भातीज पोलीथिनक झोरामे अदहा किलो अंगूर आ किलो भरि सेब आगूमे रखि देलकैन।

झोरा आगूमे देखते ठहाका मारि सनक काका हँसला। कक्काक ठहाकाक चोट मनमोहनकेँ नइ लगलैन, जेना आमक गाछपर गोला फेकते कोनो आमकेँ खसने गोलवाहकेँ जेहेन खुशी होइत सएह खुशी मनमोहनकेँ भेल। मुदा निशान साधल आमक महत किछु आरो होइते अछि। मनमोहन बाजल-

"काका, ई अहींक सनेस छी।"

'सनेस' सुनि सनक काका चौंकला जे सनेस कहि की कहैए! पुछलखिन-

"केतक सनेस छी?"

"कश्मीरी सेब छी आ पूनाक चमन अंगूर।"

मनमोहनक बातसँ सनक कक्काक मन तरे-तर सनकए लगलैन। छौड़ा की बुझि मजाक करए आएल। जहिना बाप एकोटा कुकर्म नै छोड़लकै तही उतारक अपनो भेल जा रहल अछि आ सेब-अंगूर देखबए आएल अछि!

मुदा तामसकेँ तरेमे दाबि काका बजला-

"हौ मनमोहन, एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की। बच्चा सभकेँ दऽ दिहक। अपने अनरनेबा आ लताम दुइर होइए। जेते तोहर लेब तेते अपन दुइरे हएत। अच्छा, एकर भाउ की छइ?"

लगले सुरे मनमोहन पुछि देलकैन-

"एकर भाउ बुझैक कोन जरूरत पड़ि गेल?"

मने-मन सनक काका सोचलैन जे छौड़ा नमहर छिनार-लूटार जकाँ बुझि पड़ैए। बजला-

"बौआ, आब तँ सहजे चल-चलौए छी मुदा अपनो देश-कोसक हाल बुझब कोनो अधला थोड़े हएत?"

एक तँ सनक कक्काक बदनामी शुरूहेसँ रहलैन जे घरोक लोक सनकाहे कहै छैन। केना नै कहतैन, सभ अपन-अपन परिवारक बाल-बच्चा-ले करैए आ सनक काका से बुझबे ने करै छैथ, माने अपन परिवार आ दोसर परिवारमे कोनो भेद नहि। जहिना अपन परिवार तहिना दोसराक।

अखन धरि मनमोहन यएह बुझैत जे परिवारोसँ काका बाड़ले-बेरौल छैथ तँए सभ चीजक दुख-तकलीफ होइते हेतैन। मुदा गप-सप्पसँ मनमोहनक नजैर करुआए लगल।

मनमोहनक रूखि देख सनक काका बुझैक कोशिश करए

लगला, कारण की छइ। मुदा मनमे मिसियो भरि सन्देह अपनापर नै भेलैन। मन गवाही दैते रहलैन जे निनानबे प्रतिशत राक्षसक देश लंकामे विभीषण केना भक्ति-भजन करैत जिनगी गुदस करै छला। केहनो सघन बोन सुकाठ-कुकाठक किए ने हौउ मुदा आमक गाछ आम आ लतामक गाछ लताम फड़ब बिसैर जाएत? दोहरा कऽ मनमोहनकेँ पुछलखिन-

"हौ बौआ, जहिना एक्के गोरे डाक्टरो आ इंजीनियरो नै भऽ सकैए किएक तँ दुनूक दिशा अलग-अलग छइ। मुदा सेबक जगह जँ अपनासँ नीक लताम आ अंगूरक जगह अनरनेबा नेने अबितह तँ फले नहि बीओ रोपि देतिऐ।"

कक्काक प्रश्न सुनि मनमोहन उछलैत बाजल-

"काका, दुनियाँ आब घर-आँगन बनल जा रहल अछि आ अहाँ अपन पुश्तैनी विचार रखनहि रहब।"

मनमोहनक साँसक गरमीकेँ अंकैत सनक कक्काक सनकी तेज नै भेलैन। मिरमिराइत बजला-

"बौआ, जँ दुनियाँ घर-आँगन बनि गेल तँ ओ नीक बात, मुदा ई तँ नीक नहि जे कियो नौड़ी-छौड़ी बना भाषा-साहित्य-संस्कृतिकेँ ओझरा मटिया मेट कऽ दिअए। से कनी बुझा दाए जे की भऽ रहल छइ?"

गुम्हरैत मनमोहन कहलकैन-

"काका, दुनियाँ आब नव पीढ़ीक अछि तँए केतबो दुसबै ओ चढ़बे करत।"

मनमोहनक प्रश्नसँ सनक कक्काक सनकी पाछू मुहेँ ससरलैन। पछुआ पकैड़ बजला-

"बौआ, जर्मनी-जापानी आ अंग्रेजी शब्द ऐ लेल चढ़-चढ़ौ भऽ गेल जे ओकर विकास अगुआ कऽ मशीनमे पहुँच गेल आ मशीनक नाओं रखि-रखि अहाँक घर-अँगनामे छिड़िया देलक! आ अहाँ ऋषि-मुनिक राज मिथिला कहि-कहि ओतए पहुँच गेलौं जे ओ सभ (ऋषि-मुनि) की कहलैन तेकर डिक्शनरिये चोरा लेत। तखन अहाँ बुझबै जे केहेन नव युगक नव लोक बनि गेलौं?"

सनक कक्काक बात सुनि मनमोहन ठमकल तँ मुदा पाछू हटैले तैयार नहि भेल। बाजल-

"काका, बजारमे अखन एक-सँ-एक खाइयो-पीबैक समान आ फलो-फलहरी तेहेन आबि गेल अछि जे अपना ऐठामक फल-फलहरीकेँ के पुछत?"

मनमोहनक प्रश्न सुनि सनक कक्काक सनकी आगू मुहेँ ससरलैन, बजला-

"बौआ, कोनो देश-कोसक विकासमे ओइठामक माटि, ओइठामक पानि, हवा इत्यादि जेकरा पंचभूत कहै छहक, मुख्य तत्व भेल। अनुकूल गतिए सृष्टि चलैए। अपना ऐठामक लताम आकि कोनो आने फल जे अछि ओकरा ऐठामक काल-क्रियाक गतिए जे जरूरी छल ओ प्रकृति पैदा केलक। अपना ऐठाम एकरे अभाव भेल जे पहाड़ी फलकेँ मैदानी क्षेत्रमे नीक मानल जाइए।"

अपनाकेँ निरुत्तर होइत देख मनमोहन मैदानसँ हटैक विचार करए लगल। मुदा सेब-अंगुरक पोलिथीन बीचक सीमा बनल रहलै। रूमाल चोर जकाँ सीमा पहिने के टपत..!

पाछू हटैत मनमोहन बाजल-

"बड़ आशा लगा अनने छेलौं जे काकाकेँ नीक फल खुएबैन।"

मनमोहनक बात सुनि सनक काका तारतममे पड़ि गेला जे

अखन धरि जे हम बुझै छेलिऐ तइसँ भिन्न ने तँ मनमोहन अछि। आशाक दोहाइ लगा बजैए जे 'आशा लगा अनने छेलौं' आशा तँ सभकेँ अपन-अपन होइ छइ। सबहक देहेटा अलग-अलग नहि, मनक उड़ान सेहो होइ छइ। पिजरामे बन्न सुग्गोकेँ पोसनिहार सिखबैए जे आत्मा राम पढ़- 'चित्रकूट के घाटपर भए सन्तन के भीड़। तुलसी दास चानन रगड़े, तिलक करे रघुवीर...।' मुदा सेहो तँ नहि बुझि पड़ैए। तखन? ओ तँ पुछनहि पता चलत। पुछलखिन-

"हौ बौआ, जहिना घरक लोक हमरा बताह कहैए तहिना ने ओकरो सभकेँ सनकपनीए फल खुएबै।"

कहि मने-मन सनक काका सोचए लगला। भाँग पीब कियो बाजि चुकल छैथ आकि असथिर मने सोचि कहने छैथ जे 'जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मन!' मुदा अहू छौड़ाकेँ तँ छिछा-बीछा नीक नहियेँ छइ। भरि दिन देखै छिऐ जे ऐठामसँ ओइठाम, ओइठामसँ ऐठाम ढहनाइते रहैए। तैपर सँ दिन-दिन आगूए मुहेँ ससैर रहल अछि, से केना? बहुरुपिया ने तँ छी? सलाइ रिंच जकाँ सभ नट पकड़ैबला..!

तही बीच मनमोहन बाजल-

"काका, अहाँ अपने हाथे बाँटि दियौ।"

मनमोहनक बात सुनि सनक काका ठमैक गेला। जहिना कोनो टपारि कुदैले दू डेग पाछू हटि दौग कऽ टपल जाइत तहिना काका पाछूसँ आगू बढ़ि बजला-

"हौ बौआ, बतरसिया हाथ भऽ गेल, ओहुना हरिदम थरथराइते रहैए, तैपर कोनो काज करैकाल तँ आरो बेसी थरथराए लगैए। अपन चीज जे थोड़-थाड़ छिड़ियाइयो गेल तँ नहि कोनो, मुदा तोहर जे एकोटा अंगुर खसि पड़त तँ तोरे मन की कहतह। यएह ने जे सनकाहक ठेकान कोन। तँए हमरा चलैत तोरा मनकेँ ठेँस लागह से

नीक नहि बुझै छी।"

कक्काक बात सुनि मनमोहन बाजल-

"तँ की काका घुमा कऽ लऽ जाइ?"

अनेरे ओझरीमे ओझराएल अपनाकेँ देख सनक काका, ठाँहि-पठाँहि बजला-

"ई तोहर खुशी छिअ जे घुमा कऽ घरपर लऽ जा वा दोकानदारेकेँ घुमा दहक वा रस्ता-पेरामे कोनो धिए-पुतेकेँ दऽ दहक। हम किछु ने कहबह। एते दिनक पछाइत दरबज्जापर एलह सएह खुशी अछि।"

सनक कक्काक बात सुनि जहिना जाड़सँ कठुआ कियो देह-हाथ तानि अचेत भऽ जाइए तहिना मनमोहनकेँ हुअ लगल।

◌

शब्द संख्या : 1284

उलबा चाउर

अगहनक पूर्णिमाक दिन। काल्हि पूस चढ़त। अदहा-अदहीपर जाड़ औत। महिना दिनक पछाइत पूर्णिमा औत। सकराँइतकेँ पूर्णिमासँ कोनो सरोकार नै छइ। सरोकारो केना रहतै, एकटा दिनक हिसाबे चलै छै दोसर मासक हिसाबे। ओना दुनू दिन-राति संगे चलैए, संगे रहैए मुदा कखन के अगुआ जाइए आकि पछुआ जाइए से ओ जानए। मुदा आब अगहनुआँ जाड़ थोड़े रहल, तहूमे ऐबेरक अगहनमे तेहेन शीतलहरी भेल जे माघोक कान कटलक। जहिना कोनो खेल आकि काजमे हानि-लाभ संगे चलै छै मुदा के कखन अगुआइ छै आ के कखन पछुआ जाइ छै से जानब सबहक बसक काज नहि। जँ से रहैत तँ एक्के भैयारीमे कियो वर-बिमारीक तर पड़ि तरोटा बनि जाइए आ कियो बेटाक दहेज लऽ कऽ उपरोटा बनि जाइ छइ। एक कील रहनहि की हेतइ। तरोटा ने साधल रहत उपरौटा तँ छुट्टे रहत। तहिना जाड़ोक भेल। अगहनक शीतलहरी, समैसँ पहिनहियेँ माघकेँ बजा अनलक। पूस तँ बिच्चेमे रहि गेल। अगहन-माघकेँ भेँट भेने पूस हेरा गेल। किएक तँ जहिना गोटे-गोटे गाइयो-महींसकेँ आ मनुखोकेँ समैसँ पूर्ब जुआनीक सभ वयकरन अपने आबि जाइत तहिना जाड़ोक भेल। पल-पल ओस पला पाला बनबै कएल। लतैर-लतैर गोड़ा रोपि लतरबे कएल। अनुकूल अवसरो भेटलै। कश्मीरी बरफवारी संगबे भऽ गेलइ। समैसँ पूर्व भेनौं आम जकाँ ने कोलिफट्टू भेल, ने रसफट्टू भेल आ चोकरेबो नहियेँ कएल। मुदा एते तँ भेबे कएल जे पछिया अगते

पकड़ने ओसो मोटा-मोटा पाला बनि पलरबे कएल। जे हवा संग चलै छल ओ ओसक बून बनि टप-टप नाकपर होइत खसबे कएल। मेघौन नै रहितो सुरूज तेना झँपाएल जे दिनो रातिए जकाँ भऽ गेल। भरिसक दशतारक ने तँ छी..!

जाड़क बैसारी भेने घूरोक चलती आएल, गपो-सप्प बढ़ल आ पोथियो-पुराण उनटल। पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोक बीच शास्त्रार्थ चलए लगल। कियो 'ग्रह' कहैत तँ कियो 'ग्रहक करतूत'। मुदा गपक गरमी ओतए मद्धिम पड़ि जाइत जेतए निर्णय होइत, जँ अपना बरदकेँ कुड़हैरेसँ कियो नाथत तँ अनका की! तइले हम सभ अनेरे मुहाँ-ठुठी कऽ फूला-फुली किए करब। जाड़ेक मसिम छिऐ ओकरो तिहाइ हिस्सा तँ छइहे। ओकरो जे मन फूरतै आ जेना मन हेतै तेना अपन करत। अपने केने ने कियो जीबैए। ओहिना तँ नै कहल गेल अछि जे अपने मुइने जग मरए।

बुढ़-बुढ़ानुसक बीच तेसरे झमेल ठाढ़ भेल। कियो कहैत जे पूस-माघमे शीतलहरी तँ देखैत एलौं मुदा अगहनमे तँ नै देखने छेलौं! मुदा हुनको सबहक गप ओइठाम जा अँटैक जानि जेतए जुग-जमानाक उठैत। बापे-बेटाक सम्बन्ध जे बनि गेल ओ केते उचित अछि, जखन जुगे बदैल गेल तखन की बदलत आ केते बदलत तेकर कोनो ठेकान! समुद्रक भँसियाएल नाव, लहैरक धक्का सहत तखन ने किनछैर धरत। नहि तँ केकर मजाल छी जे नावकेँ बँचा लेत..?

मुदा गाम-घरक बात उठिते सभ गप तर पड़ि जाइत। समस्या ठाढ़ भऽ कहैत जे केना बाधक लक्ष्मी एहेन समैमे घर औती। नै औती तँ उसनियाँ केना हएत आ के करती! उसनियाँ नै हएत तँ उसना चाउर केना बनत! नइ बनत तँ सुपच्च खेनाइ केना हएत? अरबा-अरबाइन तँ राजा-महाराजाक छिऐ, किसान परिवारक तँ उसने छिऐ ने। भलेँ

नोकरिया-चकरिया अपनाए नेने हुअए। परिवारक ओ औरत जे जेते परिवार-ले करैत ओ ओते ओइ घरक गिरथानि होइए किने। जहिना खेतक धान, पानिक संग चुल्हिपर चढ़ि अपन व्याकरण बदैल उसनल धानसँ उसना चाउर बनि 'उसना भात' बनैत जे सुस्वादुक संग सुपाच्यो होइत अछि तहिना ने घरक लक्ष्मी सेहो होइ छैथ।

पनरह-बीस दिनक शीतलहरी भरिसक छँटत। पोह फटिते रविया एकचारिक घूर लग बैस पीढ़ियेपर खुरपी लऽ कऽ तमाकुल मिलौल गाँजा कटैत रहए। पनरह-बीस दिनक परता भेने खुरपियो अधबिज्झू भऽ गेल रहइ। जहिना चालि कमने पैरक होइ छै तहिना धार मोटा गेल रहइ। लेटौल गाँजापर खुरपीक बेँटकेँ जोरसँ दबिते रवियाक मनमे उठलै-

"केते दिनसँ निआरै छी जे गुलाबतख्ती आ प्रेमकटारी लेब से तेहेन ने समए भऽ जाइ छै जे की लेब! बुझै छिऐ जे अपन प्रेमकटारी आ गुलाबतख्ती खुरपीए-पीढ़िया छी!"

घूरसँ खड़ौआ जौड़क गूल निकालि चीलमपर चढ़ा भोग लगबैत मंत्र पढ़लक-

"जीवैत-मरैत जे जेतए छह आबि जाह!"

मंत्र पढ़ैत रविया दमसा कऽ चीलममे दम मारलक। जहिना चारक वा भीतक दाबसँ घरक मुँहक चौकैठ-केबाड़ कसकसा कऽ बन्न रहैत मुदा जोरसँ धक्का पाबि खुजि जाइत तहिना रवियाक कपाट खुजल। बाजल-

"दिलरामक माए, कनी एमहर आउ?"

जड़ाएल पतिक अवाज सुनि रूपनी सिरसिराइत आबि आगूमे ठाढ़ भेली। ने दोहरा कऽ रविया किछु बजैत आ ने रूपनी। एक रंगक रोगी दोसराक की हाल-चाल पुछत। मुदा नहियोँ पुछने तँ नहियेँ

हएत। मुँहक काजे की छिऐ। खाइयेकालमे ने कनी बाँकी तँ बैसारीए रहैए। तहूमे बैसारियो की एक्के रंगक होइ छै, केतौ खेलहा तँ केतौ बिनु खेलहा सेहो होइते अछि। तैबीच तँ बीचमानि तखने चलत किने जखन दुनूकेँ नीके कहत। जँ से नइ कहत तँ मुँहक मानियेँ की भेल? मुदा बिहंगरो कम रहै तखन ने जे दुनूकेँ अगल-बगल जोड़ियो कऽ चलत, मुदा जैठाम अकासे फाटल छै तैठाम दरजीए बेचारा की करत आ केते करत! कियो खाइक रोगसँ पीड़ित भऽ सुखा रहल अछि तँ कियो भूखक रोगसँ। मुदा तहूसँ नमहर बिहंगरा तँ ओतए उठैत जेतए भुखेलहासँ बेसी भुखाएल-खेलहाक खेल चलैए!

दुनू परानी–रविया-रूपनी–एक दोसरपर आँखि अँटकौने जेना आगू-पाछू दुनू दिस दुनू दुनूकेँ देखैत। मुदा गाँजाक चढ़ल मन रविया अपन मौन तौड़ैत बाजल-

"बुझलौं की से किने आइ खिचड़ी खाइक मन होइए। तिला सकराँइतक भरोसे की रहब।"

पतिक बात सुनि रूपनी किछु बाजल नहि। मुदा रूपनीकेँ अनसोहाँत जकाँ रीब-रीब लगल। रीबरीबाइत बाजल-

"एना किए अहाँ तिलासकराँइतक खिदहाँस करै छी। सोझ मुहेँ कहू जे खिचड़ी खाएब।"

पत्नीक बात रवियाकेँ कण्ठक निच्चाँ नै उतरल। गल-गलबैत बाजल-

"एकटा खिस्सा कहै छी। एगो रहै अन्हरा एगो रहै डिठरा। दुनू मिलि कातिकमे एकटा खत्ता उपछलक। तइमे फँसलै एकटा अन्है। डिठरा कि केलक जे नाँगैर दिससँ अन्हराकेँ पकड़बैत जहाँ उधडरेड़पर आएल कि जोरसँ कहलकै- 'छोड़-छोड़ ने तँ धाए लेतौ साँप छिऐ!' ओ छोड़ि देलकै। से हम थोड़े छी। अहीं कहू जे आब लोक दुरागमन करैए

आकि माल-जाल फरिछबैए। हे मानि लेलौं जे बर-कनियाँक दुरागमन भेल मुदा बेटा-बेटीक की हएत। घरेक काजमे एना दू रंग किए भेल जाइ छइ?"

रवियाक बात सुनि रूपनी जेना पघिल गेल तहिना विस्मित होइत बजली-

"उसना चाउर ऐछे कनी नून दऽ कऽ टभका लेब। कचका मिरचाइ चीर कऽ दऽ देबै, तइले अहाँ किए लल-वेकल छी।"

जहिना ठीकेदारकेँ बिल-भुगतानक दिन होइत जे रोहू लेब कि मुंगरी तहिना रवियाकेँ भेल। गरीबक गोनैर जहिना दुनू कात चिकने होइ छै तहिना दुनू परानीकेँ भेल। रविया बाजल-

"अरबा चाउरक प्रेमी छिऐ दूध-चीनी आकि नून। मुदा अपन सबहक तँ नूने छी किने? जखन खिचड़ीए भेल तखन चाउर, पानि आ नून-मिरचाइ पड़बे करत, एते जइमे पड़त से खिचड़ी केना नइ भेल।"

खाइक ओरियान देख रवियाक मन घुमल, घुमिते गंभीरता देखबैत असथिरसँ बाजल-

"बाध गेना बीस दिनसँ ऊपरे भऽ गेल। बाधमे की भेल हएत की नहि। तहूमे तेहेन ने सिल्लीक उजैहिया आएल अछि जे सभटा धान चाभि देने हएत।"

पतिक बात सुनि रूपनी अगुअबैत बाजल-

"पैछला बेर देखलिऐ जे बीघा भरि सोनाइ कक्काक सूर्यमुखी फूलकेँ सुग्गे खा गेलइ! बेचारे केते आशा लगा खेती केने छेलखिन!"

पत्नीकेँ भँसियाइत देख रविया लोहछैत बाजल-

"हमरा एते–सौंसे गामक हिसाब-बारी–जोड़ैक काज नइए। हम माल-जालक ओगरवाहि करै छिऐ आकि चिड़ैयो-चुनमुनीक। खेलकै

तँ गिरहतक खेलकै, हमर बड़ खेलक तँ रखवारिक राखी।"

साक्षात् वैरागी भेल निर्विकार पतिक रूपकेँ देखते रूपनीकेँ जेना सुरूजक धाही नजैरपर पड़लै, चरियबैत बाजल-

"हम चुल्हिक ओरियानमे जाइ छी। अहाँ झब-दे बाध चलि जाउ, नहि तँ गिरहत अबलट जोड़त। जँ पहिने चलि जाएब आ गिरहतकेँ देखब तँ अगुआइए कऽ कहबै जे तेते ने सिल्ली आबि गेल जे एको कनमा धान नै होइबला अछि।"

पत्नीक विचार रवियाकेँ जँचल, मुदा भरल पेट जहिना ओछाइन दिस तकैत तहिना एक तँ घूरक अगियासीक ताउ तैपर गाँजाक रंग रवियाकेँ चढ़ले रहै, तँए उठैक मन नै भेलइ। मुदा आगियोक तँ अपन गुण होइ छै किने, चाहे तँ उपयोग करू नहि तँ घर जरौत। मुदा से रवियाकेँ नै भेल। मन छड़पलै। छड़ैपते फुसफुसाएल-

"कोनो गामक नाइँर-गाइँर नीक नै छइ। कहू जे जखन एक्के नाओं सबहक अछि गाम, तखन किए कोनो गामक बाधक रखवारि बीघामे दस धूर छै, तँ कोनो गामक पाँच धूर। कोनो गामक चारि धूर छै, तँ कोनो गामक दू धूर!"

बजैत-बजैत रवियाक मन ठमकए लगलै, मुदा फेर बाजल-

"अनेरे कोन चक्करमे चकराइ छी। ई तँ रखवारिक भेल। जेकरा ने माए छै आ ने बाप। मुदा माइयो-बापबला केँ तँ देखते छिऐ जे कोनो गामक लग्गी साढ़े छह हाथक छै तँ कोनो गामक पौने सात हाथक। तहिना कोनो गामक साढ़े सात हाथक छै तँ कोनो गामक नअ हाथक। धुर! अनेरे अनकर रोग अपना सिर सिरजै छी। साबे बोझ जकाँ सदिकाल गरमुराहे होइत रहैए तखन तँ कहुना कऽ सम्हारि खरिहाँन पहुँचू जे पसाइर कऽ सुखा लेब। बड़-बड़ लीला सभ छइ। केते देखब। जखन एक्के गामक एक्के आड़िक खेतक मलगुजारी

‘बढ़मोत्तर’ कहि रेन्ट मुक्त अछि, आ बगले बलाक ओते रेन्ट अछि जे मलगुजारी भुगतानपर बटाइ खेत रहै छइ।”

ऐगला बात मनमे अबैसँ पहिने रविया फुरफुरा कऽ उठल। शीतलहरीक चलैत जे कुतरूमोमे अगते फूलक कोढ़ी आबि गेल छल, से रविया देखने रहए। बाजल-

“अहाँ बाड़ीसँ कुतरूम आनि लेब। ताबे हम बाध दिससँ भेल अबै छी।”

रविया बाधक रस्ता धेलक।

करीब अस्सी बीघाक दछिनवरिया बाध, जेकर रखवारि रविया करैत। संयोग नीक रहै जे तीन साल पहिने पैछला रखबार–जे पंजाब गेल–रवियाकेँ बाधक भार देने गेल। पचास बीघासँ ऊपर जमीन निचला आ पच्चीस-तीस बीघा ऊपरका जमीनक बाध छिऐ। तइमे पाँच बीघा जमीन उस्सर छै, जइमे भरि-भरि जाँघक कुश अछि आ परदेशिया सबहक किरदानीसँ पान-सात बीघामे छाहेँ भऽ गेल छइ। तैपर रौदी भेने उपराड़ि खेत अवादे ने भेल...।

खोपड़ी लग पहुँचते रवियाक मनमे उठल- अनेरे एहेन ठंढामे पैरक बेमाए किए फटाएब। नीक हएत जे खोपड़ी अपन छीहे, आगि सुनगा घूरे तापी। उपराड़ि चौरक बीच परतीपर रवियाक रखवारिक खोपड़ी छइ। घूर पजाइर बैस गेल, हाथ-पैरक कन-कनी कमए लगलै। रवियाक मनमे उठलै- अनका जे हौउ, मुदा भगवान पक्षक काज केलैन।

उपराड़ि नै उपजल तँ नै उपजल मुदा निचला तँ उपजल अछि। नै साल भरि तँ छबो मासक बुतात तँ हेबे करत। मुदा गामेमे देखै छी जे अही चौरीटा मे नहर नै भेनौं नहरक पानि एलइ। बाँकी गाम तँ रौदियाहे भऽ गेल अछि!

सिताएल नढ़िया जकाँ सुरूज तँ उगल मुदा सिरसिराइत। नव विहान देख गिरहस्तक बीच चलमली आएल। पानिक धानमे कनी ठंढे ने लागत मुदा सुरूजोक तँ धाही छइहे। हो-न-हो कहीं पूस-माघ अगुआएल अछि जँ कहीं पैछला डेग नपलक तँ फेर ओहिना भऽ जाएत। एक तँ रौदियाह समयक अन्न, तेकरो जँ जानि कऽ छिजानैत करब तखन तँ आरो केतौ भऽ कऽ नइ रहब।

किसानक चलमली देख रूपनी हाँइ-हाँइ भानस कऽ दुनू मायपुत खेनाइ खेलक आ पति-ले खाएक लऽ कऽ आठ बजैत-बजैत हँसुआ नेने विदा भेल। सात बर्खक बेटा–दिलराम–केँ अँगनासँ निकैलते रूपनी कहलक-

“बौआ, आइ उलबा चाउर खुएबो।”

आगू-आगू दिलराम आ पाछू-पाछू रूपनी बाध दिस विदा भेल। किछु दूर गेलापर रूपनीक मनमे उठल। भगवान कूह फेड़लैन। नै तँ कोनो दशा बाँकी नै रहितए। जहिना अन्नक गति होइत तहिना जारैनक। ओहो तँ माघ-ले रखने छेलौं जे कोनो धरानी पार लागल, नहि तँ कठुआ कऽ मरैमे कोनो भाँगठ छेलए।

गाँजा पीबैत रविया आगू-आगू बेटा आ पाछू-पाछू पत्नीकेँ अबैत देख, बुदबुदाएल-

“जे जीबए से खेलए फॉगु। हमरा सबहक जिनगीए की अछि जे ऐगला आशापर जीब। जहिया हेतै तिलासकराँइत तहिया हौउ। अपन तँ आइए छी।”

मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। आन पाबैन खीरक होइ छै आ तिला सकराँइत किए खिचड़ीक होइ छइ? तहूमे उजरा अरबा चाउरक संग करिया तिल-गुड़ आ पानिक संग परसाद किए बनै छै..?

आँखि मूनि रविया विचारिते छल, जन-गिरहस्तसँ बाध भरि

गेल छल। तैबीच दुनू मायपुत रूपनी लगमे पहुँचल आ पहुँचते बाजल-

“जहिना गामपर तहिना बाधोमे भकुआएले रहै छी!”

रवियाक बनल मन रहबे करइ, बाजल-

“गामपर तँ अहाँ देख भकुआ जाइ छी मुदा बाधमे तँ अपने देखै छी किने।”

तैबीच बीघा दुइए हटि धानक खेतमे जन सबहक बीच हल्ला भेल। हल्लाक कारण रहै एक भाग सिल्ली धान चाभि देने रहइ। धान नै देख जन-सबहक बीच पाहि धड़ैक हल्ला रहइ। हल्ला देख रूपनी पतिकेँ कहलक-

“कनी जा कऽ देखियौ जे किए झगड़ा होइ छइ।”

गाँजाक असकताएल मन रवियाक, बाजल-

“हम बाधक रखबार छिऐ आकि गामक पंच! अपन गिरहत फरिछाबह...।”

रवियाक बात रूपनीकेँ जँचलै। आगूमे थारी बढ़बैत बाजल-

“बेटाकेँ आइ उलबा चाउर खुआइयो देबै आ मोटरियो बान्हि देबइ।”

‘उलबा चाउर’ सुनि रविया विस्मित भऽ गेल। मन पड़लै अपन माए। माए मन पड़िते मनमे उठलै- ओ दिन जइ दिन दियारी पाबैन रहइ। धान अधपक्कू भऽ गेल रहै, मुदा सुभर नै पाकल रहइ। लक्ष्मी पूजा दिन रहने वएह अधपक्कू धान काटि, पैरसँ मीड़ि खापैड़मे भुजि, चाउर कूटि भात खेने रही...।

हाथ-मुँह धोय रविया दिलरामकेँ कहलक-

“बौआ, अहूँ कनी खा लिअ।”

भरल पेट दिलरामक रहबे करइ, नकारैत बाजल- “नहि! खिचड़ी नै खाएब, उलबा चाउर खाएब।”

‘उलबा चाउर’ सुनि रवियाक मनमे खीझ उठल। बाजल-

“उलबा चाउर लगले केतए-सँ औतै। बड़ अगुताएल छेँ। के तोरा मन पाड़ि देलकौ!”

निष्कपट दिलराम बाजल- “माए कहलक।”

माइक नाओं सुनि रविया ठमैक गेल। जहिना मन्दिर जाइसँ पहिनहि भगवान आबि राशि लगा लऽ जाइ छथिन तहिना ने गाछोक पीपही रोपिते-काल पाकल आम आगूमे आबि जाइ छइ।

फेर दोसर खेतमे हल्ला उठल। पानिक तरमे आड़ि डुमल रहइ। खाली आड़िक खरही टिक-टिक करैत रहइ। मुदा सभठामक ओगरवाहि की बन्दूके हाथे होइ छै, खरहोरिक कड़ची केना ओगरवाहि करैए। झगड़ाक कारण रहै एकटा खेतक धान चतैर-लतैर दोसर खेतमे चलि गेल छेलइ। पहिने तँ रवियाकेँ सोझ-साझ बात बुझि पड़लै, मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। पानिक संग माटिक प्रश्न मनमे उठि गेलइ। ई केहेन होइ छै जे लोक कलम-गाछी लगबै-काल आड़िक कातमे झमटगरहा गाछ लगा दइ छै जे नमैड़ कऽ दोसरा खेतक उपजा खा जाइए! बुढ़-बुढ़ानुसक सेहो कहब छैन जे घर लग बाँस नै लगाबी, एक तँ लत्ती-गाछक सीमापर बसल अछि दोसर तेहेन सिराह होइए जे जेते दूर ओकर छाँह जाइ छै तेते दूर ओकर सीरो जाइ छइ। जँ जेबेटा करितै तखन तँ नै कोनो, मुदा तरे-तर तेहेन खच्चरपनी करैए जे जेते दूर जाइए ओतेमे दोसराक बास नै हुअ दिअ चाहैए। खिचड़ीसँ मन भरिते रविया पत्नीकेँ कहलक-

“हमरा अघँस-मघँस करैक मन होइए, अहाँ बाध घुमने आउ।”

पतिक समरपन देख रूपनी बाजल- “थाल-पानिमे बौआकेँ केना

लऽ जेबइ। एतै छोड़ि दइ छी।”

खेते-खेत रूपनी टहैल घुमि कऽ आबि पतिकेँ कहलक-

“बलौकिया धान छोड़ि सभ ऊपरा-ऊपरी अछि।”

बजैत-बजैत मनमे उठलै- घरमे कोठी-भरली तँ नहियेँ अछि, एते धान रखब केतए? मुदा फेर मन कहलकै- आब कि धान-चाउरक चोर रहल जे कियो चोरा लेत। आब तँ हिस्सा-बखराक चोरि देखाइयो आ छिपाइयो कऽ होइ छइ।

रविया पुआरक ओछाइन सेरियबैत निनियाँ देवीक स्तुति करिते छल कि पत्नीक बुदबुदाएल बात सुनलक। सुनिते मन मुरैछ कऽ तुरैछ गेलै, बाजल-

“बड़ लाल बुझ्झकैर बनै छैथ! अच्छा एकटा कहू जे जइ गाममे सभ चोरे रहत ओइ गाममे चोर के भेल?”

पतिक बिगड़ैक कारण बुझि रूपनी नहाएल आ बिनु नहाएल अवस्थामे पड़ि गेल। बाजल- “पड़ू-पड़ू। लाउ घुट्ठी दाबि दइ छी।”

पियाससँ पहिने पानि आ भूखसँ पहिने अन्न जहिना आगू एलासँ क्षुधाक धार रोकाइ छै तहिना दू-अढ़ाइ बजिते धान कटनिहार सबहक शक्ति सिहरए लगलै। एक तँ मरियाएल रौद तैपर जट्टर पानिक संग पछबाक लहकी लहकैत रहबे करइ, एक्के-दुइए धानक बोझ लऽ लऽ खेतसँ निकलए लगल। बोझ लऽ लऽ निकलैत देख रूपनी पतिकेँ पुछलक- “हम राखी कटने अबै छी।”

पेमेन्ट, वेतन, महिना, पगार, तलब, तनखा आकि दरमाहा उठैकाल जहिना नोकरियाक मनमे तरंग उठै छै तहिना रूपनियोँक मनमे उठए लगलै। तेते खेत कटाएल जे एते राखी काटब पार लगत। तहूमे बेरो खसल आब जाड़ो बेसियेबे करत।

लगले रूपनीक मन मानि गेलै जे कोनो कि जमा-जिगिर अछि जे एते पुरबै पड़त। जेतबे सम्हरत तेतबे काटब। बाँकी आन दिन काटब। एते दिन कियो चोरेबे ने केलकै आ एक-दू दिनमे उनटन भऽ जाएत! सोचिते-विचारिते पहिल खेत रूपनी पहुँच गेल। आँखि उठा हिया कऽ देखलक जे कोन कोणमे राखी अछि। दुइए धूर हएत तइसँ की, हएत तँ कोनो कोणेपर। मुदा नमहर खेत रहने अदहोसँ कम खेतक धान कटाएल, तखन राखी केना बनत। दोसर-तेसर-चारिमो खेत तहिना। पाँचम खेतटा मे राखी बेराएल अछि।

धान देख रूपनीक मनमे सबुरक सबुरदाना छिड़िया गेलइ।

पाँजो भरि धानक आँटी बान्हि माथपर उठौने धानक गदियाएल पानि देहपर टघरैत रहइ। समुच्चा देह भीजल रूपनी खोपड़ी लग पहुँचल। अराम करैत पति आ पुत्रकेँ देख विभोरसँ विसरभोर भऽ गेल। मोने ने रहलै जे माथपर धानक भारी आँटी अछि।

धानक आँटी पत्नीक माथपर देख रविया मुस्की दैत बाजल-

“एहेन जे अहाँ छी जे दिलरामकेँ बाधे अबैकाल उलबा चाउर गछि लेलिऐ आ अखनसँ जे छाल-छोड़ौत से केहेन लागत?”

बिहुसैत रूपनी बाजल-

“जइ बेटाकेँ गछलिऐ तेकरा पूरा कऽ छोड़बै। ऐठामसँ जाएब, एक पाट हएत पहिने मलि लेब। चुल्हि पजाइर धान उला लेब। साँझे परतै तँ कि हेतै, कोनो कि अनका आँगना जाएब जे भरली साँझ नै कुटए देत। अपने ढेकी अछि जखन पलखैत हएत तखने कुटि लेब, तँए कि बेटाकेँ उलबा चाउर नइ देब।”

◌

शब्द संख्या : 2630

बलजोर

राज-दरबारसँ घुमि कऽ अबिते बड़का भैया हाँइ-हाँइ बैग रखि जुत्ता निकालि बेसुधि जकाँ पलंगपर चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेला। एतबो सुधि नै रहलैन जे तरबा पसीनासँ पसीज पैताबाक संग देहक घामक भीजल गोलगला निकालितैथ।

आँगनमे बड़की भौजी चुल्हि लग बैसल भानस करैत पुतोहुकेँ कहैत रहथिन-

“कनियाँ, भगवान जँ ससुर देलैन तँ अहाँकेँ, अपनो ऐ बुढ़ाड़ी तक पहुँचैमे कहियो खाइ-पीबै आकि कोनो मन-मनोरथक दुख बेकल नहियेँ भेल।”

सासुक बात सुनि पुतोहु जे तिलकोरक पात छाँटि-छाँटि तहिया-तहिया सासु-ससुर-ले रखि अपना-ले लोहियामे देल उनटबैले छोलनी दिस आँखि उठबैत बजली-

“कहै तँ छथिन बड़ सुन्दर बात माए, मुदा गाममे हिया कऽ देखथुन जे हिनका एते उमेरक केते गोरे घरक गारजनी अपना हाथे चुहैट कऽ पकड़ने अछि। खाएल-पीअल-पोसल देह छैन नोकरनी जकाँ रखने छैथ। ई कहाँ कहियो मनमे होइ छैन जे पोता-पोती बिआह-दुरागमन करै-जोकर भऽ गेल। पुतोहुओक उमेर पचास-पचपनक तँ भाइए गेल हएत मुदा हाथ-मुट्ठी केना चलै छै से सोचै-विचारैक मौका अखन तक नइ देलिऐ। जहिना दुरागमन कऽ ऐ घर

प्रवेश केलौं तहिना अखनो छी। पाकल आम जकाँ दुनू बेकती भेली, कखन ढन-दे आँखि मुनि लेती तेकर कोनो ठीक छैन। किछु दिनक पछाइत बेटा-पुतोहु घर सम्हारत। तखन यएह कहौथ जे हिनका जकाँ कहिया हएब?”

अपन मलिकियतपर पुतोहुक व्यंगवाणक आक्रमण देख बड़की भौजी तिलकोर उनटबैत पुतोहुक बोल सुनि तिलमिलाए लगली। ढोढ़ साँप जकाँ मन सनकए लगलैन मुदा विचार रोकि मनमे उठलैन- ‘घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे!’ तइले लक्कड़-झक्कड़ करब नीक नहि। चारि पैरक हाथी तँ हूसि जाइए मनुख तँ सहजे दुइए पैरक होइत अछि। आगिक ताउ लग मन तबैध गेल हेतैन भरिसक तँए एहेन बात बजली...।

मुदा लगले बड़की भौजीक विचार घुमलैन। एहेन बात पुतोहुकेँ बाजक चाहिऐन? एतबो नै होश रहलैन जे मुँहपर एहेन बात बजली? घर-दुआर केतौ पड़ाएल जाइ छइ। एहेन उचित भेल जे पाकल आम जकाँ बुझै छैथ? जिनगीक कोनो ठेकान छै, जँ कहीं हमरासँ पहिने अपने चलि जाथि तँ पोत-पुतोहुक गारजनी केहेन हएत? छौड़ा-मारड़िक गारजनी आ पटुआ सागक झोरमे की भेद छइ..!

मुदा बड़की भौजी किछु बजली नहि। नजैर दुनूक तिलकोरक तरूआपर रहैन, एहेन ने हुअए जे कोनो लहैक जाए आ कोनो असिझू भऽ नरमे रहि जाए। एक हुकुमदारनी दोसर केनिहारि।

बड़का भैयाक असल नाओं सुलोचन आ बड़की भौजीक शान्ती छिऐन। परिवारक बाबा समाजक भैयारीमे सुलोचन बड़के भैया आ शान्ती बड़कीए भौजीक रूपमे रहि गेली। ओना दुनू बेकतीक उमेर अस्सीसँ ऊपरेक छैन। मुदा ऊपरका खाड़ीक लाटमे रहने धियो-पुतो ‘बड़के भैया’ आ ‘बड़कीए भौजी’ कहै छैन।

सुलोचनक पलंगक मचमचीक अवाज आँगन धरि दुनू बेकतीक कानमे ओहिना पहुँचल छल जहिना मलकार किसान परिवारमे बाधसँ अबैत माल-जालक अवाज पहुँचैत। बड़की भौजी अकानि-अकानि अनुमान लगौली जे भरिसक बुड़हा पहुँच गेला। अनुमानो ठीके रहलैन।

बड़की भौजी रेखासँ–माने पुतोहुसँ–बेसी पनिगर। देहो हल्लुक। तँए जाबे रेखा छोलनी रखि पल्था सम्हारि दुनू हाथ रोपि उठैत-उठैत ताबे बुढ़ी तीनियेँ डेगमे पति लग पहुँच गेली। पहुँचते आँखि मूनि चारूनाल चीत, दुनू हाथ सिरमा दिस बढ़ौने देख अर्द्धचेत जकाँ हुअ लगली। मुदा होश सम्हारि दहिना हाथक आँगुर नाक लग भिरा देखलखिन तँ साँस नीके चलैत बुझि पड़लैन। मुदा रस्ताक झमारसँ किछु गरम तँ रहबे करैन। पंखा हौंकलासँ भक्क टुटि जेतैन। पाछू उनैट तकली तँ डाँड़पर हाथ नेने पुतोहुकेँ मौकनी हाथी नहाँति लुदुर-लुदुर अबैत देखलैन। लग अबैसँ पहिनहि जोरसँ हुकुम देलखिन-

“कनी पंखा नेने आउ।”

एक तँ राकश दोसर नतल, दस डेग आगू बढ़बसँ रेखा हुकुमेकेँ नीक बुझलैन। घुमि तँ गेली मुदा मन बिसाइन जकाँ हुअ लगलैन। जेते विस-विस्सी बढ़ल जानि तेते मनक हौंर सेहो तेज भेल जाइ छेलैन। ई केहेन भेल जे नैनसँ देखैक बदला पंखा अनैले घुमा देलैन? भलेँ डाक्टर नहि छी, मुदा डाक्टरक परिवारक बेटी तँ छीहे। पढ़ल-लिखल छीहे, तखन किए बुढ़ी अपचंग भेल छैथ। एक तँ बुड़हा खेलाड़ छैथ जे एते दूरसँ पएरे एला से भेलैन मुदा बजितैथ से नहि भेलैन। लोककेँ कोनो बिमारी होइ छै तँ बजैए आ हिनकर पहने बकारे बन्न भऽ गेलैन! आ तेहने खेलाड़ि बुढ़ी छथिन। जेना लूटि लैतिऐन तहिना दुरेसँ हुकुम चला देलैन। हमरासँ बेसी पनिगर तँ अपने छैथे,

किए ने दौग कऽ पंखा लऽ गेली!

रेखाक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे ठहकलैन- ‘परबस जीव..!’ रेखाक सभ विचार, पानि पड़ल झोलीक आगि जकाँ सिमैस गेलैन। जँ बात कटितिऐन तँ पीड़ित-सँ-विपरीत भऽ जइतैथ, जँ नै कटलयैन तँ बुड़हाक जान-परान निकैल रहल छैन। अजीब लीला बुढ़ीक छैन। हड़पटाहि गाए जकाँ दुहैकाल छड़ैप उठती आ डोरी तोड़ि आड़ि-धूर कुदि कऽ टपै बेर खलीफा भऽ जेती। यएह छी परिवार? बाबा-दादी, बाबी-दादी, दीदी-पीसा, मौसी-मौसा, काका-काकी, भाय-भौजाइक सम्बन्धक कोनो महत नहि, मुदा...। केतए बिला गेल बाबा-दादीक सम्पैतक गुण जे पेट-काटि उपार्जित केने रहैथ। उचित-अनुचित जिनगीक दिशा बोध करबैत अछि तैठाम मंत्र बनि ढोलक-झालिक संग हवामे रमैत रहै छइ।

पंखाक आदेश पुतोहुकेँ दैत बड़की भौजी कान लग मुँह सटा बड़का भैयाकेँ पुछलखिन-

“किछु खेबो-पीबोक मन होइए?”

पत्नीक अवाज कानमे पैसिते ढोढ़ साँप जकाँ बड़का भैया फुफकार छोड़लैन-

“की खाएब की पीब, अह्लादि कऽ पुछै छैथ, बड़ हएत तँ यएह ने हएत जे एते दिन छानि-छानि खाइ छेलौं आब झाड़ि-झाड़ि खाएब।”

तरे-तर जे बड़का भैया बजैत रहैथ से बड़की भौजी नीक जकाँ नै सुनि पौलैन। अह्लाद-सँ-अह्लादित होइत हाथीक सूढ़ जकाँ मजीराक ध्वनिमे बड़की भौजीक गछाड़ देख बड़का भैयाक मन सुगबुगेलैन। बजला-

“कनी थम्हू। आँखिक पल उठबे ने करैए।”

भक्ति भावसँ बड़की भौजी धड़-फड़ाइत बजली-

“अच्छा, पानि आनि आँखि पोछि दइ छी।”

कहि बड़की भौजी जुआनीक जोशमे पलंगसँ कुदि पानि आनए दौगली। चौकैठक अढ़मे पुतोहु पंखा नेने अबैत रहथिन, अकासमे उड़ैत बड़की भौजीक नजैर रेखापर नै पड़लैन। एक गोरे असथिरसँ अबैत दोसर कुदैत-फुदैत निकलैत, मोखे लग भिड़ंत भऽ गेलैन। कोनो एक-दोसर परिवारक भिड़ंत नहि, तँए ने बड़की भौजी किछु बजली आ ने पुतोहु। मन दुनूक टाँगल बुड़हाक कोसलपर रहैन। चलचलौ जकाँ छैथ, अखने जे पाबि लेब से पाबि लेब...।

बड़की भौजीक औगताइ देख रेखाक मनमे उठलै- शान्त-चित्त रहैबला बुड़हा एना विस्मित जकाँ किए कऽ रहल छैथ। जिनकामे एते दूरसँ अबैक शक्ति छेलैन मुदा घरक लोककेँ कहितथिन से होश नै रहलैन? जरूर कोनो राजरोग[4] छिऐन।

‘राजरोग’ मनमे अबिते विचार फुद-फुदाए लगलैन। जहिना छठिहार रातिक दूध जिनगीक अन्तिम क्षण धरि स्मरण रहैत, जेकर सफर जिनगीमे सभसँ नमहर होइत। आ किछु रोग एहनो होइ छै जे चटपट जिनगीकेँ तोड़ि दइत आ किछु एहनो होइत जे मुसकारीक मूस जकाँ कुहि-कुहि जिनगी लइत। भरिसक बुड़होकेँ सएह ने तँ पकैड़ लेलकैन? रेखाक चून जकाँ मन चुनिया गेलैन।

ओना जखन दुनू गोरेक कानमे–माने साउसो आ पुतोहुओक कानमे–बुड़हाक पहिल ध्वनि एलैन तखन दुनूक अपन-अपन उत्साह रहैन। बड़की भौजीक उत्साह रहैन जे राज-दरबारसँ घुमला हेन। नीक जकाँ परिवारक विदाइ भेले हेतैन, देखा चाही चाइन केहेन चमकैए। आ रेखा कोठरी पहुँच बुड़हा लग बैस किछु पुछैक ओरियान करिते

[4] राजरोग ओहन बिमारी होइत जे जड़ि-मूल नै छुटैत मुदा पथ-परहेजसँ जिनगी देने रहैए।

छेली कि बड़की भौजी लोटामे पानि नेने पहुँच गेली। सासुकेँ देखते रेखाकेँ मनमे शंका जगलैन। शंका ई जे बुड़हासँ किछु कहा ने नेने होथि। मुदा बिनु सुनल बात बाजबो उचित नहि। तहूमे एक दिस मालिक छैथ दोसर दिस पुतोहु। जँ कहीं दुनू एकदिशाह भऽ जाथि तखन अपन गति की हएत? गाड़ी उनार भेने चढ़निहारक जान थोड़े बँचै छइ। जँ बँचबो करै छै तैयो अबाह तँ बनाइए दइ छइ..! बड़की भौजीक मनक ताप-सन्ताप तँ बनले रहलैन तैयो पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, अहाँ उन्टा घुट्ठी ऐँठ दियौन।”

घुट्ठीक भार देला पछाइत बड़की भौजीक मन रमकलैन- ओह, लगले दोहरा कऽ अढ़ाएब नीक नहि तहूमे तीन गोरेक बीचमे। नहि तँ करूतेलसँ तरबा रगड़ब नीक होइतैन। पानिसँ चानि धुआ जइतैन आ तेलसँ तरबा रगड़ा जइतैन तँ अनेरे होशमे आबि जइतैथ। खाएर जे हूसल से हूसल। चानिपर पानिक फुहार पड़िते बड़का भैया आँखि खोललैन।

आँखि-पर-आँखि पड़िते बड़की भौजीक आँखिमे ललकारीक रेगहा जगलैन। जगिते सहैम गेली। अनेरे बुढ़ाड़ीमे घी-ढारीक बात मन पाड़ै छी। लोककेँ अपनो उमेरक ठेकान करैक चाही। दुनियोँ तँ अजीबे छै, दुनियाँक एको प्रतिशत लोक एहेन नइ अछि जे अपने माए-बहिन जकाँ दुनियोँक माए-बहिनक चर्च नै करैत अछि मुदा एते अपराध किए होइ छइ? नैतिकताक महत जँ नै होइतै तँ माए-बहिनक अपराध कहाँ केतौ होइ छइ?

पतिक थरथराइत मन छाती डोला देलकैन। पँजरा गरे उनैट बड़की भौजी तकली तँ पुतोहुकेँ उन्टा घुट्ठी जोर-जोरसँ ससारैत देखली। मुदा शंका भेलैन, शंका ई भेलैन जे जरूर कोनो बात हेतइ। बुधियार आदमी काजे देख आदमी चिन्हैए। जँ कहीं घुट्ठीए पकैड़

घोलटिया लेलकैन तखन अपने तँ बिच्चेमे रहि जाएब! पुरुखक ठेकाने कोन। साँढ़-पारा जकाँ कखन की करत तेकर कोन ठेकान। कखनो भगत सिंह बनि जान फूकत तँ कखनो वेश्यालयमे दिने-देखार लूटत-लूटाएत..!

मन पड़लैन घी-ढारिक मंत्र। मुदा आब ओ मंत्रक समए कहाँ रहल। गाछपर सँ खसैत लोक जकाँ भौजीक मन झूललैन मुदा थाकल ठेहियाएल पतिक सेवाकेँ प्रथम प्रश्रय दैत अपन बेथा बिसैर भौजी बड़का भैयाकेँ कहलखिन-

“लोककेँ सौंसे देह गुड़-घा रहै छै से बरदाश कऽ समैपर नहेबे-खेबे करैए आ अहाँ मुरदा जकाँ आरो धड़ खसौने जा रहल छी।”

भौजीक बात भैयाकेँ कठाइन नै लगलैन, पुरुखपना जगलैन। मरितो धरि पत्नी लग झूकि जाएब तँ केहेन पुरुख हएब। फुरफुरा कऽ चिड़ै जकाँ उठि कऽ बैसैत भौजीकेँ कहलखिन-

“कनी कुर्ताक बटम खोलि दिअ।”

“अहिना उनटा-पुनटा बुझै छिऐ!”

पतिकेँ झपटैत भौजी कहि रेखाकेँ आदेश देलखिन-

“पहिने पैरक पैताबा निकालि दियौन, कनियाँ।”

ओना बड़का भैया मुहसँ रंगा रूपैआ-सन मुस्की निकलैत रहैन मुदा मनमे उठि गेलैन पत्नीक बात- ‘अहिना उनटा-पुनटा बुझै छिऐ।’ बजला किछु ने। सभ बात स्त्रीगण लग बाजब उचित नहि। जँ ओकरा नाक नै रहितै तँ की-की ने करैत। मुदा छाती राँइ-बाँइ भेल जाइत रहैन...।

कुर्ताक बटम खोलिते बड़की भौजी राँइ-बाँइ भेल बड़का भैयाक हृदय देखली, देखते अचम्भित भेली मुदा बजली किछु ने।

देह खलियाइते बड़का भैया बजला-

“कनी लेटरीनो जैतौं आ नहाइयो लैतौं।”

‘एक राकश दोसर नोतल’, भौजी आदेश फेकली-

“कनियाँ, अहाँ चौका सम्हारू हम बाथरूम सम्हारने अबै छी।”

दुनू गोरे–माने साउसो आ पुतोहुओ–अपना-अपना मने खुशी जे खेबेकालक गप ने रस पाबि मिठौंस होइ छइ।

दुनूकेँ खुशी देख बड़को भैया खुश। परिवार खुश तँ अपनो खुश। जँ खुशी नहि तँ बजार घुमैकाल ओहिना बाप बेटाकेँ आ माए बेटीकेँ कोरामे लऽ घुमैत रहैए?

कोठरी छोड़ैक विचार तीनू गोरे करिते रहैथ कि शिव शंकर पहुँचलैन। किनको लजेबाक प्रश्ने नहि। बड़का भैया बड़के भैया भेला, भौजी भौजीए भेलखिन आ रेखा अंगीतेक बेटियो आ कौलेजक विद्यार्थियो...।

कोठरी प्रवेश करिते शिव शंकर बजला-

“भाय, केहेन यात्रा रहल?”

जहिना मुर्दाक ऊपर अस्सी मन जारैनक लाद पड़ैत तहिना बड़का भैयाक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेल रहैन, मिरमिराइत बजला-

“अशुभे रहल!”

भैयाक बात सुनिते शिव शंकर कहलकैन-

“अच्छा, पहिने फ्रेस भऽ जाउ, नहा-खा लिअ तखन निचेनसँ आगूक गप हेतइ। ताबे हम बैसै छी।”

शिव शंकरक मनमे रहैन जे नव-नव रचना अनने हेता, सेहो देख लेब आ दरबारक कागतो-पत्तर देखब। एक्के वस्तुकेँ एक स्तरसँ

गिरौलापर अनेक तरहक दबाब पड़ै छइ। माने, असथिरसँ गिरौलापर नरमो वस्तुकेँ बँचैक संभावना रहै छै, जखन कि जोरसँ गिरौलापर कड़ो वस्तुकेँ टुटै-फुटैक संभावना भऽ जाइ छइ। बड़का भैयाक स्थिति सएह रहैन...। तँए दबाब देब उचित नै बुझि शिव शंकर चुपे रहला, मुदा रेखाकेँ कहलखिन-

“पान साए नम्बर जर्दा देल पान खुआ दिअ। एक झपकी ताबे मारि लेब।”

जेते काज बड़का भैया अदहा घन्टामे करै छला तेतबे करैमे घन्टोसँ ऊपर लागि गेलैन। जहिना पैरमे जात बान्हि देने वा जहलक डन्टा-बेड़ी भेने जे स्थिति होइत से स्थित रहैन। मुदा से शिव शंकर नै बुझि सकला। कारण, रेखाक स्थिति देख मनमे आबि गेल रहैन जे रेखा कौलेजमे खेल-कुदमे नम्बर एक छल आइ उठबो-बैसबोमे असोकर्ज भऽ रहल छैन..! अखड़ाहाक खलीफा पहिने डण्ड-बैसक कऽ लपटैए तखन कुश्ती लड़ैए। तेकर पछाइत छोट-छोट खलीफाकेँ लपटाबैए। पछाइत सवारी कसि परीक्षा लइए। जिनगियोक अवस्था अहिना होइ छइ। बड़का भैया ऐमे चुकला। भोगी-विलासीक परिवार बना लेलैन आ आशामे जीबै छैथ जे चाननक गाछी लगौने छी..!

सोचिते-सोचैत शिव शंकरक आँखि बन्न भऽ गेलैन। भकुआइत ओंघा गेला।

बड़का भैयाकेँ पहुँचते बड़की भौजी पनबटी नेने पहुँच गेलखिन। दुनू गोरे पान खेलैन। शिव शंकर पुछलखिन-

“अशुभ की कहलिऐ?”

शिव शंकरक प्रश्न सुनिते बड़का भैया जेना हजारो हाथ ऊपरसँ झमान भऽ खसला, खसिते मुहसँ निकललैन-

“मिसियो भरि जेकर आशा नै छल से भऽ गेल! मुदा..?”

खेतक अकटा-मिसियाकेँ कियो अन्न मानितो ने अछि आ कियो सागो आ रोटियो बना खाइए। ओना, खेती भलेँ ओकर नै हौउ मुदा ओहो मैदानमे डटल तँ अछिए। आ डटले नहि अछि, जँ कनियोँ नजैर नै रखब तँ जजातेक छातीपर चढ़ि धरतीकेँ अन्नमण्डल बना देत! बाट-घाट रोकने तीर्थ यात्रीकेँ किछु नै बिगड़ै छै, देखै-सुनैक नव-नव स्थान भेटै छइ। मानियौ वा नै मानियौ समयक शक्ति सबल होइते छइ।

बड़का भैयाक चेहराक क्रिया देख मने-मन शिव शंकरकेँ होनि जे चेहरा कहि रहल छैन जे जेना धमसुरक चोट लगल होइन!

जटा-जटीन बेंगकेँ जहिना कुटनी कुटि पेटसँ पानि निकालि पानिक संग मुइल बेंगकेँ मटकुरमे नेने गीत गबैत केकरो ऐठाम फेक भरि दिन फौतली सुनैक रस्ता बना लैत तहिना गसिया कऽ शिव शंकर पकड़लैन। मुदा मनमे ईहो होनि जे धमसुरक चोट कनियोँ खड़खड़ाएल नहि! एकाएक एना किए भेल? जाबे अकासमे पानि पानिसँ नै टकराएत ताबे बिजली केना बनतै आ बिजली नै बनत तँ ठनका केना बनत। भलेँ अहाँ ओकरा सोनोसँ अमूल्य बुझैत होइऐ मुदा ने राधाकेँ नअ मन घी हेतैन आ ने राधा नचती। केकरा बुते हएत जे ओकरा पकैड़ हाथमे आनत। ओकरा पकड़ैले गोवरधन जकाँ गोबरक ढेरी बनबए पड़त, तैपर फुलही थारी राखए पड़त तखन जब समए औतै तखन समुद्रसँ करिया हवा उठि अदैल-बदैल वादल बनि दोसर वादलसँ टकराएत आ ओही टक्करसँ बिजली बनि ठनका बनत। तखन जा कऽ ओइ थारीपर ठनका खसत। केतबो ठनका जोर करतै मुदा गोबर की ओकर शक्तिकेँ शक्ति मानतै? रस्ता रोकतै? भलेँ अश्वमेघ युद्ध किए ने हौउ..!

जहिना छातीपर बैस कण्ठ पकैड़ बलजोर मुहसँ बजबा लैत, तहिना बड़का भैया बजला-

“आशाक विपरीत अपना हाथे केलौं।”

बड़का भैयाक बात सुनि शिव शंकर विर्ड़ोक मोड़मे पड़ि गेला। पुछलखिन-

“एना किए?”

“तीन गोरे कारबारी छेलौं। जइमे दू गोरे शिकारी छेलौं आ एक गोरे अनाड़ी छला। हुनका लिए दिन-राति बारहे-बारहे घन्टाक होइ छै, सएह बुझैत रहथिन। ओना जहिना आदि ऋषिका सबहक परिवारकें जँ कोनो परिवार कहि देबै तँ ई जल्दिवाजी होइत। इंजिन निर्माताक परिवार जँ इंजिन निर्मितक शक्ति नै राखत तँ वंशक रक्षा केना हेतइ?”

“हँ, तखन?”

“प्रस्ताव देलिऐ। दोसरो प्रस्ताव एलइ। मुदा जेकर कल्पनो ने छल से भेल!”

“से की?”

“प्रस्ताव दइते जे दोसर छला, जिनकासँ मिसियो आशा नै छल जे ठनका जकाँ बनि जेता। जहिना अकासमे उड़ैत गीध अपन सहयोगी चीलकें देखा दैत आ हर्ड़ी-बिदेशरक मकड़क मेलामे अरबा चाउरक चिक्कसमे इनहोर देल पानिसँ बनल रोटी आ तैपर पँचफोरना देल अल्लूक दमक संग हाथमे रोटी लऽ मेलो देखैत आ खेबो करैत रहैए आ तखने जहिना हाथक रोटी झपैट चील पोखैरक महारक पीपरक गाछपर बैस कुचड़ए लगैए, तहिना भेल। तेना झपटलक जे छाती छँहों-छित्त भऽ गेल। केतबो अपनाकें असथिर करी मुदा नै भऽ सकल। अन्त जे भेल से संदेश तँ समाजमे जेबे करत। मुदा संदेशो तँ सनेसे छी किने, केमहर केहेन बिलहाएत से के कहलक।”

“आब?”

“देखार होइ दुआरे बहुमत नै हुअए देलिऐ। सर्वसम्मैत कऽ जान बँचा लेलौं।”

सुनि दुनू गोरे मर्माहत भऽ गेला। मुदा दुनूक मनमे दू तरहक विचार नाचए लगलैन। बड़का भैयाक मनमे नचैत रहैन जे ई उमेर सन्यासक छी, हमरा कोन ऐ दुनियाँ-दारीसँ मतलब अछि जे अनेरे...। आ शिव शंकरक मनमे उठैत रहैन जे जाधैर समए नै पकैड़ चलब ताधैर समयक संग नै चलि सकब। विकासोक प्रक्रिया छै, जइमेमे गति-मति संगे चलै छइ। मुदा से नै भेल।

◌

शब्द संख्या : 2410

(“बलजोर” कथा डाक्टर प्रेम शंकर सिंह लेल...)

बेटी हम अपराधी छी

सही समैसँ साल भरि पहिनहि मनोहरकें सेवा मुक्तिक चिट्ठी ऑफिसमे थम्हा देलकैन। थम्हबैक कारण रहैन काजक गजपटी। काजक गजपटीक कारण छेलैन मनक सन्ताप। ऑफिसक सभ मानि गेल जे मनोहरक मन चढ़ि गेलैन तँए समुचित काज करइ जोग नै रहला।

ऑफिसेक कुरसीपर मनोहर बैसल रहैथ कि चपरासी आबि हाथमे चिट्ठी थम्हेलकैन। पहिने तँ नै बुझि सकला जे सेवामुक्त भऽ रहल छी मुदा पढ़ला पछाइत केकरोसँ पुछौक जरूरत नै रहलैन। पत्रमे कोनो लेन-देनक कारण नहि, बतहपनीक कारण स्पष्ट लिखल रहैन। पत्र पढ़िते जहिना बर्खा होइकाल अनासुरती मेघ ढनढ़नाए उठैए तहिना एकाएक मनोहरक मनमे उठलैन। जेकरो कहबै सेहो बताहे बुझि सुनबो ने करत! तखन, कहबे किए करबै? अनेरे मुहोँ दुरि करब..!

मनोहरक मन जेना बेर-बेर चनकए लगलैन। टुकड़ी-टुकड़ी भेल मनमे उठलैन जे सभटा कागत-पत्तरकें छीट-छाटि दिऐ, टेबुल-कुरसीकें उनटा-पुनटा दिऐ आ निकैल जाइ। मुदा मनोहरक मनक लगामकें बुधि पाछू खिंचलकैन। बदलैत सोच विचार केलकैन जे एक तँ लिखतन बताह बनाइए देलक तैपर एहेन काज जँ करब तँ थियोरी प्रेक्टीकल भऽ जाएत, तखन बतहपनीक सजाक हकदार बनैमे केते

देरी लगत?

कुरसीसँ उठि मनोहर सोझहे घरमुहाँ भऽ गेला। डेराक सुधिए ने रहलैन जे भड़ो-किराया फरिछा लितैथ। मनोहरक बेसुधि मनमे बेठेकान सोच लगले उठैन आ पानिक बुलबुला जकाँ फुटि जाइन।

गामक सीमा परहक बड़क गाछ देखते मनोहरक आँखिक सोझमे भकइजोत जकाँ भेलैन। भकइजोतेमे देखलैन जे यएह अपन गाम छी। मनमे अप्पन अबिते पएर जवाब देलकैन-

“आगू नै बढ़ब। गाममे मुँह देखबैबला नै छी।”

मुदा तपाएल मुँह लगले पएरकें कहलकै-

“ईह बुड़ि रे, मुँह देखबैबला नै छी! ई समाज मुँह देखबैबला नइए। हरिदम विवेक-विवेकक भाँग घोरि-घोरि इनारेक पानिकें निशाँए देने अछि आ निरलज जकाँ बजैमे लाजे ने होइ छै, सुझबे ने करै छै जे जखन पाइक हाथे शिक्षा बिकाइए तखन ओ शिक्षा पाइबलाकें हएत आकि बिनु पाइबलाक! जइ समाजमे रोग-वियाधि पाइक हाथे छोड़ौल जाइ छै तइ समाजमे बिनु पाइबलाक गति-मति की हेतइ! रौद-बसात, जाड़, पानि-पाथरक रक्षा केना करत। अदौसँ अबैत नर-नारीक सम्बन्धक बीच जखन दान-दहेज एहेन बड़का मोनि घारक पेटमे फोड़ि देने अछि, जइमे केते हाथियो-घोड़ा फँसि जान गमा रहल अछि, तइ मोनिमे अदना-अदनीक अह्लादे केतै कएल जा सकैए। महींसक आगू वीणक कोन मोल छइ।”

मने-मन मनोहर घर दिस बढ़ैक हूबा करैथ मुदा पएर उठैले तैयार नै होइन। जँ पएर थोड़े तैयारो होनि तँ आँखि साफे नहि। धरतीपर ओंघराएल मनोहरक सभ सुधि-बुधि हेरा कऽ छिड़िया गेलैन।

मोबाइलक जुग रहने समाचार पसरैमे देरीए किए लगत। गाम-

समाजक बच्चा-बच्चा बुझि गेल जे मनोहर बताह भऽ गेला, नोकरीसँ निकालि देलकैन। पेंशनो आने-आन लूटतैन।

सुनयनाकेँ पहिने बिसवास नै भेलैन। आइ धरिक जे पति-प्रेम मनोहरसँ भेटल छेलैन ओ अनकासँ बहुत बेसी छेलैन। मुदा जानकी बेटीक काँच बुधि मानि गेल रहै जे पिता पागल भऽ गेला, नोकरीसँ भगा देलकैन।

गामेक लोकक जेरक संग दुनू माय-धी विदा भेली। लोकक बीच रंग-रंगक घौचाल चलैत रहइ। कोनो नीको मुदा बेसी अधले। घौचाल सुनि दुनू माय-धीक मन विचलित हुअ लगलैन। बेटीक मुँह सुनयना निहारए लगली आ माइक मुँह जानकी। पोखैरक घाटपर भुरही-माछ जहिना रंग-रंगक चाल चालि दैत तहिना दुनू माय-धीक कानमे रंग-रंगक चालिक बात पड़ए लगल...।

कचकूह मन जानकीक तँए बेसी विचलिते होइत गेल। बताह भऽ बाबू छोड़ि पड़ाए जेता, समाज सहजे हमरा सन-सनकेँ भगाइए रहल अछि। तखन माइक की गति हएत..!

अधबटियाक पछाइत सुनयनोक मन मानि गेलैन जे पति पगला गेला। जानकीपर नजैर अँटका मने-मन सोचए लगली जे बाइस बर्खक कुमारि बेटीक मुँह सिंह दुआरिपर केना देखब? की दुनियेँ उजैर रहल छै आकि उजाड़ि चढ़ा देलक अछि? एको बीत धरती नै बँचल अछि जेतए नोरक धार सुखौल जाएत..!

जहिना दंगलक खलीफा पटका चारू नाल चीत अखड़ाहापर खसैए तहिना मनोहर बड़का गाछक निच्चाँ जिनगीक अखड़ाहापर चारूनाल चीत भेल पड़ल मने-मन सोचैत रहैथ- अपन जिनगीक हारिक कारण अपने छी तँए पत्नियो आ बेटियो-ले अपराधी छी! मुदा फेर मन कहैन जे अपराध कथी केलौं जे अपराधी भेलौं?

भवसागरमे डुमल मनोहरक शरीर चेतनशून्य छेलैन। तखने पत्नियोँ आ बेटियो लगमे पहुँच मुँह निहारए लगलैन। मँह देखते दुनूक मन कहलकैन- मुँहक रूखि कहाँ कहै छैन जे कोनो रोग अछि। रणभूमिक हारिक रोग आ बिमारीक रोग तँ अपन बात अपने चिकैर-चिकैर कहै छै किने जे की छी...।

बन्न मुँह देख मनोहरक छातीपर दुनू गोरे अपन-अपन सती हाथ रखलैन। छातीक धुकधुकी समतूले बुझि पड़लैन। आखिर किछु छैथ तँ एकक पिता, दोसराक पति छैथ किने। मुदा दुनूकेँ अपन-अपन बिसवासमे शंका भेल। शंका होइते एक-दोसराक मुँह सुनयनो आ जानकियो देखए लगली। देखते आँखि-आँखिक बीच जेना पुल बनि गेल। सुनयनाकेँ सान्त्वना दैत जानकी कहलक-

"माए, बाबूजीक हृदय तँ ओहिना पवित्र देखै छिऐन!"

कदमक गाछक झूला जकाँ आस मारि सुनयना बजली-

"बेटी, पुरुखक छातीपर बहुत भार होइ छइ। जेकरा माथपर जारैनक बोझ आकि अन-पानिक बोझ पड़बे ने कएल ओ ओइ बोझ उठबैबला छातीक धुकधुकी गनि केना सकैए। से नहि तँ छातीए डोला कऽ देखहुन जे मुहसँ केहेन बकार निकलै छैन।"

माइक विचार सुनि जानकी आरो जाँच-पड़ताल करब नीक बुझलक। जहिना कलियाएल अड़हुल फुलाएल रहैए तहिना जानकीक मन पिताक छातीसँ ससैर हाथ दिस बढ़लैन। केना नै बढ़ैत कहुना अछि तँ छातीक ऊपरेसँ ने लटकल अछि। जानकी बाजल-

"माए, से नहि तँ छातीक धुकधुकीसँ अपनो मन धुकधुकाइते अछि। हाथक नारी पहिने देख लहुन।"

नारी तँ नारी छी, एक पुरखियाह। छाती जकाँ दुनू गोरे एक्केबेर थोड़े पकैड़ सकै छेली, नारीकेँ तँ बेरा-बेरी देखए पड़त, मुदा पहिने के

देखत? दुनूक बीच ओझरी लगि गेलैन। एक पुरुख हजार रूप! की मनोहर जानकियो-ले वएह छैथ जे सुनयना-ले छथिन? मुदा की मनोहर सुनयनाक छिऐन आ जानकीक नहि? तखन? तैबीच जानकी सुनयनाकेँ कहलक-

"माए, छातीक धुकधुकी तँ जोरसँ चलै छै तँए गनल भऽ जाइए मुदा हाथक नारी आइ धरि कहाँ गनलौं?"

बेटीक बात सुनयनाकेँ सोहनगर लगलैन। ऐठाम कियो आन अछि, जे ऐछो ओ तमसगीरे अछि, उकटा-चाल करत। बामा हाथसँ तरहत्थी पकैड़ सुनयना अपन दहिना हाथ मनोहरक वाजूपर देलखिन। मनोहरक वाजूपर हाथ पड़िते सुनयनाक कानमे झड़झड़ाए लगलैन-

"सुनयना! बहुत आशा जिनगीसँ केने छेलौं, मुदा टुटि कऽ सभटा छिड़िया गेल। समाजक डर हमरा नै होइए मुदा अहाँ पत्नी छी तँए कहै छी। बताह बना बतहपनीक फरमान हाथमे धरा देलक। कमेलहो खेलक आ ऐगलो कमाइ मारलक। जखने घरसँ निकलब धिया-पुता जानि-जानि देहपर कियो गोला फेकत, कियो काँट फेकत, कियो गोबर माटि फेकत! केकरा की कहबै, हमरा बातकेँ कियो कान धड़त? आइ दस बर्खसँ जानकीक बिआहक पाछू पड़ल छेलौं, मास दिन पूर्व जवाब भेटल जे वैवाहिक सम्बन्ध भंग भऽ गेल!"

सुनयना अपन कानकेँ आरो ठाढ़ करैत पतिक वाजूमे सटौलैन। मनोहरक वाजूमे कान सटिते धड़धड़ाइत अवाज आबए लगल-

"हम ओइ चुगलासँ पुछै छिऐ जे कोन बुधिए जमाए बनि एते सेवा करौलक! बाइस बर्खक बेटीक मुँह देखल जाएत। जखन घरक भार उठबैमे अक्षम भऽ गेलौं तँ अनेरे जीविए कऽ की करब। मुदा परिवार? सेहो कहाँ रखि पौलौं! दस बर्खक अवस्थामे बेटी कन्यासँ कनियाँक रूप धारण करए लगैए तैठाम जानकीक बिआहक चर्च पत्नी

दस बर्ख पूर्व बारह बर्खक अवस्थामे केलैन। अपनो ओइ पाछू पड़लौं। काजोक अगुताहत नहियेँ बुझि पड़ल किएक तँ समयानुसार परिवर्त्तन हेबेक चाही। बीस-बाइस बर्खक बच्चिया समाजक कुमारि बच्चिया छी तँए समाजमे केकरो चौह अलगबैक अधिकार नइ छै जे ओकरा अलग बुझए। जँ जमीनो बेचि जानकीक बिआह कऽ लइ छी तँ की समाज भार उठौत जे एहेन काज आगू नै हएत?"

विस्मित भेल सुनयनाकेँ देख जानकी बाजल-

"माए, कनी हमरो बाबूक नारी देखए दे।"

बेटीक बोल सुनि सुग्गाक लोल सुनयना निहारए लगली। निहारिते मनमे उठलैन- यएह अवस्था छी जखन लोक सती बनैए, यएह अवस्था छी जखन लोक वेश्या बनैए आ यएह अवस्था छी जइमे लोक मातृ-पितृ भक्त बनि भगवत भजन करैए। मुदा जानकी..?

पतिक हाथ सुनयना जानकीक हाथमे दैत कान ठाढ़ कऽ मुँह निच्चाँ गोड़ि लेली। पिताक नब्ज पकैड़ते जानकीक कानमे घनघनाइत अवाज आएल-

"बेटी जानकी! हम अपराधी छी। हमरासँ अपराध भेल।"

"नइ बाबूजी नहि! सौंसे दुनियाँ भलेँ कहए मुदा अपन जुआन नै निकैल सकैए। चौथारि सीमा धरि आबि अहाँ परिवारक सेवा करैत रहलिऐ। दुनियाँ बौक कहए कि बताह, कहह दियौ। मुदा अपन इमान कखनो धरमसँ विचलित नै हएत। हम मिथिवाला छी, हमरा वाजूमे शक्ति अछि। जहिना अपन कालखण्ड अपने इमानदारीसँ टपलौं तहिना ऐगला खण्ड हमरो छी। अपना दरबज्जापर बैस भगवत भजन करैत रहब, देहक चिन्ता नै करब। हमहूँ तँ सन्ताने छी किने। बेटा रहैत तँ बहिन बनि भार दैतिऐन। मुदा जखन भाए नै अछि तखन तँ हमहीं ने बेटा-बेटी भेलौं। ई प्रश्न हमरो भेल किने। बिआह हएत सासुर

बसब, मुदा अहाँकेँ ऐ अवस्थामे छोड़ब केते उचित हएत। नीक-बेजाइक भार के उठौत। अपना जीबैत अपन माए-बापक एहेन गति भऽ जाए जे अनसोहाँतो-सँ-अनसोहाँत भऽ जाए, ई दोख केकरा सिर सवार हएत। मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे छातीक कोन बात कोढ़-करेज धरि खोखैर-खोखैर खाइते आएल आ खाइते रहत। हे शिव! एहेन धनुष उठबैक भार जँ अपने नै लेब तँ की ई समाज उठा सकैए? की मिथिलांगना अखनो धरि ई नै बुझि सकली जे माए-बाप जनमदाते टा नहि छैथ, जिनगीक हारि-जीतक सूत्रधार सेहो छैथ, जँ से नहि तँ सासु पुतोहुकेँ भिखमंगनी बेटी कहि किए मुड़ी गोंतबै छथिन। जरूरत अछि समयानुसार शक्ति उपका संचय करैक। जाबे तक से नहि हएत ताबे तक पुरुखक नजैर निच्चाँ केना कऽ पाबि सकै छी। देखए पड़त अपन भूत आ भविस। जाधैर अपन भूत-भविस देख नै लेब, अपन-अपन बीर्तमानक लक्ष्मण रेखा खींच रक्षाक भार स्वयं नै उठा लेब ताधैर ऋषिका, सती, साध्वी, पतिव्रता आदि-इत्यादिक शब्दक साकार जिनगी केना बनि सकत?”

जहिना नट-नटीनक नाचमे दर्शक चारू दिस घेरि बैसैत आ बीचमे दुनू अपन जिनगीक राग अलापैत रहैए तहिना समाजक लोकक बीच मनोहर, सुनयना आ जानकी अपन-अपन जिनगीक राग अलापि उठि कऽ घर दिस डेग बढ़ौलैन। मनोहरक दुनू हाथ पकड़ने आगू-आगू सुनयना-जानकी आ पाछू-पाछू धिया-पुतासँ चेतन धरिक डेग बढ़ए लगल।

घरक मुड़ेरा देखते मनोहर दुनूक हाथ झमाड़ि कऽ छोड़ौलैन आ बजला-

“बिसवासघात..! बिसवास घाती छी..! समाजमे जेहने मनुख रहत तेहने ने बनत। जे बिसवास देने छल सएह गर्त्तमे खसा पागल

बना देलक! नहि सुनत दुनियाँ तँ नहि सुनह मुदा जाबे घटमे प्राण-घटवार रहत ताबे यात्रीकेँ कहबे करबै, कहिते रहबै।”

सातम दसकमे मनोहर जिला-कार्यालयमे किरानीक नोकरी शुरू केने छला। समाजक पहिल विद्यार्थी मनोहर जे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक पास केलैन। कौलेज लगमे नै रहने आगू पढ़ैक आशा तोड़ि जिनगीक मैदानमे उतरला। मुदा रिजल्टक कागत आँखिक सोझ अबिते मनमे उपैक गेलैन जे जहिना प्रथम श्रेणीक फल भेटल तेहने फलक गाछ रोपि ओकर सेवा टहल जिनगी भरि करैत अपनो आ समाजोकेँ नीक फल खुएबैन।

एक तँ सरकारी कार्यालयमे काज नै जे पढ़ल-लिखल सबहक अँटाबेस होइत, दोसर स्कूलो-कौलेज कम रहने सभ पढ़ियो ने पबै छल। मुदा मनोहरक संग संयोग नीक बैसलै। जिलाक कृषि विभागमे किरानीक नोकरी भऽ गेलइ। जहिना दशमीमे दुर्गास्थानमे साँझ दिअ जाइसँ पहिने अपन-अपन घरक भगवती-आगू साँझ दइए तखन दसनामा देवालयमे जाइए तहिना मनोहर नोकरीपर जाइसँ पहिने माता-पिताक असीरवाद लऽ लेब जरूरी बुझलक। खुशी तीनू गोरेक मनमे रहैन, मुदा तीनूक तीन रंगक। किए ने तीन रंगक रहितैन। हजारो रंगक फूलमे हजारो रंगक सुगन्ध होइ छै आ सभकेँ अपन-अपन सुगन्ध सिरजन करैक जहिना हक छै तहिना पसारैयोक छइहे।

दलानक ओसारपर बैस सत्यदेव कोदारिमे पच्चर लगबैत रहैथ। मनोहरकेँ खुआ आँगनमे माए असीरवाद देलक। आँगन-दलानक बीच मनोहरक मनमे उठल- ओह! माएकेँ तँ कहि देलिऐन जे नोकरीपर जाइ छी, असीरवादो देलैन जे आब तोंही सभ ने ऐ घरक खुट्टा भेलह। हम सभ तँ पाकल आम भेलौं। मुदा से नहि, जहिना माइक एक रूप छैन, पिताक एक रूप छैन तहिना एकटा संयुक्तो रूप तँ छैन्हे। तँए

दुनू गोरेक ओइ रूपकेँ प्रणाम कऽ असीरवाद लेब मनोहरकेँ मनमे आएल। डेढ़िए-पर सँ बाजल-

“माए, कनी एमहर आ।”

शुभ काजमे विलमैक दोख अपनापर माए केना लेती, तँए अँइठे हाथे दरबज्जापर पहुँच मनोहरकेँ पुछलखिन-

“की कहलह?”

तैबीच पिताकेँ गोड़ लागि मनोहर बाजल-

“बाबू, नोकरी करए जाइ छी।”

‘नोकरी’ कानमे पड़िते सत्यदेवक मन खुशिया उठलैन। मुदा सुगन्ध युक्त फुलबाड़ी आ बिनु सुगन्धक फुलबाड़ीक हवा जहिना दोरस रहैत तेना सत्यदेवकेँ नहि बुझि पड़लैन। असीरवाद दैत मनोहरकेँ कहलखिन-

“बौआ, डिक्शनरी जकाँ जँ तीनियोँ-टा शब्दक कोष बना लेबह तँ मुइला पछाइतो बेर-बेर दर्शन होइते रहत, आ भरल-पूरल देख आत्मा जुड़ाइते रहत।”

सिनेह सिक्त पिताक शब्द सुनिते मनोहर सहमल, सहैमते सुहकारैत बाजल-

“ओ तीन शब्द की छिऐ?”

“बौआ, पहिल- झूठ नै बजिहह, दोसर- केकरोसँ एक्को पाइ कहियो डाँरिहक नहि आ तेसर- दरबज्जापर जे मनुख-शक्लक आबैथ, हुनका एक लोटा पानिक आग्रह जरूर करिहौनु।”

पिताक मुँहक तीनू शब्दकेँ गुरु-पित वचन बुझि तत्काल मनोहर गीरह बान्हि रखि लेलक, रखबो जरूरी छेलइ। एगारह बजे ऑफिस पहुँचक छेलइ। मुदा पिताक वचनकेँ हास्य-कोषमे नहि हहासक डरसँ

चाइलेंज-कोषमे लऽ अंगीकार केलक।

दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनोहर अपन उपस्थिति कार्यालयमे दर्ज करा, सभकेँ प्रणाम-पाती करैत कोहवर जकाँ असकरे कुरसीपर बैस गेल। कोनो काज नहि देख चुनौल तमाकुलक गीरह जकाँ गामक गीरह खोलए लगल तँ भक्क-दे पिताक असीरवाद मन पड़लै। होइतो अहिना छै जे जखन रॉकैट तैयार भऽ उड़ैक रूप जखन धारण करैए तखन धरती छोड़ैसँ पहिने जहिना उनटा जाँच-पड़ताल होइ छै तहिना मनोहरो अपन जिनगीकेँ उनटा जाँच करए लगल मुदा पैछला कोनो बात मन नै पड़लै, पहिने पिताक वएह तीनू शब्द मन पड़लै जे तीनू प्रश्न बनि जिनगीक आगूमे ठाढ़ रहइ। मनमे उठलै- जँ अपन प्रश्नक जवाब दइ-जोकर नै छी तँ कोनो लजेबाक बात नहि, जे अपन कमजोरी केना सुहकारी। जाबे तक कोनो खेतमे नव सिरासँ जोति नव बीज नै देल जाइ छै ताबे नव फलक आशा केना हएत?

कुरसीपर बैसल मनोहरक मनमे पिताक असीरवादक तीनू शब्द तीन प्रश्नक गाछ रूपमे ठाढ़ भेल। कुशल माली जहिना सभ फूलक अपन-अपन पतियानी हियबैत तहिना मनोहरो अपन तीनू शब्दक पाँति हियाबए लगल। मुदा सतरंगा मकान बनौनिहार इंजीनियर जकाँ गुनियाँ-परकालसँ नइ गुनि, संकल्प बुझि विचारए लगल। ओना विचारक खण्डन-मण्डन जेते बेसी होइ छै ओकर बीज-स्वरूप दूधक मक्खन जकाँ ओते बेसी भेटबो करै छइ। मुदा मनोहरकेँ मनमे उठि गेलै- मात्र दू घन्टा ऑफिसमे रहैक अछि। डेरो-डन्टा ठीक नहियेँ भेल अछि, तीन घन्टाक रस्ता काटि गामो जेनाइ अछि। तँए जेते खण्डन-मण्डन हेबा चाही तेते तँ नहि कऽ सकल, मुदा तात्विक विचार जरूर केलक। ओना हनुमानजी जकाँ कखनो अकास मार्गपर नजैर पड़ै तँ विहाड़ि जकाँ भऽ जाइ, मुदा लगले महावीर जकाँ बदैल लिअए। ‘झूठ नै बाजब।’ कोनो बड़का प्रश्न थोड़े भेल। नान्हिटा प्रश्न अछि। ने हमरा

एक सेलक जीवाणुक इतिहास देखैक अछि आ ने सोनाक लंका। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे जे समयक संग अबैत जाएत आ विवेक कहैत जाएत तेतबे करबाक अछि...। मनोहरकेँ मनमे खुशी भेलइ। जहिना तीन प्रश्नक उत्तरमे एक प्रश्न हल भेने पास नम्बर चलि अबैत तहिना मनोहरक मनमे पासक आशा जगलै। आशा जगिते पास बदैल पासापर दोसर आस मारलकै जे 'दोसरकेँ नै डाँरब।' मुदा ईहो बड़ भारी प्रश्न नै बुझि पड़लै, मन कहलकै- अपन खर्चमे कमी-बेसी भेनहि ने लोक करजदार होइए आकि कर्जदाता मुदा जँ सरपट चालि पकैड़ चलब तँ किए दुनूमे सँ कियो भेँट हएत। मुदा समाजक बीच परिवारकेँ रखैक जखन खगता मनमे एलै तँ सोल्हन्नी सरपट नै देख मनोहरक मन अँटकल मुदा लगले घोड़ा जकाँ मन हिहिएलै- 'खगताकेँ जेते तक पचा सकब ओते पचाएब, आ बढ़ता-ले समाज अछि।'

दू-तिहाइ अंकक आशा नहियोँ देख मनोहरक मन मानि गेलै जे कोनो बेसी ओझरी नहियेँ अछि। मुदा तेसर प्रश्न- 'दरबज्जापर एक लोटा पानि' पर जखन नजैर पड़लै तँ मन ठमैक गेलइ। अपने घरसँ तीन घन्टाक रस्ता दूर रहब, दरबज्जापर बारह बजे दिन आकि बारह बजे राति जँ कियो आबि जाथि तखन अपना बुते की हएत? अखन माता-पिता जीबै छैथ तँ अपन दुआर-दरबज्जाक मुड़ेरा अकास ठेकेता मुदा परोछ भेला पछाइत की करबै? जँ अखन नै विचारि बाट पकैड़ लेब तँ बेर-बिपैत पड़लापर तँ सहजे लोकक बुधि हेरा जाइ छै, तखन केना विचारि पाएब..?

वस्त्रक एक-एक सूत बिलगा-बिलगा जखन मनोहर देखए लगल तँ बुझि पड़लै जे प्रश्न भारी कहाँ अछि। पीसक हले-हल बनबैक जन्मभूमि मातृभूमि भेल आ सेवाभूमि कर्मभूमि भेल। मातृभूमि कर्मभूमि होइत चलए तेतबे विचारैक अछि।

नोकरी भेलाक पनरह बर्खक पछाइत। मनोहरक माता-पिता मरि गेल छेलैन। अखन धरि मनोहर अठवारे गाम-अबै जाइ छल। गामक तसवीर तँ तेना भऽ नै सुधरल मुदा अपना घरसँ खा-पी कऽ बच्चा बी.ए. तक पढ़ि सकैए। घन्टा बीतैत-बीतैत डाक्टर ओइठाम पहुँच सकैए। तखन गाम छोड़ब-तोड़ब नीक नहि। जहिना माता-पिताक समए अबै जाइ छेलैं तहिना ऐगलो परिवार सेने रहब...। यएह सोचि मनोहर अपन परिवारकेँ गाममे रखलैन।

जोड़ा बरदक जोतबला परिवार सत्यदेवक छेलैन। ओना, जोड़ा बरदक जोतक अर्थ विकृत भऽ गेल अछि। विकृत ई भऽ गेल अछि जे साए-साए बीघा जमीनबला खुट्टा उसरन कऽ लेलैन। तर्क देता ट्रेक्टर-थ्रेसरक मुदा अपने परदेशसँ अगहने-अगहन गाम पहुँचता! से नहि, सत्यदेव मेहनती गिरहस्त छला। गिरहस्तीक सभ रूप सजौने छला। कलमी-सरही आमक गाछी पाँच कट्ठा अखनो छैन्हे। दू कट्ठा बँसबाड़ि, एक कट्ठा करजान, पाँच कट्ठा घराड़ियो छैन्हे। तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ी सेहो छैन्हे। पानिक अपन बेवस्था केनहि छैथ। तेतबे नहि, जेहने सासुक चालि-चलैन छेलै तेहने सुनयनोक भऽ गेलैन। गिरहस्तियोक काज सत्यदेवकेँ बँटाएले जकाँ रहैन। अढ़ाइ बीघा बाधक खेती अपन रहैन। तीमन-तरकारी, बाड़ी-झाड़ी आ फुलबाड़ी-फलबाड़ीक भार पत्नीपर रहैन। जे सुनयनाक हृदयक रूप बनि गेलैन। माने, सासु-ससुरकेँ परोछ भेने घरक सोल्हनी भार सुनयने उठा नेने छेली। सुनयनाक अभ्यन्तर कहैन जे ऐ घरक सोल्हन्नी कर्ता-धर्ता अपने छी। तेकरा जँ अपना जकाँ नै रखि बिनु आड़ि-मेड़क घर बना लेब तखन किए कहै छिऐ जे नारीक शोषण होइए। की एहेन नारी नै छैथ जे पुरुखसँ मालिश करबै छैथ? मुदा से नहि, ई भेल गप-सप्प...।

जिला कार्यालयमे की खाली सरकारीए काम-काज होइए आकि

जिला भरिक कथा-कुटुमैती, गाए-बरद आ महींसक खरीद-बिकरीक संग राजनीति, कूटनीति, छलनीति, दुर्नित इत्यादि सभ कथुक जिला छीहे। भलेँ कामकाजी लोक काजक औगताइमे तारिकोपर जेता मुदा पाछूसँ वारंट नेने औता। मुदा तेतबे तँ नइ अछि, कचहरी जाइ छी, भरि दिन केतए बैस समए गमाएब। तइसँ नीक किए ने पूर्बा हवाक गरपर बैस गाँजाक गन्ध पसाइर सभ गजेरीकेँ एकठाम समेटब नीक। एक चेहरा अनेक रूप दुनियाँक नव हाल भाइये गेल अछि। के अपराधी आ के अपराध रोकिनिहार? ई विचित्र स्थिति अछिए। जँ दू-तीन-चारिक जोगकेँ खिचड़ी कहब तँ चाउर, दूध, चीनी आ मसालाक जोग खीर केना भऽ गेल? जँ से नहि, चाउर-दालि आ अल्लू-पानिक बीच चीन्नियोँ दऽ दिऐ तखन की हएत..? तँए सोझहे नून-चीनीक बात नइ अछि।

सिंचाइ विभागक बड़ाबाबू छला जुगल किशोर। आब सेवा निवृत्ति भऽ गेला अछि। इलाकाक एक्के जातिक नहि, अधिकांश जातिक पजियारीक पेशा सेहो अपनौने छला। कार्यालय सभमे अहिना होइ छै एक चिन्हारे भेने तीन दिनमे हजार चिन्हरबा भऽ जाइ छइ। सरकारीए काजक भाषामे जुगल किशोर निपुण नहि, घटकैतीक भाषाक सेहो पाकल पड़ोर छला। हुनके भाँजमे मनोहर पड़ि गेला।

जखने जानकी एगारहम बर्ख टपि बारहममे पएर रखलक तखने सुनयना मनोहरकेँ जानकीक बिआहक भार सुमझा देलखिन। अखन धरि मनोहरकेँ कथा-कुटुमैतीक बोध नहि। भाँज लगलैन जे जुगल-किशोरक हाथमे छपड़िया पैकार जकाँ साइयो जोड़ा बरद-गाए रहिते छैन। जिला कार्यालयमे मनोहरकेँ अपन पहचान छेलैन। जइसँ काजक बोझो कम रहै छेलैन। एक दिन चारि बजे छुट्टी होइते जुगल किशोरसँ भेँट करैत मनोहर अपन बात जानकी बिआहक रखलैन। जेना जुगल किशोरकेँ जीए-पर रखल रहैन तहिना मनोहरकेँ

कहलखिन जे कृष्णकान्त बी.ए. पास कऽ नोकरी-ले वौआइए, मुदा लेन-देन दुआरे काज नै भऽ पबै छइ। से जँ अहाँ अपनेसँ जा कऽ कहिऐन तँ ओहिना–माने बिनु लेन-देनेक–काज भऽ जेतैन आ अहूँकेँ बिआहमे लेन-देनक भार नै पड़त।

मनोहरक मन मानि गेलैन जे एक परिवारकेँ ठाढ़ होइक प्रश्न छै से जँ कहलासँ भऽ जेतै तँ उचित-उपकार दुनू भेल। अपनो काज ससैर जाएत। ओना, बीचमे एकटा बाधा ठाढ़ भेल, ओ ई जे पहिने नोकरी होइ आकि बिआह। घटकैती भाषमे जुगल किशोर कहलखिन-

"मनोहर बाबू, अहूँ सभ दिन कागतेमे ओझराएल रहलौं, एतबो ने बुझै छिऐ जे जइ घर बेटी जाएत तेकरा घरो ने छइ। दू-चारि मास कमा कऽ घर बनौत तखन निचेनसँ बिआह हेतइ। अखन एगारहे-बारहे बर्खक बेटी अछि, आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहलै, आब तँ बीस-बाइसक चलैन भऽ गेल अछि। नीको अछि।"

सोझमतिया मनोहर जुगल किशोरपर सोल्हनी बिसवास कऽ लेलैन। समए बीतैत रहल, बीतैत रहल...। मनोहर निचेन रहैथ जे बीस-बाइस बर्खक बीचक काज टरि गेल।

स्थायी रूपे जखन कृष्णकान्त बेवस्थित भेल तखन जुगल किशोर अपन बेटीक बिआह कृष्णकान्तसँ पाँच लाख नगद गनि करा लेलैन। कृष्णकान्तो अपन पूर्व जन्मक कमाइ बुझलक। एक पट्टीमे नोकरी, दोसर पट्टीमे पाँच लाखक संग कनियाँ। के हमरा सन भागमन्त हएत। जानकी जखन बाइसम बर्खमे पहुँचल, तँ सुनयना अन्तिम वारनिंग मनोहरकेँ देलखिन। तखन मनोहरकेँ चाँकि जगलैन। धर्म-कर्म बुझि मनोहर जुगल किशोरक गाम पहुँचला। तीन साल पहिने जुगल किशोर सेवा-निवृत्त भेले रहैथ। दरबज्जापर बैसल जुगल किशोरक मन मनोहरकेँ किछु मोट बुझहेलैन। मुदा अपन काज तँ

पहाड़ी इलाकामे लोक गदहो चढ़ि कऽ लइए। खाएर, हमहूँ कोनो कुटुमैती करए थोड़े एलौं जे मान-रोख रखब। काजे एलौं काज करब जाएब तैबीच समैये करवन बँचत जे पहुनाइ करब। बुढ़ियो बाघीन तँ फेर बाघीन छिऐ किने। मनोहरकेँ देखते जुगल किशोर चपाड़ा दैत अभिवादन केलकैन-

"आउ-आउ मनोहरबाबू! आब तँ भेँटो दुरलव, केमहर-केमहर..?"

मनोहर कहलकैन- "जानकी बाइस बर्खक भऽ गेल, सएह काजे आएल छी।"

अखन धरि मनोहरकेँ नै बुझल जे कृष्ण कान्तक बिआह जुगल किशोरेक बेटीसँ भऽ गेलैन। मुदा ई दुनियाँक खेल छी जे दुनियाँमे रहितो लोक दुनियाँकेँ नै जानि पबैत अछि।

जुगल किशोरक मनमे भेलैन जे मास दिन पहिनहि काज भेल आ आइ ई ताना-मारए दरबज्जापर चलि एला! अपना सीमा कुकुरो बताह। जुगल किशोर सोझहे कहलखिन-

"ऐठामसँ चलि जाउ, नै तँ पुलिसकेँ बजाएब!!"

ओना जुगल किशोरक बात मनोहरकेँ तेते कठाइन नै लगलैन जेते लागक चाही। किएक तँ अपन दरबज्जापर उचित-अभ्यागत-ले पुलिस आनी, सएह तँ मिथिलाक दरबज्जा छी।

पुलिसक नाओं सुनि मनोहर भरमे-सरमे घरमुहाँ भेला।

तही दिनसँ ऑफिसक काजमे मनोहरकेँ उन्टा-फेड़ हुअ लगलैन। जइसँ पागल घोषित कऽ देल गेला।

◌

शब्द संख्या : 3341

बगबाइर

अदरा अपन चौदहम दिन बिता काल्हि चलि जाएत। बहुत दिनक पछाइत अदराकेँ एहेन जश भेल। जशो केना ने होइत, पहिल दिन अबिते बरिस गेल जइसँ धू-धू जरैत धरतीकेँ असमानी पानि भेटते एक दिस मन तिरपित भेलै तँ दोसर दिस पैछला सात सालक पछाइत एहेन आम-कटहरसँ भेँट भेलइ। तहूमे पैछला सालक छगाएल मन–आमक अभावमे–रहने आरो बेसी सिनेहासिक्त भऽ गेल।

दोसर साँझ। जारैन-काठी चुल्हि लग ओरिया कऽ रखि फुलिया पतिकेँ अदरा नक्षत्रक अन्तिम दिन मन पाड़ैत कहलखिन-

"काल्हिए भरि अदरा अछि, तँए..?"

पत्नीक बात सुनि हरानन्द ओहिना मनमे औंटए-पौड़ए लगला जेना नेबोक रस, चीनी आ पानिकेँ औंट-आँटि शरबत बनौल जाइए। बातकेँ औंटैत-पौरैत हरानन्द बजला-

"काल्हि जाए कि परसू जाए आकि नहियेँ अबितए-जइतए तइसँ अपना की। ने आम-कटहर अछि आ ने खुट्टापर लगहैर गाए-महींस। तखन अदराकेँ एने की आ गेने की!"

पतिक बात फुलियाकेँ आन घरक जनिजाति जकाँ छुलकैन नहि, बल्कि विचारकेँ गौर करए लगली। कहै तँ ठीके छैथ मुदा साल भरिक पाबैन छी, बाल-बच्चाक घरमे छोड़ियो केना देब। एकबेर

छुटने तँ जिनगीए भरि छुटि जेतइ। बजली-

"नइ पान तँ पानक डंटियोसँ पाबैन नै करब से केहेन हएत?"

फुलियाक आग्रह सुनि हरानन्द सामंजस करैत बजला-

"घरमे रहने सभ दिन पाबैने-पाबैन होइ छै आ नै रहने पाबैनो फोंक भऽ ओहिना चलि जाइ छै जहिना आन दिन चलि जाइए।"

फुलिया मुड़ी डोलबैत बजली-

"हँ, से तँ चलिये जाइ छै मुदा पाबैनक अपन 'रूपं मधुरम् तिलकं' मधुरम होइ छइ किने।"

फुलियाक बातपर मुस्की दैत हरानन्द बजला-

"हँ, से तँ होइ छइ। मुदा एहनो तँ होइते छै जे सालक सत्ताइस नक्षत्रमे अदरो एकटा छी, जे पनरहो दिन अरबा चाउर, दूध, चीनी, आम आ कटहरसँ पूजल जाइए आ एहनो नक्षत्र तँ होइते अछि जेकरा एको दिन पूजन-पाबैन नै होइ छइ। तँए कि ओ सालक नक्षत्र नै भेल?"

"भेल किए ने, मुदा सभकेँ लौल रहै छै किने जे आगत-भागत हुअए।"

फुलियाक बात ओराएलो ने छेलैन कि बिच्चेमे हरानन्द टपकला-

"लौलो-लौलमे भेद होइ छै किने। कियो अपन सेवा कएल छागर बलि चढ़बैए आ कियो नगद नारायणसँ कीनि चढ़बैए, चढ़बैत तँ दुनू अछि। मुदा अहीं कहू जे दुनू एक्के मने चढ़बैए?"

"जखन घरमे अरबा चाउर नै अछि, दूधक जोगार नै अछि, ओहो जे बगबारिमे आम-कटहर होइ छेलए सेहो छिनाइए गेल, तखन तँ ठीके...। छुछ मुहेँ शंख बाजत?"

"हँ से तँ नै बाजत। मुदा..?"

साठि बर्खक हरानन्द अपन अन्तिम हार पैछला साल तखन मानि गेला जखन अपन लगौल-सजौल गाछी-कलमक टुकलोसँ वंचित भेला।

पिताकेँ परोछ भेला पछाइत हरानन्द पाँच बीघा चास, तीन कट्ठा बास आ आठ कट्ठा गाछी-कलमक रक्षक छला। ओना चास-बास अरजैमे हरानन्दक कोनो योगदान नहि छेलैन मुदा आठ कट्ठा गाछी-कलम लगबैमे तँ छेलैन्हे।

दस-बारह बर्खक जखन हरानन्द रहए तखने रूपलाल अपन पुरना गाछी उपटबैक विचार केलैन। उपटबैक कारण रहैन जे एक तँ आम सभ नीक नै छेलै दोसर जेहो छेलै से पुरान भेने या तँ फड़बे नै करइ या फड़ला पछाइत रोगाइये जाइ छेलइ। रूपलालक मनमे उठलैन जे गाछी-कलम कि लोक अपना नापसँ लगबैए जे हम तीस बर्ख जीब तँए आमो गाछ तीसे बर्ख रहत। तीन-तीन-चरि-चरि पुश्तक गाछी-कलम, पोथी-कलम सभसँ परिवार सुख करैए। से नहि तँ दस बारहे बर्खक हरानन्द अछि तइसँ कि मुदा अपना संगे ओकरो किछु भार देबइ। दुनू बापूतक सीमानपर एकटा गाछियो रहत।

पुरना गाछीक गाछ हटा रूपलाल पाँच बर्ख जोत-कोर केलैन, अन्न उपजौलैन। पछाइत गाछी लगबैसँ पहिने हरानन्दकेँ कहलखिन जे बौआ नीकहा आमक आँठि बीछि एकठाम रोपिहह आ कलम लगबैले सहरगंजा एकठाम हाथ-हाथ भरिपर रोपि दिहक जे उखाड़ैमे असान हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अधिक बिसवासू होइ छइ। समए तेहेन भऽ गेल अछि जे बिसवास अपन चेहरे बदैल लेलक अछि। जे नर्सरी गाछी-कलम, बाड़ी-फुलबाड़ीक बीआ बेचैए ओहो ओहन भऽ गेल अछि जे कहत सागवानक गाछ छी आ भऽ जाइए

बौनैया काँट! खाएर जे हौउ, अपन गाछी अपने लगाएब।

साल भरिक पछाइत आँठीसँ डेढ़-डेढ़, दू-दू हाथक गाछ भऽ गेल। सरहीकेँ मुसरा काटि, बरद जकाँ सुरेब बनैले थल्ला उखाड़ए हरानन्दकेँ कहि रूपलाल आगूमे आबि ऐ ताकमे बैसला जे देखिऐ केना उन्टा-सुन्टा खुरपी चलबैए। आठे कट्ठा कलम-गाछी लागत तइमे गाछे केते रोपल जाएत। तहूमे नवका वौना किस्म नहि, बड़का किस्म छेलइ। मेल-पाँच कऽ सरही एक भाग आ कलमी एक भाग लगाएब नीक बुझि हरानन्द सएह केलैन। अपन खेती-पथारीक जिनगी हरानन्दक तँए झूठ-फूससँ कम भेँट।

एक्कैस बर्खक अवस्थामे हरानन्दकेँ बेटा भेलैन। तीन मासक पछाइत बच्चाक माथ नमहर हुअ लगलै। साल भरि जाइत-जाइत असद्धं देखैमे लागए लगलै। दुनू परानी हरानन्द विचारलैन- कोखिक पहिल सन्तान छी। केना छोड़ि देब। जमीन-जत्था लोक किए रखैए। से नहि तँ जाबे तक जीबैक आशा रहतै ताबे तक तकतियान करबै। तइले जे हौउ। खेत-पथार रहौ आकि चलि जाउ। जँ मनुख बँचत तँ ओहूसँ बेसी अरैज लेत आ जँ मनुखे ने रहत तँ खेते-पथार कोन काजक। गणेशजीक माथ सन ओइ बच्चाक माथ भऽ गेलइ। एनमेन हाथीक माथ सदृश...।

समाजक चलैनानुसार हरानन्द दुनू दिस बढ़ल। एक दिस गामक डाक्टरी-इलाज तँ दोसर दिस झाड़-फूक, टोना-टापर। बिमारीक चक्रमे पड़ने दुनू बेकतीक जीवनचक्रे बदैल गेलइ। जहिना हरानन्द भरि-भरि दिन झाड़-फूक केनिहारक भाँजमे वौआइत तहिना फुलिया पथ्य-पानिक संग घरेक आइ-पाइमे समए गमबए लगली। एक दिस सौनक बून जकाँ खर्च बरसए लगलैन तँ दोसर दिस खेती-पथारीसँ बिमुख भेने आमदनी हराए लगलैन। छह मास बीतैत-बीतैत

तीन बीघा जमीन हरानन्दक बिका गेलैन। मुदा अखनो दुनू परानीक आशा ओहिने बनल छैन जहिना छह मास पहिने छेलैन। डाक्टरसँ लऽ कऽ झाड़-फूक केनिहार धरि जे कियो देखैत तँ ई कियो ने कहैत जे ई रोग छुटैबला नइ अछि बल्कि एते बोल-भरोष दैत जे रोग निसचित भगबे करत। जइ खेतक अन्नसँ हरानन्दक परिवार चलै छेलैन वएह खेत बेचि-बेचि बेटाक इलाजो करबैथ आ अपनो खाए लगला। ठाकुरक बरियाती जकाँ सभ ठाकुरे-ठाकुर। उचित-अभ्यागतक भाँजमे अपनो दुनू परानी हरानन्द सएह बनैत चलि गेला। खेत बीक रहल अछि आ रोगो बढ़िये रहल अछि। समुद्रमे भँसैत नाव जकाँ केतए जाएत कोनो ठीक नहि।

दस मास पुरैत-पुरैत बच्चा मरि गेलइ। बच्चा तँ मरिये गेलै मुदा परिवारोक कोनो तनभगन नै रहए देलकै। खेतक लूट भऽ गेलइ। कियो उचित मूल्य दऽ लेलैन, तँ कियो हथपैंच एकक तीन लेलैन। घराड़ी छोड़ि हरानन्दकेँ किछु ने बँचलैन। खाली एतबे जे चास बटाइ करता आ गाछी-कलम ओगरवाहि।

मृत्युओ तँ सबहक एक्के रंग नै होइत। कियो जनमिते मरि जाइए तँ कियो रोग-वियाधिसँ चटपटा मरैए। मुदा तैसंग ईहो ने होइ छै जे कियो जनमरोगी बनि जीबैए तँ कियो रोगाएले जिनगीक आनन्द लुटैत जीबैए। जहियासँ हरानन्द बेटाक बिमारीक इलाजक पाछू बढ़ला तहियेसँ दुनू बेकतीक मन-मोटाव सेहो बढ़ए लगलैन। मन-मोटावक कारण रहैन दुनूक दू धारणाक धारा। हरानन्दक मनकेँ पकड़ने रहैन जे डाक्टरी इलाजसँ रोग भागत आ फुलियाक मन झाड़-फूकमे पकड़ाएल। जेकर फलाफल डाक्टर आ झाड़-फूक केनिहारकेँ एलापर स्पष्ट देख पड़ैत। जैठाम हरानन्द डाक्टरक आइ-पाइ नीक जकाँ करै छला तैठाम फुलिया झड़निहार-फुकनिहारक आगत-भागत करै छेली। काजक दौड़मे परिवारोक बीच अहिना होइ छइ। कियो काजकेँ काज

बुझि करैए आ कियो काजकेँ काज बुझैए। भलेँ कियो काजक आ कियो अकाजक किए ने बनि जाए। बिलाइक झगड़ामे बानर पंच। जखन मंतरिया अबैत तँ घन्टो बैस डाक्टरी इलाजकेँ अदखोइ-बदखोइ करैत। दुनूक बीचक लट-पट-सट-पट दुनू बेकती हरानन्दक विचारपर सेहो पड़िते छेलैन। रोगकेँ कमैत नै देख दोसर-तेसर साँझमे सभ दिन दुनू परानीक बीच एक आखर भाइये जाइ छल। एक दिस खेत बोहाइत देख हरानन्द झाड़-फूककेँ अनुचित खर्च बुझि पत्नीकेँ झपटैथ तँ दोसर दिस फुलिया डाक्टरी इलाजकेँ अनुचित बुझि पतिकेँ झपटैत रहै छेली। पंच कियो ने। दुनू पार्टी लड़िये कऽ फरियेता, जे दसम मासमे निर्मूल भेल।

हरानन्द बोनिहार-बटेदार नहि किसान-बटेदार बनि नव जीवन धारण केलैन। जिनगी बदलने बहुत किछु बदलैयो पड़ै छै आ बहुत किछु अपनो बदैल जाइ छइ। हरानन्दक अपन खरिहाँन उसैर गेलैन। खेतक उपजा अदहा-अदही, सेहो ने अपना मने ने लगा सकै छी आ ने काटि सकै छी। तेतबे नहि, आब आमक बगबारि करए पड़तैन जइमे कलमी चारिमे एक आ सरही तीनमे एक भेटतैन। भलेँ कलमीसँ सरहीए किए ने नम्हरो आ गुदगरो होइत।

वसन्त पंचमीक दिन। सरस्वती पूजाक संग किसान हरो ठाढ़ करता। जोड़ा बरदक बटेदार किसान रहितो हरानन्द हर केतए ठाढ़ करता। किसान तँ अपन ओजार–हर-कोदारि-खुरपी-हँसुआ–बड़ही ऐठामसँ सान करा अपना घरमे पूजा करत आकि अपन हाथ आ हाथक ओजार अनका घर? हर ठाढ़ केतए करब ई हरानन्दक मनकेँ हौंर देलकैन। सतंजा अन्न सतंजा तीमन-तरकारी जकाँ हरानन्द बेरा नै पाबि रहल छला जे की कथी छी। अपन रंगे बदैल नेने अछि। खेतमे मेहनत ओतबे करब मुदा उपजा अधिया हएत। जइ साल रौदी-दाही हएत तइ साल बटेदारक खर्च जाएत आकि खेतबलाक खेत? मुदा

उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। हरानन्दक मन घुमलैन- किछु खेती जोति-कोरि होइ छै आ किछु ओहुना–माने छिट्टआ–सेहो होइ छै, तइमे की नीक? आगू सीमा घेरल अछि। अधिया। जखन अदहे हएत तखन किए ने लागतमे कटौती कएल जाए। ओते तँ बँचत हेबे करत किने। मुदा जँ बीए खा जाएब तखन खेती कथीक करब..? श्रमक ह्रास मंथर गतिए नै दुरूत गतिए हुअ लगल। जहिना सौनक झटकीमे पानिक नमहर-नमहर बूनक संगबे हवा भेने आरो दगनियाँ रूप पकैड़ बरसैए तहिना श्रमक ह्रास भेने रंग-बिरंगक रोग श्रम-शक्तिकेँ धेलक। फलाफल केतौ श्रमक चोरि तँ केतौ श्रमक बेइमानी, केतौ अनदेखी तँ केतौं बलजोर हुअ लगल!

तेसर सालक पंचायत चुनाव हरानन्दकेँ आरो धकिया देलकैन। जिनगीमे दुनू परानी हरानन्दकेँ छल-प्रपंच, गरीब भेनौं नै छुबि सकलैन। भगवानक लीला बुझि सभ दुख-सुखकेँ दुनू परानी घोंटि गेला। मनो मानि लेलकैन जे जहिना बेटा आएल तहिना गेल। दुनियाँ थोड़े दोखी बनाएत जे बेटाक तकतियान नै केलिऐ। धर्म-कर्म धने ने सुधन कहबैए। की ई हमर सफलता ई नहि जे बेटा-ले अपन सर्वस्व गमा लेलौं। मुदा दोखोक तँ एक नै अनेक कारणो होइते छइ। जेकर फलो सोझहेमे अछि।

हरानन्द जिनका हाथे अपन गाछी-कलम बेचने छला, अखन हुनके बगवार बनि गाछीक ओगरवाहि करैत रहथिन। तीन गोरे पंचायतक मुखिया-ले उम्मीदवार रहैथ। तीनूमे के नीक ओ विचारि दुनू परानी हरानन्द भोँट देलखिन। कुलानन्द अपन बगवार बुझि हरानन्दकेँ अपन भोँटर बुझैत रहथिन। कुलानन्दक हारि हरानन्दक कपारपर हड़हड़ा कऽ खसलैन।

अँगनाक ओसारपर दुनू परानी हरानन्द अपन दिन-दुनियाँक

गप-सप्प करैत रहैथ। साठि बर्खसँ ऊपरेक दुनू बेकती। जिनगीक संगी खाली लभे-मैरेजक नहि, चलैत-फिड़ैत समाजोक बन्धन तँ छिऐ। एहेन स्थितिमे दू-दिलक दिलराजक बास केतए हएत? ओहुना लोक बुझैए जे ओल्ड बेटल, ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ बेसी चसगर होइ छइ। ओना, दुनू परानी फुलियाक अवस्था दुनूक चेहराक रूपे-रंगकेँ बिगाड़ि देने अछि। फुलियाक मुँहमे तीनटा चौह बँचल आ हरानन्दकेँ सेहो नहि। बिनु दाँतक मुहसँ अदन्त बच्चा जकाँ गुलावी हँसी हँसैत हरानन्द फुलियाकेँ कहलखिन-

"आब ऐ दुनियाँमे रहैक मन नै होइए। होइए जे जल्दी मरि जैतौं जे अपनो भार हटितए आ दुनियोँक भार घटितै।"

जिनगीक तीत-मीठ जे फुलिया आ हरानन्दकेँ पति-पत्नीक रूप बिगाड़ि देने छल ओ ठमैक पुन: जिनगीक धार लग पहुँच गेल। एक तँ उमेरक उपजा, दोसर संगी बनि संग-संग चलैक। फुलिया बजली-

"कहलौं तँ बैस बात मुदा एते दिन जे केलौं से केलौं, जहिना अहाँ केलौं तहिना हमहूँ केलौं मुदा आबो जे ओहिना पहिलुके जकाँ करब से थोड़े मानि लेब।"

फुलियाक बात सुनि हरानन्द ठमकला। ठमकैक कारण भेलैन पैछले जकाँ आब नै जीबए चाहै छैथ। वैचारिक मेल-मिलानक मन बना जीबए चाहै छैथ। पुछलखिन-

"एना किए करुआएल बात बजलौं?"

पतिक शान्त भाव देखते फुलियाकेँ सह भेटलैन। भरियबैत बजली-

"जखन दुनू बेकती संगीए नहि, अर्द्धांगिनियोँ छी तखन एहेन बात बिना विचारने किए बजलौं जे मरि जाएब? अहाँकेँ जीबैक मन नै अछि? अकैछ गेलौं तँ मरि जाउ। मुदा हमरा जे मारब से दोखी के हएत?"

विधवो नारी तँ अधमौगैते जिनगी जीबै छैथ। तहूमे फुलिया आ हरानन्दक बीच उमेरक दूरी मात्र साले भरिक। तहूमे साल भरि फुलिया आरो निच्चेँ। गुम्म भऽ हरानन्द विचारिते रहैथ कि तखने कुलानन्द बेधड़क आँगन पहुँच हरानन्दकेँ दबारैत कहलकैन-

"हमरा गाछीक भीर काल्हिसँ कियो नै जैहह। देख लेलिय जे केहेन हितैषी बगवार छह।"

जहिना ध्वनि साधनाक समए बमक अवाज साधनाकेँ भंग करैत तहिना पत्नीक बात बिसैर हरानन्द कुलानन्दकेँ उत्तर देलखिन-

"बेटा चलि गेल से तँ छाती लगा मारलौं आ बगबाइरक जे आमे चलि जाएत तेकर सोच अछि। जे मन फूरए से करब।"

हारैत-हारैत हरानन्द जिनगी हारि चुकल छला। मिसियो भरि कलेज निरोग कहाँ रहि गेल छेलैन जइसँ हूबा कऽ बजितैथ जे अही हाथक लगौल गाछी-कलम छी, हिस्सेदारी टुटि गेल मुदा अखनो ओहिना मन अछि जे लोटे-लोटा जड़िमे पानि देने छी।

शब्द संख्या : 1900

मुइलो बिसेबैन

काल्हि भोरेसँ केताबेर लूटनी भौजी धीरू भैयाकेँ खोज करए एली मुदा भेँट नै भेलैन। ओना लूटनियोँ भौजी अपने मनक लोक, खोज करए तँ अबै छेली मुदा परिवारक कोनो सदस्यकेँ सोझहे पुछि दइ छेलखिन-

"धीरू बौआ आँगनमे छैथ?"

तँ उत्तर भेटै छेलैन-

"नहि।"

'नहि' सुनिते घुमि कऽ लूटनी भौजी लौट जाइ छेली। दोहरा-तेहरा खरियारि कऽ ऐ दुआरे नै पुछै छेलखिन जे अपना घरक बात सभ लग बाजब नीक नहि। ओना किछु मानेमे नीको अछि। नीक ऐ मानेमे जे झगड़ा-दनक बात जखन लोक बाजए लगैए तँ केते रंगक बात बजा जाइ छै जइसँ समैयोक बेरबादी आ झगड़ा सेहो टरल रहैए। मुदा सातम बेर एलहा लूटनी भौजीकेँ सुतरलैन। धीरू भैया गंगा नहा कऽ आएले छला कि लूटनी भौजी आबि गेलखिन।

गाड़ी-सवारीक झमारल धीरू भैया, तँए आन गप करैक मन नै होइ छेलैन। थाकलो छला आ अपनो घरक तीन दिनक समाचार पछुआएले छैन। आनठामसँ एला पछाइत कियो पहिने अपन परिवारक हाल-चाल ने बुझए चाहैए जे कोन काज अगुआएल, कोन पछुआएल आ कोन ठमकले रहि गेल...। मुदा जखन लूटनी भौजी अपन दुखनामा कहए एलखिन तखन नहियोँ सुनता से उचित नहि। अपन परिवारसँ बेसी महत आन परिवारकेँ नै देनाइ तँ स्वार्थियेक काज भेल। मुदा अपन काज छोड़ि जँ दोसरेक काज करए लगब तँ की दोखी नइ हएब? हेबे करब। सभकेँ अपने अधिकारो आ करतबो छै जँ तेकरे छोड़ि देब तँ करब की? खाएर जे हौउ...।

एक तँ धीरू भैया रस्ताक झमारल छैथे तैपर सँ दोसर झमार दैत लूटनी भौजी कहलकैन-

"पहिने सभ काज छोड़ि हमर पनचैती कऽ दिअ, तखन आन काज करब।"

ओना गंगा स्नान केला पछाइत धीरू भैयामे किछु संकल्पो आ किछु काज करैक नव उहियो आबि गेलैन आ किछु छोड़बो आ बदलबोक निर्णय करबे केलाह अछि।

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैयाक मनमे उठलैन जे अखन दूर-दराजसँ आएल छी, लगले पनचैती करए बैसब, तहूमे मनो थाकले अछि आ देहो गरमाएले अछि। तँए समयक हिसाबसँ ई काज नीक केना हएत। कोनो पोखैरसँ अछींजल भरब तखन ने उचित होइ छै जखन जल असथिर रहल, जइसँ ने चहल-पहल आ ने गादि-गन्धक संभावना रहत। मुदा लूटनी भौजीकेँ टारबो असान नहियेँ बुझि पड़लैन।

एक कालखण्ड धीरू भैया आ लूटनी भौजी गामक नेतागिरी कऽ चुकल छला। ओना लूटनी भौजी बिनु पेनक लोटे जकाँ छेली मुदा जासूसी-ले तँ ओहने फूटल-फाटल, पचकल-पुचकलक ने जरूरत होइ छइ। तइमे लूटनी भौजी सोल्हन्नी उपयुक्त। ओना, सभ बुझै छला जे लूटनी भौजीक बात आ उनटा गाड़ीक चालि, दुनू बरबैर। मुदा तैयो गाममे वएहटा मरदक बेटी छैथ जे थनो-पुलिसक आगूमे

ठाढ़ होइ छैथ। जेहने रेकार-तेकार पुलिसक बोल तेहने तँ लूटनियोँ भौजीक रेकार-तेकार छैन्हे। गामक लोक जे बुझैन मुदा सरकारी जासूससँ तँ नीक चरित्रक छथिए। केना नै छैथ, गाम-घरक जासूसी मुखौती चलै छै मुदा सरकारीक तँ लिखौती चलैए। मलकारे ने महींसक घीकेँ गाइक घी आ गाइक घीकेँ महींसक घी मुखौतियो बना लइए! आकि कीननिहार बनौत? कीननिहारकेँ जे जरूरत रहलै ओ मांग करैए। मलकारकेँ जेते जल्दी घी बिकाएत ओते पहिने ने काजसँ छुटकारा भेटतै। जखन सभ अपने लाभक रोजगार करैए तखन मलकारेकेँ किछु कहब केते उचित हएत। लिखौतीए जासूसीमे ने कोनो कारखानासँ लाखक माल सैंकड़ा बनैए आ सैंकड़ा लाख बनैए। भलेँ बीचमे इन्कम-टैक्सक जे करामात हौउ...। एहेन जासूसी लूटनी भौजी कहियो ने केलैन आ ने अखनो करै छैथ। ओना, केतबो माहिर लूटनी भौजी किएक ने बुझल जाथि मुदा सभ घरक जासूसी करैमे खिलैच जाइ छैथ। जे पुरुख कोट-कचहरीक गप अपन जनानाकेँ कहि दइ छथिन, ओइ बुझैमे लूटनी भौजीकेँ बेसी भाँगठ नै होइ छैन मुदा जइ घरक जनानाकेँ अपन घरक बात केतए बाजी, केते बाजी, केतए नइ बाजी इत्यादिक ज्ञान छैन, ओइ घरक भाँज बुझैमे भौजी हारि जाइ छैथ। जराएल मन भौजीक रहबे करैन। कण्ठ फाड़ि दोहरी अवाजमे प्रश्नकेँ दोहरबैत बजली-

"हमरा बातपर कान किए ने दइ छी जे मने-मन गुड़-चाउर फँकै छी?"

जहिना आमक डारिमे दोहरी दोम पघिलल, घुलल आ कठगर तीनूकेँ झखबए लगैए तहिना धीरू भैयाकेँ भौजीक दोहरौल बात सुनि भेलैन। मुदा मन तँ गंगा-संकल्पकेँ जपैत रहैन जे सासु-पुतोहुक झगड़ाक फरिछौठमे नइ पड़ब। ई की कोनो झगड़ा छी। सोल्हन्नी रगड़ा छी। नइ तँ वएह बेटी हँसी-खुशीसँ माइक घर लक्ष्मी बनि बीस

बर्ख बीतबै छैथ आ सासुर अबिते सासु चुड़ैल बनबए लगै छैन। एकरा रगड़ नै कहब तँ की कहब? सोझ बात अछि, परिवारक कोनो काज करैसँ पहिने सासु पुतोहुसँ पुछि लेथुन जे कनियाँ ई काज अहाँ नैहरमे केना करै छेलौं। दुइए रंगक जवाब भेटत, या तँ नै कएल अछि वा केलहा ढंग कहि देत। कारणो अछि जे एक्के मिथिलांचलक बीच क्षेत्र-क्षेत्रक विन्यासो बनबैक आ बाजबोक आ पाबैनो-तिहारक संग गीतो-नादक रूप अगल-अलग अछिए। तइले जे सासु भागलपुरक चलैनकेँ अधला आ मधुबनीकेँ नीक कहैथ, ई केते उचित हएत? गाम-गामक बीच ढेरो रंगक खाधि बनल अछि। जे खान-पान, ओढ़ब-पहिरब, बाजब-भूकबसँ लऽ कऽ गीत-नाद आ विधि-बेवहार धरिमे पसरल अछि, तैठाम...।

एक तँ ओहिना धीरू भैयाक मन रस्ताक चालिसँ असोथकित रहैन, तैपर लूटनी भौजी आरो नमहर-नमहर चेका काटि-काटि लादए लगलैन। धीरू भैयाक मन गवाही दैत कहलकैन जे नीक हएत लूटनीए भौजी किए ने हमर बेथा बुझैथ। सभकेँ अपन-अपन बेकतीगतो आ समाजिको किछु समस्या रहिते छइ...। मुदा से लूटनी भौजी मानैथ तखन ने, ओ तँ अपने ताले बेताल छैथ! बेतालो किए ने रहती। मनमे ओहिना छोटकी पुतोहुक बात नचैत रहैन जे 'आब हिनकर भानस नै करबैन। अपन कऽ कऽ खाउथ वा नै खाउथ हमरा कोनो मतलब नहि।' मुदा से मन मानैले तैयारे ने होइन। सासु-पुतोहु दू पक्ष भेलौं जँ दुनू पक्षक बीच सोझहा-सोझही किछु टक्कर हएत तखन आगूक रस्ता केमहर बनत? या तँ एक गोरे पटका खसि पड़त या दुनू दिससँ तेहेन देवाल ठाढ़ भऽ जाएत जे रस्ते रोका जाएत! ओना, तूफानी धाराकेँ सेहो रोकल जा सकैए, ओना धार बनब, पहाड़ ढाहब धिया-पुताक खेल नहि। जे साधन छै ओ बिनु अपनौने थोड़े हएत। केतौ बान्ह बन्हैक जरूरत होइ छै तँ केतौ छोट-छोट नासी-नहर बना पानिक

वेगकेँ कम करैत रोकल जा सकै छइ। तँए नीक हएत जे एक दिस भौजीकेँ चाहो-पानक आग्रह करिऐन आ दोसर दिस पहिलुका पुतोहुक चर्च ठाढ़ केने मन ससरबे करतैन तइसँ तमतमी कमतैन, तखने जान बँचत। झगड़ो झगड़ा सन रहए तखन ने। ओहन झगड़ा जेकरा हजारोठाम गीरह-गाँठ पड़ल छै तैठाम तँ न्यायालय-ले बेसी उचित यएह ने हएत जे दुनू पक्ष अपनेमे मुँह-मिलानी कऽ न्यायमूर्तिसँ हस्ताक्षर करबा लैथ। जेठकी बेटीकेँ धीरू भैया कहलखिन-

"बुच्ची, कनी भौजियोकेँ चाह पीआ दहुन आ हमरो पियाबह। बड़ीकालसँ चाह पीबैक मन होइए।"

धीरू भैयाक जाल सुतरलैन। ओना घुमौआ जाल नहियेँ रहैन, मुदा तैयो चाह हाथमे लइते लूटनी भौजीक मुँह टुस्कियेलैन।

भौजीक मुँहक टुसकी देख धीरू भैया बजला-

"पहिलुका पुतोहुक घरदेखी हमरा ओहिना मन अछि भौजी, अहाँ बिसैर गेलिऐ?"

सह पाबि लूटनी भौजीक मन तेसर पुतोहुकेँ छोड़ि पहिलुकाकेँ झोंट लपकलक। बजली-

"अपन केलहा काज लोक वएह ने बिसरैए आकि बिसरए चाहैए जे अधला रहै छै, मुदा नीक केना बिसैर जाएत। अहाँ तँ ओइ काजमे अगुए रही, कहू जे कोन धरानी पुतोहुकेँ घर अनने रही।"

लूटनी भौजीक दोहरी पंच बनिते धीरू भैया बजला-

"ओना मुँहपर केकरो बड़ाइ आकि छोटाइ चटुकारी भेल मुदा नीक कि अधला बजलो नै जाए सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। केतौ अधलाकेँ नीक दबतै तँ केतौ नीककेँ अधला दबतै। ओहने बात अखन उठि गेल अछि। जे समांग वा कुटुम घर छोड़ि परदेश जा घर बना लेलैन, पैघ बनि गेला। जँ कोनो काज-पीहानीमे भाग लइले नोत-

हकार देबैन तखन जँ अबै-जाइक गाड़ी-बस आकि जहाजक भाड़ा-किराया नै देबैन तँ की हुनका मान-मर्जापर नै पड़तैन? मुदा तैसंग ईहो प्रश्न तँ जोड़ले अछि जे जे पेटक खातिर गामसँ हजारो कोस दूर भागल ओइ धरती धारण केनिहारकेँ नै परेख पाबी? खाएर...।"

मुस्की दैत धीरू भैया फेर बजला-

"मुदा ओ बात हम कहियो ने अहाँक बिसरब।"

'बिसरब' सुनि लूटनी भौजी अन्हरोखमे फुलाइबला फूल जकाँ हलैस कऽ खिलैत बजली-

"कोन बात कहलिऐ बौआ?"

"वएह-वएह! अहाँ बिसैर गेलिऐ?"

"एँह, की कहब काजक तेहेन ओझरौठ होइ छै जे कोन बात लोक मोन रखत आ कोन बात नै मोन राखत। काजो करैत-करैत कखनोकाल मन हेरा जाइ छै किने।"

सिमसिमाएल लूटनी भौजीक मन देख धीरू भैयाक मन सेहो थीर भेलैन। बजला-

"पहिल बेटाक घरदेखीमे जे अहाँ सभकेँ बड़-बड़ी खुऔने रहिऐन, तही दिन ने बेटीबला सभसँ कहबा नेने रहिऐन 'एते रंगक बड़-बड़ी हम नइ खुआ पाएब।"

जहिना हौहैट-कलकैल कुरियबैकाल सुआस पड़ै छै तहिना धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजीकेँ सुआस पड़ए लगलैन। बजली-

"कोन परगनाक बेटी हमरासँ लूरिगर अछि, सात-परगनाक बड़-बड़ी बनबैक लूरि ऐ देहमे गहना जकाँ सजा कऽ रखने छी।"

बजैत-बजैत लूटनी भौजी झोंक दैत झोंकली-

"अखुनका लोक कहत जे हम बड़ लूरिगर छी, चलह तँ अखनो

हमरा सेने भानसमे!”

चुटकी लैत धीरू भैया बजला-

“भौजी, यएह बात भरिसक छोटकियो पुतोहु बुझि गेली, तँए भानस करब छोड़ि देलैन।”

लूटनी भौजीक सनक जहिना आगू ससरल रहैन तहिना धीरू भैयाक बात सुनि ढील भऽ गेलैन। पुन: पहिलुके पुतोहुक चर्च उठबैत बजली-

“ओहो पुतोहु कि कोनो अधला छैथ, मुदा ई दोख तँ छैन्हे ने जे जइ घरमे थेहगर सासु रहती ओइ घरक जुइत पुतोहुक हाथमे केना जाएत। बेटा-बेटी परिवारमे होइ छइ। आनक बेटी आनक बेटीक संग केहेन बेवहार राखत, ई बात तँ माइए-बाप ने बुझि सकैए आकि कनियाँ-मनियाँ बुझत!”

बजैत-बजैत लूटनी भौजीक मन चढ़ए लगलैन। तैबीच धीरू भैया कहलखिन-

“देखू, ओइ पनचैतीमे बेसी दोख अहींक रहए। पुतोहु जकाँ कहियो जेठकी पुतोहुकेँ नै बुझलिऐ।”

मन पाड़ैत लूटनी भौजी बजली-

“देखियो बौआ, जेते दोखी अहाँ बनबै छी तेते नै छी। कनी-मनी दोख केतौ भऽ गेल हएत से भऽ सकैए मुदा जेते बुझै छी तेते नहि।”

“केना नै रहिऐ। देखै छेलौं जे चिचिया-चिचिया पुतोहुकेँ सरापै छेलिऐ आ कहै छी जे केना केलिऐ!”

“ऐमे हम की दोखी भेलौं?”

“ऐमे अहाँ ई दोखी भेलिऐ जे एक तँ ओहुना बेटी नैहरक मुँह

पौतीमे बन्न कऽ लइए, तैपर जे सासु साँढ़-पारा जकाँ ढेकैर-ढेकैर टोकारा देथिन तँ की ओ पशु-मुँह केते दिन बरदाश करत। अहींक जे पुतोहु छैथ, किए ने बेटी जकाँ पुचकाइर कऽ गप करै छेलौं, जे अनठिया माल-जाल जकाँ ढुसि लइ छेलिऐ!”

अपन तर्क कमजोर पड़ैत देख लूटनी भौजी छिछलैत बजली-

“बौआ, ऐमे दोसर भाँज रहै जे हमहूँ नै बजलौं।”

चुम्मक जकाँ जेते धीरू भैया लूटनी भौजीकेँ पकड़ए चाहैथ तेते लूटनी भौजी- जहिना लोहामे आन-आन द्रव्य मिलौलासँ चुम्मकीय शक्ति कमजोर होइ छै तहिना आन-आन बात जोड़ए लगली। धीरू भैयाक मन गबाही देलकैन। बजला-

“कथी दोसर भाँज रहए, बाजू। अखने की भेल, आबो तँ बुझब ने?”

धीरू भैयाक प्रश्न सुनि लूटनी भौजीक मन धकमकेलैन। मनक एक पक्षक कहब रहैन जे घरक कोनो बात छिपा कऽ किए राखब। जखन समाजक एकटा खुट्टा हमहूँ छिऐ तखन गराड़केँ किए चोरा कऽ राखब। मुदा दोसर पक्षक कहब रहैन जे पसीना चुबौल काजकेँ लोक लग बजैमे हर्ज नहि। पसीनाक धार आनोक-आन देखैए। मुदा बिनु पसीना चुबौल काजक आमदनी बजलासँ नीक नहि हएत। मुदा डारिक चुकल बानर जहिना अपनाकेँ मरले बुझैए तहिना मनमे अबिते फरैक कऽ लूटनी भौजी बजली-

“अहाँ सभ जे पंचैतीमे जाइ छिऐ तँ झगड़ाकेँ उनटा-पुनटा कऽ नइ देखै छिऐ। जखन उनटा-पुनटा कऽ देखबै तखने ने सुपत बात बाजल हएत।”

जइ आवेशमे लूटनी भौजी बजली ओइ आवेशकेँ धीरू भैया सुखल पछबा हवा जकाँ मात्र ‘विर्ड़ो’ बुझलैन। दस-बीस मिनटक

खेल, भलेँ घर-दुआरक कोन बात जे मोटगर-मोटगर गाछो किए ने उखाड़ि दिअए...।

अपनाकेँ समटैत धीरू भैया बजला-

“आबे की भेल, बाजू। अखन तँ दुइए गोरे छी, कोनो बात झाँपि-तोपि नहि राखू। जँ पनचैतीमे इशारोसँ आएल हएत आ ओइपर पंचक धियान नै गेल हेतैन तैठाम पंच दोखी। मुदा जैठाम काजक कोनो गपे ने उठै तैठाम तँ घरबैए दोखी। छातीपर हाथ रखि बाजू।”

धीरू भैयाक जिज्ञासा देख लूटनी भौजी सहमली। सहमैक कारण भेलैन परिवारक अर्थ बिन्दु केना दोसर लग बाजब। अखन धरि तँ आबिए रहल अछि जे अपन मेन्टेन करैले भुखलो पेट बाबरी उनटा मुँहमे पान फुलबैत चलिते अछि...।

जहिना बिनु गुनाक रिंच धीरू भैया लगा खोलए चाहै छैथ तहिना लूटनी भौजी दालि तँ बाजैथ मुदा राहैड़ आकि खेसारी, से छिपबैमे माहिर। बजली-

“मन अछि किने जे अहूँ रस्तेपर सँ सुनैत रहिऐ?”

“नइ मन अछि। कनी मन पाड़ि दिअ।”

सह पाबि लूटनी भौजी छड़ैप बजली-

“अहीं सन-सन बिसराह पंच नियालयमे अपन गवाही बदैल दइ छइ!”

छिड़ियाएल लूटनी भौजीकेँ देख धीरू भैया पुछलखिन-

“सूनू, जे गप करै छी तेकरा पहिने मुड़नसँ सराध धरि विचार कऽ लिअ तखन दोसर बात चालब। अच्छा, ओइ दिनका मन पाड़ि दिअ जइ दिनक नाओं कहै छी।”

जाल सुतरैत देख लूटनी भौजी टुसियाइत बजली-

“सुनने रहिऐ ने जेठकी पुतोहु बाजल रहए। ई केहेन भेल जे एक शीशी लोहासव भाए दऽ गेलै तेकर उपराग दिअए। कहै कि नहि जे नैहरसँ दबाइ-दारू नै अबितए तँ कहिया ने मरि गेल रहितौं।”

“नइ मन पड़ैए। कनी सेरिया कऽ मन पाड़ि दिअ।”

जहिना खिस्सकरकेँ सुननिहार भेटते मन खुशी भऽ जाइ छै तहिना पुतोहुक पितम्बरी ओढ़ि लूटनी भौजी बजली-

“अहींकेँ पुछै छी जे एकटा लोहासवक शीशीकेँ केते दाम हेतइ। बड़े हेतै तँ एक साए रूपैआ। एक दिनक एक गोरेक खेनाइ केते होइ छइ। से जोड़ि लिअ। तखन मिला कऽ देखियौ जे जे तीस दिनक खर्चा जोड़लक तेकर कोनो मोजरे नहि, आ एक शीशी लोहासव जोड़निहारक ढोल पीटए, से अहींकेँ बरदाश हएत?”

धीरू भैया जवाब दैत पुछलखिन-

“बरदाश हुअए कि नइ हुअए, मुदा जे परिवार तीस दिनक खर्च जोड़ैए तइ परिवारमे एक शीशी दबाइए किए बाहरसँ औत? मुदा नैहरक देल वस्तुकेँ बेसी आ सासुरकेँ कम कहब केहेन हएत। होइ किए अछि, होइए ऐ दुआरे जे नैहरक सम्पैतक नाओंपर परिवारमे चोरि पनपैए। तँए किए ने सम्मिलित परिवारक बीच बाहरक सभ वस्तु, सहबक आँखिक सोझहा आबि जाउ। जखन परिवार सबहक छिऐ तँ परिवारक वस्तुओ ने सबहक भेल?”

बोहियाइत धीरू भैयाकेँ देख बिच्चेमे लूटनी भौजी टोकलकैन-

“एना नहि हएत! जखन अहूँ सुनए चाहै छी आ हमहूँ कहैए-ले एलौं तखन सुकचेनसँ सुनियेँ लिऔ।”

बजैत लूटनी भौजी चौकीपर पल्था जमा बैसली।

भौजीक निसचिन्ती देख धीरू भैया बुझि गेला जे पेटमरूक

घरमे दुपहरिया सिदहा रहने भिनसुरका उखड़ाहामे निसचिन्ती आबिए जाइ छइ। मुदा हमहूँ तँ आब अपनाकें पहिलुका जकाँ नहियें बुझै छी। सबहक झगड़ा हमरे छी, पहिने से बुझै छेलौं, मुदा गंगा डूम देला पछाइत एते तँ तँइ कऽ लेलौं जे सभ झगड़ाकें अपन नइ बुझब। झगड़ा झगड़ौआक छिऐ। जखन भौजी आशा लगा कहए एली तँ पनचैती करए नै जाएब, मुदा चलैक रस्तामे जेतए जे गीरह-गाँठ छै तेकरा ताकि नै बेराएब सेहो तँ नीक नहियें हएत!

जहिना माघक सिताएल कुत्ताकें छाउरक ढेरीपर बैसल देख उकट्ठी छौड़ा लोटो भरि पानि ऊपर उझैल दइ छै तहिना धीरू भैया भौजीपर उझलैत बेटीकें कहलखिन-

“बुच्ची, लूटनी भौजीक संगे बैस कऽ खेना बहू दिन भऽ गेल, तँए पहिने जलखै लाबह। पछाइत कलौऔ खुअबिहह।”

धीरू भैयाक आग्रह सुनिते लूटनी भौजीकें पैछला एकटा घटना मन पड़लैन। घटना मन पड़िते कनबात बिसैर लूटनी भौजीकें धीरू भैयाक बात अनसून हुअ लगलैन। जेकर फल भेलैन जे विचारमे जबरदस धक्का लगलैन। जे पाछू बुझलखिन। मन पड़लैन ओ घटना जइमे लूटनी भौजी पार्टीक पंच बनि पनचैतीमे गेल छेली। जैठाम बुझि नै पेली जे ई जगह केहेन अछि। गाम-गामक चालि-ढालि भिन्न-भिन्न छइ। जइसँ गाम-गामक जगहो चोटाह भऽ गेल छइ। कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे किताब रहै छै तँ कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे चुटपुटियासँ नमहरका धरि हथियार रहै छइ। तहिना कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे खेलक सामग्री रहै छै तँ कोनो गाममे हँसुआ-खुरपी-कोदारि...।

तेतबे नहि, कोनो गामक बेसी लोकक हाथमे रिंच-हथौरी आ पेंचकश रहै छै तँ कोनो गाममे एजेंसीक फार्म-जिल्द।

गपक हलहलीमे लूटनी भौजीकें शरबतमे कियो बीख मिला देने रहैन। संयोग नीक रहलैन जे लोकक बीच रहैथ, उठा-पुठा कऽ डाक्टर लग जा जान बँचौलकैन। तही दिन लूटनी भौजी कान धऽ लेलैन जे जगह देख किछु करैक चाही। मुदा लूटनी भौजीक भक्क तखन खुजलैन जखन धीरू भैया दोहरा कऽ आग्रह केलखिन-

“पहिने किछु खाइए लेब तखन गप-सप्प हेतइ।”

‘खेनाइ’ सुनि लूटनी भौजी चमैक बजली-

“खाइ-पीबैक अड़सट्टा छोड़ू। गपेमे कनी तेजी आनि लिअ। अखन खाइक बेरो ने भेल अछि। अहुना काज-उदममे कनी-मनी अबेर-सबेर भाइए जाइ छइ।”

अपन जाल सुतरल देख धीरू भैयाक मन असथिर भेलैन जे जहिना गोनूझाक बिलाइ दूध देख भागि जाइत तहिना खेनाइक नाओंपर लूटनी भौजीकें भगा सकै छी। मन थीर भेलैन। धीरू भैया बजला-

“अहीं तेजियोक बात कहै छी आ अनठेबो करै छी?”

“नहि-नहि, अनठबै कहाँ छी। एकटा ओझड़ी रहए तखन ने, तहूमे तेहेन-तेहेन भत्ता सभ धेने अछि जे केकर मुँह केमहर छै आ केकर नाँगैर केमहर छै जे बतिया जकाँ निहारि-निहारि देखए पड़ैए। ई तँ नहि जे घेरा-झुमनीक बीआ जकाँ रोपैकाल केकरो मुड़ी अकास दिस आ केकरो पताल दिसकें दऽ दियौ आ जनमैकाल जे पछुआए ओकरा भोरेसँ गरियाबए लागी...।”

जहिना कथाकार लोकैनकें सालक किछु मास विषाये खोजैमे राजगीर चलि जाइ छैन तहिना लूटनी भौजीक कथाकें हराइत देख धीरू भैयाक मनमे हजार वाटक बिजलीक बौल जकाँ भुक्क-दे मनमे उठलैन- जहिना शिकारी जालक एकटा सूत पकैड़ सौंसे जाल खोलि

लइए तहिना तँ गपे-गपमे झगड़ोक रग्गड़ पकैड़ खोलल जा सकै छइ। बजला-

“जएह सोझहामे पड़ए तेकरे अन्है जकाँ केम्हरोसँ मुट्ठियेने आउ। अपने ने देखबै जे ऐगला जन्ममे कोन साँप हएत।”

धीरू भैयाक सह पाबि लूटनी भौजी समैध-समधिन दिस छड़पैत बजली-

“कहू तँ एहेन बात अहींकें बरदाश हएत!”

बिनु मुड़ीक बात सुनि धीरू भैया अकचकेला। मनमे उठलैन- कालीए ने अन्हरिया राति छी। जिनकर जिह्वा लपैक-लपैक दुष्ट नाश करै छैन। मुस्की दैत धीरू भैया भौजीकें टुस्कियबैत कहलखिन-

“एना झाँपि-तोपि बजने काज नइ चलत। उघारि-उघारि बाजू।”

सह पाबि सहटैत लूटनी भौजी अपन आँखि-कान, मुँह-नाक आ दहिना हाथक पाँचो ओंगरी छिड़ियबैत बजली-

“घरक बात छी, आनठाम बजैमे लाज होइए मुदा अहाँ तँ जिनगी भरिक संगी छी, बारह-बजे दिन कि जे बारह बजे रातियोमे संगे लोकक बीच रहलौं, दुनू गोरेक तीत-मीठ दुनू गोरे जनिते छी, तँए कहै छी। कहू जे ई केहेन बात हरिदम जेठकी कहै छेलए जे हमरा माइक पैरधोनो जकाँ हिनकर छीछा-बीछा नै छैन।”

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया कहलखिन-

“ऐमे अहाँक कोन लखराज-बह्मोत्तर चलि गेल। जइ आदमीकें अपन माए-बापक सिखौल बात मन नै रहलैन। ओकर बातकें एते किए धेने छी। जँ मन रहितैन तँ विचारि कऽ ने बजितैथ जे जखन दुनू समधीनक बीच हम बेटी-पुतोहु दुनू भेलौं, तखन हमरा लिऐ दुनू ने

एक्के रंग। एक भेल- जिनगीक पूर्व पक्ष आ दोसर भेल- उत्तर पक्ष। तइले एते अहीं किए आमील पीने छी?”

मीठगर बात रहितो लूटनी भौजीकें अमताइन लगलैन। मन गबाही दइले तैयार भेलैन जे कोनो वौस रसगुणसँ खट्टा होइए मुदा जे रसगुणसँ खट्टा नहियों होइए ओहो बाइस-तेबाइस भेने तँ खटाइए जाइए। जँ से नइ होइए तँ दहीक सुआद खट्टा तँ नै छिऐ, मुदा चीनीक काज किए पड़ै छइ..?

पेराशूत जकाँ मजगूती लूटनी भौजीक मुँहकें धकेल खोललकैन-

“अच्छा अहीं कहू तँ एक्के विद्यार्थी कौलेजमे प्रोफेसरसँ पढ़ैए, हाइ स्कूलमे उच्च शिक्षकसँ पढ़ैए आ तइसँ कम मिड्ल स्कूलक आ सभसँ पहिने अपना परिवारक भाए-बापक संग अगुआएल भाए-बहिनसँ सेहो पढ़िते अछि, तइमे के कम श्रेष्ठ, के श्रेष्ठ आ के बेसी श्रेष्ठ भेल, से पहिने बुझा दिअ।”

लूटनी भौजीक प्रश्न सुनिते धीरू भैया टेढ़ रस्तापर जहिना साइकिलक मुँह घुमौल जाइ छै तहिना भौजीक मुँह घुमाएब जरूरी बुझलैन। किएक तँ भौजी तेहेन नेतागिरीबला सबाल पटकए चाहै छैथ जे अनेरे दिनक-दिन मासक-मास खाइबला अछि। मुदा आँखि-मुँहक चढ़ती देख अपनाकें चढ़बैत धीरू भैया बजला-

“देखू, अखन धरि नइ कहने छेलौं मुदा जखन गप-पर-गप उठैए तखन कहिये दइ छी।”

हराएल वौस भेटैक संभावना देख जहिना जिज्ञासुकें जिज्ञासा जगैत तहिना जिज्ञासु लूटनी भौजी बजली-

“मनक बात जे चोरा कऽ रखैए ओ चोरे भेल। अखन धरि अहूँ सएह भेलौं।”

लूटनी भौजीक तीनकमियाँ बंशी धीरू भैयाकेँ लगलैन जरूर मुदा जीहमे नहि, गलफरमे झिट्टा मारलकैन। जे कनी-मनी घाउ भेने तँ छुट्टियो जाइ छइ। मुदा अमती काँट निकालैले बगूर आकि बेलक काँटक जरूरत पड़िते अछि। तँए पुछलखिन-

“केते दिन अहाँक जेठकी पुतोहु कहलैन जे सासु सासु जकाँ हुअए तखन ने, बुढ़िया तेहेन लुपकाहि छैथ जे भेल भानसपर चुल्हि गरमे रहै छैन, केम्हरोसँ एकटा करैला, तँ केम्हरोसँ एकटा झुमनी नेने औती आ हाँइ-हाँइ कऽ दू-तीनटा टुकड़ी तड़ि लेती। तड़ै छैथ तइले दुख नइ होइए मुदा तेहेन अपसोगारथी छैथ जे आगूमे बैसल मुँह तकैत रहि जाएब मुदा एको टुकड़ी देती नहि।”

कोठीक मुहसँ जहिना धान-चाउर भुभुआइए तहिना लूटनी भौजी भुभुएली-

“बौआ, पेटक बात बजै छी। हमरा एक खढ़ इच्छा नै छल जे जेठकी साझी रहए। तीनटा बेटा अछि तीनटा पुतोहु हएत। अहीं कहू जे तीन-तीन गोरे जइ घरक भनसिये भऽ जाएत तइ घरमे भानसक जोगार के करत। कनियेँ उच्छन्नर देने भीन भेल, अपन परिवारक भार उठौलक।”

धीरू भैया बुझबैत कहलखिन-

“भौजी, सम्मिलित परिवारक माने ई नहि ने जे किछु गोरे कमेलौं बाँकी सभ बैस खेलौं। सम्मिलित परिवारक माने सम्मिलित जिनगी होइ छइ किने। तँए...।”

धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजी बजली-

“अखन जाए दिअ।”

‘अखन जाए दिअ’ बजिते लूटनी भौजीकेँ धुक-दे मन पड़लैन छोटकी पुतोहु। ओकरे कारनामा कहैले एतए आएल छी।

तइ बिच्चेमे धीरू भैया चरियबैत पुछि देलखिन-

“देखू, बेर-बेर एक्के घरक पनचैती केने घर हेहरू भऽ जाइ छइ। तँए जेते झगड़ा अछि से सभटा आइए सुनि लेब। बाजू, दोसर पुतोहु किए परदेश चलि गेल?”

पहिलुका पुतोहुक खेरहा ओराइते लूटनी भौजी खरहीसँ निकैल परतीपर डण्ड-बैसकी करैत नढ़िया जकाँ बजली-

“देखियौ बौआ, मझिली सुहरदे मने गेल। ओकरासँ कहियो झगड़ा-झाँटी नै भेल। ओना झगड़ा-झाँटी करए चाहितौं तँ दुनू साँझ होइतए मुदा अपने परहेज करैत रहलौं।”

‘अपन परहेज’ सुनिते धीरू भैया पुछलखिन-

“की परहेज केलौं?”

“की पुछै छी जेते करूतेल सात दिनमे खर्चा होइ छेलए तेते एक्के दिनमे करै छेली। मुदा घरक बात केकरा कहितिऐ। लोक कहैत जे पुतोहुकेँ खैयोले ने दइ छइ।”

“अच्छा छोड़ू, भरि दिन अहाँ पुतोहुकेँ नीक-निकुत खुऐबते रहलौं। परदेश किए जाए देलिऐ। बेटा कमाइले गेल आकि घर-दुआर बनबैले?”

धीरू भैयाक प्रश्न लूटनी भौजीक मनकेँ हौंर देलकैन। जहिना छाँछीमे दूध, मक्खन आ पानि रेहीक बले संगे नचैत तहिना लूटनी भौजीक मन नाचए लगलैन। बजली-

“बौआ, ओकर बापो शहरे-बजारमे परिवार रखि बेटीकेँ पढ़ेबो केलक आ टरेनिंगो करा देलकै। ओतए ओ दुनू परानी नोकरी करत, कमाएत। ऐठाम कोन काज करैत, तँए विचारेसँ जाए देलिऐ।”

“जहिना दुनू जेठकी-छोटकी पुतोहु आ बेटा घर छोड़ि चलि गेल

तहिना जँ तेसरो चलि जाएत तखन की करबै?”

धीरू भैयाक प्रश्न लूटनी भौजीकेँ मरोड़ि देलकैन। चारू दिस नजैर दौगबए लगली। मुदा, जवाबक कोनो बाट नै देख पाशा पलटैत बजली-

“देखियौ बौआ, गण्डा हुअए आकि गाही, दर्जन हुअए आकि सोरे, असल बेटा तँ दुइए-टा ने होइ छइ जेठका आ छोटका। बाँकी-मैझला-बीचलाक संग तँ कटा-कटी भाइए गेल छइ।”

‘कटा-कटी’ सुनि धीरू भैया प्रश्न उठौलैन-

“की कटा-कटी भेल छइ?”

प्रश्न सुनिते लूटनी भौजी मचियापर बैसल मचिबाह जकाँ मचमचबैत बजली-

“जेना कोइ बिलैंतसँ आबि कहै छै जे गामक किछु ने बुझल अछि तहिना अनठा कऽ बजने नै हएत।”

लूटनी भौजीकेँ धकियबैत देख धीरू भैया बामा ठेहुनकेँ अरकबैत झमाड़ देलखिन-

“अच्छा बाजू, की कटा-कटी भेल छइ?”

धीरू भैयाक आग्रह सुनि लूटनी भौजी अगुआ जकाँ अगराइत बजली-

“अहाँकेँ नै बुझल अछि जे जेकरा चारि या पाँचटा बेटा रहै छै, ओइमे बीचला बिनु किछु केनौं पाक-साफ रहैए, मुदा से जेठका छोटकाकेँ समाज बनए देत?”

लूटनी भोजीक प्रश्न सुनि धीरू भैया बौलकेँ आगू बढ़बैत गोलकीमे सेरिया कऽ फेकलैन-

“अहाँ मने बीचला जेते बेटा भेल ओ बेटा भेबे ने कएल?”

दुनू हाथसँ गोली बौलकेँ पकैड़ जहिना गोल होइसँ बँचा लइए तहिना लूटनी भौजी बजली-

“भेबो कएल आ नहियोँ भेल। रीति-रेबाजकेँ मानबै तँ नइ भेल, अपन बेटत्व बुझबै तँ जहिना एकटासँ छोट अछि तँ दोसरसँ नम्हरो तँ ऐछे किने।”

लूटनी भौजीक बात सुनि दोसर दिस मुड़ैत धीरू भैया बजला-

“एहनो बेटा तँ होइते छै जे जेठका-छोटकाक सीमा तोड़ि माए-बापक सेवा करैत अपनाकेँ जेठका, मझिला, सझिला, छोटकाक पतियानीक बीच ठाढ़ भऽ जाइए?”

धीरू भैयाक प्रश्नक उत्तर नै पाबि लूटनी भौजी करोटिया मारली-

“देखियौ, जेठका-छोटका नै कोनो बात भेल। जँ से होइत तँ हजारक-हजार बेटाबला सगरकेँ कियो काज नै देलकैन। खाइयो बेर भेल जाइए मुदा बात पछुआएले रहि गेल अछि।”

“अहाँ तँ अपने खापैड़मे देल मकइ जकाँ कुदि-कुदि छिड़ियेबो करै छी आ तीसी जकाँ चनचनेबो करै छी। बाजब की फेर वौएबे करब।”

टिकासनपर बैसल घरछाड़ा जकाँ मठौठक खढ़-बत्ती अजमबैत लूटनी भौजी बजली-

“अहीं कहू जे ई केहेन भेल, ठेंसगैर जकाँ जे बाजल रहए।”

‘ठेंसगैर’ सुनि धीरू भैया बजला-

“खाली टीकमे ककही चलौने बाबरी नै होइ छइ। सेरिया कऽ बाजू जे झगड़ाक जड़ि की अछि?”

“झगड़ाक जड़ि की रहत? अहाँ नै देखै छिऐ जे घरसँ बलजोरी

घिच-घिच स्त्रीगणक संग की होइ छै, तैठाम कहैए जे केमरा लऽ कऽ बिआह-मुड़नमे फोटोग्राफी करब। तेकरा हम रोकबै नहि। लुच्चा-लम्पटक बरियाती भऽ गेल अछि। ताड़ी-दारू पीब छौड़ा सभ नाच करैए तैठाम इज्जत-आबरू लोक अपने नै बँचाएत तँ आन गोरे लेतै की बँचौतै।”

लूटनी भौजीक बात सुनि धीरू भैया ठमकला। अपनाकेँ निरूत्तर पाबि पुछलखिन-

“बीचमे तँ बेटो अछि तेकरा की कहलिऐ?”

बेटाक नाओं सुनिते लूटनी भौजी चौकीपर सँ कुदि निच्चाँ आबि बजली-

“ओ तँ हिजरा छी हिजरा! ने मौगीए ने पुरूखे, बलिगोबना! ओकरे सहसँ तँ पुतोहुओ दुरि भेल अछि। ओइ निर्लज्जाकेँ कथी कहबै?”

“तखन मुँह किए तकैत रहै छी, दुनू हाथे झोंटा पकड़ब से नहि?”

“मन अपनो होइए मुदा फेर सोचै छी कहीं हाथा-वाहीं भेल तँ ऐ बुढ़ाड़ीमे मारि खाएब, नै जे झोंटा-झोंठौऐल भेल तँ ओकर तरगर केश छै गोटे-आधे उखड़तै मुदा अपन तँ पकल अछि गोट-गोट कऽ बीछा जाएत। तँए डर होइए। एक बेरक जँ पकलाहा केश रहैत तँ ओते दुख नहियेँ होइतए मुदा समरथाइए-सँ जे गोटि-पंगरा शुरू भेल ओ आब सोलहन्नी पाकल हेन।”

‘डर’ सुनि धीरू भैया बजला-

“बेटा-पुतोहु दुनूकेँ कहि दियौ, तुकपर खाइले दिअए। ऐसँ बेसी आब कथीक जरूरत अछि। इन्दिरा अवासक घर भाइए गेल, तेहेन-तेहेन स्वीटर, कम्मल, साड़ी पुतोहुओ पठा दइए आ बड़ो-विदाइ तेते

होइए जे लत्ता-कपड़ाक जरूरते ने अछि। तखन की चाही। ओना करैए वा नै करैए ई ओकर धर्म काज भेलइ। जँ नहियोँ करत तँ अहाँकेँ छोड़ि भगती से काज चलतैन।”

धीरू भैयाक बात सुनि लूटनी भौजीकेँ जेना किछु हराएल वौस भेटलैन। पुछलखिन-

“नइ बुझलौं जे की कहलिऐ, नहि बनतैन?”

गदगदाइत लूटनी भौजीक चैहरा देख धीरू भैया बजला-

“जीता जिनगी अहिना होइ छै हेबै करतै। कहुना अहाँ माए भेलिऐ। जीबैसँ मरै धरिक भार ओकरा छइ। से जाबे नै पुरौत ताबे परतवाए-क भागी रहत। तँए अहाँ मुइलोपर बिसेबैन।”

मृत्युक असरा देख लूटनी भौजीकेँ अपन ओछाइनिक जिनगी मनमे एलैन। दबाइयो-दारू तँ करैए पड़तै...।

धीरू भैया लूटनी भौजीक झगड़ा समापन केनौं ने रहैथ आकि लूटनी भौजीक छोटका बेटा–सोमना–आबि रूआब झाड़ैत बाजल-

“काका, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे एहेन गपक्कैर किए अछि जे अपनो भूखे टटाइए आ हमरो सभकेँ टटबैए।”

सोमनाकेँ सम्हारैत धीरू भैया बजला-

“पुरना गप-सप्प मन पड़ि गेल छेलै तँए देरी भऽ गेलइ।”

आँखिक इशारा लूटनी भौजीकेँ दैत धीरू भैया सोमनाकेँ कहलखिन-

“माएकेँ अण्डा-तण्डा खुअबै छहक किने?”

दाँत पीसैत सोमना बाजल-

“की खुएबै, बुढ़िया अपने हथकट्टू अछि।”

आगू-आगू लूटनी भौजी आ पाछू-पाछू सोमना घरमुहाँ भेल।

मुदा अमती काँटमे लूटनी भौजीक मन ओझराइते रहैन, होनि जे अखन मुहेँ-काने सोमनाकेँ तोपि दिऐ मुदा फेर सोचैथ- एक तँ अबेरक सगुन छी जँ तेकरा भंगठाइए लेब तँ औझुका दिने ओहिना रीब-रीबेमे चलि जाएत। तँए चुपे रहब नीक।

तहिना सोमनाक मनमे अपन तँ कम्मो-सम्म मुदा घरवालीक बात कहैले आन गोरे लग किए गेल, से तामस रहइ। होइ जे लोक जँ नीक कहितए तँ अखने चारिए थापरमे मुँह घूमा घर दिस कऽ दैतिऐ। मुदा एक तँ ओहिना समाजमे अबाह छीहे तैपर जँ एहेन काज करब तँ आरो दोखी हएब। तँए चुपे रहब नीक।

◌

शब्द संख्या : 4288

सड़ल दारीम

नीन टुटिते कुमरा कक्काक मन चनैक उठलैन। ओछाइनपर सँ उठैत कुमराकाका हृदयसँ भगवानकेँ प्रणाम केलैन। प्रणाम करिते मन रमकलैन। रमकल रमैत कुमरा कक्काक मन दिनक कर्माहार-सँ-फलाहार दिस बढ़लैन। बढ़िते ठमैक गेला। ठमैकते मनमे अपन जिनगी नाचए लगलैन- कृषक छी कृषि जीवन अछि। करमेसँ फलागम होइए। गाड़ीक पहिया जकाँ जहिना दिन-रातिक धुरीमे समए चलैए तहिना ने काजोक धुरीमे जिनगी चलैए। चौबीसे घन्टाक बीच जेतेटा दिन तेतेटा रातियो अछि, मुदा से कहाँ होइए? सालक बँटवारामे भलेँ दुनू एक-समान भऽ जाए, मुदा मास आ दिनमे से कहाँ भऽ पबैए? जाड़क मासमे रातिक बढ़ती आ दिनक घटती जहिना होइए तहिना गरमी मासमे दिनक बढ़ती आ रातिक घटती भऽ जाइए। जँ कहियो बरबैर होइतो अछि तँ टिक किए ने पबैए। पाहुन जकाँ दिन भरि रहल आ प्रातेकाल विदा भऽ जाइए। समैये संग ने जिनगियो आ कृषियो चलैए। कृषियो तँ भिन्न-भिन्न अछि। जहिना अन्न तहिना तीमन आ तहिना फलो अछि। मुदा एक रहितो भिन्न-भिन्न चालि-ढालि आ भिन्न-भिन्न गुणो-सुआदमे अछिए। कहैले बारहो मास तीन साए साइठो दिन धान होइए मुदा तँए कि तीन-मसुआ, छह-मसुआ नै होइए? हेबे करैए। हेबो किए ने करत, जन्म-सँ-मृत्यु धरिक जे दूरी छै ओकरा पार करैमे समए लगबे करत। मुदा सेहो एक रंग कहाँ छइ? कोनो धान तीन मासमे अपन जिनगी लीला समाप्त करैए, तँ कोनो

चारि मासमे, कोनो छह मासमे आ कोनो साल भरिमे। तहिना तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक अछि। जइसँ कोनो समैया, कोनो छहमसिया आ कोनो बरहमसिया बनि जीबैए, तँ कोनो बरहबर्खा बनि सेहो हँसैत रहैए।

कुमरा कक्काक मन पुन: ठमैक गेलैन। ठमकल मनमे फेर उठलैन- जेहेन धरतीक गुण-सोभाव रहत तेहने ने भोजनो-छाजन, वस्त्रो-भूषण आ साजो-श्रृंगार करत। मुदा धरतियोक खेल तँ अपना हाथमे नहियेँ छै, ओहो तँ दोसरे हाथक खेलौना छी। जँ से नहि तँ केतौ मरूभूमि अछि आ केतौ गाछ-बिरीछ अपन फूल-पातक संग फल-फलहरीसँ लदल केना रहैए..? चित्त असथिर भेलैन। असथिर होइते मनमे एलैन- दारीमक समए आबि गेल।

दारीमपर नजैर जाइते कुमरा कक्काक मनमे उठलैन- केना नान्हिटा फूल एते सुन्दर फल गढ़ि लइए! आ सुन्दर की सोझहे फलेटा गढ़ैए? नहि, ओकर रंग-रूप आ भोज्य-अभोज्यक गुणो-सोभाव सेहो सभ ने गढ़ि लइए। तेतबे नहि, जहिना फूल-फल गढ़ैए तहिना अपन शरीरो गढ़ैए। यएह तँ जिनगीक खेल छी, लीला छी...।

ओछाइनपर सँ उठि देह-हाथ समेट कुमरा काका कुरसीपर बैसला। बैसते मन पड़लैन बाबाक रोपल दारीम। मिथिलाक अमुल्य फल, जनकक फुलबाड़ीक ओहन फल जे ऋृषि-मुनिसँ लऽ कऽ राजा-रानीक अतिथि-सत्कार्य करैबला फल। जहियासँ जन्म भेल आ देखैत एलौं तहियेसँ बाबाक रोपल दारीमक गाछकेँ देखैत एलौं। की ओ जनै छला जे आमक तँ गाछी ऐछे, जे एकटा दारीमक, एकटा नेबोक, एकटा लतामक, एकटा शरीफाक दूटा अनरनेबाक गाछ लगौलासँ फूले नहि फलोबला भऽ जाएब। सभ कथुक गाछ अपन घरक पछुआरमे लगौने छला। छोट परिवार रहने अपनासँ उगड़िये जाइ

छेलैन। जे दरबज्जापर खुअबेबला रहल ओ बजा-बजा लोककेँ दरबज्जापर खुअबै छला आ जे दरबज्जा परहक नइ रहैत ओ अँगने-अँगने दैयो अबै छेलखिन आ रस्ता-पेरा भेँट भेने कहियो दइ छेलखिन जे लऽ अबिहह। ई सभ तँ बच्चाक बात भेल। जखन स्कूलमे भगवानक प्राथर्ना सेवाक संकल्पित भक्त बनैक करै छेलौं।

जहिना बाबाकेँ अपन जिनगी अपने हाथे चलै छेलैन तहिना श्रवण कुमारकेँ सभ सीख-लीख सिखा देने छेलखिन। सिखा कहाँ देलखिन बच्चेसँ संग रहने एका-एकी अपने सिखैत गेलैन। फलसँ लऽ कऽ अन्न धरिक खेती करै छला, अपन हर-बरद अपन समांग। छोट खेती-बाड़ी अपने सम्हारि लइ छला। सम्हारि कि लइ छला जे छोट परिवारमे जँ काज केनिहार कम रहत तँ खेनिहारो ने कमे रहत। मुदा तँए कि कम श्रमक परिवार अपन जिनगी पूरा कऽ नहि चलैत, मुदा पिताक परोछ भेला पछाइत समैयोमे मोड़ आएल। किसान परिवारमे करखन्नादारक बेटी आबए लगल। खेतमे काज करैबला बेटी करखन्नादारक घर पहुँचए लगल। फलाफल श्रम शक्तिक हाथसँ काज लूटा गेल। जँ से नहि तँ सभ परिवार बसबए चाहैए मुदा टुट-फाटक एहेन स्थिति किए बनि गेल, जे सभ डीह छोड़ि पड़ेला वएह सभ अपनाकेँ डीही कहि कामत पुजबए चाहै छैथ!

दारीमक समए आबि गेल। सभ फलक अपन समए होइ छइ। अपना समैमे सभकेँ बेसी चलती रहबे करै छइ। रहनाइयो उचिते। रौद-बसात सहलक ओ आ गिरथानि बनइ आन, सेहो उचित नहि। केकरो की समए बान्हल छइ। जेकरा जेहेन मन होइ से तेहेन करह। ओना तँ सभ दिन बाड़ी जाइते छी मुदा ओगरबाहिक हिसाबसँ। काजक हिसाब काजसँ जोड़ल अछि।

कुमरा कक्काक मनमे फेर उठलैन- 'ओह! काजमे ढिलाइ भेल

अछि!' जइ समए दारीमक फलमे गोबरसँ लेबा लगबैक छल, तइ समए तेहेन ने लगन जोर मारि देलक जे नते-पिहानीमे वौआ गेलौं। चुक भेल! अखन ने रंग-रंगक दवाइयो आ नव-नव तकनीको आबि गेल अछि मुदा हम तँ अखन धरि गोबरेक लेबापर खेती करैत एलौं..!

सोझहामे काज अबिते कुमरा काका फुरफुरा कऽ कुरसीपर सँ उठि आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहलखिन।

चाह पीब कुमरा काका दारीमक बाड़ी विदा भेला। रस्तेमे मन ततमत करए लगलैन जे दस गोरेक परिवारमे जँ अदहो-अदहो फल देब तैयो पाँचटा चाही। तहूमे धिया-पुता सेहो औत आ जँ कियो हित-अपेछित आबि जाथि तँ की हुनका नै आग्रह करबैन! फेर प्रश्न उठलैन जे आठटा गाछ अछि। करीब दू साए फल हेबे करत। बेरा-बेरी गाछमे सँ तोड़ी आकि सभमे हाथ लगा दिऐ। ओना किसिमक हिसाबे समैयो आगू-पाछू अछि मुदा सभटा रोहणियेँ अछि। नीक हएत जे सभ गाछमे हाथ लगा देब।

बाड़ी पहुँचते फल देख कुमरा कक्काक मनमे खुशी भेलैन। आन फल जकाँ दारीमकेँ नै होइ छइ। ऊपर नान्हिटा छेद रहै छै, खोंइचाक वृद्धि होइते रहै छै मुदा दाना नष्ट भऽ गेल रहै छइ। मनमे अबिते बेलक गाछपर नजैर गेलैन। जहिना घटक रंग-रंगक बर-कनियाँक जोड़ाक हिसाब लगबैए तहिना कुमरा काका दारीमक भजार बेलसँ करए लगला। बेलपर नजैर जाइक कारण छेलैन खोंइचाक शक्ति। आम केरा जकाँ नहि जे पहिने गुद्दा सड़त कि खोंइचा तेकर कोनो ठीक नहि। मुदा जेना बेलक खोंइचा मोटो आ सक्कतो होइ छै तेना दारीमक नै होइ छइ। मोटाइमे बेलसँ भलेँ कनी बेसियो भऽ जाउ मुदा सक्कत कम होइ छइ। भगवानोक खेल अजीव छैन। नीक गुणक रक्षा करैले हाथियारो संगे दऽ दइ छथिन। नइ तँ कहू जे आम-जामुनक गाछमे,

जे ओते फड़ैए, तइमे काँट देबे ने केलखिन आ बेलमे किए दऽ देलखिन? काँटेटा कहाँ देलखिन, सभटा गहनो-जेबर ओकरे दऽ देलखिन। कहू जे ई उचित भेल? पातो ओहन देलखिन जइमे श्रद्धा-प्रेमक सीरफ बनबैक गुण छै, तँए ने महादेवो बाबा ऐगला आसन दइ छथिन। नहि तँ फूलक डालीमे पात केना चलि आएल। तहिना सुगन्धित फूल देलखिन आ तहिना बनल-बनाएल भोज्यकेँ महिनो दिन रखैक कोठी सेहो देलखिन। तेतबे नहि, जँ तेतबे केने रहितैथ तँ पनचैतीमे सोल्हो-सलूकत होइत मुदा तहूसँ बेसी अन्याय केने छथिन जे तेहेन सुगन्ध भरि हाड़-काठ देने छथिन जे चानन बनि चानिपर चमकैत रहै छइ। सभ फल-ले रोग वियाधि देलखिन आ ओकरा रोग भगबैक गुणो दऽ देलखिन। बेसी फड़ने टिकुलामे जे झड़ि-झूड़ि जाए मुदा अन्हड़-झाँटसँ मुकाबला करैले दमो बेसी ओकरे देलखिन। ओना, दारीम जकाँ भलेँ ओकर रक्षक नै हौउ किएक तँ दारीमक काँट बहुत नमहर होइ छै, मुदा जेतबेटा होइ छै ओ दारिमकेँ के कहए जे बगुरोक काँट निकालि सकै छइ।

कट्ठा पाँचेक बाड़ी कुमरा काकाकेँ छैन, जेकरा ओ पुश्तैनी बुझै छैथ। पुश्तैनीक कारण अछि तीमन-तरकारी आ फल फलहरीक ओ विद्यालये छी। उत्तरबरिया-पछबरिया कोणपर दारीमक आठटा गाछ लगौने छैथ। ओइ आठो गाछपर नजैर पड़िते मनमे उठलैन- दारीम तोड़ए एलौं हेन। काज छी तँए पहिने कइए ली। मुदा जँ पहिने दारीम तोड़ि कऽ रखि दोसर दिस जाएब आ गाछक जड़ियेसँ जँ टुटलाहा फल हल्ला करए लगए जे 'जखन गाछसँ उतारलह तँ पहिने देवस्थान पहुँचाबह आकि गाछक जड़िमे रखि देलह हेन जे परिवारक संग टुटि-टुटि कानैत रहब! से नहि तँ नीक हएत जे जेकर समए समाप्त भऽ गेल आ जे दारिम पछाइत औत दुनूक विचार तँ करब जरूरीए अछि।

सौंसे बाड़ी टहैल-बुलि कुमरा काका दारिमक आड़िपर

पहुँचला। आड़िपर बैसते मनमे सुमारक हुअ लगलैन। यएह छी जिनगी, जे फुलाएल-फड़ल आ पकि कऽ टुटि रहल अछि। चौकोर बगानक कोणपर मचान-खोपड़ीक जगह। साले-साल मरम्मैत होइत नव सिरासँ बनैत अखनो धरि अछि। कोण दिसक गाछ हियबैत काका विचारए लगला जे ई बाबेक अमलदारीक छी। पुरना सिरो आ गाछो सुखाएल जाइ छै आ नव-नव सिरो आ गाछो होइत जाइ छइ। पचास बर्खसँ ऊपरेक गाछ छी। बाबू तँ दोसर नै लगौलैन मुदा ओकरे ताम-कोर, छाँट-छुँट करैत रहला। मुदा जखन फलक महत बुझलौं तखन आगू बढ़ि दारिमक बगान लगबैक विचार भेल।

दोसर गाछपर नजैर पड़िते मन पड़लैन। ओही पुरना गाछक दूटा गाछ अछि। एक गाछसँ दोसर गाछ बनबैमे कहाँ कोनो बेसी तरद्दुत करए पड़ल। हुनके कहल बात मन रहबे करए, अदरा नक्षत्रमे डारि माटिमे गाड़ि देलिऐ, भरिये बरसातमे अपने सिर एते भेलै जे गाछक भार उठबैक शक्ति भऽ गेलइ। कोजगराक परात गाछसँ जुड़ल डारि काटि देलिऐ, जइसँ पुरना गाछसँ सम्बन्ध समाप्त भऽ नव गाछ बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। अहिना ने सनातन वैदिक पद्धति चलैत आएल अछि। जन-जनक फुलबाड़ीक अमूल्य फल दारिम छी। मुदा जहिना-जहिना तेज गतिए देशक विकास होइत जा रहल अछि तहिना-तहिना जनकक फुलबाड़ी सेहो उजैर रहल अछि। उजैर कि रहल अछि जे उजैरिये गेल अछि। जँ से नहि तँ केतए गेल मिथिलाक अध्यात्म-चिन्तन। केतए गेल संयुक्त परिवार आ केतए गेल स्वयंवर पद्धति? जइ मिथिलामे देश-देशक राजा-रजबारक राजकुमार आबि, सीताक बामा हाथक उठौल धनुष तोड़ेक कोन बात जे हिलाइयो नै सकल, धरतीपर जेते ऋृषि, मुनि, महात्माक आगमन भेल ओ कोनो-ने-कोनो रूपमे मिथिला आबि मिथिलाक दर्शन केलैन आ दर्शनक पछाइत जनकक दरबारमे अपन उपस्थिति दर्ज करौलैन, एकरा धिया-

पुताक गुल्ली डण्टाक खेल बुझब नेनमैतक सिवा आरो की भऽ सकैए। राम लक्ष्मण सन युवराज आ विश्वामित्र सन पारखी जनकपुर आबि अपनाकेँ धन्य बुझलैन।

पनरह दिनक पछाइत दिवाली दिन कुमरा काका दारीमक गाछ रोपैक विचार केलैन। मन कहलकैन- भने दिवाली सन पाबैन अमावसिया दिन होइए। अही पनरह दिनमे दुनू गाछो अपन जगह बना ठमा गेल। जेते दूरमे ओकर सिर पसरल छै तइसँ कनी आगूए-सँ माटिक स्थल उखाड़ि दोसरठाम रोपि देबै, किए गाछ बुझत जे हमरा संग कुभेला भेल, सेवामे दू लोटा पानि जड़िमे ढारि देब, सएह ने। दिवाली दिन, सुखल माटिकेँ मेहीसँ फोड़ि, पानिमे सानि, दुनू हाथक आँगुरसँ गढ़ि, एकटा मुँह बना, करुतेल आकि घीमे वस्त्रक सूतक बनल बातीकेँ भीजा, पेटमे भोजन दऽ ताधैर जरैले छोड़ि देल जाइ छै जाधैर तेलक संग बाती नै जड़ि जाइत अछि। जहिना सजमैन, कदीमा, घेड़ा-झुमनी रोपैले बुढ़िया दादी अपन पोतीकेँ संग केने छोटका खुरपी नेने भोरे बाड़ी पहुँच जाइत जे कुमारि कन्याँक सेवा सीता मैयाक सेवा छिऐन। तँए बच्चाक रोपल गाछ निरोगो हएत आ समए पबिते फड़बो करत। तेतबे नहि, अपन रोपल रहतै साँझ-परात देखबो करत जे जन्मल आकि नहि। आब जे अपना हाथे रोपब तँ ओहो कहीं बुढ़िया चालि पकैड़ बुढ़ाड़ीए-मे फड़ैक विचार ने कऽ लिअए। मुदा से नहि, बुढ़ाड़ीक रोग बिसरबो छी। जइ बीआकेँ माटिमे रोपि ओकरा औंकरा माटिक ऊपर आनि गाछ बना लत्तीकेँ साँगह दऽ दऽ फुलाइ-फड़ै-जोकर बनौल जाइए, तेकरा जे समुचित देखभाल नै हएत तँ जे नान्हि-नान्हिक कीड़ी-मकौड़ीक शिकार छी ओकर जिनगी केना बँचत।

अगते ऐगला मौसममे दुनू गाछक मुड़ी-मुड़ी नहि, एक्के मुड़ीमे निच्चाँ-ऊपर फुलाएल। मुदा कम आँट-पेटक रहने एक-एकटा फल

पकड़लक। केना नै पकड़ैत? चुमौनियाँ कनियाँ ने रहए, कोनो कि कुमारि कन्याँ छेलए। हँ, ओना बहुतो एहेन अछि, जेना अनरनेबा, जे डारिक गाछक रूपमे फड़ि जाइत अछि...।

मनक जिज्ञासा कुमरा कक्काक बढ़लैन। दारीम केहेन माटि-पानिक छी ई तँ सोझहेमे अछि। कोनो अनाड़ी-धुनाड़ी खेती करब आ बकना जाए तइसँ नीक देखल-बुझल दारीमक खेती नीक। ओना अपना ऐठाम मौसमक जे खेल अछि ओ बहुत कमे इलाकामे छइ। जाड़-रौद-बरसातक बीच साधना स्थल छी। अहिना नहि ने कातिककेँ 'धरम मास' कहल जाइए। अनेको रंगक अन्न, अनेको रंगक तरकारी, अनेको रंगक फल-फूल लगबैक मास कातिक छी। अनुकूल समए रहने कातिकमे अंकुरन शक्ति धरतीमे अधिक भऽ जाइए। मुदा से लाभ तँ तखन ने लेब जखन ओकरा धर्म-स्थल जकाँ सजाएब। प्रकृति अपन अनुकूलते ने पसारत आकि कैयो वएह देत, कोनो कि ओकरा हाथ-पएर छइ। बड़ करत तँ बोन-झार लगौत। छगुन्ताक बात ई नै भेल जे केतौ बीआसँ गाछ, तँ केतौ लत्तीए-सँ गाछ, केतौ लत्तीए-मे फल, तँ केतौ गाछेमे तरकारी, केतौ डारिये-सँ गाछ, तँ केतौ डारिये-मे सिर, केतौ पत्तेमे गाछ, तँ केतौ फुलेसँ गाछ होइए।

दारीमक गाछक दोसर पतियानीपर नजैर पड़िते कुमरा काकाकेँ धक-दे द्वारका मन पड़लैन। ओइ साल जखन द्वारका गेल रही तँ आरो देश-कोस देखैक मन भेल रहए तँ नागपुर चलि गेलौं। की पहाड़ी इलाका छल। की फलक खेती रहइ..!

कुमरा काकाकेँ अपना मनमे रहबे करैन जे दारीमक गाछ लेब। ओना नर्सरीमे हलुआइए दोकान जकाँ रंग-बिरंगक गाछ रहइ। मुदा पहिने जीवैत जिनगीमे जान फूकब आकि अनठिया भाँजमे पड़ि

अनठीए बनि जाएब। मुदा तैयो कुमरा काका गाछक रंग रूप देख नर्सरीबलाकेँ पुछलखिन-

"ई कथीक गाछ छी?"

कहलकैन-

"अनारक।"

ओना 'अनार-दारीम'क बात मनमे उठलैन मुदा गाछक हाड़-काठ आ डारि-पात देख बिसवास भऽ गेलैन जे दारीमे छी। भऽ सकैए जे माटि-पानि-हवाक दुआरे किछु अन्तर होइ मुदा छी दारीमे। ओना जहिना नीक खाँढ़क गाएकेँ दब साँढ़सँ पाल खुऔला पछाइत बच्चाक खाँढ़ निच्चाँ मुहेँ उतैर जाइए आ दबो खाँढ़क गाएकेँ नीक साँढ़सँ पाल खुऔलापर ऊपर मुहेँ खाँढ़ बढ़ि जाइ छै, तहुना भऽ सकैए वा एक कुल-खुटक रहितो दोसरो-तेसरो कारणे किछु अन्तर आबिए जाइ छइ। खाएर जे हौउ। कक्काक मन मानि गेलैन जे बेसी तँ नहि, एकटा गाछ कीनि लेब।

गाछबलाकेँ फेर पुछलखिन-

"एकटा गाछक दाम कहू।"

कुमरा काकाकेँ नर्सरीबला बहरबैया बुझि परेख नेने रहैन। एकटा गाछ सुनि बुझबैत कहलकैन-

"देखू, नबे-पनचानबे प्रतिशत गाछकेँ लगैक गारंटी करै छिऐ। पाँच-दस प्रतिशत सुखियो सकै छइ। एकटा गाछ लेब आ जँ कहीं सुखि गेल तँ अहूँक आशापर पानि पड़ि जाएत आ हमहूँ गारि सुनब, तँए नीक हएत जे दूटा गाछ लिअ।"

नर्सरीबलाक बात कुमरा कक्काक मनमे जँचलैन मुदा एकटा दोसरो बात मनमे आबि गेलैन। ओ ई जे जखन एकटाक बिसवास

दइए तँ दाम किए दूटाक लेत? पुछलखिन-

"लगत एकटा आ दाम लेब दूटाक?"

कुमरा कक्काक प्रश्न सुनि नर्सरीबला बिनु विचारने बाजि देलक-

"गाछो तँ दूटा देब।"

मुदा कुमरा कक्काक गुम्मी नर्सरीबलाक मनमे ठमकल। विचारैत बाजल-

"दूटाक दाम नहि, देढ़ेगोक दाम लागत, दूटा गाछ देब।"

दुनू गोरे राजी भेला। वएह चारिम गाछ छिऐन। आब तँ आने गाछ जकाँ ओहो फड़ै-फुलाइ छैन। ओना मिथिलांचलमे दर्जनो किसिमक अनार, दारीम, बेदाना, नारंगी इत्यादि अछि मुदा सबहक नाओं दारीमे छिऐ। गाछक फल द्वारकाक फलमे बदैल गेलैन।

चारिम गाछसँ पाँचम गाछपर कुमरा कक्काक नजैर पहुँचलैन, पहुँचते इलाहाबाद-प्रयागक कुम्भ मेला मन पड़लैन। ई गाछ ओतुक्के छी। बहुत दिनक पछाइत कुम्भो लागल आ अपनो दारीम लगबैक विचार मनमे रहबे करए, ई दुनू गाछ ओत्तैसँ अनने रही। मुदा ओ 'बेदाना' कहि कऽ अनने रही। ऐठाम तँ दारीमे छी। ओना किछु अन्तर होइते छइ। से तँ आनो-आनोमे होइ छइ। तँए कि नामे बदैल जाए!

छठम गाछपर नजैर पड़िते काकाकेँ कश्मीरक अमरनाथ मन पड़ि गेलैन। मन पड़िते छगुन्ता लागए लगलैन। केतेक सुन्दर फल होइए! जहिना रंग-रूप तहिना मोती सन दाना, जे फलक भीतर बसहा कागजक चद्दैर ओढ़ि मधुमाछी छत्ता जकाँ घोदिया अपन जिनगीक पूर्ण विकास करैए..!

मुदा लगले कक्काक मन बहैट गेलैन। मनमे उठि गेलैन- झंझटिया जगहक फल छी। अकबरेक समए जे झंझटक जड़ि ओतए

रोपाएल से सभ दिनक झंझटिये रहि गेल। कहियो कम, कहियो बेसी, मुदा झंझट मेटाएल नहि। तइसँ नीक अपने सभ–बिहारी–छी। खाएर जे हौउ, मुदा बागक बोन आ झीलक झिलहोरि बेसी ओकरे सभकेँ छइ। जेहने शालीमार, निशातक बोन तेहने डल झील। ओना, अपने सभ जकाँ धानक चूरा-चाउर, भात गहुमक रोटी, मकैक भुजा, ओरहा खाइए मुदा मलड़ैए बेसी अपना सभसँ। किए ने बेसी मलड़त, अपना सभ पानिमे नहाइ छी, ओ सभ बेसी बरफेमे नहाइए। ओना अकास गंगाक जलधार सेहो होइ छै मुदा अपना सभसँ कम। मुदा जे हौउ, ओकरा सभ जकाँ फल सड़ा कऽ नहि खाइ छी, टटका खाइ छी...।

सातम गाछपर नजैर पड़िते कक्काक मन पड़ि गेलैन हरिद्वार। पाथरक धारक पवित्र जलधार। माटिसँ घोराएल नहि, किए ने हरिक दुआर बनत। आठम गाछपर नजैर पड़िते जगरनाथ मन पड़लैन। समुद्र-पहाड़ बीच बसल जगरनाथ। एक्के बगानमे दारीम, अनार, बेदाना, नारंगी सभ अपन-अपन जगह पाबि जिनगीक फल लूटबैए...।

चढ़ैत सुरूज देख काजकेँ आगू बढ़ाएब बुझि कुमरा काका आड़िपर सँ उठि दारीम तोड़ैले पहिल गाछ पहिल फलपर हाथो बढ़लैन आ नजरियो देलखिन। फल तँ छेदाएल छइ! ऊपरेसँ भूर भेल अछि। जरूर फलमे कीड़ाक प्रवेश भऽ गेल अछि। पहिल फल छोड़ि दोसर देखलैन, ओहो तहिना..!

छेदाएल फल देख कुमरा कक्काक मन कलैप उठलैन। भरिसक गाछक सभ फल सड़ि गेल अछि! मुदा हूबा करैत दोसर गाछ दिस बढ़ि हाथसँ फल उठा देखलैन तँ ओहो छेदाएले! दोसरो-तेसरो चारिमो ओहिना रहइ।

आठो गाछक फल देख काका हिया हारि देलैन जे सालक अमृत फल छिना गेल। मन कहलकैन- चूक अपने भेल जे लगन-पाती आ भोज-भातक फेरिमे पड़ि फल छिनबा लेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2577

चुप्पा पाल

गोसाँइ लुकझुक कऽ रहल छल। ओना छह बाजि गेल छल मुदा सुरूज अपन दिन भरिक यात्राक अन्तिम पड़ावपर अँटैक तकिते छला...।

पतराएल काज रहने नीलकण्ठ काका सबेरे-सकाल निचेन भऽ गेल छला। जहिना परिवार मोटेलासँ परिवारक काजो मोटाइ छै आ दुबरेलासँ दुबरेबो करै छै तहिना नीलकण्ठो काकाकेँ भेलैन। ओना, परिवारक संस्कारो आगू बढ़लैन मुदा काजो पूरने काज पतराइए। होइतो तँ तहिना छै जे जन्म होइते संस्कारोक जन्म होइ छै आ अन्त होइत अन्तो होइ छइ।

नीलकण्ठ काकाकेँ तहिना भेलैन। किए ने हेतैन, सोझहे लग्गीसँ घास खुएलासँ नहि ने होइ छै जे आगू ताकब तँ दादा-परदादा देखब आ पाछू ताकब तँ नाति-छेड़नाति देखब। बाल-बच्चाक बिआह-दान भेने माए-बापक जिनगीक प्रमुख कर्म-धर्मक पूर्ति होइ छै जइसँ बाल-बच्चाक प्रति अपन दायित्व पूर्ति करै छैथ। बेटा बिआहक आइ पनरहम दिन छिऐन। पैघ यज्ञसँ दुनू परानी मुक्ति पाबि जहिना साबुनसँ वस्त्रक मोलि साफ कएल जाइए तहिना माए-बापसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक परिवार बना जिनगीक मोलिकेँ कर्मक साबुनसँ घोइ अपन मनक सफाइ करए चाहलैन। नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन जे बेटा-बिआहक अन्तिम हिसाब जोड़ि किए ने काजक विसर्जन कइए

ली। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे तीन-तीन-चरि-चरि मास गरदैनमे उतरी झूलिते रहत। जे काज महज चारि-पाँच घन्टाक छी। मन गबाही देलकैन जे से नहि तँ आइ अन्तिम हिसाब–बिआहक लाभ-हानिक हिसाब–कऽ काजक विसर्जन कइए लेब। जहिना बोनैया हरिणक बच्चा पकड़ाइते चारूकात चौकन्ना हुअ लगैत तहिना नीलकण्ठ काकाकेँ भेलैन।

पतिकेँ काजसँ विश्राम होइते देख सुचिता काकी हाँइ-हाँइ अपन काजक मुड़ी मोड़ि चाहक ओरियानक विचार मनमे अनलैन। किएक नहि अनती, ओहन जनाना थोड़े छैथ जे पतिकेँ विकलांत देख ओइसँ बेसी अपने विकलांतता देखबए लगती।

सुचिता काकी केतली-लोटा नेने कल दिस बढ़ली, मनमे उठलैन पहिने अपने हाँइ-हाँइ पएर धोइ लोटा-केतली अखाड़ब आकि लोटे केटली अखाड़ि पानि भरि ली? मन ततमत करए लगलैन, ओना ऐ उमेरक ई प्रश्न नइ भेल, मुदा सभ काजक अपन गति-विधि छइ किने। अपने जिनगीक काज ने दोसराकेँ सेहो बाट देखौत।

समैसँ पहिनहि सुचिता काकी चाह बना दहिना हाथे गिलास नेने नीलकण्ठ काका लग पहुँचली।

अखन धरि नीलकण्ठ काका मुड़ी निच्चेँ मुहेँ केने छला। मनमे बेटा बिआहक काज घुरियाइत रहैन। मुदा चाहक गिलास जखन सुचिता काकी निच्चेँ दबा बढ़ौलकैन तखन आँखि पड़िते काका नजैर उठौलैन। भकुआएल मुँहक सुरखी देख काकी नजैर-पर-नजैर गड़ौलैन। मुदा कक्काक मन अपन विचारपर रहैन। ओना, काकीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक कोनो दब कएल काज मनकेँ पकड़ने छैन। मुदा जँ चाह पीबैसँ पहिने किछु बाजि जँ कोनो बात लाड़ब तँ भऽ सकैए जे चाह पीब छोड़ि अपने बेथासँ बेथित भऽ जाथि, तइसँ नीक

जे चुपचाप हाथमे चाहक गिलास पकड़ा अपनो चाह अँगनासँ आनि एतै पीबो करी आ पछाइत पुछियो लेबैन। तैबीच दू-चारि घोंट चाहो घोंटि नेने रहता जइसँ मनोक जुआरि कमतैन। ओना उदास चेहराक केतेको कारण होइ अछि। केतौ रौद-बसातक उदासी, तँ केतौ कोनो काज नै भेने उदासी होइए, केतौ परिश्रमक नोकसानक उदासी, केतौ धिया-पुता मुइने उदासी तँ केतौ माए-बाप मुइने। मुदा तँए कि पतिक बेथा पत्नी नहि सुनैथ। पति-पत्नीक बीच हजारो रूप अछि, हजारो रंग अछि तँए कि बजा-भुकी बन्न भऽ जाए..?

आँगन दिस सुचिता काकी बढ़ली। तैबीच एक घोंट चाह पिबते नीलकण्ठ कक्काक मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत मनमे उचरलैन- कहू जे एहेन काजकेँ की कहबै?

काज छेलैन डेढ़ साए जोड़ धोती आ तेकर आरो संगी सबहक–माने पाँचो टुक कपड़ाक–संग विदाइ करब। ओना डेढ़ साए बहुत भेल मुदा से नहि, अज-गज बला परिवार छैन किने कक्काक। चारि भाँइक अपन भयारिये छैन, तेकर नैहर-सासुर भेल, नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ लऽ कऽ अपन सासुरक सातो सम्बन्धी, तैसंग बेटाक हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेजक संगीक संग नोकरीक संगी धरि। मुदा नीलकण्ठ काका हृदय खोलि काज केलैन। ओना, प्रश्न तँ मनमे उठलैन मुदा लगले जवाब भेटलैन जे जग-जापमे खर्च होइते छइ। जँ से नै होइ तँ धनक काजे की रहत। पेट तँ सागो आ एक लोटा पानियोंसँ मानियेँ जाइ छइ...।

कक्काक मन नचिते रहैन कि सुचिता काकी मुँहमे चाहक गिलास भिरौने आगूमे आबि बैसली। तही बीच नीलकण्ठ काका अपन चाहक गिलास चौकीपर रखि हाथक पाँचो ओंगरी घुमबैत बजला-

"कहू तँ ई केहेन भेल!"

नीलकण्ठ कक्काक प्रश्न सुनि सुचिता काकी अकचकाइते रहली जे की केहेन भेल। बाघ भेल कि साँप भेल से केना बुझती। ओना दुनू परानीक मन बेटा बिआहसँ तेते खुशी रहैन जे छोट-छीन केते बातो आ काजो मनसँ हटि गेल रहैन मुदा मनोक तँ अपन संसार छइ। प्रसंगोक अपन स्थानो आ महत्तो छइहे। दुनू बेकतीक सझिया काज रहैन तँए आरो बेसी मन खुशी रहैन। खुशी हएब उचितो छल किएक तँ केतो एहनो होइ छै जे प्रेमरस पीब, मधुर गीत गाबि सन्तान पैदा होइ छै आ किछुए दिनक पछाइत सभ किछु उनैट जाइ छै, ओइ बेटासँ तँ नीक काज भेले रहैन।

ओना चारि सन्तानमे एकटा बेटा तीनटा बेटी छेलैन। जे तीनू बेटी बेटासँ जेठे छेलैन जेकर बिआह-दुरागमन पहिनहि कऽ नेने छला। तीनू बेटी- बिआहक दान-दहेज देख दान-दहेजसँ मने उचैट गेलैन, जइसँ नीलकण्ठ काकाकेँ बेटाक प्रति दान-दहेजक विचार मनेमे दबि गेलैन। कारण ई भेलैन, तीनू बेटीक बिआहमे जेतेक खर्च भेल तइसँ बेसी जँ बेटीबलाकेँ खर्च कराएब ई तँ सोझहा-सोझही अन्याय हएत। मुदा से कहाँ होइ छै, दहेजक दुआरे बेटी बिआहकेँ लोक अगर-मगर करैत टपि जाइए मुदा बेटा बेरमे बिनु पढ़लो-लिखलकेँ डाक्टर-इंजीनियर बना देल जाइए। जहिना बरदहट्टामे फुसि-फासिक तेजी रहै छै तहिना ने बेटो-बेटीक बिआहमे...।

यज्ञ सन पवित्र स्थलमे जँ फुसि-फासिक तेजी नै रहत तँ ओ यज्ञ शुद्धे केना हएत? खाएर जे हौउ, मुदा नीलकण्ठ कक्काक मन मानि गेलैन जे जेते तीनू बेटीक बिआहमे खर्च भेल ओते आमद एकटामे केना हएत। तइसँ नीक जे मुँह-छोहैने नइ करब। हथउठाइ जे हएत सएह हएत।

पतिक बिपटा बानि–हाथक ओंगरी घुमा बजैत–देख सुचिता

काकीकेँ हँसी लगलैन मुदा हँसबो तँ हँसबे छी। केतौ गुदगुदबैए तँ केतौ भकभकेबो करैए। माने, काज नफगर रहल घट्टो नफे बुझाइ छै आ घटगर रहल तँ नफो घट्टे बुझाइ छइ। पथराएल केराउक भुज्जा जकाँ सुचिता काकीक दाँत तर नीलकण्ठ कक्काक आक्रोश पड़लैन। मुदा आक्रोशो तँ आक्रोशे छी, मुदा कथीक आक्रोश? तँए जाबे उघारि-उघारि नै बजता ताबे बुझब केना? सुचिता काकी बजली-

"तेना झाँपि-तोपि कऽ बजै छी जे ऊपरे-घाँड़े रहि गेलौं, तँए कनी बिक्छा कऽ बजियौ। जखन दुनू गोरेक सझिया जीवन अछि तखन हम हँसी आ अहाँ कानी ई केहेन हएत?"

खिस्सकरकेँ जहिना एक्कोटा खिस्सा सुननिहार भेटला पछाइत अपन सुधि-बुधि हेरा जाए छै तहिना नीलकण्ठ काकाकेँ सुचिताक बोल सुनि भेलैन, बजला-

"परिवारक महान यज्ञ बेटा-बेटीक बिआह छी, आ ओ यज्ञ जँ नीक जकाँ सम्पन्न भऽ जाए तँ खुशीक बात भेबे कएल। ओना, तइले देहोक धौजैन आ पाइयोक धौजैन तँ हेबे करत। मुदा तइमे उचित-अनुचितक तँ विचार करए पड़त किने?"

नीलकण्ठ कक्काक मनकेँ पकड़ैक चुट्टा सुचिता काकी भिड़ा हुँहकारी भरैत बजली-

"ऐमे के 'नहि' बाजत?"

जहिना एक्के भगवान भिन्न-भिन्न स्वरूप भिन्न-भिन्न फूल-पत्ती पाबि खुशी होइत तहिना नीलकण्ठो काकाकेँ भेलैन। सुचिता काकीक नजैर-पर-नजैर गड़ा बजला-

"उचित-अनुचितकेँ बेराएब असान नइ अछि, जिनगीक संगीए रहने की हएत। विचारक संगी भेने ने काज चलत?"

नीलकण्ठ कक्काक बात सुचिता काकीकेँ अकठाइन लगलैन।

मनमे उठलैन- कहू! सभ दिन एकठाम रहि सभ किछु करै छी तखन एना किए बजै छैथ? भरिसक कोनो एहेन उकड़ू सोग ने तँ मनकेँ पकैड़ नेने छैन। आन दिन केहेन बढ़ियाँ हबगब करै छेलौं आ आइ की भऽ गेल छैन! बजली-

"कनी नीक जकाँ अपन उदासीक कारण बजियौ। हम ऊपरे-झापड़े रहि गेल छी।"

सुचिता काकीक जिज्ञासा देख नीलकण्ठ काका बजला-

"उचित अनुचित दुनू काजक दू छोर भेल। एक छोर उचित भेल आ दोसर अनुचित। मुदा तइसँ थोड़े काज चलत। सुत-सुत मिलि जहिना डोरी बनैए तहिना दुनू अछि। तेकरा जँ बिहिया कऽ नै सीमा देब तँ काजे भँसिया जाएत किने। बुझबे ने करबै जे केतए की भऽ गेलइ। पछाइत बाजब जे मनमे जे छेलै से भेबे ने कएल। अहीं कहू जे मनेक विचारकेँ ने काज रूप बना केलिऐ तखन किए ने भेल?"

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुचितो काकीकेँ दमगर बुझि पड़लैन। माथ कुड़ियबैत बजली-

"तखन केना हएत?"

सुचिता काकीक पघिलल मन देख नीलकण्ठ काका बजला-

"बड़ भारी जाल छइ। फुलबाड़ीक फूलमे देखबै जे एके नामक अपराजित फूल उजरो होइए, लालो होइए आ कारियो होइए। तँए सोझहे अपराजित आकि आने फूल जे रंग-रंगक होइए, कहलासँ थोड़े बुझि पेबै जे लाल-कारीमे कोन नीक आ कोन अधला भेल?"

नीलकण्ठ कक्काक छिड़ियाएल बात सुनि सुचिता काकी समटैत बजली-

"अच्छा, छोड़ू एते छान-पगहाकेँ। एक-एक काजकेँ उठा

बेड़बैत चलू जे की नीक भेल आ की अधला भेल।"

पत्नीक विचार सुनि नीलकण्ठ काका बजला-

"हँ, बड़बढ़ियाँ विचार देलौं। मुदा पहिने ई कहि दिअ जे केते काज अढ़ेला पछाइत करै छी आ केते अपने फूरने करै छी?"

पतिक बात सुनि सुचिता काकी अकबका गेली। मने-मने विचारए लगली जे ई की भेल? की एकरा काज करब नै कहबै? घर-परिवारक जखन काज भाइए गेल तखन काज केना नइ भेल। भरिसक बुधिए तँ नै घुसैक गेलैन हेन, नै तँ एहेन बिनु हाथ-पैरक बोल किए भेलैन? हलाँकी एक्केटा बातमे सेहो मानब उचित नै हएत। जँ मन घुसकल-फुसकल हेतैन तँ दोसरो-तेसरो बात अहिना बजता।

ओना लोककेँ बेरो-बिपैत आ काजो-उदममे मन घुसैक-फुसैक जाइ छइ। आंशिक रूपमे ईहो की ई झूठ अछि जे किछु सरकारियो कर्मचारी वा शिक्षकोकेँ बेटीक बिआह सेहो पतित बनौलकैन। परिस्थितियो रहल जे केते शिक्षक हाइ स्कूल वा कौलेजसँ सेवा-निवृत भऽ गेला मुदा हाथसँ कहियो वेतन नै उठौलैन। मुदा तँए कि परिवारमे खर्च नै छेलैन? से तँ छेलैन्हे। मनकेँ थीर करैत सुचिता काकी तँइ केलीह जे से नहि तँ जे बुझैमे नै आएल से पुछिए किए ने लिऐन, पुछलखिन-

"की कहलिऐ अढ़ेलोत्तर आ अपने फूरने?"

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उपकलैन-भरि दिनक हराएल जँ साँझो घरि घर पहुँच जाए तँ ओ हराएब नै भेल। दिन तँ होइते छै वौआइये-ले तखन वौआएब हराएब केना भेल। बजला-

"जखन कोनो काज अढ़ेला पछाइत जे करैए ओ अपन उहिक नइ भेल। जँ ओकरा अढ़ाएल नै जाए तखन ओ करत की? अहीं

कहू?"

नीलकण्ठ कक्काक विचार सुनि माथक मोटा पटकैत सुचिता काकी बजली-

"अहाँ अपनाकेँ एतबे किए बुझै छिऐ जे हमरा कोनो काज करैले नै कहब। जँ से नै कहब तँ केना बुझबै जे हमर बात फल्लीं मानैए कि नहि?"

पाशा पलटैत नीलकण्ठ काका बजला-

"जड़िसँ छीप धरिक काजक हिसाब-किताब करैमे बड़ समए लागत। से नहि तँ एक्केटा काजक हिसाब करू।"

'एक्केटा' सुनि सुचिता काकीक मन हलचलेलैन। मन कहलकैन-ई तँ सोलहन्नी एकतरफा भेल! धड़फड़ा कऽ बजली-

"अहूँक बात रहल आ एकटा हमरो अछि।"

"से की?"

"सवारी बरियातीक हिसाबसँ होइ छै तइमे एते गाड़ीक कोन प्रयोजन छेलै, जे लऽ गेलौं?"

सुचिता काकीक प्रश्न सुनि नीलकण्ठ काका बजला-

"अच्छा, अहीं विचार दिअ जे पहिने की विचारब?"

पतिक शीतल छाहैर पाबि सुचिता काकी बजली-

"पहिने गाड़ीए-सवारीक विचार करू। किए पच्चीसटा गाड़ी लऽ गेलिऐ, जखन कि डेरहे साए बरियाती गेलिऐ।"

'गाड़ीक' नाओं सुनि समाजमे जीतक अनुभव नीलकण्ठ काकाकेँ भेलैन। अखन धरि समाजमे कियो बीसटा गाड़ीसँ आगू नै बढ़ल छला तैठाम पाँच गाड़ी बढ़ैक प्रतिष्ठा केकरा भेटल। आह्लादित होइत नीलकण्ठ काका बजला-

"अपन मनोरथ छल जे आगू बढ़ि काज करी। अहाँकेँ तेकर दुख किए अछि? प्रतिष्ठा की फूटा कऽ भेल आकि सम्मिलिते भेल।"

एक तँ ओहिना सुचिता काकीक मन बेटा बिआहक खुशीसँ उधियाएले रहैन तैपर पतिक मनोरथ सुनि आरो उधिया गेलैन। बजली-

"अनकासँ तँ नीक काज जरूर भेल। देखै छिऐ जे अल्हुआक बोरा जकाँ मनुख गाड़ीमे ठसमठस बरियाती जाइ-अबैए आ गाड़ीए-मे मुँह पेट सभ चलए लगै छइ। तइसँ नीक भेल जे जे कियो गेला, अरामसँ गेला आ अरामसँ एला।"

सुचिता काकीक बोल सुनि नीलकण्ठ कक्काक मुहसँ हँसी फुटलैन।

पतिक हँसी देख काकीकेँ भेलैन जे भरिसक हमर निशान उचित जगहपर लगलैन। अपन बराइ सुनि खुशी हएब मनुखक जन्मजात संस्कार रहल अछि। अपन उचित जगहक निशानसँ पतिक मुँहकेँ लाबा जकाँ हँसाएब सफल पत्नीक प्रमुख लक्षण तँ भेबे कएल। मुदा नीलकण्ठ कक्काक हँसीक कारण सुचिता काकीक निशान नै बल्कि समाजमे अरामदेह बेसी गाड़ीकेँ बेटाक बिआहक बरियातीमे लऽ जाएब छेलैन। जेकरा बेटाकेँ अधिक दान-दहेज बिआहमे भेटै छै, समाजमे ओकरे मान भेल किने। जँ मान बढ़ल तँ जरूर अंको बढ़ले हएत...।

पेटक गुदगुदी असथिर होइते सुचिता काकी बजली-

"आब, हाँ-हाँ-हीं-हीं छोड़ू। भानसोक बेर भेल जाइए। अखन पुतोहुकेँ चुल्हिक भार थोड़े देबइ। जइ बेथे बेथाएल छी से बेथा निकालू। जाबे गुर घाउ जकाँ कोनो बेथाकेँ नीक जकाँ नै निकालि बहा लेब ताबे सड़ैन-असाइक डर रहिते छै, तँए आदो-पान्त बाजू?"

जहिना कियो संगीतज्ञ उच्च कोटीक मंचपर कलासँ श्रोताकेँ मुग्ध कऽ सुता दइए तँ केतौ एकान्त बनमे असकरे कियो अपन गुणसँ निराकार रूप भगवानकेँ सुन-भरत जकाँ नन्दी गाम बना राज-काज चलबैए तहिना अपन बेथित वाणकेँ निकालैत नीलकण्ठ काका बजला-

"बिआहक आन खरच आ काजपर मन केतौ नै अँटकल अछि, किएक तँ चाउर-दालिमे खर्चो भेल तँ बदलामे लोको, मालो-जाल आ चिड़ैयो खेलक। आ गाड़ी-सवारीमे खर्च भेल तँ ईहो उपराग नै भेटल जे किनको डाक्टर ऐठाम जाए पड़लैन। मुदा डेढ़ साए जोड़ धोती मिला पाँचो टुक विदाइमे जे खर्च भेल ओ टारनौं मनसँ नै हटैए।"

जहिना मरूभूमिमे बालुक सिबा किछु नहि देखा पड़ैत तहिना सुचिता काकीकेँ बेटा बिआहक सफलता मनमे छेलैन्हे चमैक चरचरेली-

"राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लगल बड़कुम्मैर कानए..!' सुहरदे मुहेँ किए ने बजै छी जे अहूँकेँ आने बरक बाप जकाँ कननी बिमारी धेने अछि तँए कनै छी। अपने मने जे केतबो गुर-चाउर चिबबैत कानब तँ की संगियोँ रहैत हमहीं बाँटि थोड़े लेब? खाएर.., देह तँ रोगाएल अहींक अछि, तँए बिमारीक जड़ि तँ अपने बुझैत हेबइ। बाजू, खोलि कऽ बाजू, भानसमे देरीए हएत तँ की हेतइ। मनक घाउ जे मेटाएल रहत तँ खाइयो आ सुतैयोमे रुचि औत।"

सुचिता काकीक विचार सुनि नीलकण्ठ कक्काक मनमे उठलैन-जे भरिसक लोक ठीके कहै छै राजाकेँ किदैनक चिन्ता आ रानीकेँ किदैनक। मुदा मनक बेथा नीक जकाँ वएह ने बुझि पाबि सकैए जेकर हाथ-पएर नमहर हेतइ। घटको सबहक अजीब गति अछि। बर-कनियाँक घरदेखीमे लगले सर्टिफिकेट दऽ दइ छैथ जे सीता-रामक

जोड़ी अछि। विधातो जेना जोड़े लगा पठौलैन। मुदा नै सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ बेथा तँ भगबे करत। सोलहन्नी तँ तखन भगै छै जखन सुननिहार पहिने बेथाकेँ सुनि बेवसथित ढंगसँ समाधान करै छैथ, मुदा तइसँ कि अपन बेथा हृदयसँ निकाललोपर तँ अदहा कमिते अछि। किएक ने कमत? लोक नै सुनत तँ नै सुनह मुदा उगलाहा तँ सुनबे करता...।

नीलकण्ठ काका बजला-

"विदाइमे केते खर्च भेल से बुझल अछि?"

जेना ठोरेपर बरी पकैत रहैन तहिना सूचिता काकी बजली-

"विदाइ तँ विदाइ भेल, तइमे हमरा बुझैक की प्रयोजन? ई काज तँ पुरुख पात्रक छी जे घरसँ निकैल कुटुम-परिवार धरिक चीन-पहचीन रखै छैथ। सेहो अधला की भेल। जखन अधले नै भेल तखन चिन्ते किए हएत, आ जखन चिन्ते नै हएत तखन मने किए बेथाएत! मन हल्लुक करू, अनेरे तरे-तरे गुमसड़ै छी!"

नीलकण्ठ कक्काक मन मानि गेलैन जे मुँहछोहैन छोड़ि किछु ने भेटत। मुदा मनक बेथा-कथा जँ बाजियो नइ लेब तँ ओकरा संग अन्याय हएत। बजला-

"जे बात सुनैमे नै आबए ओ दोहरा कऽ पुछि लेब। मुदा जे बुझैमे नै आबए ओहन नै दोहराएब। शुरूहेसँ कहै छी।"

अपन भरियाइत आसन देख सुचिता काकी हाथ-पएर सोझ-साझ करैत बैसली। सोझ-साझक कारण रहैन जे नजैर-नजैरक मिलानी नब्बे डिग्रीमे नहि, बल्कि शत-प्रतिशत हुअए। कहलखिन-

"देखू हम बिसराह छी, जँ बीचमे कोनो बिसैर जाइ तँ ओकर मदी नै हएत। मुदा अहूँ, काज केतौ आ बात केतौसँ नइ करब। जहिना-जहिना काज बढ़ैत गेल तहिना-तहिना बातो बढ़बैत चलब।"

सुचिता काकीक विचार नीलकण्ठ काकाकेँ दमगर बुझि पड़लैन। दमगरे विचार ने दमगर आशा जगबैए। बजला-

"डेढ़ साए गोरेकेँ विदाइ केलिऐन। ओना किनको ऐ दुआरे नै बेरेलिऐन जे एक काजक एके विदाइ उचित बुझलौं। मुदा तइसँ की, किनको संग कम-बेसी तँ नहियेँ केलिऐन।"

पतिक बात सुनि सुचिता काकी टपकली-

"किए, कियो किछु उपराग पठौलैन अछि?"

"उपराग किए कियो पठौता। मुदा मन मानि नै रहल अछि। कहिये दइ छी। डेरहो साए विदाइ डेढ़ लाखक छल। एक-एक विदाइक वस्तुमे एक-एक हजार लागल छल। मुदा आब जखन पाछू उनैट तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे दस-सँ-पनरह गोरे तँ धोतियो आ चद्दैरोक उपयोग करता, बाँकी कियो घरनीपा बनौता तँ कियौ गँरि-पोछना!"

पतिक बात सुनिते सुचिता काकी झपैट कऽ बजली-

"अपन महींसकेँ कियो कुरहरियेसँ नाथत तइले अहाँकेँ किए चिन्ता होइए?"

सुचिता काकीक बात सुनिते नीलकण्ठ काकाकेँ झड़क उठलैन, बजला-

"अहीं सन लोक बिआहमे काजसँ विधि भारी बनबैए। एकटा कहू जे अपन बिआह मन अछि।"

"मन किए ने रहत?"

"केते खर्च बाप केने रहैथ से बुझल अछि?"

"दहेलहा-भसेलहा खनदान बुझै छिऐ जे काजक हिसाब बाप-माएसँ लेब!"

"एना नै छिड़ियाउ, सबा लाख रूपैआमे दुनू गोरेक बिआह भेल रहए। जाउ कनी चसगरसँ भानस करब। अहिना बेजाए नीक होइत एलैए?

◌

शब्द संख्या : 2572

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-17-9